पावत् १० पत्थर क पानी समान भा० स्वभाव में स० अच्छी तरह प्रवेश करने वाला जीव का० काल कृ० करता है द० देवता में उ० उत्पन्न होता है ॥ १ ॥ च० चार प० पक्षी प० कहे रु० शब्द स० पन्न ए कितनेक णा० नहीं रू० रूपसपन्न रू० रूपसपन्न ए० कितनेक णो० नहीं स० शब्द स पन्न ए कितनेक रु० शब्द संपन्नभी रू० रूप संपन्नभी ए० कितनेक णो० नहीं रू० रूपसंपन्न ए० ऐसेही

एवं जाव सेलोदगसमाणं भावं समणुप्पविट्ठे जीवे कालंकरेइ देवेसु उववज्जइ ॥१॥

चत्तारि पक्खी प० तं० रुयसपन्नेणाममेगे णो रूवसपन्ने, रूवसंपन्ने नाममेगेणो

रुयसपन्ने, एगे रुयसंपन्नेवि रूवसपन्नेवि, एगे णोरुयसंपन्ने नोरूवसपन्ने । चत्तारि

कितनेक कर्दम जैसे स्वभाव वाले होते हैं वे काल करके नरकमें जाते हैं खंजन जैसे स्वभाव वाले मरकर तिर्यचमें उत्पन्न होते हैं, बालु जैसे स्वभाव वाले मरकर मनुष्यमें उत्पन्न होते हैं, और पाषाणपरका हुवा पानी समान जीवों मरकर देवलोकमें उत्पन्न होते हैं ॥ १ ॥ चार प्रकारके पक्षी कहे हैं १ कितनेक पक्षी मनोहर शब्द सहित हैं परतु मनोहर रूप सहित नहीं है कोकिलवत् २ कितनेक मनोहर रूप सहित है परंतु मनोहर शब्द सहित नहीं है, प्रधान पोपटवत् ३ कितनेक रूपसपन्न भी है और मनोहर शब्द सपन्न भी हैं मयूरादिवत ४ और कितनेक रूप सपन्न नहीं है और मनोहर शब्द सपन्न भी नहीं हैं काकवत् ऐसेही चार प्रकारके पुरुष कहे हैं १ एक मनुष्यकी भाषा मिष्ट व मनोहर होती है

च० चार पु० पुरुष जाती प० कही रू० शब्द संपन्न ए० कितनेक णो० नहीं रू० रूपसपन्न ॥ ३ ॥ च० चार पु० पुरुषजात प० कही प० मीति क० करता ए० कीतनेक प० मीति क० करते है प मीति क० करता ए० कितनेक अ० अमीति क० करते है अ अपनी प० मीति क० करता है णो० नहीं

पुरिस जाया प० त० रुयसपन्ने नामभेगे नो रूवसपन्ने, ४ ॥ २ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० त० पात्तियं करेमि एगे पत्तियं करेइ, पत्तिय करेमि एगे अपात्तियं करेइ, अपत्तियं करेमी एगे पात्तिय करेइ, अपात्तिय करेमी एगे अपात्तिय करेइ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० अप्पणो णाममेगे पत्तिय करेइ णोपरस्स,

परंतु रूपमें कुरूप होता है २ एक पुरुष रूपका अच्छा परतु भाषाका खराबहोता है ३ एक रूपका अच्छा और भाषाका भी अच्छा और ४ एकरूपका खराब और भाषाका का भी खराब ॥ २ ॥ एक पुरुष ऐसी चिन्तवना करे कि मैं अन्यकी साथ मीति करू अथात् अन्यका अच्छा करू और अन्यका अच्छा भी करे २ एक पुरुष अन्यकी मीति करने का विचार करके अमीति करे ३ एक पुरुष अन्यकी साथ अमीति करनेका विचार करके मीति करे व ४ एक पुरुष अन्यकी साथ अमीति करनेका विचार करके अमीति करे, १ एक अपनी आत्माकी साथ ही मीतिकरे परंतु अन्यकी साथ नहीं २ एक पुरुष अपनी आत्माकी साथ अमीति करे परंतु अन्यकी साथ मीतिकरे ३ एक अपनी व अन्यके आत्माकी साथ मीति करे और

प० अन्यकी । च० चार पु० पुरुषजात प० कहीं प० प्रीतिमें प० प्रवेश करताहू प० कितनेक प० प्रीतिमें प प्रवेश करते हैं अ० स्वतःकी प० प्रीतिमें प० प्रवेश करता है णो नहीं प० अन्यकी ॥३॥ च० चार रु० वृक्ष० प० पत्रवाला, पु० पुष्पवाला फ० फलवाला, छा छायावाला, ए० ऐसेही च०

परस्स णाममेगे पत्तिय करेइ णो अप्पणा ४ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० पत्तिय पवेसामि एगे पत्तियं पवेसेइ पत्तियं पवेसामि एगे अप्पत्तिय पवेसेइ, अप्पत्तियं पवेसामि एगे पत्तियं पवेसेइ अप्पत्तिय पविसामि एगे अप्पत्तिय पवेसेइ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० अप्पणो णाममेगे पत्तियं पवेसेइ णो परस्स ४ ॥ ३ ॥ चत्तारि रुक्खा प० तं० पत्तोवए, पुप्फोवए, फलोवए, छायावए । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प०

४ एक अपनी व अन्यकी साथ प्रीति नहीं करे चार प्रकारके पुरुष कहे हैं एक पुरुष ऐसी चिन्तवना करे कि अन्यके चित्तमें मैं प्रवेश करूंगा व विश्वास उत्पन्न करूंगा वैसी चिन्तवना करके विश्वास उत्पन्न करे २ एक पुरुष ऐसी चिन्तवना करे कि मैं अन्यके चित्तमें प्रवेश करूंगा व विश्वास उत्पन्न करूंगा और पीछसे अविश्वास, उत्पन्न करे ऐसा चार भांग करना औरभी चार प्रकारके पुरुष कहे अपना व अन्यका आत्माकी प्रीतिमें प्रवेश करे ऐसे चौभंगी जानना ॥ २ ॥ चार प्रकारके वृक्ष कहे हैं १ बहुत पत्रवाले, पुष्पवाले, फलवाले और छाया वाले ऐसे ही चार प्रकारके लोकोत्तर पुरुष कहे [illegible]

चार पु० पुरुषजाति प० पत्रवाला वृक्षसमान पु पुष्पवाला वृक्षसमान फ फलवाला वृक्षसमान छा० छायावाला वृक्षसमान ॥ ४ ॥ भा० बोजा व लेजानेवालेको प० चार आ० विश्रामस्थान प० कहे ज० जहां अं० स्कंधसे अं स्कन्ध सा० लेवे त वहांभी ए एक आ विश्राम प० मरूपे ज० जहां उ० वड़ीनीत पा० लघुनीत प० करते त० वहांपरभी ए० एक आ० विश्राम ज० जहां णा० नागकुमारके देवालयमें सु सुवर्ण कुमारके देवालयमें वा वास उ० माससेवे त० वहां ए० एक आ० विश्राम ज०

तं० पत्तोवारुक्खसमाणे, पुप्फोवारुक्खसमाण, फलोवा रुक्खसमाणे, छायोवा रुक्खसमाणे ॥ ४ ॥ भार ण वहमाणस्स चत्तारि आसासा प० तं० जत्थण अंसाओ अंस साहरइ तत्थवि य से एग आसासे पण्णत्ते, जत्थवियण उच्चारवा पासवण वा परिठावंति तत्थवियसे एगे आसासे प० जत्थवियण णागकुमार वास

वृक्ष समान पुरुष स्वभावसे व धर्म करने से उपकारी १ पुष्पवाले वृक्ष समान पुरुष सूत्रपठन करने से विशेष उपकारी २ फलवाले वृक्ष समान पुरुष सूत्र व अर्थ दोनोंका पठन करने से उपकारी ४ छायावाले वृक्षसमान पुरुष कष्ट से अथवा पापमें से बचावे ॥ ४ ॥ भार वहन करने वाले पुरुषको चार विश्राम स्थान कहे हैं १ एक स्कंधसे अन्य स्कंध पर भार संहर सो एक विश्राम स्थान, २ लघुनीत वड़ीनीत करे सब दूसरा विश्राम स्थान ३ नागकुमार सुवर्णकुमारके देवालयमें भार रखकर विश्राम ले

जहां आ० जीवन पर्यंत चि० रहता है त० वहां ए०एक आ० विश्राम ए० ऐसेही स०श्रमणोपासकको च०चार आ० विश्राम ज० जहां सी० शीलव्रत गु० गुणव्रतम व० निवर्तना प० प्रत्याख्यान पो० पोषध उ० उपवास प० अंगीकार करता है त० वहांपर ए० एक आ० विश्राम ज० जहां सा० सामायिक० देशाव गासिक अ० पालता है त० वहां ए० एक आ० विश्राम ज० जहां चा० चतुर्दशी उ० अष्टमी पु०

सिया सुवन्नकुमारावासम्मिवा वासं उवेइ तत्थवियसे एगे आसासे प० जत्थवियणं आवकहाए चिट्ठइ तत्थवियसे एगे आसासे प० एवामेव समणोवासगस्स चत्तारि आसासा प० त० जत्थवियणं सीलव्वयगुणव्वय वेरमण पच्चक्खाण पोसहोव-वासाइं पडिवज्जइ तत्थवियसेएगे आसासे प० जत्थवियण सामाइय देसावगासिय मणुपालेइ तत्थवियसे एगे आसासे प० जत्थवियण चाउद्दसिट्ठ मुद्दिट्ठ पुण्णिमासीसु पडिपुण्णपोसह

और वहां भार श्मशानका होवे वहां आकर भार उतारे सो चौथा विश्राम स्थान श्रमणोपासक श्रावक को सावधकर्म करते चार विश्राम स्थान कहे हैं १ जिस समय शीलव्रत प्राणातिपातादि गुणव्रत, दिग्व्रत भोगोपभोगाविव्रत, परिमाण व्रत, अनर्थादंड विरमण व्रत, नौकारसी प्रमुख का प्रत्याख्यान, अष्टमी, चतुर्दशी आदिका उपवास वगैरह अंगीकार करे उस समय श्रावकको विश्राम स्थान होता है, २ जिस समय श्रावक सामायिक, देशावगाशिक व्रत अंगीकार करे उस सम्यक प्रकारसे पालन करे उस समय श्रावक को विश्राम स्थान होता है, ३ चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा, वगैरह तिथियाों

पूर्णिमा प० मासपूर्ण पो० पोपध सं० सम्यक् अ० पालता है त० वहां ए० एक आ० विश्राम ज० जहां अ० अपश्चिम मा० मारणान्तिक सं० संलेखना झू० झूसनासे झू० पतलाकियाहुआ भ० भक्त पा० पानसे प० प्रत्याख्यान कराये पा० पादोपगमन का० मरणको अ० नहीं वांच्छते हुए वि० विचारता है त० वहांभी ए० एक आ० विश्रामस्थान प० कहा॥५॥च० चार पुरुषजात प० कही उ० उदय पायाहुवा उ०उदय ए० कितनेक उ० उदित अ० अस्त ए० कितनेक भ० भरतराजा चा० चतुर्गतिका अंतकरनेवाले चा

सम्मं अणुपालेइ तत्थवियसे एगे आसासे प० जत्थवियण अपच्छिम मारणंतिय संलेहणा झूसणा झूसिए भत्तपाण पडियाइक्खिए पाओवगए कालम णवकखमाणे विहरइ तत्थवियसे एगे आसासे पण्णत्ते ॥ ५ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० उदिओदिए णाममेगे, उदियत्थमिए णाममेगे, अ

महारात्रि पर्व पोपध करते श्रावक को विश्राम स्थान होता है ४ अन्तिम मरणांतिक संलेपना तप अंगीकार कर आहार पानीका जीवन पर्यंत त्याग करके स्थिरता से मरण की वांच्छा नहीं करता हुवा विचरे ता श्रावको विश्राम स्थान होवे ॥ ५ ॥ चार प्रकारके पुरुप कहे हैं १ एक पुरुप उदितो दित नाम, उच्चकुल, बल, समृद्धि आदि परम सुखका धणि २ एक पुरुप परम समृद्धि आदि भोगकर निर्धनहोवे ३ एक पुरुप नीचकुलमें उत्पन्न होकर पीछे बहुत सुखके भोक्ताहोवे ४ एक पुरुष अस्त होकर

चक्रवर्ती उ० उदितोदित ब० ब्रह्मदत्तराजा च० चक्रवर्ती उ० उदितास्त ह हरिकेषबल अ० अनगार अस्तोदित का० कालीक सोकारिक अ० अस्तास्त ॥ ५ ॥ च चार जु० युग्म (राशि) क० कृतयुग्म ते० त्रेता दा० द्वापर क० कल्युग्म ने० नारकीको च० चार जु० युग्म प० ऐसेही अ० असुरकुमारका ए०

त्थमिओदिए णाममेगे, अत्थमियत्थमिए णाममगे। भरहेराया चाउरत चक्कवट्टीण उदिओदिए, बंभदत्तेणंराया चाउरंत चक्कवट्टी उदियत्थमिए, हरिएसबले णाममणगारे मत्थमिओदिए, कालेण सोयरिए अत्थत्थमिए ४ ॥ ५ ॥ चत्तारि जुंमा प० तं० कडजुम्मे, तेयोए, दावरजुम्मे, कलिओ। णेरइयाणं चत्तारि जुमा प० तं० कडजु-

पुनः अस्त होवे अर्थात्, नीचकुलादिक के दुःख पाकर वहां से नरकादिक के दुःख भोगने वाले होवे ॥ भरत महाराजा उदित होकर पुनः उदित हुवे अर्थात् ऋषभ पुत्र चक्रवर्ती बनकरके फीर चतुर्गतिरूप संसार का अंत कर मोक्ष में गये २ ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती का उदय होकर अस्त हुवा अर्थात् सब समृद्धि से भ्रष्ट होकर दुर्गतिमें गया, ३ हरिकेषबल नामक अनगारका नीचकुलमें जन्म हुवा फीर चारित्र लेकर मोक्ष में गया ४ कालकसौकरिक प्रतिदिन ५०० भैंसा मारता और यहांसे मरकर सातवी नरक में गया यह अस्त होकर अस्त हुवा ॥ ५ ॥ चार प्रकार की (युग्म) राशि कहीः कृतयुग्म, त्रेता द्वापर और कलियुग्म नारकीको चार कृतयुग्म कहे हैं और वैसेही चोवीसही दण्डक में जानना ॥५॥

पमेदा पु० पृथ्वीकाय आ० अप् ते० अग्नि वा० वायु व० वनस्पति बें० बेइन्द्रिय तें० तेइन्द्रिय च० चौरिन्द्रिय पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंचयोनिवाले म० मनुष्य, वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिष वें०, वैमानिक स० सबका ज० जैसे ने० नारकीको ॥ ६ ॥ च० चार सू० शूरवीर प० कहे खं० क्षमामेंशूर त० तपमें शूर दा० दानमें शूर जु० युद्धमें शूर खं० क्षमामें शूर अ० अरिहंत त० तपमें शूर अ० अनगार दा० दानमें शूर वे० वैश्रमण जु० युद्धमें शूर वा० वासुदेव ॥ ७ ॥ च० चार पु० पुरुषजात प० कही उ० ऊंच ए० कितनेक उ० ऊंच

मे, तेओए, दावरजुंमे, कलिओए । एव मसुरकुमाराणं जाव थणियकुमाराणं एव पुढविकाइयाणं आउ तेउ वाउ वणस्सइ बेंदियाणं तेंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं मणुस्साणं वाणमंतरजोइसियाणं वेमाणियाणं सव्वेंसिं जहा नेरइयाणं ॥ ६ ॥ चत्तारि सूरा प० त० खंतिसूरे, तवसूरे, दाणसूरे, जुद्धसूरे । खंतिसूरा अरहंता, तवसूरा अणगारा, दाणसूरे वेसमणे, जुद्धसूरे वासुदेवे ॥ ७ ॥

चार प्रकार के शूर कहे हैं १ क्षमा शूर परिषहमें कदापि खेदित नहोवे २ तपशूर तपश्चर्यामें पीडा नहीं देखे ३ दानशूर बहुत दानदेवे और ४ युद्धशूर युद्धमें शूरवीर इसमें से क्षमामें शूरवीर अरिहंत, तपमें शूरवीर अनगार, दान में शूरवीर वैश्रमण और युद्ध में शूरवीर वासुदेव ॥ ७ ॥ चार प्रकारके पुरुष कहे हैं १

छं० अभिमायवाले उ० ऊंच प० कितनेक नी० नीच छं० अभिमायवाले ॥ ८ ॥ अ० असुरकुमारको च० चार ले० लेश्या प० कही क० कृष्णलेश्या णी० नीललेश्या का० कापातलेश्या ते० तेजुलेश्या ए० ऐसे जा० यावत् थ० स्तनितकुमारको ए० एसेही पु० पृथ्विकायाको आ० अप् व० वनस्पतिकायका वा० वाणव्यंतर स० सबको ज० जैसे अ० असुरकुमारको ॥ २ ॥ च० चार ज० यान (वाहन) जु० युक्त

चत्तारि पुरिसजाया प० तं० उच्चेणाममेगे उच्चच्छंदे, उच्चेणाममेगे णीयच्छंदे, णीए णाममेगे उच्चच्छंदे, णीए णाममेगे णीयच्छंदे ॥ ८ ॥ असुरकुमाराण चत्तारि लेस्सा प० तं० कण्हलेस्सा णीललेस्सा, काउलेस्सा, तेउलेस्सा । एवं जाव थणिय कुमाराणं, एव पुढविकाइयाण आउ वणस्सइकाइयाणं वाणमंतराणं सव्वेसिं जहा असुरकुमाराण ॥ १ ॥ चत्तारि जाणा प०त० जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्तेणाममेगे

एक पुरुष कुल, बल रूप आदि गुणोंमे उन्नत और छंद (अभिमाय) म भी उन्नत, एक पुरुष कुलादिसे ऊंच परंतु अभिमायसे नीच, १ एक पुरुष कुलादिसे नीच परंतु अभिमायसे ऊंच ४ एक कुल व अभिमाय दोनोंसे नीच ॥ ८ ॥ असुरकुमारादि दश भुवनपतिको पृथ्वीकाय, अपकाय, और वनस्पतिकायका तथा वाणव्यंतरको कृष्ण, नील, कापोत व तेजु यह चार लेश्याओं कही हैं ॥२॥ चार प्रकारके यान (गाडे)

प० कितनेक जु० युक्त जु० युक्त ए० कितनेक अ० अयुक्त ए० ऐसेही च० चार पु पुरुषजात प० कही जु० युक्त ए० कितनेक जु० युक्त परिणत जु० युक्तरूप जु युक्तशोभा च० चार जु० युग्म

अजुत्ते, अजुत्तेणाममेगेजुत्ते, अजुत्तणाममेगअजुत्ते । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० जुत्ते णाममेगेजुत्ते, ४ ॥ चत्तारि जाणा प० तं० जुत्तेणाममेग जुत्तपरिणए, जुत्तेणाममेगे अजुत्तपरिणए ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० त० जुत्तेणाम मेगे जुत्तपरिणए, ४ । चत्तारि जाणा प० तं० जुत्तणाममेगे जुत्तरूवे, जुत्तेणाममगे

कहे हैं १ एक यान सब उपकरण युक्त है और बैलभी जोतहुवे हैं २ एक यान सब उपकरण युक्त है परंतु बैल जोतेहुवे नहीं है ३ एक यानको बैल जोतेहुवे हैं परंतु उपकरण युक्त नहीं है और ४ एक यान नतो उपकरण युक्त है और न बैल जोतेहुवे है ऐसेही चार पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष धनादि सामग्री सहित है और उसका अनुष्ठानभी उचित है अर्थात् दानादिमें धनका व्यय करता है, २ एक पुरुष धनादि सामग्री सहित है परंतु अनुष्ठान उचित नहीं ३ एक पुरुष धनादि सामग्री रहित परंतु उचित अनुष्ठानवाला है और ४ एक धनादि सामग्री रहित और अनुष्ठानभी उचित नहीं साधुके विषयमें चार भांगे एक साधु द्रव्यसे वेषसहित और भावसे धर्मानुष्ठान सहित यों चारों भांगे कहना और भी चार प्रकारके यान कहे हैं १ एक यान योग्य सामग्री सहित है और युक्त परिणत है अर्थात् बैलादि हैं परंतु यानमें जोतेहुवे नहीं है ऐसेही चारों भांगे जानना इसी तरह चार भांगे पुरुषपर

जु० युक्त प० कितनेक जु० युक्त ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुषजात प० प्ररूपा अ० अस्व आ० यानका च० चार अ० आलापक व० वैसे जु० युग का प० कहना त० वैसेही पु० पुरुषजात जा० यावत् सो०

अजुत्तरूवे, ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० जुत्तेणाममेगे जुत्तरूवे, ४ ॥ चत्तारि जाणा प० तं० जुत्तेणाममेगे जुत्तसोभे, ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जुत्तेणाममेगे जुत्तसोभे, ४ । चत्तारि जुग्गा प० तं० जुत्ते णाममेगे जुत्ते ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० जुत्तेणाम मेगेजुत्ते ४ । एवं जहा

जानना एक पुरुष धनादि युक्त है और उचित अनुष्ठान करनेको तत्पर है परंतु नहीं करता है यों चार भांगे जानना। चार प्रकारके यान कहे एक यान सामग्री सहित है और वेष भी मनोहर है एस चार भंगि कहना इसीतरह चार प्रकारके पुरुष व साधु कहे: एक पुरुष व साधु धनादि व ज्ञानादि युक्त है और रूप व वेषसेभी अच्छे हैं यों चार भांग कहना। औरभी चार प्रकारके यान कहे हैं एक यान सामग्री युक्त है और वृषभादि जोतनेसे अच्छा लगता है (४) ऐसेही चार प्रकारके पुरुष एक पुरुष धनादि युक्त है और धर्मक्रिया करनेसे शोभता है (४)। चार प्रकारके युगके एक युग पलाण प्रमुख सहित है और वेगादि भी सहित है (४) इसी तरह पुरुष चार प्रकारके एक पुरुष धनादि युक्त है

१ अश्वकी जोडी वगैरह का युगकहते हैं

सुशोभित । च० चार सा० सारथी जो० जोडता है ए० कितनेक नो० नहीं वि० चलाता है ए० एसही न० चार प० पुरुषजात ग० चार ह० अश्व च० चार ग० हस्ती च चार भु० अश्वादिकआगमन प०

जाणेण चत्तारि आलावगा तहा जुग्गेणावि पडिवक्खो तहेव पुरिस जाया जाव सो-
भेत्ति ॥ चत्तारि सारथी प० तं० जोआवइत्ता णाममेगे णो विजोयावइत्ता, वि
जोयावइत्ता णाममेगे णो जोयावइत्ता, एगे जोयावइत्तावि विजोयावइत्तावि एगे णो
जोयावइत्ताणो विजोयावइत्ता एवामेव चत्तारि पुरिसजाया ॥ चत्तारि हया प० तं०
जुत्ते णाममेगे जुत्ते, ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० जुत्ते णाममेगे

और उसका अनुष्ठानभी उचित है (८) इसके सब आलापक यानके आलापककी तरह जानना। चार प्रकारके सारथी कहे १ एक सारथी रथको वृषभादि जोतता है परंतु चलाता नहीं है, २ एक रथको चलाता है परंतु वृषभादि जोतता नहीं है, ३ एक जोतताभी है और चलाताभी है व ४, एक सारथी नतो रथ जोतता है और न चलाता है ऐसेही चार प्रकारके पुरुष कहे संयमकी क्रियामें साधुको प्रवर्ताने इसलिये सारथी समान कहे १ आप संयममें जोतते हैं (दीक्षादेते हैं) परंतु ज्ञानादिमें प्रेरते नहीं हैं २ एक दीक्षादेते नहीं हैं परंतु ज्ञानादिमें प्रेरते हैं ३ एक दीक्षादेते हैं और ज्ञानादिमें प्रेरते हैं और ४ एक नतो दीक्षादेते हैं और न ज्ञानादिमें प्रेरते हैं ॥ चार प्रकारके हय कहे हैं १ एक घोडा पलाणादि सहित है और वेगमें अच्छा है (८) इसी तरह चार प्रकारके साधु कहे एक साधु संयम सहित है और क्रिया

पथमं जानेत्तारा णो० नो० उ० उत्पथजाने नाम्ना उ० उत्पथजानेत्तासा णो० नहा प० पथम पञ्चनताला प० क्रिनक प० पंथमजानेताम्ना उ० उत्पथमे जानत्तासा ए० किन्ते क णो० नी पे० पंथमें जानेवाला

जुत्ते, ४ । पथ जुत्त परिणए, जुत्तरूवे, जुत्तसोभे सब्वेसिं पडिवक्खो पुरिस जाया ॥ चत्तारि गया प० त० जुत्तेणाममेग जुत्ते,४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० त० जुत्तणाममेगे जुत्ते,४ । एव जहा हयाण तहा गयाणवि भाणियव्वं पडि वक्खो तहेव पुरिसजाया ॥ चत्तारि जुग्गारिया प० त० पथजाई णाममेगे णो

साहितभी है (४) इसपर यान जैसे युक्त, परिणत, रूप और शोभाके चार २ भांगे उतारना वैसेही पुरुषभी जानना । चार प्रकारके हस्ती कहे एक हस्ती भद्रादी प्रमुख सहित है और वेगवाला है (४) एसेही चार प्रकारके साधु एक प्रथम सहित व क्रिया सहित है (४) घोडेकी तरह हस्तीपर सब आलापक कहना । चार प्रकारके पुरुष कहे १ एक मार्गमें चले परंतु उन्मार्गमें चले नहीं २ एक उन्मार्गमें चले परंतु मार्गमें नहीं चले, ३ एक मार्गमें चले और उन्मार्गमेंभी चले और ४ एक मार्गमें व उन्मार्गमें चले नहीं इसीतरह चार प्रकारके पुरुष कहे हैं १ एक साधु जि॥ रूप मार्गमें चलते हैं परंतु उन्मार्गमें नहीं जाते हैं २ एक साधु जिनाज्ञा रूप मार्गमें नहीं चलता है परंतु उन्मार्गमें जाता है ३ एक मार्गमें जाता है व उन्मार्गमें भी जाता है और

* हस्ती, अन्य प्रमुखके गमन

णा नहीं उ० उत्पथमें जानेवाला ए० ऐसेही च० चार पुरुषजात प० कही ॥ १० ॥ च० चार पु० पुष्प रू० रूपसपन्न ए० कितनेक णा० नहीं गं० गंध संपन्न ए० ऐसेही च० चार प्रकारके पु पुरुष रू० रूपसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं सी० सील संपन्न ॥ ११ ॥ च चार पु० पुरुषजात प० कही जा० जाति संपन्न ए०

उप्पहजाइ, उप्पहजाई णाममेगे णोपथजाई, एगेपंथजाइवि उप्पहजाइवि, एगे णोपथजाइ णाउप्पहजाइ ॥ एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० ॥ १० ॥ चत्तारि पुप्फा प० त० रूवसपन्ने णाममेगे णो गंधसपन्ने गधसपन्ने णाममगे णो रूवसपन्ने, एगे रूव सपन्नेवि गधसपन्नेवि, एग णा रूव संपन्ने णो गधसपन्ने । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० रूवसपन्ने णाममगे णो सलिसपन्ने, ४ ॥ ११ ॥

एक सन्मार्ग सन्माग दोनोंमें नहीं चलता है ॥ १० ॥ चार प्रकारके पुष्प कहे हैं १ एक पुष्प सुरूप है परंतु गध नहीं है आकडाके पुष्प २ एक पुष्प गंधवाला है परंतु रूपवाला नहीं है बकुलादिकका पुष्प ३ एक पुष्प गंध सहित है और रूपसहितभी है गुलाब चम्पाक और ४ एक नतो रूपवाला है और न गंधवाला है बदरीफलके पुष्प इसीतरह चार प्रकारके पुरुष हैं एक पुरुष रूपवंत है परंतु शील आदिगुण संपन्न नहीं है ऐसे चार भांगे कहना ॥ ११ ॥ चार प्रकारके पुरुष १ एक जाति संपन्न

कितनेक णा० नहीं कु० कुलसंपन्न ४ जा० जातिसंपन्न णा० नहीं ब० बलसंपन्न ४ ए० ऐसे जा० जाति रू० रूपका च० चार आ० आलापक ए० एस जा० जातिका सु० श्रुत ए० ऐसे जा० जाति च० चारित्र ए० एस कु० कुल बल ४, कु०कुलरूप ४, कु० कुलश्रुत ४ कु० कुलशील कु० कुलचारित्र च० चार पु०

चत्तारि पुरिस जाया प० तं० जाइसंपन्ने णाममेगे णो कुलसंपन्ने, कुलसंपन्ने नाममेगे णो जाइसंपन्ने, ४ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० जाइसंपन्ने णाममेगे णोबलसंपन्ने, बलसंपन्नेणाममेगे णो जाइसंपन्ने एगे जाइसंपन्ने० । एवं जाइए रूवेणय चत्तारि आलावगा, एवं जाईएसुएणय ४ । एवं जाइएचरित्तेणय ४ । एवंकुलेणय बलेणय, ४ । कुलेणय रूवेणय, ४ । कुलेणय सुएणय, ४ । कुलेणय सीलेणय ४ । कुलेणय चरित्तेणय, ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० बलसंपन्ने णाममे-

है परन्तु कुल संपन्न नहीं है २ एक कुलवंत है परंतु जातिवंत नहीं है, ३ एक कुलवंतभी है और जातिवंतभी है ४ और एक जातिवंतभी नहीं है और कुलवंतभी नहीं है. चार प्रकारके पुरुष १ एक जातिसंपन्न है बलसंपन्न नहीं है, २ एक बलसंपन्न है परन्तु जाति संपन्न नहीं है ३ एक जाति संपन्नभी है और बल संपन्नभी है ४ और एक नतोजाति संपन्न है और न बलसंपन्न है ३ चार प्रकारके पुरुष १ एक जाति संपन्न है परंतु रूपसंपन्न नहीं है (४) ४ चार प्रकारके पुरुष एक जातिसंपन्न है परंतु सूत्र संपन्न नहीं

पुरुष जात व० बलसंपन्न णो० नहीं रूपसंपन्न ए० ऐसे ब० बल से श्रुत से ब० बलसे शील से ब० बलसे चारित्र से च० चार पु० पुरुष जात रू० रूपसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं सु० श्रुतसंपन्न ए० ऐसे सु० श्रुत चारित्र से च० चार पु० पुरुष जात प० कही सी० शीलसंपन्न ए० कितनेक ऐ० नहीं

ग णो रूवसंपन्ने ४ । एवं बलेणय सुएणय, ४ । एवं बलेणय सीलेणय, ४ । एवं बलेणय चरित्तेणय, ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० रूवसंपन्ने णाममेगे णो सुय संपन्ने ४ । एवं रूवेणय सीलेणय, ४ । रूवेणय चरित्तेणय ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० त० सुयसंपन्नेनाममेगे णो चरित्तसंपन्ने ४ । एवं सुएणय चरित्तेणय ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० त० सीलसंपन्ने नाममेगे णो चरित्तसंपन्ने ४ । एए एकवीसं

है (४) ५ चार प्रकारके पुरुष एक जाति संपन्न है परंतु शील संपन्न नहीं है (४) ६ चार प्रकारके पुरुष एक जाति संपन्न है परंतु चारित्र संपन्न नहीं है (४) ऐसेही ७ कुल और बल, ८ कुल औररूप ९ कुल और श्रुत, १० कुल और शील ११ कुल और चारित्र १२ बल और रूप, १३ बल और श्रुत १४ बल और शील १५ बल और चारित्र, १६ रूप और श्रुत, १७ रूप और शील १८ रूप और चारित्र १९ श्रुत और शील २० श्रुत और चारित्र २१ शील और चारित्र इन इक्कीस बोल पर चौभंगी

च० चारित्र सपन्न प० ये प० इक्कीस मो० भांग भा० कहना ॥ १२ ॥ च० चार फ० फल आ० आंवले जैसे म० मधुर मु० द्राक्ष जैसे मधुर खी० क्षीर जैसे मधुर ख० शक्कर जैसे मधुर ए० ऐसेही च० चार आ० आचार्य आ० आंवले के म० मधुर फ० फल समान जा० यावत् सं० शक्कर जैसे म० मधुर फ० फल समान ॥ १३ ॥ च० चार पु० पुरुष जात प० कही आ० आत्मवैयावृत्य क० करने वाला ए०

भगा भाणियव्वा ॥ १२ ॥ चत्तारि फला प० त० आमलगमहुरे, मुद्दियामहुरे, खारमहुरे, खंडमहुरे । एवामेव चत्तारि आयरिया प० त० आमलगमहुरफलसमाणे जाव खंडमहुरफलसमाणे ॥ १३ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० त० आयवेयावच्चकरे

जानना ॥ १२ ॥ चार प्रकारके फल कहे १ एक फल आंवला जैसामिष्ट, २ एक फल द्राक्ष जैसा मिष्ट ३ एक फल क्षीर जैसा मिष्ट ४ और एक फल शर्करा जैसा मिष्ट ऐसेही चार प्रकारके आचार्य भी कहे जैसे सहमिष्ट हैं अर्थात् दोनों प्रकारकी शिक्षा देनेवाले हैं १ एक द्राक्ष समान मधुर वचनसे हित शिक्षा देवे मानेतो ठिकाने लगावे पापर ३ एक आचार्य क्षीर जैसे मिष्ट हित शिक्षादेवे और ४ एक आचार्य शकरा समान अच्छी २ हित शिक्षादेवे ॥ १३ ॥ चार प्रकारके पुरुष कहे १ एक साधु अपनी वैयावृत्य करे परंतु अन्यकी करे नहीं एकलविहारी साधु २ एक अन्यकी वैयावृत्यकरे परंतु अपनी न करे अभिग्रहधारी ३ एक

किसनेक णा० नहीं प० अन्यकी वे वैयावृत्य क० करने वाला ४। च० चार पु० पुरुष जाते प० कहे क० करना है प० कितनेक णा नहीं प० इच्छता है ॥ १४ ॥ च० चार पु० पुरुष ज त प० कहे अ० अथ (कार्य) क० करने वाला णो० नहीं मा० मान करने वाला ४ ग० गणका अ० काय क० करने वाला ए कितनेक णा० नहीं मा० मान क० करने वाला ४। च चार पु० पुरुष जात प० कहे ग०

णाममेगे णो पव्वयावच्चकरे ४। चत्तारि पुरिसजाया प० त० करेइ णाममेगे वेयावच्च णो पडिच्छइ, पडिच्छइ णाममेगे वेयावच्चं णो करेइ ४। १४ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० त० अट्ठ करे णाममेगे णो माणकरे, माणकरे णाममेगे णो अट्ठ

अपनी वैयावृत्य करे और अन्यकी भी करे स्थविर ४ और एक आत्म वैयावृत्य करे नहीं और अन्यकी भी वैयावृत्य करे नहीं अनशनके करनेवाले। औरभी चार प्रकारके पुरुष १ एक साधु वैयावृत्य करे परंतु अन्यकी पास करावे नहीं, २ एक वैयावृत्य करे नहीं परंतु अन्यकी पास करावे, ३ एक वैयावृत्य करे और अन्यकी पास करावे ४ एक वैयावृत्य करे नहीं और अन्यकी पास करावेभी नहीं ॥ १४ ॥ चार पुरुष १ एक सेवक अर्थ (कार्य) का करनेवाला है परंतु उनका मान नहीं करता है, २ एक अभिमान बहुत करता है परंतु कार्य नहीं करता है, ३ एक कार्य करता है और मानभी करता है, और ४ एक नतो कार्य करता है और न मान करता है चार प्रकारके साधु कहे एक साधु गण (गच्छ)

गणका स० संग्रह क० करने वाला ए० कितनेक णो० नहीं मा० मान करने वाला ४ । ग० गणकी शोभा करने वाला ए० कितनेक णो० नहीं मा० मान करने वाला च० चार पु० पुरुष जात ग० गणशुद्धि क० करने वाला ए० कितनेक णो० नहीं मा० मान करने वाला ४ ॥ १८ ॥ च० चार पु० पुरुष जात प०

करे,एगे अट्ठकरेत्ति माणकरेत्ति एगे णो अट्ठकरे णो माणकरे। चत्तारि पुरिस जाया प० तं० गण-ट्ठकरे णाममेगे णो माणकरे, ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० गणसंगह करे णाममेगे णोमाण करे, ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० गणसोभकरे णाममेगे णोमाणकरे, ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० गणसोहिकरे णाममेगे णोमाणकरे ॥ १५ ॥ चत्तारि पुरिस जाया

के हितका करनेवाला है परंतु मान करे नहीं (४) औरभी चार प्रकारके साधु कहे एक साधु गच्छके लिये वस्त्र पात्रादिकका संग्रह करता है परंतु उसका अभिमान बिल्कुल नहीं करता है (४) चार प्रकारके पुरुष कहे हैं एक साधु गच्छकी शोभा करता है परंतु अभिमान नहीं करता है यों चारों भांगे कहना औरभी चार प्रकारके साधु कहे एक गच्छकी शुद्धि करे परंतु अभिमान करे नहीं यों चार भांगे मानना ॥ १९ ॥ चार प्रकारके साधु पुरुष कहे १ एक साधु कारण विशेषसे साधुका वेष छोडदेवे परंतु धर्म छोडे नहीं २ एक साधु धर्म छोडता है परंतु वेष नहीं छोडता है ३ एक साधु वेषस्यजता है और रूपकोभी त्यजता है ४ एक साधु नतो रूप त्यजता है और नवेष त्यजता है । औरभी चार

कीरा रू० रूप ए० कितनेक म० त्यजता है णा० नहीं ध० धर्म ध० धर्म ए० कितनेक न० त्यजता है णा० नहीं रू० रूप ४ । च० चार पु० पुरुष जात ध० धर्म ए० कितनेक भ त्यजता है णो० नहीं ग० गणसंस्थिति ४ । च० चार पु० पुरुष जात पि० प्रियधर्मी ए० कितनेक णो नहीं द० दृढधर्मी द० दृढधर्मी ए० कितनक णा० नहीं पि० प्रियधर्मी ४ ॥ १३ ॥ च० चार आ० आचार्य प० प्रव्रजनाचार्य

प० त० रूव णाममेगे जहइ नो धम्मं, धम्म णाममेगे जहइ णोरूवं, एगेरूवंपि जहइ धम्मपि जहइ, एगे णा रूवं जहइ णो धम्म जहइ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० धम्मं णाममेगे जहइ णो गणसंठिइं, ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० पियधम्मे णाममेगे णोदढधम्मे, दढधम्मे णाममेगे णो पियधम्मे, एगेपियधम्मेवि, दढधम्मेवि, एगे णो पियधम्मे णो दढधम्मे ॥ १९ ॥ चत्तारि आयरिया प० तं०

प्रकारके पुरुष एक साधु धर्म त्यजता है परंतु गच्छकी मर्यादा नहीं त्यजता है १ एक साधु धर्म नहीं त्यजता है परंतु गच्छकी मर्यादा त्यजता है २ एक साधु धर्म त्यजता है और गच्छकी मर्यादाभी त्यजता है ४ एक नतो धर्म त्यजता है और न गच्छकी मर्यादा त्यजता है । और भी चार प्रकारके पुरुष १ एक प्रिय धर्मी है परंतु दृढधर्मी नहीं है २ एक दृढधर्मी है परंतु प्रियधर्मी नहीं है ३ एक दृढधर्मी है और प्रियधर्मी भी है ४ एक नतो दृढधर्मी है और न प्रियधर्मी है॥१९॥चार प्रकारके आचार्य कहे हैं १ एक आचार्य

पव्वावणायरिए णाममेगे णो उवट्ठावणायरिए, उवट्ठावणायरिए णाममेगे णो पव्वावणा यरिए, एगे पव्वावणायरिएवि उवट्ठावणायरिएवि, एगेणो पव्वावणायरिए णो उवट्ठा-वणायरिए ॥ चत्तारि आयरिया प० तं० उद्देसणायरिए णाममेगे णो वायणायरिए ४ धम्मायरिए॥१७॥चत्तारि अंतेवासी प० तं० पव्वावणंतेवासी णाममेगे णो उवट्ठावण तेवासी ४ धम्मंतेवासी। चत्तारि अंतेवासी प० तं० उद्देसणंतेवासी णाममेगे णो वायणतेवासी

प० कितनेक णो० नहीं उ० उपस्थापनाचार्य ४। ध० चार आ० आचार्य उ० उद्देशनाचार्य णो० नहीं वा० वाचनाचार्य ४। ध धर्माचार्य ॥ १७ ॥ च० चार अ० अंतेवासी प० प्रवर्ज्या के अं० अंतेवासी प० कितनेक णो० नहीं उ उपस्थापना के अं० अंतेवासी ४ ध० धर्म के अ० अंतेवासी [शिष्य] प०

प्रवर्ज्या (दीक्षा) देनेवाले है परंतु उपस्थापनाचार्य (सावधान करनेवाले) नहीं है २ एक उपस्थापनाचार्य है परंतु प्रवर्ज्याचार्य नहीं है ३ एक प्रवर्ज्याचार्य है और उपस्थापनाचार्यभी है ४ एक प्रवर्ज्याचार्यभी नहीं है और उपस्थापनाचार्यभी नहीं है औरभी चार प्रकारके आचार्य कहे हैं १ एक उद्देशनाचार्य (अंगादिसूत्र पढानेवाले) हैं परंतु वाचनाचार्य (अर्थदेनेवाले) नहीं हैं २ एक वाचनाचार्य है परंतु उद्देशनाचार्य नहीं है ३ एक उद्देशनाचार्य है और वाचनाचार्यभी है ४ एक नतो उद्देशनाचार्य है और न वाचनाचार्य है इसमें चौथे धर्मके आचार्य सम्यक्त्वके दाता जानना ॥ १७ ॥ चार प्रकारके अंतेवासी

चार अं० शिष्य उ० उद्देशना के अं० शिष्य वा० वाचना के अं० शिष्य ॥ १८ ॥ च० चार णि० निर्ग्रन्थ रा० रत्नाधिक स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ म० बहुत कर्म करने वाले म० बहुत क्रिया करने वाले आ० परीषह सहन नहीं करने वाले अ० समिति रहित ध० धर्म की अ० आराधना रहित भ० होता है रा० रात्निक स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ अ० अल्प कर्म अ० अल्पक्रिया वाले आ० आतापी स० समिति

४ ॥ १८ ॥ चत्तारि णिग्गंथा प० त० रायणिए समणे निग्गंथे महाकम्मे महाकिरिए, अणायावी अस्समिए धम्मस्स अणाराहए भवइ । रायणिए समणे निग्गंथे अप्पकम्मे, अप्पकिरिए आयावी, समिए, धम्मस्स आराहए भवइ । ओमराइणिए समणे णिग्गंथे महाकम्मे महाकिरिए, अणायावी अस्समिए धम्मस्स अणाराहए

(शिष्य) कहे हैं एक प्रव्रज्योशिष्य (स्वयंदीक्षा लेनेवाला) है परंतु उपस्थापनाशिष्य नहीं है यों चारों भांगे कहना औरभी चार प्रकारके अंतेवासी एक को सूत्र पढाया हुवा है परंतु अंग पढाया हुवा नहीं है यों चारों भांगे कहना चौथे भांगमें श्रावक जानना ॥ १८ ॥ चार प्रकारके निर्ग्रन्थ (साधु) कहे हैं दीक्षा अर्थात् पर्यायमें जो ज्येष्ट होता है सो रत्नाधिक कहा जाता है ऐसा महाकर्मी, बहुत स्थितिके कर्म करनेवाला, प्रमादादिक महान क्रियाकरनेवाला, आतापना व समता रहित रत्नाधिक साधु धर्मका आराधक नहीं होता है १ एक रत्नाधिक साधु कि जो अल्पकर्मी, अल्पस्थितिवाले कर्म करनेवाला, प्रमादादिक

धर्म की आ० आराधना भ० होती है ओ० अल्प समय की दीक्षावाले स० श्रमण णि० साधु म महाकर्म वाले म० महाक्रिया वाले भ० आताप रहित अ० समिति रहित ध धर्म की अ० अनारा धना भ० होता है ओ० अल्प काल के दीक्षित अ अल्पकर्म वाले अ० अल्पक्रिया वाले आ० आताप स समिति युक्त ध धर्म की आ० आराधना भ० होवे । च० चार णि० साध्वी रा० रात्निक साधु समान साध्वी ४ ए० ऐसे । च० चार स० श्रमणोपासक रा० रात्निक स० श्रमणोपासक म० बहुतकर्म करनेवाला त० वैसे च० चार स० श्राविका रा० रात्निका स० श्राविका, म० बहुतकर्म वाली त० वैसे च० चार ग० गमा ॥ १२ ॥ च० चार स० श्रमणोपासक भ० मातापिता समान भा०

भवइ । ओमराइणिए समणे णिग्गंथे अप्पकिरिए आयावी समिए धम्मस्स आराहए भवइ ॥ चत्तारि णिग्गंथीओ प० त० राइणिया समणी णिग्गंथी ४ एवंचेव । चत्तारि समणोवा-सगा प० तं० रायणिए समणोवासए महाकम्मे तहेव । चत्तारि समणोवासियाओ प० तं० रायणिया समणोवासिया महाकम्मा तहेव चत्तारि गमा ॥ १९ ॥ चत्तारि स

की क्रिया जिसको अल्प है और आतापना लेनेवाला है वह धर्माराधक होसकता है ३ एक अवम रात्निक साधु दीक्षामें लघु परंतु बहुत स्थितिवाले कर्म करनेवाला, प्रमादादिककीक्रियावाला और आतापना भी नहीं लेता है वह सत्वहीन होनेसे धर्मका आराधक नहीं होसकता है ४ एक अवमरात्निक साधु (दीक्षामें लघु) कि जो अल्पकर्म करनेवाला आतापना लेनेवाला, समता सहित होता है वह धर्मका आराधक होता है जैसे साधुके चार भांगे कहे ऐसेही साध्वीके चार भांगे, श्रावकके चार भांगे, और श्राविकाके चार भांगे जानना ॥ १० ॥ चार प्रकारके श्रावक कहे १ उपकार किये बिनाही साधु व सतीके

भ्रातृसमान मि० मित्रसमान स० सौकसमान । च० चार स० श्रमणोपासक अ० कांचसमान प० पताका समान स्था० स्थाणुसमान ख० कंटकसमान ॥ २० ॥ स० श्रमणभगवंत म० महावीरके स० श्रमणोपासकको सो० सौधर्मकल्पमें अ० अरुणाभ वि० विमानमें च० चार प० पल्योपमकी ठि० स्थिति प० कही ॥ २१ ॥

मणोवासगा प० त० अम्मापिइसमाणे, भाइसमाणे, मित्तसमाणे, सवत्तिसमाणे । चत्तारि समणोवासगा प० त० अदागसमाणे, पडागसमाणे, खाणुसमाणे, खरकंट समाणे ॥ २० ॥ समणस्सण भगवओ महावीरस्स समणोवासगाणं सोहम्मेकप्पे अरुणाभेविमाणे चत्तारि पलिओवमाइ ठिई प० ॥ २१ ॥ चउहिं ठाणेहिं अहु

हितका कर्ता जो श्रावक होते हैं उनको मातापिता समान कहे हैं २ प्रमाद देखकर क्रोध करे परंतु मनमें जो श्रावक हित इच्छता है सो भाई समान गिने गए हैं, मित्रसमान श्रावक साधुके दोषोंको ढक कर गुण प्रकट करे ४ सौक समान श्रावक साधुके गुणोंको ढककर उनके छिद्रों गवेषते हैं। औरभी चार प्रकारके श्रावक १ एक आदर्श समान श्रावक सो साधु जैसे सूत्रसिद्धांतके भाव प्ररूपे वैसेही अंगीकार करे जैसे दर्पणमें मुखादिक यथातथ्य दीखता है २ पताका समान श्रावक सो विचित्र देशना सुनकर मन अस्थिर करे ३ स्थाणुसमान श्रावककोभी अपना कदाग्रह छोडे नहीं ४ खर कंटक समान श्रावकको जिनको हित शिक्षा देवे तो उपरसें दुर्वचनादि बोले ॥ २० ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीरके दश श्रावककी सौधर्म देवलोक के अरुणाभविमानमें चार पल्योपमकी स्थिति कही ॥ २१ ॥ तत्कालके उत्पन्न हुवे देवताओं देवलोकमें

न० चार ठा० स्थानसे अ० तुतका उ० उत्पन्न दे० देवता दे० देवलोकमें इ० इच्छे मा० मनुष्यलोकमें ए० शीघ्र आ आनको णो० नहीं सं० समर्थ होवे इ० शीघ्र आ० आनेको त० जैसे अ० तुर्तका उ० उत्पन्न द० देवता दे देवलोकमें दि० दीव्य का० कामभोगोंमें मु० मूर्च्छित गि० गृद्ध ग० स्नेहसंबधायुक्त अ० तन्मय स० वह मा० मनुष्य के का० कामभोगों को णो० नहीं आ० आदरकरे णो० नहीं प० जाने णो० नहीं अ० प्रयोजन बं० बांधे णो० नहीं नि० निदान प करे णो० नहीं ठि० स्थिति प० प्रकल्प प० करे अ० अधुनोपपन्न दे देव दे० देवलोक में दि० दीव्य का काम भोग में मु० मूर्च्छित ४ त०

पोववन्ने देवे देवेलोगेसु इच्छेज्जा माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए णोचेव सचाएइ हव्वमागच्छित्तए त० अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे सेण माणुस्सए कामभोगे णो आढाइ णो परियाणाइ णो अट्ठं बंधइ णो नियाण पगरेइ, णो ठिइप्पगप्पं पगरेइ । अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए ४ तस्सण माणुस्सए पेमे वोच्छिण्णे दिव्वे पेमसकन्ते भवइ, ।

से मनुष्य लोकमें आनेको इच्छते हैं परंतु चार कारणसे नहीं आसकते हैं तत्कालके उत्पन्न हुवे देवताओं दीव्य कामभोगोमें मूर्च्छित, गृद्ध व अतृप्तबनकर मनुष्यके कामभोगोंको आदर करे नहीं और मनुष्यके गुणोंको असार व कुत्सित जाने इसलिये ऐसा नियाणाभी करे नहीं कि मैं भवांतरमें ऐसे भोगमें रहूं २

उसका मा० मानुष्यिक पे० प्रेम णो० नष्ट दि० देवताका पे० प्रेम सं० संक्रान्त भ० होताहै अ० अधुनोपपन्न दे० देव दे देवलोकमें दि० दीव्य का० कामभोगोंमें मु मूर्च्छित त० उसको ए० ऐसा भ० होताहै इ० अभी ग० जाऊंगा मु० मुहूर्तमें ग० जाऊंगा ते० उस का० समयमें अ० अल्प आयुष्यवाले म० मनुष्यों का० मरणसे सं० संयुक्त भ० होते हैं अ० अधुनोपपन्न दे० देवलोकमें दि० दीव्यकामभोगोंमें मु० मूर्च्छित त उसको म० मनुष्यकी गं० गंध प० प्रतिकूल प० प्रतिलोम भ० होतीहै च ऊर्ध्व म० मनुष्यकी गं गंध च० चार पं० पांच जो० योजन स०शी ह० शीघ्र आ० आतीहै इ० इनसे च० चार ठा० स्थानकसे अ० अधुनोपपन्न दे० देव दे० देवलो

अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए ४ तस्सण एव भवइ इयण्हि गच्छं मुहुत्तेण गच्छ तेणं कालेण मप्पाउआ मणुस्सा कालधम्मुणा सजुत्ता भवति । अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए ४ तस्सण माणुस्सए गधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवइ उड्ढपियणं माणुस्सए गधे मचारि पचजोयणसयाइ हव्वमा

तत्कालके उत्पन्न देवताओं दीव्य कामभोगमें मूर्छित हुवा मनुष्य भव संबंधी मातपिताका प्रेम व स्नेहका विच्छेद होता है इसस मनुष्य भवमें नहीं आता है २ तत्कालके उत्पन्न हुए देवताओं दीव्य कामभोगोंमें मूर्छित मन ऐसी इच्छा करे कि मैं इस नाटक देखकर दो घटिकामें आऊं परंतु एक नाटक देखते

कर्म इ० इच्छ मा० मनुष्यपाकमें इ० शीघ्र आ० आनका णा० नहीं सं० समर्थहोव इ० शीघ्र आ० आनेका ॥ २२ ॥ च पार कारनसे अ० अधुनोपपन्न दे० देवता दे० देवलोकमें इ० इच्छे मा० मनुष्यलोकमें इ० शीघ्र मा० आनेको स० समर्थहोवे इ० शीघ्र आ० आनेको अ० अधुनो पपन्न द० देव द देवलोकमें दि० दीव्य का० कामभोगोमें अ० अमूर्च्छित मा० यावत् अ० पृ

गच्छइ ४ इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्नेदेवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसलोग हव्वमागच्छित्तए णो चेवणं संचाएइ हव्व मागच्छित्तए ॥ २२ ॥ चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोग हव्व मागच्छित्तए संचाएइ हव्वमाग च्छित्तए त० अहुणोववन्नेदेवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए जाव अण-

दो हजार वर्ष व्यतीत होते हैं इससे मनुष्यभवमें अल्प आयुष्यवाले मरणको प्राप्त होवे और फीर आनेका होवे नहीं ४ तत्काल के उत्पन्न हुवे देवताओ देवलोकमें दीव्य काम भोगोमें आसक्त गृद्ध व मूर्च्छित होतेहुवे मनुष्यलोकके मृतक सर्प गो जैसी गंध ५०० योजन पर्यंत ऊंचे जाती है ऐसी विपरीत गंध इन्द्रिय व मनको प्रतिकूल होनेसे नहीं आते हैं ॥ २२ ॥ तत्कालके उत्पन्न हुवे देवता मनुष्यलोकमें आनेको वांच्छे और चार कारन शीघ्र आसकते हैं १ तत्कालका उत्पन्न हुवा देवता देवलोकके दीव्य काम भोगों को अनित्य जानकर उसमें अनासक्त, अगृद्ध, बनता हुवा एसा विचार करे कि मनुष्य भवमें मुझे प्रतिबोध देने

यक्‌ त० उसको ए० ऐसा म० होताहै अ० है स० निश्चयार्थमें म० मेरे मा० मनुष्यभवमें आ० आचार्य उ० उपाध्याय प० प्रवर्तक थे० स्थविर ग० गणी ग० गणधर ग० गणविच्छेदक जे० जिन के प० प्रभावसे म० मुझे इ० इस ए० ऐसी दि० दीव्य दे० देवऋद्धि दि० दीव्य दे० देव द्युति स० ऐसी प० प्राप्तहुइ म० भोगमन्मुखआइ तं० इसलिये ग० जाताहूं ते० उन भ० भ गवन्तको वं० वांदताहूं जा० यावत्‌ प० सेवाकरताहूं अ० अधुनोपपन्न दे० देव दे० देवलोकमें जा० यावत्‌ अ०नन्यपनहीं त उसको ए० ऐसा म० होताहै ए० यह म मनुष्यभवमें णा० ज्ञानी त० तपस्वी

अज्झोववण्णे तस्सणं एवं भवइ अत्थिखलु मम माणुस्सए भवे आयरिएइवा उवज्झाएइवा, पवित्तीवा,थेरेइवा गणीइवा, गणहरेइवा, गणावच्छेएइवा, जेसिं पभावेण मए इमा एयारूवा दिव्वा देवड्ढी दिव्वा देवजुई लद्धा,पत्ता,अभिसमण्णागया तं गच्छामिणं ते भगवंते वंदामि जाव पज्जुवासामि। अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु जाव अणज्झोववण्णे तस्सणं

वाले आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक, गणी,गणधर, व गणावच्छेदक रहे हुए हैं और उनके प्रभावसे ही ऐसी दीव्य देवर्द्धि, द्युति की प्राप्ति हुई है इसलिये मैं वहां जाऊं और उन भगवन्तको वंदना नमस्कार यावत्‌ सेवाकरूं २ तत्कालका उत्पन्न हुवा देवता देवलोकके दीव्य कामभोगोंमें अ न्नक बन ऐसा विचार करे कि मनुष्यभवमें ज्ञानी, तपस्वी, वा दुष्कर करणी करनेवाले पुरुप रहेहुवेहैं इसलिये मैं वहां जाऊं और उन भगवन्तको

म० अति दुष्कर का० करनेवाले त० इसलिये ग० जाताहूं ते० उन भ० भगवन्तको वं वांदताहूं जा० यावत् प० पर्युपासना करताहूं म० अधुनोपपन्न दे० देव दे० देवलोकमें जा० यावत् म० मनुष्य नहीं त० उनको ए ऐसा म० होताहै अ० है म० मेरे मा० मनुष्यकेभवमें मा० माता जा यावत सु० पुत्री त० इसलिये ग जाताहूं त० उनकी अ० समीप पा० प्रकटहोऊंगा पा० देखो ता० तपो मे० मरी इ० यह ए० ऐसी दि० दीव्य दे देवऋद्धि दि० दीव्य दे० देवद्युति ल० लब्ध प० प्राप्त अ० सन्मुखआयीहुइ अ० अधुनोपपन्न दे० देव दे० देवलोकमें जा० यावत् अ सन्मपनहीं त० उस

एव भवइ अत्थि मम माणुस्सए भवे मायाइ वा जाव सुण्हाइवा तगच्छामिणं तोसि मातिय पाउब्भवामि पासंतु तामे इममेयारूव दिव्वं देविड्ढि दिव्व दिव्जुइ, लद्ध पत्त अभिसमण्णागय । अहुणोववन्नेदेवे देवलोएसु जाव अणज्झोववन्ने तस्सण एव भवइ

वन्ना नमस्कार यावत सेवा करूं २ तत्कालका उत्पन्न हुवा देवता दीव्यकामभोगोंमें अनासक्त बन ऐसा विचार करे कि मनुष्यभव संबंधी मेरे माता, पिता, यावत् स्नुषा है इसलिये मैं वहां जाऊं और उनको बत लाऊं कि मुझे देवताकी विमानादिक की संपत्ति, व शरीरकी कान्ति प्रमुख प्राप्त हुवे हैं ४ तत्काल का उत्पन्न हुवा देवता दीव्य कामभोगोंमें अनासक्त बन ऐसा विचार करे कि मनुष्यभव संबंधी मेरे मित्र सहचारी

को ए० एसा म होताहै भ० है म० मरे मा० मनुष्यके भ० भवमें पि० मित्र सु० सुखी, स० स्नेहवंत स० संमति करनेवाला ते० उनका भ० इमसे म० अन्योन्यके सं० संकेत प० स्मरणकियाहुवा भ० हो ताहै जो० जो मे० मेरेसे पु० पहिले च० चवे से० वे सं० उपदेशदे इ० इन आ० यावत सं० समर्थ होवे इ० शीघ्र आ० आनेको ॥२२॥ च० चार ठा० कारनसे लो० लोकमें अंधकार सि० होवे अ० अरिहंतका वो० व्यवच्छेदमे अ० अरिहंतने प० प्ररूपा ध० धर्म वो० विच्छेदजाते पु० पूर्वगत

अत्थिण मम माणुस्सए भवे मित्तेइवा,सुहीइवा,सहाएइवा सगइएवा तेसिं च णं अम्हे अण्णमण्णस्स संगारे पडिसुए भवइ, जोमे पुव्विं चयइ से संबोहियव्वे इच्चेएहिं जाव संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ॥ २२ ॥ चउहिं ठाणेहिं लोगंधगारे सिया तं• अरिहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं, अरहंतपण्णत्ते, धम्मेवोच्छिज्जमाणे, पुव्वगए वोच्छिज्जमाणे, जायए

आदि बहुत हैं और जब मनुष्यभवमें थे उस समय ऐसा संकेतकियाथा कि देवतामेंसे पहिले जो चवकर मनुष्य भवमें जावे उसको प्रतिबोध देना इन चार कारनों से देवता मनुष्य भवमें आवे ॥ २२ ॥ चार कारनसे लोकमें अंधकार होताहै १ अरिहंतका विरह होताहै तब भावसे अंधकार होताहै (छत्रभंगादि उत्पात होवे इसलिये) २ अरिहंत भणित धर्मविच्छेदहोवे तबअंधकार होता है (एकान्त दुषम छठा आरा प्रवर्तता है इसलिये) ३ चउदह पूर्वका ज्ञानविच्छेदहोवे तब अंधकार होवे (आगमकीहानि होनेसे) जाव

मा० निच्छद्जात आ० आगतज (अग्नि) मा० विच्छद्मान च० चार ठा० स्थान के लो० लोकउद्योत भि० होवे अ० अरिहतका ज० जन्महोते अ० अरिहंत प० दीक्षालेते अ० अरिहतके ज्ञानउत्पन्नकी महि मामें अ० अरिहतके प० निर्वाणक म० महिमामें ए० ऐसे दे देवअंधकार दे० देवद्युति दे० देवकालि दे देवकहकह प० चारकारनस दे० देवेन्द्र मा मनुष्यलोकमें ह० शीघ्र आतेहैं ए० ऐसे ज० जैसे ति० तीनस्थानकमें आ० यावत् लोकान्तिक देव मा० मनुष्यलोकमें ह शीघ्र आ०आमकतेहैं अ०अरिहतका जन्म

जा वोच्छिज्जमाणे।चउहिं ठाणेहिं लोउज्जोएसिया त • अरिहंतेहिं जायमाणेहिं अरहतेहिं पव्वय माणेहिं अरहंताण णाणुप्पायमहिमासु,अरहताण परिनिव्वाणमहिमासु।एवं देवधगारे,देवुज्जो-ए देवसन्निवाए देवुक्कालिया,देवकहकहाए।चउहिं ठाणेहिं देविंदा माणुसंलोगहव्वमागच्छति, एवं जहा तिठाणे जाव लोगतियादेवा माणुसंलोगं हव्वमागच्छेज्जा त • अरहंतेहिं जयमाणे-

तेज (बादर अग्नि) का विच्छेद होनेसे द्रव्यसे अंधकार होवे (दीपकका अभावसे)। चार कारणसे लोकमें उद्योत होता है १ अरिहंतका जन्महोते २ अरिहंत दीक्षालेते ३ अरिहतको केवल ज्ञान उत्पन्न होवे, और ४ अरिहंतका निर्वाणक महिमामें ऐसेही उपर्युक्त चार कारनोंसे देवतामें अंधकार होता है व उद्योत होता है, अरिहंतके जन्मादि चार कारनोंसे देवताओंका समवाय, देवोत्कालिका, देवकहकह होवे और देवेन्द्रभी इनही चार कारनोंसे मनुष्य लोगमें आवे इसका सब अधिकार तीसरे ठाणेमें जैसे कहा वैसे कहना यावत्

हारे अ० अरिहंतके निर्वाणकी म० महिमामें ॥ २४ ॥ च०चार दु०दुःखशैय्यी त० वहां इ० यह प० प्रथम दु० दुःखशैय्या से० अब मुं० मुंड (अनगार) भ० होकर अ० गृहस्थावाससे अ० अनगारपना प० प्रव्रजित नि० निर्ग्रन्थके पा० प्रवचन में स० शंकित कं० कांक्षित वि० फल में शंकाशील भे० भेद को स० प्राप्त क० कालुष्य (पाप) को स० प्राप्त नि० निर्ग्रन्थ के पा० प्रवचन को णो० नहीं स० श्रद्धता है णो० नहीं प० प्रतीति करता है णो० नहीं रो० रुचता है नि० निर्ग्रन्थ के पा० प्रवचन को अ० अश्रद्धते अ० अप्रतीतिकरते अ० अरुचिकरते म० मन उ० ऊंचा नीचा नि० करे वि० धर्मभ्रष्ट अ०

हिं जात्र अरहताणं परिनिव्वाण माहिमासु ॥ २४ ॥ चत्तारि दुहसेज्जाओ प० त० तत्थ खलु इमा पढमा दुहसेज्जा सण मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए निग्गंथे पावयणे संकिए, कंखिए, वितिगिच्छिए, भेयसमावण्णे, कलुससमावण्णे, निग्गथं पावयण णो सद्दहइ, णो पत्तियइ, णो रोएइ, निग्गथ पावयण असद्दहमाणे अपत्तियमाणे, अरोएमाणे मण उच्चावय नियच्छइ विणिघायमावज्जइ पढमा दुह

लोकान्तिक देवतकका सब अधिकार जानना॥२४॥चार प्रकारकी दुःखशैय्या कही १ कोई साधु मुंड होकर गृहस्थावासमेंसे साधुपना अंगीकारकर निर्ग्रन्थके प्रवचन (जिनवचन) में शंका, अन्यमतकी कांक्षा, किये हुवे कर्मके फलमें संदेह वगैरह करे और उन वचनोंकी श्रद्धा,प्रतिती, व रुचिकरे नहीं इसतरह श्रद्धा प्रतिति व रुचि नहीं करता हुवा

होवे प० प्रथम दु० दु:ख शैय्या अ० अथ अ अपर दो० दूसरा दु० दु:ख शय्या से० अथ मु मुंड
म होकर अ० गृहस्थपना से अ० साधु पना प० प्रव्रजित स० अपने ला० लाभ मे णो० नहीं तु०
संतोष पावे प० अन्य के ला० लाभ का आ आस्वादन करे पी० इच्छे प० प्रार्थना करे अ० अभिलाषा
करे प० अन्य के ला० लाभ का आ० आस्वादता आ पामता अ० अभिलाषा करता म० मन उ०
ऊंचा नीचा नि० करे वि० धर्म भ्रष्टको आ० प्राप्त होवे दो० दूसरी दु० दु:ख शैय्या अ० अथ अ०
अपर त० तीसरी दु० दु:ख शैय्या से० अथ मु० मुंड भ० होकर अ० गृहस्थपना से अ० साधुपना प०

सेज्जा। अहावरा दोच्चादुहसेज्जा सेणमुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए सएणं
लाभेणं णो तुस्सइ, परस्स लाभं आसाइ पीहेइ पत्थेइ, अभिलसइ परस्स लाभं आसा
एमाणे जाव अभिलसमाणे मणउच्चावयति नियच्छइ विणिघाय मावज्जइ दोच्चा दुहसेज्जा।
अहावरा तच्चा दुहसेज्जा—सेणमुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए दिव्वेमाणु
स्सए कामभोगे आसायइ जाव अभिलसइ दिव्वे माणुस्सए कामभोए आसाएमाणे

मनको ऊंच नीच करे और इससे संसार परिभ्रमण करे यह प्रथम दु:खशैय्या २ कोई पुरुष मुंड बनकर
व गृहस्थावासमेंसे अनगार बनकर अपने वस्त्र पात्रादिमें संतोष नरखे परंतु अन्य उपकरणकी वांछा करे
और इस तरह वांच्छा करता हुवा मन ऊंचा नीचा करे जिससे संसार परिभ्रमण करे यह दूसरी [illegible]

प्रव्रजित दि० दीव्य मा० मनुष्य के का० कामभोगों को आ० आस्वादे जा० यावत् अ० अभिलाषा करे दि० दीव्य मा० मनुष्य के का० कामभोगों को आ० आस्वादता जा० यावत् अ० अभिलाषा करता म० मन उ० ऊंचा नीचा णि० होवे वि० धर्मभ्रष्ट आ० प्राप्त होवे त० तीसरी दु० दुःख शैय्या अ० अथ अ० अपर च० चौथी दु० दुःख शैय्या से० अथ मुं० मुंड भ० होकर जा० यावत् प० प्रव्रजित त० उसको ए० ऐसा भ० होवे भ० जब अ० मैं अ० गृहवास में आ० वसता त० तब अ० मैं, स चंपीकरना प मर्दन करना गा० तेल चोलना ग० गात्रप्रक्षालन ल० प्राप्त करता ज० जब से अ० मैं

जाव अभिलसमाणे मणं उच्चावयं णियच्छइ, विणिघायमावज्जइ तच्चा दुहसेज्जा ।
अहावरा चउत्था दुहसेज्जा सेण मुंडेभवित्ता जाव पव्वइए तस्सण मेव भवइ जयाण
अहमगारवास मावसामि तयाणमह संवाहण परिमद्दण गाउब्भंग गाउच्छोलणाइ
लभामि जप्पभियंचणं अहंमुंडे भवित्ता जाव पव्वइए तप्पभियचणं अहं संवाहण
जाव गाउच्छोलणाइ आसाएइ जाव अभिलसइ सेणं संवाहण,जाव गाउच्छोलणाइ

३ कोई पुरुष दीक्षा लेकर मनुष्य संबंधी कामभोगोंको वांच्छता ,हुवा मन ऊंचा नीचा करे इससे संसारमें परिभ्रमण करे यह तीसरी दुःखशैय्या ४ कोई मुंड बनकर व दीक्षा लेकर ऐसी चिन्तवना करे की जब मैं गृहस्थावासमेंथा तब शरीरको सुखकारी तेलकी मर्दना करताथा और शरीर प्रक्षालन

मु० साधु भ० होकर जा० यावत् प० प्रव्रजित त० उसदिन से अं० में स० सबाधन जा० यावत गा० गात्र प्रक्षालन आ० आस्वादता है जा० यावत् अ अभिलाषा करता है से० यह स० सबाधन जा० यावत् गा० गात्र प्रक्षालन आ० आस्वादता जा० यावत् म० मन उ० ऊंचा नीचा होवे वि० विनिघात को आ० प्राप्त होवे च० चौथी दु० दुःख शैय्या ॥ २५ ॥ च० चार सु० सुख शैय्या प० प्ररूपी त० उस में स० निश्चयार्थ में इ० यह प० प्रथम सु० सुख शैय्या से अब मु० मुंड भ० होकर अ० गृह स्थपना से अ० साधुपना प० प्रव्रजित नि० निर्ग्रन्थ के पा० प्रवचन में नि० निश्शंकित नि० निकांक्षित

आसाएमाणे जाव मण उच्चावच नियच्छइ विणिघाय मावज्जइ चउत्था दुहसेज्जा ॥ २५ ॥ चत्तारि सुहसेज्जाओ पण्णत्ताओ त० तत्थ खलु इमा पढमा सुहसेज्जा सेण मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए निग्गथे पावयणे णिस्सकिए, णिक्कंखिए, णिव्वितिगिच्छिए, णोभेयसमावण्णे णो कलुससमावण्णे, निग्गथ पावयण सद्दहइ पत्तियइ रो

अभिमत करताथा परंतु जिस दिनसे दीक्षा ली है उस दिनसे शरीरको तेलमर्दन या प्रक्षालन प्रमुख कुच्छभी नहीं मीलता है फीर उसकी वांच्छा करता हुवा मन ऊंचानीचाकरे जिससे संसार परिभ्रमन होवे ॥ ७ ॥ चार प्रकारकी सुखशैय्या कही १ कोइ हलुकर्मी जीव प्रवर्जालेकर जिनप्रवचनमें शंका, कांक्षा, वितिगिच्छा, भेद व कलुषता रहित बने और जिनवचनोंकी यथातथ्य रीतिसे श्रद्धा, रुचि व प्रतीति कर

णि०वाच्या रहित णो०नहीं भे भेद स०माससणो०नहीं क०कालुष्य स मासणि०निर्ग्रन्थ के पा०प्रवचनको स० श्रद्धताहै प प्रतीतिकरता है रो रुचिकरता है णि०निर्ग्रन्थ क पा० प्रवचन स०श्रद्धते प०प्रतीति करते रो० रुचिकरते णो० नहीं म० मन उ० ऊंचा नीचा नि करता है णो० नहीं वि० धर्मभ्रष्ट का आ० प्राप्त होता है प० प्रथम सु० सुखशैय्या अ० अथ अ० अपर दो० दुसरी सु० सुखशैय्या से० अथ मुं० मुंड भ० होकर जा० यावत् प० प्रव्रजित स० अपने ला लाभ से तु० सन्तुष्ट होता है प० अन्य के ला० लाभ को णो० नहीं आ० आस्वादताहै णो० नहीं पी०इच्छताहै णो० नहीं प०प्रार्थताहै णो० नहीं अ०

एइ निग्गंथं पावयणं सद्दहमाणे पत्तियमाणे, रोएमाणे, णो मणं उच्चावचं नियच्छइ णो विणिघायमावज्जइ पढमा सुहसेज्जा । अहावरा दोच्चा सुहसेज्जा सेणं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए सएण लाभेणं तुस्सइ, परस्सलाभ णो आसाएइ, णो पीहेइ, णो पत्थेइ, णो अभिलसइ परस्सलाभ मणासाएमाणे जाव अणभिलसमाणे णो मण उच्चावय णियच्छइ णोविणिघायमावज्जइ, दोच्चासुहसेज्जा । अहावरा तच्चा सुहसेज्जा सेण मुंडे

इस तरह श्रद्धा रुचि व प्रतीति करता हुवा ऊंचा नीचा मन करे नहीं और इससे संसारमें परिभ्रमण करने कामी होवे नहीं यह प्रथम सुखशैय्या २ कोई दीक्षा लेकर स्वतःके लाभमें संतोषरखे और अन्यके लाभकी इच्छा करे नहीं इसतरह प्रवर्तता हुवा ऊंचानीचा मन करे नहीं और धर्मसे भ्रष्ट होवे नहीं

अभिलाषा करता है प० अन्य के ला लाभ का अ० नहीं आस्वादता भा० यावत् अ० नहीं अभिलाषा करता णो० नहीं म० मन उ० ऊंचा नीचा णि० करे णो० नहीं वि० धर्मध्वंश आ० प्राप्त होवे दो० दूसरी सु० सुखशैय्या अ० अथ अ० अपर त० तीसरी सु० सुखशैय्या से० अथ मु० मुंड जा० यावत प० प्रव्रजित दि० दीव्य मा० मनुष्य क का० कामभोगों को णो० नहीं आ० आस्वादता जा० यावत णो नहीं अ० अभिलाषा करता दि० दीव्य मा० मनुष्य के का० कामभोगों को अ० नहीं आस्वादता मा० यावत् अ० नहीं अभिलाषा करता णो० नहीं म० मन उ० ऊंचा नि० करे णो० नहीं वि० धर्मध्वंस आ प्राप्त होवे त० तीसरी सु० सुखशैय्या अ० अथ अ० अपर च० चौथी सु० सुखशैय्या से० अत्र मु साधु मा० यावत् प प्रव्रजित त० उसको प० ऐसा भ० होवे ज० जो अ

जाव पव्वइए दिव्वमाणुस्सए कामभोगे णो आसाएइ जाव णो अभिलसइ दिव्व-माणुस्सए कामभोगे अणासाएमाणे जाव अणभिलसमाणे णो मणं उच्चावयं नियच्छइ णो विणिघाय मावज्जइ तच्चासुहसेज्जा । अहावरा चउत्था सुहसेज्जा सेण मुंडे जाव पव्वइए तस्सणमेवं भवइ, जइ ताव अरहंता भगवंता हट्ठा, आरोग्गा, बलिया, कल्लस रीरा, अन्नयराइं ओरालाइं, कल्लाणाइं, विउलाइं, पयत्ताइं, पग्गहियाइं, महाणुभागाइं,

जिससे संसार परिभ्रमण कर नहीं यह दूसरी सुखशैय्या ॥ कोई दीक्षा लेकर मनुष्य संबंधी कामभोगोंकी इच्छा प्रार्थना करे नहीं और इसतरह अभिलाषा नहीं करता हुवा ऊंचा नीचा मनभी करे नहीं और इससे

अरिहंत भ० भगवंत ह० हर्षवन्त आ० आरोग्य ब० बलवाले क० कल्प शरीर (संपूर्ण इन्द्रियवाले) अ० अन्य उ० उदार क० मांगलिक वि० विपुल प० उत्कृष्ट संयम वाले प० आदर सहित म० महानुभाग क० कर्मक्षय करने वाले त० तप कर्म प० अंगीकार करते हैं कि० क्या अ० मैं अ० आइ हुइ प० पास आइ हुइ वे० वेदना णो० नहीं स० सम्यक् प्रकार से स० सहनकरुं ति० क्रोध रहित सहनकरुं अ० अदैन्यपना से सहन करुं म० मुझे अ० आइहुइ व पास आइ हुइ स० सम्यक् प्रकार से अ० नहीं सहवे अ० नहीं खमसे अ० नहीं अहियासते कि क्या अ० अन्य क० करे ए० एकांत पा० पाप

कम्मक्खयकरणाइं तवोकम्माइं पडिवज्जंति किमंगपुण अहं अज्झोववगामिओ वक्कामिय वेयण णो सम्मं सहामि, खमामि, तितिक्खेमि, अहियासेमि, मम च णं अज्झोववगामिओ वक्कामिय सम्म मसहमाणस्स अखममाणस्स अतितिक्खेमाणस्स अणहियासेमाणस्स किंमण्णे कज्जइ एगंतसो पावेकम्मे कज्जइ, ममंचणं मज्झोववगामिओ जाव सम्म सहमाणस्स

संसारमें परिभ्रमणभी करे नहीं ४ कोई दीक्षा लेकर ऐसा विचार करेकी अरिहंत भगवंत कि जो हर्षवंत, आरोग्य, बलवंत, इन्द्रिय व शरीरके धणि ये वेभी मांगलिकरूप, उत्कृष्ट संयम सहित, महानुभाग, अचिंत्य शक्तिवाले, अष्टकर्मके क्षयकरनेवाला तप, अंगीकार करते थे तो मैं उत्पन्न हुई वेदना क्यों न सहन करुं

कर्म क० करे म० मुझे अ० आइहुइ जा० यावत् म० सम्यक् प्रकार से स० सहते जा० यावत् अ० अहियासते किं० क्या अ० अन्य क० करे ए० एकान्त मे० मुझे णि० निर्जरा क करे च० चौथी सु० सुखशैय्या ॥ २६ ॥ च० चार अ वाचनादेने अयोग्य अ० अविनीत वि० विगय में प० आसक्त अ० क्रोध वा सुक्षा मा० कपटी च० चार वा० वांचनादेने योग्य वि० विनीत अ० विगय में अनासक्त वि० क्रोध रहित अ माया रहित ॥ २७ ॥ च० चार पु० पुरुष जात प० कहीं आ० आत्मंभर [अ

जाव अहियासेमाणस्स किमण्णे कज्जइ एगंतसो मे णिज्जराकज्जइ चउत्था सुहसेज्जा ॥ २६ ॥ चत्तारि अवायणिज्जा प० तं० अविणीए, विगइप्पडिबद्धे, अविउसवियपाहुडे, मायी । चत्तारि वायणिज्जा प० त० विणीए, अविगइपडिबद्धे, विउसवियपाहुडे, अमायी ॥ २७ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० त० आयभरे णाममेगे णो पर-

यदि उत्पन्न हुई वेदना सहन नहीं करुगातो नये कर्मोंकी उपार्जना होगी और सम्यक प्रकारसे सहन करूगा तो एकान्त निर्जरा होगी यह चौथी सुखशैय्या ॥ २६ ॥ चार पुरुष वाचनादेने अयोग्य है १ अविनीत २ दुग्धादि विगयमें गृद्ध ३ क्रोधी और ४ मायी चार पुरुष वाचनादेने योग्य हैं विनयवंत, विगयमें अनासक्त, क्रोधरहित और मायाकपट रहित ॥ २७ ॥ चार प्रकारके पुरुष कहे हैं –१ एक अपनाही कार्य करते हैं परंतु अन्यका कार्य नहीं करते हैं (तीर्थंकर दीक्षालियेबाद मौनरखते हैं) २ एक पुरुष अन्यका

पना काय करने वाला ३ णो० नहीं प० परका काय करने वाला प० परका कार्य करने वाला ए० कितनक णो० नहीं आत्मभर ४ ॥ २८ ॥ च० चार पु० पुरुप जात दु० दुर्गतिक ए० कितनेक दु० दुगतिक दु० दुर्गसिक ए० कितनेक सु० सुगातिक ४ । च० चार पु० पुरुप जात दु० दुगतिक ए०

मरे, परभरे णाममेगे णो आयभरे, एगे आयंभरेवि परभरेवि, एगे णो आयंभरे णो परंभरे ॥ २८ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० दुग्गए णाममेगे दुग्गए, दुग्गए णाममेगे सुग्गए, सुग्गए णाममेगे दुग्गए, सुग्गए णाममेगे सुग्गए। चत्तारि पुरिस जाया प० तं० दुग्गए णाममेगे दुव्वए, दुग्गए णाम एगे सुव्वए, सुग्गए णाममेगे दुव्वए, सुग्गए णाम एगे सुव्वए । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० दुग्गए णाममेगे दुप्पडि

कार्य करता है परंतु अपना कार्य नहीं करता है ३ एक अपना कार्यभी करता है और अन्यका कार्यभी करता है, ४ एक नतो अपना काय करता है और न अन्यका कार्य करता है ॥ २८ ॥ चार प्रकारके पुरुप कहे हैं—१ एक पुरुप द्रव्यसे दुर्गत (दारिद्री) और भावसे दुर्गत (उपकारादि रहित) २ एक द्रव्यसे दरिद्री और भावसे उपकारादिगुण सहित ३ एक द्रव्यसे धनवंत और भावसे उपकारादिगुण सहित ३ एक द्रव्यसे धनवंत और भावसे उपकारादिगुण रहित ४ एक द्रव्यसे धनवंत और भावसे उपकारादिगुण सहित ॥ चार प्रकारके पुरुप कहे हैं—१ एक द्रव्यसे दरिद्री और भावसे व्रतव्रत पालनेवाला, २

कितनेक दु दुर्गतिक ४ । दु० दुष्पस्थानेद सु सुमत्यानन्द । दु० दुर्गतिगामी सु० सुगति गामी दु दुर्गति में गया हुवा सु सुगति में गया हुवा ॥ २० ॥ च० चार पु० पुरुष जात त० अधकार ए० कितनेक त० अंधकार वाले त० अंधकार वाल ए० कितनक जो० ज्योतिवाले ८ । त० तमबल

यार्णदे, दुग्गए णाममेगे सुप्पडियाणदे ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० त० दुग्गए णाममेगे दुग्गइगामी, दुग्गए णाममेगे सुगइगामी ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० दुग्गए णाममेगे दुग्गइगए, दुग्गए णाममेगे सुगइगए, ४ ॥ २१ ॥ चत्तारि पुरिस आया प० त० तमेणाममेगेतमे, तमेणाममेग जोई, जोई णाममेगे तमे, जोईणाममेगे जोई । चत्तारि पुरिस जाया प० त० तमेणाममेगेतमबले, तमेणाममेगेजोइबले,

एक द्रव्यसे दरिद्री और भावसे अच्छे व्रत पालनेवाला, ३ एक द्रव्यमे धनवंत और भावसे सराब व्रत पालनेवाला ४ एक द्रव्यसे धनवंत और भावसे अच्छेव्रत पालनेवाला ॥ चार प्रकारके पुरुष कहे हैं—१ एक द्रव्यसे दरिद्री और भावसे किया उपकार नहीं जाननेवाला है; यों चार भांगे कहना ॥ चार प्रकारके पुरुष एक द्रव्यसे दरिद्रि और भावसे दुर्गतिगामी यों चार भांगे ॥ २२ ॥ चार प्रकारके पुरुष कहे हैं:—१ एक पहिले अज्ञानी और पीछे भी अज्ञानी २ एक पहिले अज्ञानी था, पीछे ज्ञानी ३ एक पहिले ज्ञानी था, और पीछे अज्ञानी हुवा, ४ एक पहिले ज्ञानी था और पीछे भी ज्ञानी रहा । चार प्रकारके पुरुष कहे:—१ एक पुरुष कर्मसे

जा० ज्योतिबल । त० तमबल प० मज्वलन जा० ज्योतिबल मज्वलन ४ ॥ ३० ॥ च० चार पु० पुरुष जाव प० परिज्ञात कर्म वाले ए किसनेक णो० नहीं प० परिज्ञात संज्ञावाले ४ । च० चार पु० पुरुष

जोईणाममेगे तमबले, जोईणाममेगे जोईबले ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० त० तमेणाममेगे तमबलपज्जलण तमे णाममेगे जोईबलपज्जलणे, ४ ॥३०॥ चत्तारि पुरिस जाया प० त० परिण्णायकम्मे णाममेगे णो परिण्णायसण्णे, परिण्णायसण्णे णाममेगे णोपरिण्णायकम्मे, एगे परिण्णायकम्मेवि परिण्णायसण्णेवि एगे णोपरिण्णायकम्मे णोपरिण्णायसण्णे ॥ चत्तारि पुरिस जाया पण्णत्ता तं० परिण्णायकम्मे णाममेगे णोपरिण्णाय गिहावासे परि

तम और बलमें भी तम अर्थात् पापकर्म करनेवाले बल २ एक ज्योति पुरुष अच्छे कर्म करनेसे उज्वल स्वभावी तो है परंतु बल तम है अर्थात् क्वचित चौरादिक कर्म करनेवाला है ३ एक पुरुष कर्म में उज्वल और कुकर्म भी नहीं करनेवाला ४ एक पुरुष कुकर्मी और बलमें भी हीन ॥ और भी चार प्रकारके पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष तम (पापी) है और मिथ्यात्व अज्ञान अंधकारादिसे आनंद मानता है २ एक पुरुष पापी तो है परंतु सम्यक्त्व या सूर्यकी ज्योति वगैरह में आनंद मानता है ३ एक ज्ञानी है परंतु अज्ञानमें आनंद मानता है और ४ एक ज्ञानी है और ज्ञानमें आनंद मानता है ॥ ३० ॥ चार प्रकारके पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष परिज्ञात कर्मी (ज्ञानपरिज्ञा से आरंभ परिग्रह को स्वरूप जानकर प्रत्याख्यान

जात प० परिज्ञात कमा ए० कितनेक णो० नहीं प० परिज्ञात गृहवास च० चार पु० पुरुष जात ५ परिज्ञातमती ए० कितनेक णा० नहीं प० परिज्ञात गृहवास ४।॥ ३१ ॥ च० चार पु० पुरुष जात

ण्णाय गिहावासे णाममेगे णोपरिण्णायकम्मे ४। चत्तारि पुरिस जाया प० त० परि ण्णायसण्णे णाममेगे णोपरिण्णाय गिहावासे, परिण्णाय गिहावासे णाममेगे णोपरिण्णाय सण्णे, ॥ ३१ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० त० इहत्थे णाममेगे णो परत्थे, परत्थे

परिग्रह त्याग करनेवाला) है परन्तु अच्छे भाववाला नहीं है नया साधु २ एक अच्छे भाववाला है परंतु परिज्ञात कर्मी नहीं है (श्रावक) ३ एक परिज्ञात कर्मी है और परिज्ञात संज्ञावाला भी है सुसाधु ४ एक परि ज्ञात कर्मी भी नहीं है और परिज्ञात संज्ञावाला भी नहीं है मिथ्यात्वी। और भी चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक आरंभ परिग्रह से निवर्ते हैं परन्तु गृहवास से नहीं निवर्ते हैं आनंदादि श्रावकवत् २ एक गृहवास से निवर्ते हैं परंतु आरंभादिक से नहीं निवर्ते हैं तापसादि ३ एक आरंभादिक से निवर्ते हैं और गृहवास से भी निवर्ते हैं सुसाधु ४ एक न तो आरंभादिक से निवर्ते हैं और न गृहवास से निवर्ते हैं असंयति॥ और भी चार प्रकार के पुरुष कहे हैं: १ एक अच्छे भाववाले हैं परन्तु गृहवास का त्याग नहीं किया है श्रावक २ एक गृहवास के त्याग युक्त है परन्तु अच्छे भाववाले नहीं है द्रव्यलिंगी साधु ३ एक उत्तम गुणयुक्त भी है और गृहवास के त्याग युक्त भी है ४ एक दोनो गुण युक्त नहीं है ॥ ३१ ॥ चार

इ० इसलोक के अर्थी ए० कितनेक णो० नहीं प० परलोक के अर्थी ४ । च० चार पु० पुरुष जात प० एक से ए० कितनेक व० बढते हैं ए० एक से हा० क्षीण होते हैं ए० एक से ए० कितनेक व० बढते हैं दो० दोनें हा० क्षीण होते हैं ४ ॥ ३२ ॥ च० चार क० घोडे आ० आकीर्ण (वेगादिसे)

णाममेगे इहत्थे, ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० एगेण णाम एगेवड्ढइ, एगेण हायइ, एगेणणाम एगेवड्ढइ दोहिं हायइ, दोहिं णाममेगे वड्ढइ एगेण हायइ, दोहिं णाममेगे वड्ढइ दोहिं हायइ ॥ ३२ ॥ चत्तारि कथका प० तं० आइण्णे णाम

प्रकारके पुरुष कहे १ एक ऐहिक सुखके अर्थी है परंतु पारलौकिक सुखके अर्थी नहीं है २ एक पारलौकिक सुखके अर्थी है परंतु ऐहिक सुखके अर्थी नहीं है ३ एक ऐहिक सुखके अर्थी है और पारलौकिक सुखके भी अर्थी है ४ एक ऐहिक और पारलौकिक दोनों सुखके अर्थी नहीं है १ और भी चार प्रकारके पुरुष कहे हैं १ एक ज्ञानसे वृद्धिपाते हैं और सम्यक्त्वसे हीन होते हैं तत्सूत्र मरूपनेसे २ कोई ज्ञानमें वृद्धि पाते हैं और समकित व विनयदोनोंसे हीन होते हैं ३ कोई ज्ञान व क्रिया दोसे वृद्धि पाते हैं और समकितसे हीन होते हैं ४ कोई ज्ञान व क्रिया दोनोंसे हीन होते हैं वैसेही सम्यक्त्व व विनयसे भी हीन होते हैं दूसरा अर्थ—एक ज्ञानसे बढे और मिथ्यात्वरहित होवे २ एक ज्ञानसे बढे और रागद्वेष दोनोंसे हीन होवे ३ एक ज्ञान व संयमसे बढे और मिथ्यात्व रहित होवे ४ एक ज्ञान

प० कितनेक मा० आकीर्ण [विनयादि गुणों से] भा० आकीर्ण ए० कितनेक स० वक्र ४ । ए० एवं च० चार पु० पुरुष जात आ० आकीर्ण ए० कितनेक आ० आकीर्ण च० चार भांगे च० चार कं० घोडे आ० आकीर्ण ए० कितनेक आ० आकीर्णता से वि० चलता है आ० आकीर्ण ए० कितनेक स० वक्रता से वि० चलता है ए० ऐसे ही च० चार पु० पुरुष जात आ० आकीर्ण आ० आकीर्णता से वि० चलता है च० चतुर्भंग । च० चार कं० घोडे मा० जातिसपन्न ए० कितनेक णो० नहीं कु० कुल सपन्न ए०

मेगे आइन्ने आइन्ने णाममेगे खलुंके, खलुंके णाममेगे आइन्ने खलुंके णाममेगे खलुंके । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० आइन्ने नाममेगे आइन्ने, चउभंगो । चत्तारि कंथका प० तं० आइन्ने नाममेगे आइन्नत्ताए विहरइ, आइन्ने णाममेगे खलुंकत्ताए विहरइ, ४। एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० त० आइन्ने नाममेगे आइन्नत्ताए विहरइ चउभंगो ॥ चत्तारि कंथका प० तं० जाइ सपन्ने नाममेगे णोकुलसपन्ने, ४ । एवा-

व सयम दोनोंसे बडे और राग व द्वेष दोनोंसे हीन होवे। तीसरा अर्थ—एक क्रोधसे बडे और मायासे हीन होवे २ एक क्रोधसे बडे और माया व लोभ दोनोंसे हीन होवे ३ एक मायालोभ दोनोंसे बडे और क्रोधसे हीन होवे ४ एक क्रोधमान दोनोंसे बडे और माया लोभ दोनोंसे हीन होवे ॥ १२ ॥ चार प्रकारके घोडे कहे १ एक अश्व पहिले आकीर्ण (वेगादिगुण युक्त) है और पीछेभी आकीर्ण (विनयादिगुण युक्त) है २ एक

जा० जातिसंपन्न प० ऐसही कु० कुलसंपन्न ब० बलसंपन्न ४ कु० कुलसंपन्न रू० रूपसंपन्न ४ कु० कुल संपन्न ज० जयसंपन्न ए० ऐसेही ब० बल स० संपन्न रू० रूपसंपन्न ब० बलसंपन्न ज० जयसंपन्न स०

रूवसपन्ने । चत्तारि कंथगा प० तं० जाइसपन्ने णाममेगे णो जयसपन्ने, ४ । एवा मेव चत्तारि पुरिसजाया प० त० जाइसपन्न ४ । एव कुलसंपन्नेणयबलसपन्नेणय, ४। कुलसपन्नेणय रूवसपन्नेणय ४ ।कुलसपन्नणय जयसपन्नणय ४।एव बलसपन्नेणय रूवस

एक जातिवंत भी नहीं है और अच्छी चालसे चलता भी नहीं है इसी तरह चार प्रकारके पुरुष कहे हैं एक पुरुष जातिवंत है और विनयादिगुण युक्त चलता है ४। और भी चार प्रकारके घोडे कहे हैं १ एक घोडेकी जाति अच्छी है परंतु कुल अच्छा नहीं है २ एक का कुल अच्छा है परंतु जाति अच्छी नहीं है ३ एक का कुल अच्छा है और जाति भी अच्छी है ४ एक की जाति भी अच्छी नहीं है और कुल भी अच्छा नहीं है ऐसेही चार प्रकारके पुरुष कहे हैं-एक जाति संपन्न है परंतु कुल संपन्न नहीं है ऐसे चार भांग मानना। और भी चार प्रकारके घोडे कहे हैं एक जाति संपन्न है परंतु बल संपन्न नहीं है ४ ऐसेही चार प्रकारके पुरुष एक जातिवंत है परंतु बलवन्त नहीं है यों चार भांगे। और भी चार प्रकारके घोडे कहे हैं -एक जाति संपन्न है परंतु रूप संपन्न नहीं है ४।ऐसे चार प्रकारके पुरुष एक पुरुष जाति संपन्न है परंतु रूप संपन्न नहीं है स्वरूपरूप है यों चार भांगे। और चार प्रकारके घोडे कहे एक

मर्थ पु० पुरुषजात प० कहना च० चार कं० घोडे रू० रूपसपन्न ए० कितनेक णो० नहीं ज० जयसपन्न ए ऐसही च० चार पु० पुरुषजाति ॥ ३३ ॥ च० चार पु पुरुषजात प० कही सी० सिंहपनेसे ए कितनेक नि० नीकलते हैं सी० सिंहपने से वि० विचरते हैं सी० सिंहपने से ए० कितनेक णि० नीकलते हैं सि० शृगालपने से वि० विचरते हैं सि० शृगालपने से ए० कितनेक नि० नीकलते हैं सी० सिं

पन्नेणय, ४ । बलसपन्नेणय जयसपन्नेणय, ४ । सव्वत्थ पुरिस जाया पडिवक्खो । चत्तारि कंथगा प० तं० रूवसंपन्ने णाममेगे णोजयसपन्न, ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस०॥३३॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० सीहत्ताए णाममेगे निक्खंति सीहत्ताए विहरइ, सीहत्ताए णाममेगे णिक्खति सियालत्ताए विहरइ, सियालत्ताएणाममेगे निक्खति सी

जाति संपन्न है परंतु जय संपन्न नहीं है अर्थात् संग्रामादिमें जय नहीं प्राप्त कर सकता है ४ ऐसेही चार प्रकारके पुरुष कहे हैं एक जातिवंत है परंतु जय नहीं प्राप्त कर सकता है यों चार भांग करना पहिले जैसे भांगे कहे वैसेही घोडे व पुरुष पर कुल व बल, कुल व रूप, कुल व जय, बल व रूप, बल व जय और रूप व जयके चार २ भांगे जानना ॥३३॥ चार प्रकारके पुरुष कहे १ एक पुरुष सिंह की तरह दीक्षा ग्रहण करते हैं और सिंहकी तरह पालते हैं धन्ना अणगारवत् २ एक सिंहकी तरह दीक्षा ग्रहण करते हैं और शृगालवत् पालते हैं कुंडरिकवत् ३ एक शृगालवत् दीक्षा ग्रहण करते हैं और सिंह समान पालते हैं मेतारजऋषिवत् ४ एक शृगालवत्

हपने से वि० विचरते हैं सि० शृगालपने से प० कितनेक नि० नीकलते हैं सि० शृगालपने से वि० विचरते हैं ॥ ३४ ॥ च० चार लो० लोक में स० बराबर अ० अप्रतिष्ठान नरक ज० जम्बूद्वीप पा० पालक विमान स० सर्वार्थसिद्ध वि० विमान च० चार लो० लोक में स० सरिखे स० समान पाजु वाले स० समान प्रतिदिशि वाले सी० सीमंत नरक स० समय क्षेत्र उ० उडुविमान इ० इषतप्राग्भार पु० पृथ्वी ॥ ३५ ॥

हत्ताए विहरइ, सियालत्ताए णाममेगे निक्खति सियालत्ताए विहरइ ॥ ३४ ॥ चत्तारि लोगे समा प० तं० अपइठाणे णरए, जबूद्दीवेदीवे, पालएजाणविमाणे, सव्वट्ठसिद्धे महा विमाणे, । चत्तारि लोगे समा सपक्खि सपडिदिसिं प० तं० सीमंतए णरए, समयखेत्ते, उडुविमाणे, इसिपब्भारापुढवी ॥ ३५ ॥ उड्ढलोएण चत्तारि बिस

दीक्षा ग्रहण करते हैं और शृगालवत् पालते हैं सोमाचार्यवत् ॥ ३४ ॥ इस लोकमें चार स्थान एक सरिखे कहे हैं १ (सातवी नरकका) अप्रतिष्ठान नामक नरकावासा, २ जम्बूद्वीप नामकद्वीप, ३ सौधर्मेन्द्रका जाने आनेका पालक नामक विमान, और ४ सर्वार्थ सिद्ध नामक अनुत्तर विमान । चार पदार्थ लोकमें लम्बाई चौडाईमें एक सरिखे, वर्तुलाकार, एक एक की उपर, इस तरह रहे हुवे हैं १ प्रथम नरक का सीमंतक नामक नरकावासा २ अढाइ द्वीप सो समय क्षेत्र ३ सौधर्म देवलोकके प्रथम प्रतरमें उडुनामक विमान ४ और ईषत् प्राग्भार नामक पृथ्वी । ये चारों ४५ लक्षयोजनके लम्बे चौडे हैं ॥३५॥ ऊर्ध्व अधो व तिर्यक्लोकमें

उ० ऊर्ध्वलोक में च० चार बि० दो शरीरी पु० पृथ्वी कायिक आ० अप व० वनस्पति उ० औदारिक त्रस प्राणी अ० अधोलोक में च० चार बि० दोशरीरी ए० ऐसेही ति० तिर्यक् लोक में ॥ १६ ॥ च० चार पु० पुरुष जात हि० ह्रीसत्व हि० ह्रीमनःसत्व च० चलसत्व थि० स्थिरसत्व ॥ १७ ॥ च०

रीरा प० तं० पुढविकाइया, आउ, वणस्सइ, उरालतसपणा । अहेलोगेणं चत्तारि बिसरीरा प० एवंमेव तिरिय लोएवि ॥ १६ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० हिरिसत्ते, हिरिमणसत्ते, चलसत्ते, थिरसत्ते ॥ १७ ॥ चत्तारि सेज्जपडिमाओ पण्णत्ताओ, चत्तारि

चार को दो शरीरी कहे हैं पृथ्वीकाय, अपकाय, वनस्पति काय, और त्रसकाय ॥ १६ ॥ चार प्रकारके पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष लज्जासे सत्व रखते हैं-परिषहादि सहन करते हैं, व अप्रमादि करते हैं २ एक लज्जामन सत्ववाला है अर्थात् परिषह उत्पन्न होनेपर सहन करते हैं ३ एक चलसत्ववाला है परिषह उत्पन्न होते प्रथम चलित होता है पुन दृढ बनजाता है ४ और एक स्थिर सत्ववाला है परीषहादिमें स्थिर रहे ॥ १७ ॥ सत्ववंत पुरुषको चार शैया ग्रहण करनेकी पडिमाओ चार वस्त्रपडिमाओ, चार पात्र की

१ ह्रिया लज्जया सत्वं परीषहादिसहने अवष्टम्भो यस्य स ह्रीसत्व २ ह्रिया हसिष्यति मामुपमकु-र्वमात जन्य इति लज्जया मनस्येव सत्वं यस्य स ह्रीमन सत्व ३ चलमस्थिर परीषहादिसम्पाते सत्वं यस्य स चलसत्व ४ तद्विपर्ययात्स्थिरसत्व इति स्थिरसत्वः ।

१ जिसभवमें जो शरीर होवेसो एक शरीर, और वहांसे चवकर मनुष्यभवमें आकर मोक्षमें जावे उसे दूसरा शरीर कहागया है

चार म० शय्या प्रतिमा प० अरूपी च० चार व० वस्त्र प्रतिमा प० अरूपी च० चार पा० पात्र प्रतिमा प० अरूपी ठा० स्थानक प० प्रतिमा प० अरूपी ॥ ३८ ॥ च० चार स० शरीर वाले जी० जीव फु० स्पर्शे हुवे वे० वैक्रेय आ० आहारक ते० तेजस क० कार्माण च० चार स० शरीर वाले क० कार्माण मीश्र ओ० उदारिक वे० वैक्रेय आ० आहारक ते० तेजस ॥ ३९ ॥ च० चार अ० अस्तिकायसे लो० लोक फु० स्पर्शाया हुवा ध० धर्मास्तिकाया से अ० अधर्मास्तिकाया से जी० जीवास्ति काया से पु० पुद्गलास्तिकायासे च० चार बा० बादर काया से उ० उत्पन्न होते लो० लोक फु० स्पर्शाया हुवा पु० पृथ्वीकाय

वत्थपडिमाओ पण्णत्ताओ, चत्तारि पायपडिमाओ पण्णत्ताओ, चत्तारि ठाणपडिमा॥ ३८ ॥

चत्तारि सरीरगा जीवफुडा प० त० वेउव्विए, आहारगे, तेयए, कम्मए। चत्तारि सरीरगा कम्मुम्मीसगा प० तं० ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए ॥ ३९ ॥

चउहिं अत्थिकाएहिं लोगे फुडे प० त० धम्मत्थिकाएण, अधम्मत्थिकाएण, जीवत्थि

प्रतिमाओ, और चार कायोत्सर्ग करनेकी प्रतिमाओ कही ॥ ३८ ॥ चार शरीर को जीव स्पर्शते हैं वैक्रेय, आहारक, तेजस और कार्माण चार शरीर कार्माण शरीर मिश्रित हैं उदारिक, वैक्रेय, आहारक और तेजस॥ ३९ ॥सम्पूर्ण लोकको चार अस्तिकाय स्पर्शकर रही है —धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, जीवास्तिकाय, और पुद्गलास्तिकाय उत्पन्नहोती (अपर्याप्त अवस्थावाली) चार बादरकाया लोकको स्पर्शकर रही है पृथ्वी

आ० अपकाय वा० वायु व० वनस्पति काय च० चार प० प्रदेश तु० तुल्य ध० धर्मास्तिकाय के अ० अधर्मास्ति लो० लोकाकाश के ए० एक जी जीव क च० चार ए० एक णो० नहीं सु० दृष्टिगोचर पु पृथ्वी काय का० आ० अप् ते० तेउ व० वनस्पतिकाय का ॥ ४० ॥ च० चार इं० इन्द्रियों के अर्थ पु० स्पर्शाये हुवे वे० वेदते हैं सो० श्रोतेन्द्रिय का अर्थ घा० घ्राणेन्द्रिय का अर्थ जि० जिव्हेन्द्रिय का अर्थ फा० स्पर्शेन्द्रिय का अर्थ ॥ ४१ ॥ च० चार ठा कारन से जी० जीव पो० पुद्गल णो० नहीं

काएण, पोग्गलत्थिकाएण। चउहिं बायरकाएहिं उववज्जमाणेहिं लोगे फुडे प० त० पुढविकाइएहिं, आउकायवाउवणस्सइकाएहिं। चत्तारि पएसग्गेण तुल्ला प० त० धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, लोगागासे, एगेजीवे। चउण्ह मेगसरीर नोसुपस्स भवइ त० पुढविकाइयाण आउतेउवणस्सइकाइयाण ॥ ४० ॥ चत्तारि इंदियत्था पुट्ठा वेदेंति तं० सोइंदियत्थे, घाणिंदियत्थे, जिब्भिंदियत्थे, फासिंदियत्थे, ॥ ४१ ॥ चउहिं ठाणेहिं

काय, अपकाय, वायुकाय और वनस्पति काय चार द्रव्य प्रदेशसे सरिखे कहे हैं: धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, लोकाकाश और एक जीवके प्रदेश चार कायके एक शरीर अत्यंत सूक्ष्महोनेसे दृष्टिसे नहीं दीसते हैं पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय और साधारण वनस्पति ॥ ४० ॥ चार इन्द्रियों विषयको स्पर्श कर

[1] केवली समुद्घात करते एक जीवके प्रदेश संपूर्ण लोकमें व्याप्त होजाते हैं

जीवा य पोग्गला य णो संचाएइ नहिया लोगतागमणयाए त० गइअभावेण, निरु वग्गहयाए, लुक्खत्ताए, लोगाणुभावेण ॥ ९२ ॥ चउव्विहे णाए प० त० आहर णे, आहरणतद्देसे, आहरणतद्दोसे, उवन्नासोवणए । आहरणे चउव्विहे प० तं० अवाए, उवाए, ठवणाकम्मे, पडुपन्नविणासी । आहरणतद्देसे चउव्विहे प० तं० अ

स० समय है च० बाहिर लो० लोकके अंत ग० जाने को ग० गतिका अ० अभाव से नि० निरुपग्रहता से लु० रूक्षता से लो० लोकानुभाव से ॥ ९२ ॥ च० चार प्रकार के णा० न्याय आ० आहरण आ० आहरण तद्देश आ० आहरण तद्दोष उ० उपन्यासोपनय आ आहरण च० चार प्रकार के अ० अपाय उ० उपाय, ठ० स्थापना कर्म प० प्रत्युत्पन्नविनाशी आ० आहरणतद्देश च० चार प्रकार के अ०

सेहती हैं श्रोतेन्द्रिय घाणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय, और स्पर्शेन्द्रिय चक्षुइन्द्रिय पदार्थोको दूरसेही ग्रहण करती है इसलिये यहांपर उसका ग्रहण नहीं किया गया है ॥ ९१ ॥ चार कारनसे जीव तथा पुद्गल लोककी बाहिर अलोकमें जानेको समर्थ नहोवे १ गतिके अभावसे (इन दोनोंकी गति लोकान्त तक होती है जैसे दीपककी गति शिखाके नीचे रहती है) २ धर्मास्तिकायाके बलका अभावसे जैसे पानी बिना मच्छ नहीं चल्सता है ३ रूक्षपनासे जीव पुद्गलोंमें आगे बढनेकी शक्ति जो चिकनाइ है सो लोकके

१ धर्मास्तिकाय का अभाव में

मनुशिष्ट उ० उपालंभ पु० पृच्छा णि० निश्रावचन आ० आहरण सदोष च० चार प्रकार क अ० अधर्म

णुसट्ठे, उवालंभे, पुच्छा, णिस्सावयणे। आहरणतद्दोसे चउव्विहे प० तं० अधम्म-

अंतमें पूर्ण होजाती है और जीव पुद्गल रूक्ष होजाते हैं जिससे आगे नहीं बढ सकते हैं ४ लोककी मर्यादासे भी अलोकमें जीव पुद्गल नहीं जा सकते हैं सूर्य मंडलवत् ॥ ४२ ॥ जिससे वस्तुका स्वरूप समजनेमें आवे उसे न्याय कहते हैं इसके चार भेद कहे हैं १ आहरण सो अप्रसिद्ध अर्थकी प्रतीती करना जैसे पाप दुःखरूप है ब्रह्मदत्तवत्, आहरणतद्देश सो एक देशीय द्रष्टांत चंद्रवन्मुख १ आहरण सदोष यह द्रष्टांत असत्य होता है-जैसे किसी ईश्वरादिने जगतकी घटना की घटपटादिवत् यह सदोष द्रष्टांत है क्योंकि जगत शाश्वता है और किसीने इसे नहीं बनाया है उपन्यासोपनय वादीका द्रष्टांत साधनेके लिये वस्तूकी स्थापना करे जैसे किसीने कहा आत्मा कर्मका कर्ता नहीं है अरूपी होनेसे आकाशवत

नोट—द्रष्टांत दोप्रकारके १ साधर्मिक जैसे धूम होनेसे यहां अग्नि है २ वैधर्मिक द्रष्टांत धूम नहीं होनेसे अग्नि नहीं है जलाशयवत् कथनरूप द्रष्टांतके दोभेद चरित जैसे निधाणा दुःखका कारण है ब्रह्मदत्तवत् और कल्पित सो प्रमादियोंका यौवन अनित्य है अथवा उपमान जैसे इसके हस्त कुंपल जैसे सुकोमल हैं अथवा ज्ञानका हेतु यह है कि जैसे किसीने प्रश्नकिया कि इस वस्तु क्यों मोल लेते हो ? उत्तर यह दियाकि यथा सुख मिलती है !

युक्त ५ प्रतिलोम प्र० आत्मोपनीक दु० दुरोपनीक उ० उपपन्नासोपनय च चार प्रकार का त०

जुत्ते, पडिलोमे, अत्तोवणीए, दुरोवणीए । उवण्णासोवणए चउव्विहे प० तं०

उसका उत्तर यदि आत्मा आकाशवत् है तो उसकी तरह सुख दुःख भोगनेवाला आत्मा नहीं होना चाहिये आहरणके चार भेद् १ अपाय अनर्थ सो द्रव्य क्षेत्र काल व भावसे चार प्रकारका है द्रव्यसे अपाय मत्स्य विदारके द्रव्य नीकला जिससे भगिनि व माता मरण शरण हुए २ क्षेत्रापाय सो सर्पत्रालागृह या संक्लिष्ट स्थानक ३ काल सो मद्यासहित दिन ४ भावापाय सो क्रोध युक्त देवकी विराधक साधु हुए २ उपाय आहरणके चार भेद द्रव्यसे धातुर्वादके उपायसे द्रव्य उत्पन्न करना २ क्षेत्रसे कृषिकर्म करके द्रव्य उत्पन्न करना ३ कालोपाय सो सुभिक्षादिज्ञान और भावोपाय वृहद् कुमारीकी कथासे अभयकुमारने चोर को पहिचाने ३ स्थापना कर्म अन्यमत को दूषित कर अपने मत की स्थापना करनी सा ४ प्रत्युत्पन्नविनाशी सो उत्पन्न होत विनाश करना जैसे एक शाहूकारने अपनी पुत्री के शील रक्षणार्थ राजा के गृह नाटक देखने का नहीं भेजी परंतु अपने घर उत्सव कर के वहां रखी ऐसेही गुरु शिष्यों के अवगुण की उत्पत्ति मे भग्काये ॥ आहरणतद्देशके चार भेद अनुसिष्ठ-रहे हुवे वर्तमान गुणों की प्रशंसा करना जैसे सुभद्र के शील की प्रशंसा की २ उपालम्भ किया हुवा अपराध केलिये उपालम्भ (ठपका) देना जैसे चन्दन बालाने मृगावतीको उपालंभ दिया ३ पृच्छा प्रश्नपूछना कोणिक राजाने भगवंत महावीरसे प्रश्नोंकी पृच्छा की कि हे

तद्वस्तुक त० तदन्य वस्तुक प० प्रतिनिभ हे० हेतु ॥ ४१ ॥ स० चार प्रकार के हे० हेतु प० ...

तव्वत्थुए, तदन्नवत्थुए, पडिणिभे, हेऊ ॥ ४२ ॥ चउव्विहे हेऊ प० त० पावए,

पूज्य भगवंत! चक्रवर्ती भोगका त्याग नकरे तो कहां जावे ? मरकर सातवी नरकमें जावे तब कोणिकने फीर प्रश्न पूछा कि मे कहां जाउगा ? छठी नरक में फीर प्रश्नपूछा कि क्या मैं चक्रवर्ती नहीं हूं ? नहीं क्योंकि चक्रादि रत्न तेरी पास नहीं है इतना सुन कृत्रिम रत्नों बनाकर खंड साधने को गया, और कृतमाल देवने गुफाके बाहिर नभाकर भस्मकर दिया वहां मरकर छठी नरकमें गया ४ निश्रावनः-एक की अपेक्षासे अन्यको प्रतिबोध करना जैसे क्रोधी शिष्य का क्रोधकी शान्तिके लिये क्षमावंतका गुणग्राम करे। आहरण तद्दोषके चार भेद कहे हैं १ अधम्मजुत्ते जिस द्रष्टांत सुननेसे अधर्मबुद्धि उत्पन्न होवे जैसे नलदामा कोलीके पुत्रको मकोडने काटा इससे उसने उसके बिलमें ऊष्णपानी डाला ऐसा सुन अन्यको भी वैसी बुद्धि उत्पन्न होवे २ प्रतिलोम-मूर्खको मूर्खकी रीतिसे समझाना जैसे अभयकुमार चंद्रप्रद्योतनराजाको बांधकर लाया ३ अप्पोवणीए-अपना मत दुष्टपनासे स्थापन करना जैसे जीवको मारना नहीं परंतु पापीको मारना और दुरोवणीए-दुष्टभाव प्रगट होवे जैसे किसीने परिव्राजक को मच्छि पकडता देखकर पूछा कि यह किसलिये? मद्यसाथ खानेके लिये क्या मद्यपीतेहो ? हां वैसी संगति होनेसे उपन्यासोपनयके चार भेद -तद्वस्तु जैसी वस्तु वैसाही द्रष्टांत जैसे किसीने कहा कि समुद्र किनारे एक वृक्ष है उसकी शाखा जलस्थल पर

है० हेतु अ० अस्तित्व प० नहीं है सो० हेतु प० नहीं है अ० है सो० वह है० हेतु न० नहीं है ण०

आगमे, । अहव हेउ चउव्विहे प० त० अत्थितं अत्थि सो हेऊ, अत्थित णत्थि सो हेऊ,

व्यामोह उत्पन्न कर सो वैसए जैसे कोई गाडेवालेको मार्गमें मरा हुवा तीतर मिला, उसे गाडेको बांधकर शहर में आया, वहां धूर्त मीला उसन पूछा कि इस शकट तीतरी का क्या मूल्य लेता है? उसने कहा तरपण लोटी उस समय लोगों को साक्षी रखकर उनकी पास से शकट व तीतरी दोनों छीनली, और गाडेवाला खेदित हुवा ४ लूसए जिसने अपन को ठगा होवे उसे ठगना सो लूसक कहा जाता है जैसे उक्त प्रकार से ठगाया हुवा गाडेवाला फीरता २ किसी धूर्त से मीला और सब हाल उसे निवेदन किया वह धूर्त उसका घर जाकर कहने लगा कि तरपण लादी लाओ उसने अपनी स्त्रीसे कहाकि इसे सत्तुपानी घोलकर देदो जब स्त्री सत्तुपानी घोलनेलगी तब इस धूर्तने उसका हाथपकडा प्रथम धूर्तबोलाकि यह क्या? दूसरेने उत्तर दिया कि यह सत्तुदानेवाली स्त्री है उसे मैं लेजाऊंगा प्रथम ठगने गाडी पीछी दे दी। और भी हेतु चार प्रकार क १ प्रत्यक्ष हेतु ज्ञान व चक्षुसे प्रत्यक्ष दीखने में आवे सो, २ अनुमान धूम्रदेख अग्नि कहना, ३ उपमा प्रमाण स्त्री के मुख को चंद्रकी उपमा देवे और ४ आगम प्रमाण आप्त सो तीर्थंकर वचन। और भी चार प्रकार के हेतु कहे हैं यदि धूमादि है तो अग्नि है सो अस्तित्वास्तित्व हेतु २ अग्नि है परंतु शीत नहीं है सो अस्तित्वनास्तित्व हेतु ३ अग्नि शीत नहीं है परंतु शीत काल में शीत है सो नास्तित्व अस्तित्व हेतु ४ अग्नि में धूम्र नहीं है और धूम्र नहीं होने से काष्टादि भी नहीं है सो नास्तित्व नास्तित्व हेतु ॥५४॥ चार प्रकार की संख्या कही १ सूत्र परिकर्म संकलादि गणित २ व्यवहार गणित ३ रज्जुगणित

नहीं सो० हेतु ॥ ४८ ॥ च० चार प्रकार के ग० गणित प० परिकर्म व० व्यवहार र० क्षेत्रगणित रा० राशि ॥ ८८ ॥ अ० अधोलोक में च० चार अं० अंधकार क० करते हैं न० नरक ने० नारकी पा० पापकर्म अ० अशुभ पुद्गलों ति० तिर्यक् लोक में च चार उ० उद्योत क० करते हैं च० चंद्र सू० सूर्य म० मणि जो० ज्योति उ० ऊर्ध्वलोक में च० चार उ० उद्योत क० करते हैं दे० देव दे० देवियों वि० विमान आ० आभरण ॥ ८९ ॥ ✱ ✱ ✱

णत्थितं अत्थि त्तो हेऊ, णत्थितं णत्थिसोहेऊ ॥ ४४ ॥ चउव्विहे संखाणे प० तं० पडिकम्मे, ववहारे, रज्जु, रासी ॥ ४५ ॥ अहो लोगेण चत्तारि अंधकार करेंति तं० णरगा, णेरइया, पावाइं कम्माइं, असुभा पोग्गला । तिरियलोगेणं चत्तारि उज्जोयं करेंति त० चंदा, सूरा, मणी, जोती, । उड्ढलोगेण चत्तारि उज्जोयं करेंति त० देवा, देवीओ, विमाणा, आभरणा ॥ ४६ ॥ चउट्ठाणस्स तइओदेसो सम्मत्तो ✱

अर्थात् क्षेत्र गणित, और राशि गणित त्रिराशिक पचराशिक ॥ ८८ ॥ अधोलोक में चार वस्तु अंधकार करती है नरक, नारकी, पापकर्म और अशुभपुद्गल तिर्च्छालोक में चार वस्तु उद्योत करती है चंद्र, सूर्य मणि और ज्योति ऊर्ध्वलोक में चार वस्तु उद्योत करती है देव, देवी, विमान और आभरण ॥ ४९ ॥ यह चौथे ठानेका तीसरा उद्देशा समाप्त हुवा इस के अंतमें देवों का वर्णन किया है वैसा देवों सुख प्रसर्पक अनुपम कर के प्राप्त होता है इसलिये आगे उद्देशा के प्रारंभ में प्रसर्पक का कथन करते हैं

च० चार प० प्रसर्पक अ० अनुत्पन्न भो० भोगों को उ० उत्पन्न करने केलिये ए० कितनेक प० प्रय त्न करते हैं पु० पहिले उ० उत्पन्न हुवे भो० भोगों का अ० भावियोग मे ए० एक प० प्रसर्पक अ० अनुत्पन्न सो० सुख को उ० प्राप्त करने केलिये ए० एक प० प्रसर्पक पु० पूर्व उ० उत्पन्न सु० सुख के अ० अभियोग से ए० एक प० प्रसर्पक ॥ १ ॥ ने० नारकी को च० चार प्रकार का आ० आहार इं० अंगार जैसा मु० मुरमुरे जैसा सी० शीतल हि० हिमजैसा सी० शीतल ति० तिर्यचयोनिवासको च० चार प्रकारके

चत्तारि पसप्पगा प० त० अणुप्पन्नाण भोगाण उप्पायएत्ता एगे पसप्पए, पुव्वुप्पन्नाणं भोगाण अविप्पओगेण एगे पसप्पए अणुप्पण्णाणं सोक्खाणं उप्पाइत्ता एगे पस प्पए, पुव्वुप्पन्नाण सुक्खाणं अविप्पओगेण एगे पसप्पए ॥ १ ॥ णेरइयाणं चउवि हे आहारे प० तं० इंगालोवमे, मुम्मुरोवमे, सीयले, हिमसीयले । तिरिक्स्व जोणि

चार प्रकार के प्रसर्पक कहे १ अनुत्पन्न भोग (स्त्रियादि) की प्राप्ति केलिये उद्यम करना २ प्राप्त भोगों को रखने केलिये उद्यम करना ३ अनुत्पन्न सुख की प्राप्ति केलिये उद्यम करना ४ प्राप्त सुख की रक्षा केलिये उद्यम करना ॥ २ ॥ उपर्युक्त कर्म करने वाले नरक में जाते हैं. वे नारकी के जीव चार प्रकार का आहार करते हैं १ अग्नि सरिखे २ मुरमुरोपम (भोभर जैसा) ३ शीतल और ४ हिमशीतल बरफ जैसा

१ भोगादि सुख की प्राप्तिकेलिये उद्यम करना उसे प्रसर्पक कहते हैं

आ० आहार कं० कंकपक्षी आहार जैसा बि० बिलमें प्रवेशकरनेवाले सर्प जैसा पा० हाथी कमांसजैसा पु० पुत्रके मांसजैसा म मनुष्यको च० चार प्रकार आ० आहार अ० अशन पा० पान खा खादिम सा० स्वादिम दे० देवों का च० चार प्रकारका आ० आहार वं वर्णवाला गं गंधवाला र० रसवाला फा स्पर्शवाला ॥ २ ॥ च० चार जा० स्वभावसे आ० विष वि वृश्चिकजातिका आ० विष मं० मेंडुकजातिका आ० विष उ० सर्पजातिका आ०विष म० मनुष्य जातिका आ० विष वि० वृश्चिक जाति

याण चउव्विहे आहारे प० तं० कंकोवमे, बिलोवमे, पाणमसोवमे, पुत्तमसोवमे। मणुस्साणं चउव्विहे आहारे प० त० असणे, पाणे, खाइमे साइमे। देवाणं चउव्विहे आहारे प० त० वण्णमते, गंधमते, रसमते, फासमते ॥ २ ॥ चत्तारि जाइ आसीवि सा प० तं० विच्छुयजाइ आसीविसे, मंडुकजाइ आसीविसे, उरगजाइ आसीविसे,

ठेरा तिर्यंच को चार प्रकार का आहार कहा १ कंकपक्षी जैसा २ बिल में प्रवेश करने वाला द्रव्य समान ३ मापमंसोवम [हाथी के मांस समान] और ४ पुत्र के मांस समान मनुष्य को चार प्रकार का आहार कहा अशन, पान, खादिम, स्वादिम देवता को चार प्रकारका आहार शुभ वर्ण, गंध, रस, व स्पर्श वाला आहार ॥ २ ॥ चार प्रकार के स्वाभाविक आशीविष कहे १ वृश्चिक का, मेंडक का, सर्प का, और मनुष्य का इस में से वृश्चिक को पुछ में विष रहता है, और अन्यतीनों को मुख में रहता है। अहो

का आ० विपय मं० पूज्य के० कितना वि० विपय प० समथ वि वृश्चिकजातिका विष अ० अर्धभर तप्रमाण बों० शरीर का विपमें वि० विपपरिणत वि० विस्तृत क० करने का त्रि० विपय से० उसको वि० विस्तृत नो० नहीं स० सपत्तिसे क० किया, क० करते हैं क० करेंगे म मंडुकजातिके विपकी पु० पृच्छा प० समर्थ म० मडुकजातिका विप भ० भरत प्रमाण बों० शरीरका विपसे वि० विपय से० शेप स० वैसे जा० यावत् क० करेंगे उ० सर्पजातिके आ० सपकी पु० पृच्छा प० समर्थ उ० सर्पजातिका आशीविप

मणुस्सजाइ आसीविसे । विच्छुयजाइआसीविसस्सण भंते केवइए विसए प० ? पभूणं विच्छुयजाइआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्त बोंदिं विसेण विसपरिणय विसट्टमाणिं करेत्तए, विसएसे विसट्टत्ताए नोचेवण सपत्तिए करिंसुवा करेंतिवा, करिस्सतिवा । मंडुक्कजाइ आसीविसस्सपुच्छा पभूण मडुक्कजाइआसीविसे भरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसए तचेव जाव करिस्सति । उरगजाइ आसीविसस्सपुच्छा, पभूणं उरग

भगवन् ! वृश्चिक जातिके आशीविप का विपय कितना है ? भगवन्त कहते हैं कि उसका विपय अर्ध भरत क्षेत्र प्रमाण अर्थात् शरीर विपय सहित २६३ योजनतक विष पीडित करे परन्तु इतना विपय किसीने किया नहीं है, करते नहीं है, और करेगा नहीं मेंडक जाति के आशीविप का विपय कितना ? मेंडक के आशी विप का विपय अपने शरीर सहित भरतक्षेत्र प्रमाण है, परंतु इतना विपय किसीने किया नहीं है, करता

ज० जम्बूद्वीप प्रमाण बों० शरीर वि विषसे से० शेष त० तैसे जा० यावत् क० करेंगे म० मनुष्य जातिके आ० विषकी पु पृच्छा प समर्थ म० मनुष्य जातिका विष स० समयक्षेत्र (अढाद्वीप) प्रमाण बों० शरीर वि० विषसे प० परिणत वि० विस्तृत क० करते हैं वि० विषयसे नो० नहीं जा० यावत् क० करेंगे ॥ १ ॥ च० चार प्रकारकी वा० व्याधि व० वात पि० पित्त स०कफ स०सन्निपात च० चार प्रकारकी ति० चिकित्सा वि० विद्या ओ० औषध आ० आतुर प० परिचारणा च० चार ति० चिकित्सक आ०

जाइआसीविस जंबूदीवप्पमाणमेत्त बोंदिं विसेण सेस तचेव जाव करिस्संतिवा । मणुस्सजाइ आसीविसस्स पुच्छा पभूण मणुस्सजाइ आसीविसे समयक्खेत्तप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिणयं विसट्टमाणिं करेंति विसएसे विसट्टत्ताए नो चेवणं जाव करिस्संतिवा ॥ २ ॥ चउव्विहा वाही प० त० वाइए पित्तिए, सम्भिए, सन्निवाइए । चउव्विहा तिगिच्छा प० तं० विज्जा, ओसहाइ, आउरे, परियारए । चत्तारि तिगिच्छ-

नहीं है, और करेगा नहीं सर्प के आशीविष का विषय जम्बूद्वीप प्रमाण है परंतु इतना विषय किसीने किया नहीं है, करता नहीं है, और करेगा नहीं मनुष्य के आशीविष का विषय अपना शरीर विषय सहित अढाइद्वीप प्रमाण परंतु ऐसा किसीने किया नहीं है, करता नहीं, और करेगा नहीं ॥ १ ॥ चार प्रकार की व्याधि कही वात, पित्त, कफ और सन्निपात चार प्रकार की चिकित्सा (व्याधि का उपचार)

भात्म चिकित्सक ए० कितनेक णो० नहीं प० अन्यका चिकित्सक प० अन्यका चिकित्सक ...
नहीं भा० भात्म चिकित्सक च० चार भांगे॥ ८॥च चार पु० पुरुष जात व० व्रणकरनेवाला ए० एक व० व्रण
प० विचारने वाला ४ च० चार पु० पुरुष जात व० व्रणकरनेवाला ए० कितनेक णो० नहीं व० व्रण सा० रक्षा करने

गा प० तं० आयतिगिच्छिए णाममेगे णोपरातिगिच्छिए, परातिगिच्छिए णाममेगे णो
आयातीगिच्छिए चउभंगो ॥ ४ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० त० वणकरेणाममेगे
णो वणपरिमासी, वणपरिमासी णाममेगे णोव्रणकरे, एगेव्रणकरेवि वणपरिमासीवि,

करी विद्या मन्त्रादि, औषधि, आतुर सो रोगी की परिचारणा चार प्रकार के चिकित्सक (वैद्य) कहे हैं १ एक अपनी स्वतः की चिकित्सा कर सकता है परन्तु अन्य की चिकित्सा नहीं कर सकता है, २ एक अन्य की चिकित्सा कर सकता है परंतु अपनी चिकित्सा नहीं कर सकता है, ३ एक अपनी चिकित्सा करता है और अन्य की भी चिकित्सा करता है, ४ एक अपनी चिकित्सा नहीं कर सकता है एवं अन्य की चिकित्सा भी नहीं कर सकता है ॥ ८ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे १ एक अपना शरीर का रक्त निकालने के लिये व्रण करता है परन्तु वारंवार उसे स्पर्शता नहीं है, २ एक व्रण करता है और उसे स्पर्शता है, ३ एक स्वयं व्रण करता है और वारंवार स्पर्शता है, ४ एक व्रण करता भी नहीं है और स्पर्शता भी नहीं है यों ही चारों भांगे भाव व्रण (अतिचार) आश्री कहना जैसे किसी साधु को कारण

साला ४ प० चार पु० पुरुष जात र गणकरनेनाम्ना प० कितनेक प० व्रण मा० रखाना ॥ ९ ॥

णोणोव्रणकरे णोव्रणपरिमासी । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० वणकरे णाममेगे णो वणसारक्खी ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० वणकरे णाममेगे णोव्रणरोही४ ॥ ५ ॥

स्थान अतिचार रूप सा आगारनादिकर वारंवार शुद्ध करते हैं इस से उनको पाप का स्पर्श नहीं होता है ७ दूसरे अतिचार लगाकर जया हुवा अगनादि भोगव कर पाप को स्पर्शता है योंही चारो भांगे कहना। और भी चार प्रकार के पुरुष कहे १ एक स्वय व्रण करता है परंतु पट्टादि बंधन नहीं रखता है, २ एक दूसरे को व्रण करता है परतु उसपर पट्टादि बंधकर नहीं रखता है, योंही चार भांगे कहना और यह चौभंगी अतिचारपर कहनी एक अतिचार करता है परतु उसका बंधन नहीं करता है, १ एक अन्य को अतिचार लगाता है परतु बंध नहीं करता है यों चार भांग। और भी चार प्रकार के पुरुष कहे १ एक व्रण करता है परतु आपधादि नहीं करता है, २ एक अन्य को व्रण करता है परतु उसकी औषधि नहीं करता है, ३ एक व्रण करता है और औषधि भी करता है, और ४ एक व्रण भी नहीं करता है और औषधि भी नहीं करता है ऐसेही १ एक साधु अतिचार लगाता है परतु उसका प्रायश्चित्त लेकर शुद्ध नहीं होता है २ एक को अन्यका अतिचार लगता है परंतु प्रायश्चित से शुद्ध नहीं होता है, ३ एक अतिचार लगाता है और प्रायश्चित से शुद्ध भी होताहै, और ४ एक न तो अतिचार लगाता है और न शुद्ध होताहै ॥ ८ ॥ चार प्रकारके व्रण कहे हैं १ एक अंदर शल्य है परन्तु बाहिर शल्य नहीं है २

च० चार व० व्रण अं० आंतरिकशल्य णो० नहीं वा० बाहिरशल्य ४ ए० ऐसेही च० चार पु०० पु०प

जाति अ० आंतरिकशल्य ए० कितनेक णो० नहीं वा० बाहिरकाशल्य ४ च० चार व० व्रण अं० अंदर दु०

दुःख देनेवाला णो० नहीं वा० बाहिर दु० दुःख देनेवाला ४ ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुषजात अं०

अंदरदुष्ट ए० कितनेक णो० नहीं वा० बाहिरदुष्ट ॥ ५ ॥ च० चार पु० पुरुष जात से० श्रेयांस ए०

चत्तारि वणा प० त० अंतोसल्ले णाममेगे णो बाहिंसल्ले,४ । एवामेव चत्तारि पुरिस

जाया प० तं० अंतोसल्लेणाममेगे णो बाहिंसल्ले,४ । चत्तारि वणा प० तं० अंतो

दुट्ठेनाममेगे नोबाहिंदुट्ठे बाहिंदुट्ठेनाममेगे णो अंतोदुट्ठे४ । एवामेव चत्तारि पुरिस

जाया प० त० अंतोदुट्ठेनाममेगे णो बाहिंदुट्ठे४ ॥ ६ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं०

एक बाहिर शल्य है परंतु अंदर नहीं है, ३ एक अंदर भी शल्य है और बाहिर भी शल्य है, ४ एक अंदर भी शल्य नहीं है और बाहिर भी शल्य नहीं है, ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं—एक अंदर का शल्य वाला है परंतु बाहिर का शल्य वाला नहीं है, यों चौभंगी जाननी. और भी चार प्रकार के व्रण कहे एक व्रण अंदर बहुत दुःख देता है परंतु बाहिर दुःख नहीं देता है, २ एक बाहिर दुष्ट है परंतु अंदर दुष्ट नहीं है ३ एक अंदर भी दुष्ट है और बाहिर भी दुष्ट है ४ एक अंदर भी दुष्ट नहीं है और बाहिर भी दुष्ट नहीं है ऐसे चार प्रकार के पुरुष कहे कोई अंदर दुष्ट होता है और बाहिर अच्छा बनता है,

कितनेक पा० पापीष्ठ ४ च० चार पु० पुरुष जात से० श्रेयांस ए० कितनेक से० श्रेयांस इति सा० सदृशक से० श्रेयांस ए० कितनेक पा० पापीष्ठ इति सा० सदृशक । च० चार पु० पुरुष जात से० श्रेयांस ए० कितनेक से० श्रेयांस म० मानता है से० श्रेयांस ए० कितनेक पा० पापीष्ठ म० मानता है २ च० चार पु० पुरुष जात से० श्रेयांस ए० कितनेक से० श्रेयांस सा० सदृशक म० मानता है से०

सेयंसे णाममेगे सेयंसे, सेयसे णाममेगे पावंसे पावसेनाममेगे सेयस, पावसेणाममेगे पावसे । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० सेयसेत्ति, सालिसए, । चत्तारि पुरिस जाया प० त० सेयसे णाममेगे सेयसेत्तिमण्णइ, सेयंसेणाममेगे पावसेतिमण्णइ, । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० सेयंसे णाममेगे सेयंसेत्ति सालिसएमन्नइ, सेयंसे णाममेगे पाव-

यों चौभंगी कहनी ॥ ६ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष का नाम श्रेयांस (पुण्य वंत) है और स्वयं प्रशंसनीय है साधु की तरह, २ एक का नाम श्रेयांस है परंतु पाप कर्म करता है, उदाइ नृपवत्, ३ एक नाम से पापी है परन्तु अच्छे कर्मों करता है ४ एक नाम से पापी है और पाप कर्म करता है काल सौकरिक की तरह और भी चार प्रकार के पुरुष, एक पुरुष प्रथम गृहस्थवास में श्रेयांसथा और फिर दीक्षा में भी श्रेयांस रहा, २ एक पहिले श्रेयांस और फीर भी पापी बना, ३ एक पहिले पापी फिर श्रेयांस, और ४ एक पहिले पापी और पीछे भी पापी और चार प्रकार के पुरुष कहे एक स्वयं श्रेयांस है और

श्रयांस ए० कितनेक पा० पपांश सा० सरक्षक म० मानता है ॥ ७ ॥ च० चार पु० पुरुष जात आ० मरूपक ए० कितनेक मरूपक ए० कितनेक णो० नहीं प० प्रभावक । च चार पु० पुरुष जात आ० मरूपक ए० कितनेक पो० नहीं उ० पट्कायक जीवका संपक्ष ॥ ८ ॥ च० चार मकारके रु० वृक्षकी वि० विकुर्वणा प० प्रमाल्पने

सेत्ति साल्सिए मन्नइ ॥ ७ ॥ चत्तारि पुरिस प० तं० आघवइत्ता णाममेगे णोपरि भावइत्ता, परिभावइत्ता णाममेगे णो आघवइत्ता । चत्तारि पुरिस जाया प० त० आघवइत्ता णाममेगे णो उछजीवियासपण्णे उछजीवियासपण्णे णाममेगे णो आ घवइत्ता । ॥ ८ ॥ चउव्विहा रुक्खविगुव्वणा प०त० पवालत्ताए, पत्तत्ताए, पुप्फत्ता

लोक भी श्रेयांस कर मानते हैं २ एक स्वयं श्रेयांस है और लोक पापी कर मानते हैं यों चार भांगे और भी चार मकार के पुरुष १ एक स्वयं श्रेयांस है और आत्मा को भी श्रेयांस मानता है साधुवत् २ एक स्वयं श्रेयांस है परंतु आत्मा को पापी कर मानता है दद मवारी साधुवत् ४ ॥ ७ ॥ चार मकार के पुरुष कहे एक सिद्धान्तात्मकका मरूपक है; परतु शुद्ध क्रिया नहीं होने से प्रभावक नहीं है २ एक शुद्ध क्रिया से जिनशासन की उन्नति करता है; परंतु सिद्धांत का मरूपक नहीं है, यों चारों भांगे कहना और भी चार मकार के पुरुष कहे एक सिद्धांत का मरूपक है परतु पट्काया के जीवों का रक्षक नहीं है २ एक पट्काय के जीवों का रक्षक है, परतु सिद्धांत का मरूपक नहीं है; यों चारों भांगे कहना ॥ ८ ॥

प० पत्रपन पु० पुष्पपने फ० फलपने ॥ ९ ॥ च० चार वा० वादिसमोसरण कि० क्रियावादी अ० अक्रियावादी अ० अज्ञानवादी वे० विनयवादि णे० नारकीको च० चार वा० वादी समोसरण की० क्रियावादी जा० यावत् वे० विनयवादी ए० ऐसे अ० असुरकुमार जा० यावत् थ० स्तनित कुमार ए० ऐसे वि० विकलेन्द्रिय व० वर्ज्य जा० यावत् वे० विमानिकको ॥ १० ॥ च० चार मे० मेघ प० प्ररूपे ग० गर्जनेवाले ए० कितनेक णो० नहीं वा० वर्षनेवाले वा० वर्षनेवाले ए० कितनेक णो० नहीं ग० गर्जने

ए, फलत्ताए ॥ ९ ॥ चत्तारि वाइसमोसरणा प० तं० किरियावाई, अकिरियावाई, अणाणियवाई, वेणइयावाई । णेरइयाणं चत्तारि वाइसमोसरणा प० तं० किरियावाइ जाव वेणइयावाई । एव मसुरकुमाराणवि जाव थणियकुमाराणं एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥ १० ॥ चत्तारि मेहा प० तं० गज्जित्ता णाममेगे णो वासित्ता, वासित्ता णाममेगे णो गज्जित्ता, एगे गज्जित्तावि वासित्तावि, एगे णो गज्जित्ता णोवा

चार प्रकार से वृक्ष विकुर्वणा करते हैं प्रवाल (नय अंकूरे) की, पत्र की, पुष्पकी, और फल की विकुर्वणा ॥९॥ चार प्रकार से वादियों के समवसरण कहे क्रियावादी के १८०, अक्रियावादी के ८४, अज्ञानवादीके ६७, और विनयवादीके ३२, सब ३६३ पाखण्डि के मत हुवे उसमें से एकेन्द्रिय, द्विइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, और चौरेन्द्रिय छोडकर नरक में यावत् वैमानिक तक सब में चारों समवसरण पाते हैं ॥ १० ॥ चार प्रकार के मेघ कहे हैं, १ एक मेघ गर्जना करता है परंतु वर्षता नहीं है २ एक मेघ वर्षता है, परंतु गर्जता नहीं

वाला। ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात ग बोलनेवाला ए० कितनेक णो० नहीं वा० कामकरनेवाला ४। च० चार प्रकारके मेघ ग० गर्जनेवाले णो० नहीं वि०विद्युत् करनेवाले। ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात ग० गर्जनेवाले ए० कितनेक णो० नहीं वि० विद्युत् करनेवाले। च० चार मे० मेघ वा० वर्षनेवाले ए० कितनेक णो० नहीं वि० विद्युत् करनेवाले। ए० एसेही च० चार पु० पुरुष जात। च० चार मे०

सित्ता। एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० गज्जित्ताणाममेगे णो वासित्ता ४। चत्तारि मेहा प० तं० गज्जित्ताणाम मेगेणोविज्जुयाइत्ता, विज्जुयाइत्ताणाममेगे णो गज्जित्ता, ४। एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० गज्जित्ता णाममेगे णो विज्जुइयात्ता, ४। चत्तारि मेहा प० त० वासित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता ४। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० त० वासित्ता णाम मेग णो विज्जुयाइत्ता ४। चत्तारि मेहा प० तं० कालवासी णाममेगे णो अकालवासी, अकाल

है १ एक गर्जना है और वर्षता भी है और ४ एक मेघ नतो गर्जता है न वर्षता है ऐसे चार प्रकार के पुरुष की चौभंगी कहना एक पुरुष बोलता है कि मैं यह करूं परंतु वह करता नहीं है २ एक कहता नहीं है परंतु करता है ३ एक कहता है और करता भी है ४ एक कहता भी नहीं है और करता भी नहीं है। और भी चार प्रकार के मेघ कहे हैं १ एक मेघ गर्जना करता है परंतु विद्युत नहीं करता है २ एक विद्युत करता है परंतु गर्जना नहीं करता है, यों चौभंगी ऐसेही चार प्रकार के पुरुष

प० कितनेक णो० नहीं स० सर्वत्रपी प० ऐसेही च चार रा० राजा दे० देशके अ० आधिपति ए० कितनेक णो० नही स० सबके अ० आधिपति च० चार मे मेघ पु पुष्कर संवर्तक प० प्रद्युम्न जी जीमूत जि० जिम्हा पु० पुष्कर संवर्तक म० बड़ा मे मेघ ए० एकवार वा० वर्षनेसे द० दशवर्ष स०

मेगे णो णिम्मवइत्ता ४। चत्तारि मेहा प० तं० देसवासी णाममेगे णो सव्ववासी, ४।

एवामेव चत्तारि रायाणो प० तं० देसाहिवइ णाममेगे णो सव्वाहिवई, ४।

चत्तारि मेहा प० तं० पुक्खलसवट्टए, जीमूए पज्जुणे, जिम्मए । पोक्खलसवट्टएणं

सुपात्र कों दान देता है परंतु कुपात्र को दान नहीं देता है, ४। चार प्रकार क मेघ कहे १ एक मेघ प्रथम वर्षकर धान्य उत्पन्न करता है परंतु पीछे वर्षकर धान्य नहीं निपजाता है, २ एक मेघ धान्य निपजावे नहीं परंतु उपजाता है यों चौभंगी ऐसेही चार प्रकार के माता पिता कहे १ एक पुत्र का जन्म देते हैं परंतु पालन नहीं करते हैं २ एक पालन करते हैं परंतु उत्पन्न नहीं करते हैं, यों चौभंगी वैसे ही गुरु शिष्यपर चौभंगी – एक गुरु शिष्य को दीक्षादेतेहैं और पढातेहैं, २ एक पढाते हैं और दीक्षा नहीं देते हैं। और भी चार प्रकार के मेघ कहे हैं एक मेघ एक देश में वर्षता है परंतु सब जगह नहीं वर्षता है यों चौभंगी ऐसेही चार प्रकारके राजा कहे१ एक राजा एक देशका है परंतु सबदेशका नहींहै, २ एक राजा सबदेश का है और एकदेशका नहीं है, ३ एक राजा एकदेशका भी है, और सबदेश का है ४ एक राजा राज्य से

मेघ का० कालमें बरसनेवाले ए० कितनेक णो० नहीं अ० अकालमें वर्षनेवाले। ए० एसे च० चार पु० पुरुष जात। च० चार मे० मेघ खे० क्षेत्रमें वर्षनेवाले ए० कितनेक णो० नहीं अ० अक्षेत्रमें वर्षनेवाले। ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुष जात। च० चार मे० मेघ ज० उत्पन्न करनेवाला ए० कितनेक णो० नहीं नि० तैयार करनेवाले। ए० ऐसेही च० चार अ० मातापिता। च० चार मे० मेघ दे० देशवर्षी

वासी णाममेगे णो कालवासी ४॥एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प०त०कालवासी णाममेगे णो अकालवासी, ४। चत्तारि मेहा प० तं० खेत्तवासी णाममेगे णो अखेत्तवासी, ४। एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० त० खेत्तवासी णाममेगे णो अखेत्तवासी ४। चत्तारि मेहा प० त० जणइत्ता णाममेगे णो निम्मवइत्ता, णिम्मवइत्ता णाममेगे णो जणइत्ता, ४। एवामेव चत्तारि अम्मापियरो प० त० जणइत्ता णाम

कहे एक वचन से बोलता है परतु आडंबर नहीं करता है यों चौभंगी। और भी चार प्रकार के मेघ कहे है एक मेघ गर्जता है परतु विद्युत् नहीं करता है। ४ ऐसेही चार प्रकारके पुरुषपर चौभंगी जानना। और भी चार प्रकार के मेघ कहे -एक समयानुकूल वर्षता है परंतु अकाल में नहीं वर्षता है ४ ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे एक अवसर में दान देवे और एक अवसर बिना दान देवे ४। और भी चार प्रकारके मेघ कहे एक क्षेत्र में वर्षता है परंतु अन्य स्थान नहीं वर्षता है ४ ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे १ एक

वे० वेश्याका करंडिया गा० गाथापतिका करंडिया रा० राजाका करंडिया ए० ऐसेही च० चार आ० आचार्य सो० सो० चांडालका क० करंडिये समान वे० वैश्यके क० करंडिये समान गा० गाथापतिके क० करंडिये समान रा० राजाके क० करंडिये समान ॥ १२ ॥ च० चार रु० वृक्ष सा० शाल ए० कितनेक सा० शाल प० पर्याय सा० शाल प० एरंडकी पर्याय ४। ए० ऐसेही च० चार आ० आचार्य।

सङ्कुकरंडए, रायकरंडए । एवामेव चत्तारि आयरिया प० तं० सोवागकरंडगसमाणे, वेसियकरंडगसमाणे, गहावइकरंडगसमाणे, रायकरंडगसमाणे ॥ १२ ॥

चत्तारि रुक्खा प० तं० साले णाम मेगे सालपरियाए, सालेनाममेगे एरंडपरियाए,

है १ चांडाल का करंडीया उस में कचरा भरा होवे इसलिये असार, २ वैश्या का करंडिया कि जिसमें लाख से भरे हुवे आभूषण होवे यह थोडा बहुत सार, ३ गृहपति का करंडिया कि जिसमें सुवर्ण रत्नादि भरे होवे, यह विशेष सार और ४ राजाका करंडिया कि जिसमें अमूल्य रत्न भरे होवे यह सर्वथा सार ऐसेही चार प्रकार के आचार्य कहे हैं १ चांडाल के करंडीये समान वे वस्तुत्र मापी भाषा चारी होवे, २ वैश्या के करंडिये समान थोडासा श्रुत ज्ञान बुएरीति से ग्रहण किया होवे भोले मनुष्यों को समझावे अमध्यस्थ ३ गाथा पति के करंडीये समान स्वसमय का ज्ञाता वियाख्यान्ता होवे, ४ और राजा के करंडीये समान सो सब आचार्य के गुण सहित होवे वे जिन नहीं परंतु जिन सरिखे होवे ॥ १२ ॥ चार प्रकारके वृक्ष कहे हैं १ शाल नामकवृक्ष है और शाल की पर्याय है अर्थात छाँया साघनहै, २ एक सा

तेऽवि नो ... प० प्रद्युम्न म० महामेघ ए० एक वा० वर्षासे द० दशवर्ष स० सा भा० स्नेहवंत रहे जी० जीमूत महामेघ ए० एक वा० वर्षासे द० दशवर्ष भा० स्नेहवंत रहे जि० जिम्ह म० महामेघ ब० बहुवर्षासे ए० एक वा० वर्ष भा० स्नेहवंत रहे ॥११॥ च० चार क० करंडिये सो० सोपाकका करंडिया

महामेहे एगेणं वासेणं दसवाससहस्साइं भावेइ, पज्जुण्णेणं महामेहे एगेण वासेणं दसवाससयाइं भावेइ, जीमूएणं महामेहे एगेण वासेण दसवासाइं भावेइ, जिम्हेण महामेहे बहुवासेहिं एग वासं भावेइवा ण वा भावेइ ॥ ११ ॥ चत्तारि करंडगा, प० त० सोवागकरंडए वेसियाकरंडए गाहा

थर बना हुवा एकदेश का भी नहीं है और सर्वदेश का भी नहीं हैं। और भी चार प्रकारके मेघ कहे हैं १ पुष्कल संवर्तक २ प्रद्युम्न ३ जीमूत और ४ जिम्ह पुष्कल संवर्तक मेघ की बरसात एक वार बरसने से दश हजारवर्ष पर्यंत रहती है २ प्रद्युम्न नामा मेघ की बरसात एक हजार वर्षतक रहती है, ३ जीमूत नामक मेघ की बरसात दश वर्षतक रहती है और जिम्ह नामक मेघ बहुत वार बरसनेसे एक थोरे धान्य उत्पन्न होने जैसी जमीन बनाता है और नहीं भी बनाता है एसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक चार उपदेश श्रवण कर के बहुत वर्षतक धारण करता है, २ एक थोडे काल तक धारन करता है, ३ एक बहुत थोडे काल तक धारन करता है, और ४ एक बारम्बार उपदेश सुने तो धारेभी और न भी धारे॥११॥चार प्रकार के करंडिये

सुंदर सी० शिष्यमें मुं मानना प० एरंड म० मध्यमें ए० एरड नामका हो० होता है दु० दुमराजा इ इति मे० सराव मा० आचार्य मे० सराव सी० शिष्यमें मु० जानना ॥ १३ ॥ च० चार प्रकारके

[१] एरड मज्झगारे, जहसासे णामेहोइदुमराया, इयसुदरआयरिय, मगुलसीसे मुणेयव्वे ॥ २ ॥ सालदुमसज्झयारे, एरड णामहोइ दुमराया, इयमगुलआयरिय, सुदर सीसे मुणेयव्वे ॥ ३ ॥ एरडमज्झयारे, एरडणामहोइदुमराया, इयमगुलआयरिय, मगुल सीसेमुणेयव्वे ॥ ४ ॥ १३ ॥ चचारिमच्छा प० तं० अणुसोयचारी, पडिसोयचारी,

आचार्य ज्ञानादि गुण सपन्न हैं और परिवार एरंड समान ज्ञानादि गुण रहित हैं, यों चारो भांगे जानना जैसे शाल नामक वृक्षके मध्यमें शाल नामक वृक्षका राजा हो वैसेही आचार्य व उनके शिष्यादि परिवार सुंदर होवे, २ एरड के वृक्षमे जैसे साल नामक वृक्षका राजा होवे वैसे आचार्य उत्तम गुण वाले होवे परंतु कुशिष्यका परिवार होवे, ३ साल वृक्षमें जैसे एरंड राजा होवे जैसे आचार्य सराब और परिवार अच्छा होवे, और एरंड वृक्षमें एरड राजा होवे वैसे आचार्य व परिवार दोनो आचार हीन होवे ॥ १३ ॥ चार प्रकारके मत्स्य कहे हैं १ कितनेक मत्स्य प्रवाह की साथ चलते हैं, २ कितनेक प्रवाह की सामे जाते हैं, ३ कितनेक पानीकी नीचे या पानीके उपर चलते हैं, और ४ कितनेक पानी की मीचमें चलते हैं

म० मत्स्य अ० अनुश्रोत चारी प० प्रतिश्रोत चारी अं० अंतचारी म० मध्यचारी ए० एसेही च० चार भि० भिक्षुक ॥ १५ ॥ च० चार गो० गोले म० मधुसिक्थ गोला ज० लाखका गोला, दा० लकडेका गोला म० मिट्टिका गोला ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुष भाव म० मधुसिक्थ गोला समान ॥ ४ ॥ च०

अतचारी, मज्झचारी ॥ एवामेव चत्तारि भिक्खागा प० तं० अणुसोयचारी, पडिसो यचारी, अंतचारी, मज्झचारी ॥ १४ ॥ चत्तारि गोला प० तं० मधुसित्थगोले, जउ गोले, दारुगोले, मट्टियागोले, । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० त० मधुसित्थगो

ऐसेही चार प्रकारके भिक्षुक कहे हैं १ कितनेक उपाश्रयसे निकलते अनुक्रमसे घरोंसे भीक्षा ग्रहन करे २ कितनेक जाते नहीं ले परंतु आतेलेवे, ३ कितनेक प्रथम व अन्तिम घरों की भिक्षालेवे, ४ और कितनेक बीच के घरों की भीक्षा लेवे ॥ १८ ॥ चार प्रकार के गोले-कहे १ मधुसिक्थ (मोम) का गोला धूप से पीगल जावे, २ लाख का गोला धूप से पीगले नहीं परंतु अग्नि के ताप से पीगल जावे, ३ काष्ठ का गोला पीगले नहीं परतु अग्नि में डालने से जलजावे, और मृत्तिका का गोला अग्नि में डालने से पीगले नहीं परंतु पक्व होजावे ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं जैसे किसी साधु का उपदेश सुनकर चार जने को वैराग्य प्राप्त हुवा प्रथम मोम के गोले समान पुरुष नगर में आता लोकों के दुर्वचन सुनकर पीगल गया, २ लाख के गोले समान कटम्ब के वचनरूप अग्नि के ताप से पीगल गया ३ काष्ठ के गोले समान लोकोंके ४ कटम्ब

चार गो० गोले आ० लोहेका गोला त० कथीरका गोला त० तांबेका गोला सी० सीसेका गोला ए०
ऐसेही च० चार पु० पुरुष आ० लोहेका गोला समान आ० यावत् सी० सीसेका गोला समान
च० चार गोला हि० चांदीका गोला सु० सुवर्णका गोला र० रत्नका गोला व वज्रका गोला ए०

ले समाणे ४ ॥ चत्तारि गोला प० तं० आयगोले, तउओगोले, तंबगोले, सीसगोले,
एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० अयगोले समाणे जाव सीसगोल समाणे ॥
चत्तारिगोला प० तं० हिरण्णगोले, सुवण्णगोले, रयणगोले, वयरगोले, । एवामेव

से नहीं पीगले परंतु स्त्री रूप अंगार से पीगला और मिट्टी के गोले समान पुरुष ज्यों ज्यों संसारियों
से उपसर्ग होते गये त्यों त्यों विशेष दृढ बनता गया । और भी चार प्रकार के गोले कहे लोहेका गोला,
कथीर का गोला, तांबेका गोला ४ और सीसे का गोला ऐसेही चार प्रकार के पुरुष लोहे के गोले
समान कर्म में गुरु, कथीर के गोले समान कर्म में गुरुतर, तांबे के गोले समान कर्म में गुरुतम और
सीसे के गोले समान कर्म में अत्यंत गुरु । और भी चार प्रकार के गोले कहे हैं १ चांदी का गोला २
सुवर्ण का गोला उस से अधिक कीमती ३ रत्न का गोला उस से अधिक किमती और ४ वज्ररत्न का
गोला सब से ज्यादा कीमती वैसे ही चार प्रकार के पुरुष कहे-चांदी के गोला समान यावत् वज्र के

ऐसेही च० चार पुरुष जाति चांदीके गोले समान जा० यावत् व वज्रके गोले समान ॥ १५ ॥
च० चार प० पत्र अ० असिपत्र (तरवार) क० करपत्र (करवत) खु० क्षुरपत्र (उस्तरा) क० कल्व
वृत्तिपत्र (खुरपी) ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुष जात अ० असिपत्र समान जा० यावत् क० कलंब
वृत्तिपत्र समान ॥ १६ ॥ च० चार क० कड सुं० वंशादिकका बंधन वि० वांस प्रमुखका क० बंधन च०

चत्तारि पुरिस जाया प० त० हिरण्णगोल समाणे, जाव वयरगोल समाणे ॥ १५ ॥
चत्तारि पत्ते प० त० असिपत्ते, करपत्ते, खुरपत्ते, कलंबचीरियापत्ते । एवामेव चत्ता
रि पुरुष जाया प० त० असिपत्तसमाणे, जाव कलंब चीरियापत्ते समाणे ॥ १६ ॥
चत्तारि कडा प० त० सुंबकडे, विदलकडे, चम्मकडे, कंबलकडे, । एवामेव चत्तारि

गोले समान ॥ १५ ॥ चार प्रकार के पत्र (शस्त्र) कहे हैं असिपत्र (तरवार) करपत्र [करवत]
क्षुरपत्र [उस्तरा] और कदम्बचीर पत्र (खुरपी) ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ असि पत्र समान
पुरुष तुरंत स्नेह का छेदन करे, २ करवत समान शनैः २ स्नेह का छेदन करे, ३ उस्तरे समान पुरुष
उपर के स्नेह का छेदन करे और ४ खुरपी समान पुरुष क्षेम में निंदनी जैसे अयोग्य वस्तु का छेदन
करे और योग्य वस्तु रक्खे ॥ १६ ॥ चार प्रकार के कडे [गुंथी हुइ सामग्री] कहे हैं १ मुंठ नामक तृण
[illegible] बनाइ हुइ सादडी, २ वांसादिक से बनीहुइ ३ चमडे से बनाइ हुइ और ४ कम्बल

च० चतुष्पद ए० एक खुरवाले दो० दोखुरवाले गं० गंडीपदवाले स० सणपदी च० चार प्रकार के खु० क्षुद्रपाणी पक्षी च० चमपक्षी लो० रोमपक्षी स० समुद्रपक्षी वि० वितत पक्षी च० चार प्रकारके खु० क्षुद्रपाणी बे० बेइन्द्रिय ते० तेइन्द्रिय च० चउरेन्द्रिय स० समूर्छिम पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच योनिवाले ॥ १८ ॥

समाणे ॥ १७ ॥ चउव्विहा पक्खी पुरिस जाया प० तं० सुंठकुड समाणे, जाव कंबलकुड समाणे ॥ १७ ॥ चउव्विहा चउप्पया प० तं० एगखुरा, दुखुरा, गंडीपदा, सणप्पया, । चउव्विहा पक्खी प० तं० चम्मपक्खी, लोमपक्खी, समुग्गपक्खी, विययपक्खी, । चउव्विहा खुद्दपाणा प० त० बेइंदिया, तेंदिया, चउरिंदिया, समुच्छिमपंचिंदियातिरिक्खजोणिया, ॥ १८ ॥ चत्तारि पक्खी प० तं० णिवइत्ता णाममेगे णो परिवइत्ता, परिवइत्ता णाम

के बंध से बनाए हुए ऐसे चार प्रकार के पुरुष गुणादिक के प्रतिबंध आश्री कहे हैं सुंठ की सादड़ी समान निकली, यावत् कम्बल की सादड़ी समान ॥ १७ ॥ चार प्रकार के चतुष्पद कहे १ एक खुरवाले अश्वादि २ दोखुरवाले गवादि ३ गंडीपद सो हस्ती वगैरह ४ सणपद नखवाले सिंहप्रमुख चार प्रकार के पक्षी कहे १ चर्मपक्षी चमड़े की पांखवाले चागुलादि २ रोमपक्षी रोम की पांखवाले हंसादि ३ समुद्रपक्षी बंधीहुई पांखवाले ४ वितत पक्षी खुल्ली पांखवाले चार प्रकार के क्षुद्र

च० चार प० पक्षी नि० उडनेवाले ए० कितनेक णो० नहीं प० फीरनेवाले ४। ए० ऐसे च० चार भि
माधु ॥ १० ॥ च० चार पु० पुरुष जात णि० निकृष्ट ए० कितनेक णि० निकृष्टात्मा णि० निकृष्ट
ए० कितनेक अ० अनिकृष्टात्मा च० चार पु पुरुष जात बु० बुध ए० कितनेक बु० बुध बु० बुध
ए० कितनेक अ० अबुध च० चार पु० पुरुष जात बु० बुध ए कितनेक बु० बुध हि० हृदय च० चार
पुरुष जात आ० आत्माकी अ० अनुकंपा रखनेवाला ए० कितनेक णो० नहीं प० अन्यकी अ० अनुकंपा

मेगे णो णिवइत्ता, एगे णिवइत्तावि परिवइत्तावि, एगे णो णिवइत्ता णो परिवइत्ता। एवा
मेव चत्तारि भिक्खागा प० तं० णिवइत्ता णाममेगे णो परिवइत्ता, ॥ १९ ॥ चत्तारि
पुरिस जाया प० तं० णिक्कट्ठेणाममेगे णिक्कट्ठे, णिक्कट्ठेणाममेगे अणिक्कट्ठे४ । चत्तारि
पुरिस जाया प० त० णिक्कट्ठे णाममेगे णिक्कट्ठप्पा, णिक्कट्ठे नाममेगे अणिक्कट्ठप्पा
४ । चत्तारि पुरिस जाया प० त० बुहेणाममेगेबुहे, बुहे णाममेगेअबुहे, ४ । च

प्राणी कहे—बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय और सम्मूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय ॥ १८ ॥ चार प्रकार के
पक्षी कहे हैं १ एक पक्षी उडने को समर्थ है परंतु फीरने को समर्थ नहीं है २ एक फीरने को
समर्थ है परंतु उडने को समर्थ नहीं है ३ एक उडने को और फीरने को समर्थ है ४ एक न तो
उडने को समर्थ है और न फीरने में समर्थ है ऐसेही चार प्रकार के भिक्षु कहे-एक भिक्षालेने
[illegible] में समर्थ नहीं है. यों चार भांगे जानना ॥ १९ ॥ चार प्रकार

करनेवाला च० चार प्रकारके सं० संवास दि० देवताका आ० असुरका र० राक्षसका मा० मनुष्यका च० चार प्रकारके सं संवास दे० देव ए० कितनेक दे देवीके साथ स० संवास ग० करता है दे० देव ए० कितनेक अ० असुरीसे सं० संवास ग० करता है अ० असुर ए० कितनेक दे० देवीकी साथ सं० संवास ग० करता है अ० असुर ए० कितनेक अ० असुरीकी स० साथ सं० संवास ग० जाता है. च चार प्रकारके स० संवास दे देव दे० देवीकी स० साथ सं० संवास ग० करता है दे० देव

चारि पुरिस जाया प० त० मुहेणाममेगे चुहहियए४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० आयाणुकंपए णाममेगे णोपराणुकंपए ४ ॥ २० ॥ चउव्विहे संवासे प० तं० दिव्वे, आसुरे, रक्खसे, माणुसे । चउव्विहे संवासे प० तं० देवेणाममेगे देवीए सर्द्धि संवास गच्छइ, देवेणाममेगे असुरीए सर्द्धि संवासं गच्छइ, असुरे णाममेगे देवीए सर्द्धि

के पुरुष कहे है ' एक साधु तप करने से शरीर से दुर्बल है और भाव से कषायों नहीं होने से भी दुर्बल है २ एक शरीर पे दुर्बल है परतु भाव से दुर्बल नहीं है बहुत कषाय होने से, यों चार भांग जानना । और भी चार प्रकार के पुरुष कहे हैं एक बहुत शास्त्र का अध्ययन करनेसे द्रव्यसे पंडित है और क्रियावंत होनेसे भावसे भी पंडित है यों चोभंगी जाननी चार प्रकारके पुरुष कहे–एक द्रव्य से पंडित और हृदय का भी पंडित अर्थात् विवेक युक्त यों चार भांग । और भी चार प्रकारके पुरुषः–एक

च० चार प० पक्षी नि० उडनेवाले ए० कितनेक णो० नहीं प० फीरनेवाले ४ । ए० ऐसे च० चार भि साधु ॥ १९ ॥ च० चार पु० पुरुष जात णि निकृष्ट ए० कितनेक णि० निकृष्यत्मा णि० निकृष्ट ए० कितनेक अ० अनिकृष्यत्मा च० चार पु० पुरुष जात बु० बुध ए० कितनेक बु० बुध बु० बुध ए० कितनेक अ० अबुध च० चार पु० पुरुष जात बु० बुध ए कितनेक बु० बुध हि० हृदय च० चार पुरुष जात आ० आत्माकी अ० अनुकंपा रखनेवाला ए० कितनेक णा० नहीं प० अन्यकी अ० अनुकंपा

मेगे णो णिवइत्ता, एगे णिवइत्तावि परिवइत्तावि, एगे णो णिवइत्ता णो परिवइत्ता। एवा मेव चत्तारि भिक्खागा प० तं० णिवइत्ता णाममेगे णो परिवइत्ता, ॥ १९ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० णिक्कट्ठेणाममेगे णिक्कट्ठे, णिक्कट्ठेणाममेगे अणिक्कट्ठे ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० णिक्कट्ठे णाममेगे णिक्कट्ठप्पा, णिक्कट्ठे नाममेगे अणिक्कट्ठप्पा ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० त० बुहेणाममेगेबुहे, बुहे णाममेगेअबुहे, ४ । च-

प्राणी कहे:—बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय और सम्मूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय ॥ १८ ॥ चार प्रकार के पक्षी कहे हैं १ एक पक्षी उडने को समर्थ है परंतु फीरने को समर्थ नहीं है २ एक फीरने को समर्थ है परंतु उडने को समर्थ नहीं है ३ एक उडने को और फीरने को समर्थ है ४ एक न तो उडने को समर्थ है और न फीरने में समर्थ है ऐसेही चार प्रकार के भिक्षु कहे:-एक भिक्षालेने केलिये जाने को समर्थ है परन्तु फीरने में समर्थ नहीं है, यों चार भांगे जानना ॥ १९ ॥ चार प्रकार

मकारके सं० सवास भ० असुर ए० कितनेक असुरी की साथ सं० संवास ग० करता है अ० असुर ए कितनेक म मनुष्यणी की साथ सं० सवास ग० करता है च० चार मकारके स० सवास र० राक्षस ए० कितनेक र राक्षसी की स० साथ स० सवास ग० करता है र० राक्षस ए कितनेक मा० मनुष्यणी की साथ म० सवास ग० करता है ॥ २१ ॥ च० चार मकारका अ० अपध्वंस आ० आसुर आ आभियोग

इ, ४ । चउव्विहे संवासे पण्णत्ते त० असुरे णाममेगे असुरीए सार्द्धि संवास गच्छइ, असुरेणाममेगे मणुस्सीएसार्द्धि संवास गच्छइ ४ । चउव्विहे सवासे प० तं० रक्खसे णाममेगे रक्खसीएसार्द्धि संवास गच्छइ रक्खसे णाममेगे माणुसीएसार्द्धि सवासं गच्छइ ४ ॥ २१ ॥ चउव्विहे अवद्धंसे प० त० आसुरे, आभियोगे, संमोहे, देवाकिब्बिसे ।

का देवी की साथ, और मनुष्य का मनुष्यणी की साथ चार मकार के संवास—असुर का असुरी की साथ, असुर का राक्षसी की साथ, राक्षस का असुरी और राक्षस का राक्षसी की साथ। और भी चार मकारके संवासः—असुर का असुरी की साथ, असुर का मनुष्यणी की साथ, यों चार भांगे। चार मकारके संवास राक्षस का राक्षसी की साथ, राक्षस का मनुष्यणीकी साथ, मनुष्य का राक्षसीकी साथ, और मनुष्य का मनुष्यणी की साथ ॥ २१ ॥ चार मकारके अपध्वंसे करे १ असुरपना पावे २ अभियोगीपना

१ चारित्र के फल का नाश

स० संसार दे० देव किल्विष च० चार कारणसे जी० जीव आ० असुरपनेका क० कर्म प० करते हैं को० क्रोधक स्वभावसे पा० कलहके स्वभावसे सं० संसक्त त० तपकर्मसे नि० निमित्त आ० आजीविकासे च० चार कारणसे जी० जीव आ० आभियोगका क० कर्म प० करते हैं अ० आत्मोत्कर्षसे प० परपरिवादसे भू० भूतिकर्मसे को० कौतुक करनसे। च० चार कारनसे जी० जीव सं० संमोहपनेका क० कर्म प० करते हैं उ० उन्मार्ग दे० बता

चउहिं ठाणेहिं जीवा आसुरत्ताएकम्म पकरेंति तं० कोहसीलयाए, पाहुडसीलयाए, स सत्ततवोकम्मेणं, निमित्ताजीवयाए । चउहिं ठाणेहिं जीवा आभिओगत्ताए कम्मंपग रेंति, तं० अणुक्कोसेण, परपरिवाएणं, भूइकम्मेणं, कोउयकरणेणं । चउहिं ठाणेहिं जीवा सम्मोहत्ताए कम्मपगरेंति तं० उम्मग्गदेसणए, मग्गंतराएणं, कामासंसपओगेणं

पावे ३ संमोहपना पावे और ४ किल्विषी देवपना पावे चार प्रकारसे जीव असुरदेवतामें जानेका कर्मबंध करता है १ क्रोधी स्वभाव से २ क्लेशके संयुक्त होने से ३ आहार उपधि वगैरह वस्तु के लिये तप करनेसे ४ ज्योतिषादि निमित्तसे आजीविका करने चार प्रकारसे जीव अभियोगपने (सेवकपने) का कर्म बांधे १ अपने गुणों का अभिमान करे २ अन्य के दोषों प्रगट करे ३ भूतिकर्म चिकित्साकर्म करे ४ कौतुक कर्म सौभाग्यादिकके निमित्त शरीर स्वच्छ करे। चार कारणसे जीव संमोह (मूढ देव) का कर्म बांधे १ जिनमार्ग

रायसे का० विषयके अभिलापसे लि० लोभसे नि० निदान क० करनसे च० चार कारन से जी० जीव दे० देवकिल्विषका क० कर्म प० करते हैं अ० अरिहंत के अ० अवर्णवाद ब० बोलते अ० अरिहंत मरूपित ध० धर्मका अ० अवर्णवाद बोलते आ० आचार्य उ० उपाध्याय के अ० अवर्णवाद ब० बोलते चा० चतुर्विध संघके अ० अवर्णवाद ब० बोलते ॥ २२ ॥ च० चार प्रकारकी प० प्रव्रज्या इ० इसलोक प० प्रतिबद्ध प परलोक प्रतिबद्ध दु० दोनों लोक प्रतिबद्ध अ अप्रतिबद्ध च० चार प्रकारकी प०

मिज्जानियाण करणेणं । चउहिं ठाणेहिं जीवा देवकिव्विसियाए कम्मं पगरेति, तं० अरहंताण अवण्णं वयमाणे, अरहतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्णं वयमाणे, आयरियउवज्झायाण मवण्ण वयमाणे चा, चाउव्वण्णस्स संघस्स अवण्ण वयमाणे ॥ २२ ॥ चउव्विहा पव्वज्जा प० त० इहलोगपडिबद्धा, परलोगपडिबद्धा, दुहओपडिबद्धा, अप्पडिबद्धा ।

मे अन्य मार्ग बतलावे, २ मोक्ष मार्गमें चलते को अंतराय देवे ३ काम भोगकी अभिलाषा करे ४ चक्रवर्तीकी ऋद्धि आदिका नियाणा करे । चार कारण से जीव किल्विषि देवताका कर्मबन्ध करता है १ अरिहन्तके अवर्णवाद बोलनेसे २ अरिहत मरूपित धर्म का अवर्णवाद बोलने से ३ आचार्य उपाध्याय का अवर्णवाद बोलने से ४ चतुर्विध संघ का अवर्णवाद बोलने से ॥ २२ ॥ चार प्रकार की प्रव्रज्या कही १ इसलोक प्रतिबद्ध सो पन्मरा २ परलोक प्रतिबद्ध सो भोगादिक की वांच्छा केलिये ३ इसलोक और परलोक

प्रवर्ज्या पु० पुरत प्रतिबद्ध मा० मार्गत (पीछेका) प्रतिबद्ध दु० दोनोंका प्रतिबद्ध अ० अप्रतिबद्ध च० चार प्रकारकी प० प्रवर्ज्या उ० अपपात प्रवर्ज्या अ० आख्यात प्रवज्या सं० संकेत प्रवज्या वि० पक्षीकी ग० गति समान (दृष्टांतासे) प्रवर्ज्या च० चार प्रकारकी प० प्रवर्ज्या तु० दुःख उत्पन्न कर पु० अन्यत्र

चउव्विहा पव्वज्जा प० त० पुरओपडिबद्धा, मग्गओपडिबद्धा, दुहओपडिबद्धा, अप्प डिबद्धा। चउव्विहा पव्वज्जा प० तं० उवायपव्वज्जा, अक्खायपव्वज्जा, संगारपव्वज्जा, विहगगइपव्वज्जा। चउव्विहा पव्वज्जा पं० त० तुयावइत्ता, पुयावइत्ता, मोयावइत्ता, परि-

(दोनों) लोक प्रतिबद्ध सो दोनोंलोक के भोगोंकी वाञ्छा केलिये ४ अप्रतिबद्ध सो मोक्ष के लिये। और भी चार प्रकार की दीक्षा कही १ पूर्वप्रतिबद्ध सो साधु बनकर कुटुम्बादिक में स्नेह भाव रखे २ पीछे का प्रतिबद्ध सो शिष्यादिक में स्नेह रखे ३ दोनों प्रतिबद्ध और ४ अप्रतिबद्ध सो मोक्ष केलिये चार प्रकार की प्रवर्ज्या कही १ अपपात प्रवज्या गुरुसेवा करने केलिये दीक्षाले २ आख्यात प्रवर्ज्या किसी के कहने से दीक्षालेने ३ संकेत से दीक्षालेने अर्थात् यदि तू दीक्षा ले तो मैं दीक्षा ग्रहण करू ४ पक्षिकी गति की तरह दीक्षाले अर्थात् जैसे पक्षी परिवारादि से हीन होजाय और अकेला देशान्तर चला जावे वैसेही परि वारादि रहित पुरुष देशान्तर में जाकर दीक्षा ग्रहण करे। और भी चार प्रकार की प्रवर्ज्या कही १

लेजाकर मो० मुक्त कराके प० लालचबताकर च० चार प्रकारकी ...

करनेवाला भ० भूरवीरकी तरह भोजन करे सी० सिंहकी तरह भोजन कर सि० शृगाल की तरह भोजन करे च० चार प्रकारकी कि० कृषि वा० एक बारबोनेसे प० अनेक बार बोनेसे ऊगे णि०

पुयावइत्ता । चउव्विहा पव्वज्जा प० त० णडक्खइत्ता, भडक्खइत्ता, सीहक्खइत्ता, सियालक्खइत्ता ॥ चउव्विहा किसी प० तं० वाविया, परिवाविया, णिंदिया, परिणिंदिया । एवामेव चउव्विहा पव्वज्जा प० तं० वाविया, परिवाविया, णिंदिया, परिणिंदि

पीडा उत्पन्न कर प्रवर्ज्या ग्रहण करे मुनिचन्द्र के पुत्र सागरचन्द्रवत् २ अन्यस्थान लेजाकर दीक्षादेवे × ३ परवश पना से मुक्त कराके दीक्षादेवे, ४ भोजन घृतादिक की लालच बताकर दीक्षादेवे । चार प्रकार की प्रवर्ज्या कही १ नटवत् दीक्षा ग्रहण करे-वैराग्य रहित उदर पोषणार्थ धर्मदेशना करे २ सुभटवत् तथाविध बल बतलाकर भोजन करे ३ सिंहवत् सिंहकी समान बल बतलाकर उदरपोषण करे ४ शृगाल समान सियाल जैसे गरिबाइ से उदर पोषण करे । चार प्रकार की कृषि कही १ एक वक्त बोने से ऊगे गेहुं चने २ उखाडकर दुसरी वक्त बोनेसे ऊगे शालिप्रमुख ३ बहु वक्त निंदने से ऊगे ४ वारंवार निंदनेसे ऊगे, इसी तरह चार प्रकार की प्रवर्ज्या कही १ एक ही वक्त दीक्षालेवे सामायिक चारित्र (बाइस तीर्थंकर के

× पापों से मुक्त कर दीक्षादेवे ऐसा भी अर्थ कितनेक करते हैं

छिद्नेसे ऊगे प० चार चार छिद्नेसे ऊगे च० चार प्रकारकी प प्रवर्ज्या ध० धान्य पु० पुद्द संमान ध० धान्य वि० विस्तृत समान ध० धान्य वि० विकीर्ण समान ध० धान्य सं० संकर्षित समान ॥ २२ ॥ च० चार स० संज्ञा प० कही आ आहार संज्ञा भ० भयसंज्ञा मे० मैथुनसंज्ञा प० परिग्रहसंज्ञा च० चार कारनसे आ० आहार संज्ञा स० उत्पन्न होती है ओ० खाली

या । चउव्विहा पव्वज्जा प० त० धण्णपुञ्जियसमाणा, धण्णविरल्लियसमाणा धण्ण विक्खित्तसमाणा, धण्णसंकट्टियसमाणा ॥ २२ ॥ चत्तारि सण्णाओ पण्णत्ताओ त० आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा । चउहिंठाणेहिं आहारसण्णा

चारे के साधु)२ वारवार दीक्षा सो छेदोपस्थापनीय चारित्र ३ एक वक्त आलोचना कर शुद्ध होवे फीर पापकरे नहीं ४ वारवार अतिचार लगावे और प्रायश्चित लेवे और भी चार प्रकार की प्रवर्ज्या कही १ खले में शुद्ध कर धान्य का इकठ्ठा कीया वैसी प्रवर्ज्या अतिचार रहित २ खले में वायु से विस्तृत हुवा धान्य जैसी थोडे उपदेश से शुद्ध होवे ३ खले में बैलोंके पगतल नीचे रहे हुवे धान्य जैसी कालान्तर में शुद्ध होवे और ४ खेत में से खले में लाये धान्य जैसी प्रवर्ज्या बहुत अतिचार वाली ॥ २२ ॥ चार प्रकार की संज्ञा कही आहार संज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुन संज्ञा, और परिग्रह संज्ञा । जीव को चार स्थानक में आहार लेने की इच्छा उत्पन्न होवे १ उदर खाली होने से २ क्षुधा वेदनीय क उदय से ३ मति से आहार की बात

उदरसे छु० छुधावेदनीय क० कर्मके उ० उदयसे म० बुद्धिसे [आहार की बात सुननेसें] त० उसके लिये उ० उपयोगसे। च० चार कारनसे भ० भयसंज्ञा स० उत्पन्न होती है ही० हीनसत्वसे भ० भयवेदनीय क० कर्मके उ० उदयसे म० मतिसे त० उसकेलिये उ० उपयोगसे च० चार कारणसे मे० मैथुनसंज्ञा स० उत्पन्न होती है चि० संचित मं० मांस सो० रुधिरसे मो० मोहनीयकर्मके उ० उदयसे म० मतिसे त० उसके लिये उपयोगसे च० चार कारणसे प० परिग्रह संज्ञा स० उत्पन्न होती है अ० अविमुक्त होनेसे लो० लोभवेद

समुप्पज्जइ तं० ओमकोट्ठयाए, छुहावेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, मईए, तदट्ठोवओगे णं ॥ चउहिं ठाणेहिं भयसण्णा समुप्पज्जइ तं० हीणसत्तयाए, भयवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, मईए, तदट्ठोवओगेणं। चउहिंठाणेहिं मेहुणसण्णा समुप्पज्जइ तं० चित्तमंस सोणियाए, मोहणिज्जस्सकम्मस्सउदएणं, मईए, तदट्ठोवओगेणं। चउहिं ठाणेहिं परि

सुनने से ४ और निरंतर आहार की चिन्तवना करने से। चार प्रकार से भय संज्ञा उत्पन्न होवे १ हीन सत्वपना से अर्थात् बल रहित अशक्त होने से २ भयवेदनी कर्म के उदय से ३ मति से भयकी बात करने से और ४ निरंतर भयकी चिन्तवना करने से। मैथुन संज्ञा चार स्थानक में उत्पन्न होवे १ मांस लोही के बढ़ने से २ मोहनीय कर्म के उदय से ३ मैथुन की कथा सुनने से और ४ उसका निरंतर चिन्तवन करने से। चार स्थानक में परिग्रह संज्ञा उत्पन्न होवे १ भंडोपकरण से मुक्त नहीं होने से २ लोभ

नीयकर्मके उ० उदयसे म० मतिसे त० उसके उपयोगसे ॥ २३ ॥ च० चार प्रकार के का० काम सिं० शृंगार क० करुणा बी० बीभत्स रो० रौद्र सिं० शृंगारकाम दे० देवताओंको क० करुणा काम म० मनुष्यको बी० बीभत्स काम ति० तिर्यंचयोनिवालेको रो० रौद्र काम ने० नारकी को ॥ २४ ॥ च० चार प्रकार के उ० पानी उ० उत्तान (तुच्छ) ए० एक उ० उत्तानोदक उ० उत्तान ए० एक गं०

गाहसण्णा समुप्पजइ तं• अतिमुत्तयाए,लोभवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं,मईए,तदट्ठोव-ओगेणं ॥ २३ ॥ चउव्विहा कामा प• त• सिंगार, कलुणा, बीभच्छा, रोद्दा। सिंगारा कामा देवाण, कलुणा कामा मणुयाणं बीभच्छा कामा तिरिक्ख जोणियाणं, रोद्दा-कामा णेरइयाणं ॥२४॥ चत्तारि उदगा प• तं• उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोदए, उत्ता णे णाममेगे गंभीरोदए, गंभीरे णाममेगे उत्ताणोदए, गंभीरे णाममेगे गंभीरोदए। एवा-

मोहनीय के उदय से ३ परिग्रह की बात मति से सुनने से और ४ निरंतर उसका चिन्तवन करने से ॥ २३ ॥ चार प्रकार के काम कहे हैं १ शृंगार २ करुणा, ३ बीभत्स और ४ रौद्र उस में से शृंगार काम देवों को, करुणा मनुष्यों को, बीभत्स तिर्यंचयोनिवाले को और रौद्र नारकी के जीवों को ॥ २४ ॥ चार प्रकार के पानी कहे १ एक उत्तान (तुच्छ) पानी और उत्तान (तुच्छ) दीखता है २ एक है वो थोडा पानी परंतु ऊंडा होने से गंभीर दीखता है ३ एक बहुत पानी वाला है परंतु चौडा होने से

गंभीर गं० गंभीर ए० एक उ० उत्तानोदक गं० गंभीर ए० एक गंभीरोदक ए० ऐसा च० चार पु०
पुरुष जात प० कहे उ उत्तान ए एक उ उत्तानहृदय। च० चार उ० पानी उ० उत्तान ए० एक
उ० उत्तानभासी गं० गंभीरभासी ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुषजात च० चार उ० उदधि उ० उत्तान
ए एक उ० उत्तानोदधि ए० ऐसेही च चार पु० पुरुष जात उ० उत्तान ए० एक उ० उत्तान हृदय

मेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० उत्ताणे णाममेगे उत्ताणहियए, उत्ताणे णाममेगे गंभीरहियए,४। चत्तारि उदगा प० तं० उत्ताणे णाममेगे उत्ताणभासी, उत्ताणे णाममेगे गंभीरामासी,४। एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० उत्ताणे णाममेगे उत्ताणभासी, उत्ताणेणाममेगे गंभीरोभासी,४। चत्तारि उदही प० तं० उत्ताणे णा-

से तुच्छ दीसता है ४ एक बहुत पानी वाला है और गंभीर दीसता है वैसेही चार प्रकार के पुरुष कहे
हैं १ एक का बोलना तुच्छ है और हृदय भी तुच्छ है २ एक मनुष्य का बोलना गंभीर परंतु हृदय
तुच्छ यों चौभंगी और भी चार प्रकार के पानी कहे हैं १ उत्तान नामा एक अल्प उत्तान अवभासे स्थान
विक्षेप २ एक उत्तान है परंतु गंभीर दीसता है यों चार भांगे जानना वैसेही चार पुरुष कहे हैं: एक पुरुष
का नाम भी तुच्छ और हृदय भी तुच्छ २ एक पुरुष का नाम गंभीर और हृदय तुच्छ यों चार भांगे
जानना चार प्रकार के समुद्र कहे हैं एक समुद्र में पानी अल्प और दीसने में भी तुच्छ २ एक समुद्र

च० चार उ० उदधि उ० उत्तान उ० उत्तानभासी ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात उ० उत्तान ए० एक उ० उत्तान भासी ॥ २५ ॥ च० चार त० तीरने वाले स० समुद्र त० तीरुं ए० एक स० समुद्र त० तीरते हैं स० समुद्र त० तीरुं ए० एक गो० गोपपद त० तीरे ४। च० चार त० तीरनेवाले स० समुद्र त० तीरुंगा ए० एक स समुद्रमें वि० प्रवेशकरे स० समुद्र त तीरुंगा ए० कितनेक गो० गोपपदमें वि० प्रवेश करे

ममेगे उत्ताणोदही, उत्ताणे णाममेगे गभीरोदही, ४। एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० उत्ताणे णाममेगे उत्ताणहियए ४। चत्तारि उदधी प० त० उत्ताणे णाममेगे उत्ताणभासी, उत्ताणे णाममेगे गभीरोभासी, ४। एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० उत्ताणणाममेगे उत्ताणोभासी ४ ॥२५॥ चत्तारि तरगा प० तं० समुद्दं तरामी एगे समुद्दं तरइ, समुद्दं तरामी एगे गोपतं तरइ, गोपत तरामी एगे ४, । चत्तारि तरगा प० त० समुद्द

में पानी तुच्छ और दीखने में गंभीर यों चौभंगी ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं -एक मनुष्य दीखने में तुच्छ और स्वभाव का भी तुच्छ यों चार भांगे जानना और भी चार प्रकार के समुद्र १ एक नाम का उत्तान और उत्तान दीखता है यों चार भांगे जानना वैसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं ॥ २५ ॥ चार प्रकार के तरक (तीरने वाले) कहे १ एक तीरने वाला मैं समुद्र तीरुं ऐसा चिन्तवे और समुद्र भी

॥ २६ ॥ च० चार कुं० कुंभ प० पूण ए० एक पु० पूर्ण पु० पूर्ण ए० एक तु० तुच्छ ४ ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुष जात । च० चार कुं० कुंभ (घडे) पु० पूण ए० एक पु० पूर्णमासी पु० पूर्ण ए० एक तु० तुच्छ मासी ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात । च० चार कुं० कुंभ पु० पूर्ण ए० एक पु० पूर्णरूप पु० पूर्ण ए० एक तु० तुच्छरूप ४ । ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुष जात च० चार कुं

तरित्ता णाम मेगे समुद्दे विसीयइ, समुद्द तरेत्ता णाममेगे गोपपए विसीयइ, ४ ॥२६॥
चत्तारि कुंभा प०तं० पुण्णे णाममेगेपुण्णे, पुण्णे नाममेगे तुच्छे, तुच्छे णाममेगे पुण्णे,
तुच्छे णाममेगे तुच्छे । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प०त० पुण्णे णाममेगे पुण्णे ४।
चत्तारि कुंभा प० तं० पुण्णे णाममेगे पुण्णोमासी, पुण्णेणाममेगे तुच्छोमासी, ४ ।

तीरे २ एक तीरने वाला समुद्र तीरू ऐसा चिन्तवे परंतु गोपपद तीरे यों चार भांगे और भी चार प्रकार के तीरने वाले कहे १ समुद्र में तीरने का कहकर समुद्र में प्रवेश करे २ समुद्र तीरूं ऐसा कहकर गोपपद में प्रवेश करे यों चार भांगे ॥ २६ ॥ चार प्रकार के कुंभ कहे हैं १ एक कुंभ का नाम भी पूर्ण और घृतादि से भी परिपूर्ण २ एक कुंभका नाम पूर्ण और घृतादि से तुच्छ ३ एक कुंभका नाम तुच्छ और घृतादि से परिपूर्ण ४ एक कुंभका नाम तुच्छ और घृतादि से भी तुच्छ ऐसेही चार प्रकार के पुरुष

१ गोपपद गाय का पांव डुबे जितना पानी

कुंभ पु० पूर्ण ए० एक पि० प्रिय पु० पूर्ण ए० एक अ० असार तु० तुच्छ ए० एक पि० प्रिय तु० तुच्छ ए० एक अ० असार ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुष जात च चार कुं कुंभ पु० पूर्ण ए० एक भि० स्रवता है ए० ऐसेही च० चार पु पुरुष जात त० तैसे। च० चार कुंभ भि० फूटा ज० जरजरा प० क

एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० पुण्णे णाममेगे पुण्णोभासी, ४ । चत्तारि कुंभा प० तं० पुण्णेणाममेगे पुण्णरूवे पुण्णेणाममेगे तुच्छरूवे, ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० पुण्णेणाममेगे पुण्णरूवे । चत्तारि कुंभा प० त० पुण्णेवि एगे पियट्ठे, पुण्णेवि एगे अवदले, तुच्छेवि एगे पियट्ठे, तुच्छेविएगे अवदले। एवामेव चत्तारि

कहे हैं एक पुरुष का नाम पूर्ण है और सद्गुणों से परिपूर्ण है, ऐसे चार भांगे जानना और भी चार प्रकार के कुंभ कहे हैं १ एक नाम से पूर्ण है और घृतादि से सुशोभित दीखता है २ एक नाम से पूर्ण है परंतु घृतादि रहित दीखता है यों चार भांगे जानना ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं एक पुरुष का नाम पूर्ण है और धनादि से परिपूर्ण दीखता है यों चौभंगी जानना और भी चार प्रकार के पुरुष कहे:-एक कुंभ पूर्ण है और पूर्णरूप (सुंदराकार) है २ एक पूर्ण है परतु रूप में हीन है यों चौभंगी जानना ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष ज्ञानादिक से पूर्ण है और पूर्णरूप है यों चौभंगी जानना और भी चार प्रकार के कुंभ कहे हैं १ एक कुंभ पूर्ण है और सुवर्ण का

था भ० पका ए० ऐसेही च० चारमकारके घ० चारिभ च० चार कुं० कुंभ म० मधुकुंभ ए० एक म मधुकाढकनवाला म० मधुकुंभ ए० एक वि विपकाढकनवाला वि० विपकुंभ ए० एक म० मधुकाढकनवाला वि० विपकुंभ ए० एक वि० विपकाढकन ए० ऐसेही च चारपुरुपजात। हि० हृदय

पुरिस जाया प० तं० पुण्णेविएगे पियट्ठे, तहेव ॥ चत्तारि कुंभा प० तं० पुण्णेवि एगे विस्संदइ, पुण्णेविएगेणो विस्सदइ, तुच्छेविएगे विस्सदइ, तुच्छे विएगे णो विस्संदइ।एवा मेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० पुण्णेविएगेविस्सदइ ४ तहेव। चत्तारि कुं-भा प० तं० भिन्ने, जज्जरिए, परिस्साइ अपरिस्साई। एवामेव चउव्विहे चरित्ते

बना हुआ होने से मिय है २ एक कुंभ पूर्ण है परंतु मत्तिका का होने से पक्व नहीं हुआ है ३ एक तुच्छ आकार वाला है परंतु सुवर्ण का होने से मिय है और ४ एक तुच्छ आकार वाला है और तुच्छ मत्तिका का बना हुआ है ऐसेही चार मकार के पुरुष कहे हैं:-एक ज्ञानादिकसे पूर्ण है और मिय है यों चौभंगी जानना और भी चार मकार के कुंभ एक कुंभ पूर्ण है परंतु पानी नीकलता है २ एक पूर्ण है और पानी नहीं नीकल-ता है ३ एक तुच्छ है और पानी नीकलता है, और ४ एक तुच्छ है परंतु पानी नहीं नीकलता है ऐसेही चार मकारके पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष ज्ञान धनादिकसे पूर्ण है और झरता है अर्थात् दातार है २ एक ज्ञान धनादिक से पूर्ण है परंतु दातार

अ० पापरहित म० कालुष्यतारहित जी० जिव्हायी म० मधुरबोलनेवाली णि० नित्य अं० मित्त पु० पुरुषमें वि० हावीरे से० यह म० मधुकुंभ म० मधुकाढकनवाला इ० हृदय अ अपापी म० कालुष्य वा रहित जी जिव्हा क कटुबोलनेवाली म० जिसपुरुषमें वि० विद्यमानहै से० वह म० मधुकुंभ वि० वि

प० तं० मित्त जाव अपरिस्साई । चत्तारि कुंभा प० तं० महुकुंभे णाममेगे महुप्पिहाण, महुकुभे णाममगे विसप्पिहाणे, विसकुभे णाममेगे महुप्पिहाणे विसकुंभे णाममेगे विसप्पिहाणे । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० त० मधुकुंभेणाममेगे मधुप्पिहाणे, ४ ॥ हियय मपाव मकलुस । जीहाविय मधुर भासिणी णिच्च ॥ जंमि

नहीं है ३ एक ज्ञान धनादिक स रहित है परंतु दातार है, और ४ एक ज्ञान धनादिक से रहित है और दातार भी नहीं है और चार प्रकार के कुंभ कहे हैं १ पक्व, २ जरजरा ३ अपक्व और ४ पक्व ऐसेही चार चारित्र कहे हैं १ एक दीक्षा का भंग करने वाला, २ एक छेदलेने वाला, ३ सूक्ष्म अतिचार वाला और ४ निरतिचारी और भी चार प्रकार के कुंभ कहे हैं १ एक कुंभ मधु (शहत) का है और उसका ढक्कन भी मधुका है २ एक मधुका है और विषका ढक्कन है ३ एक विषका कुंभ है और ढक्कन मधुका है और ४ एक विषका कुंभ है और विषका ही ढक्कन है ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ जो पुरुष पाप रहित और मधुर भाषी है वो मधु कुंभ और मधु कारी ढक्कन वाला गिना जाता

पकाढक्कन जं० जो हि० हृदय क० कालुष्यतामय जि० जिव्हा म० मधुरभाषिणी णि० निस जं० जिस पु० पुरुषमें वि० विद्यमानहै स० वह वि विषकुंभ म० मधुकाढक्कन जं० जिसका हि हृदय क० कालुष्यतामय जी० जिव्हाभी क० कटुभाषिनी णि० नित्य ज० जिस पुरुषमें वि० विद्यमान है से० वह वि० विषकुंभ वि० विषका ढक्कन ॥ २७ ॥ च० चार प्रकारके उ० उपसर्ग दि० देवता को मा० मनुष्य के

पुरिसंमि विज्जइ, से मधुकुंभे महुपिहाणे ॥ १ ॥ हिययपाव मकलुस, जीहाविय कडुय भासिणी णिच्चं, जमिपुरिसमि विज्जइ से मधुकुंभे विसपिहाणे ॥२॥ ज हियय कलुस-मयं, जीहाविय महुरभासिणी णिच्चं, जमि पुरिसंमि विज्जइ, से विसकुंभे मधुपिहाणे ॥ ३ ॥ जं हियय कलुसमय, जीहाविय कडुगभासिणी णिच्च, जम्मिपुरिसमि विज्जइ, से विसकुंभे विसपिहाणे ॥४॥ २७ ॥ चउव्विहा उवसग्गा प० त० दिव्वा, माणुसा,

है २ जिस पुरुष का हृदय पाप रहित है परन्तु मिष्ट भाषी नहीं है वह मधु कुंभ और विषका ढक्कन वाला गिना जाता है ३ जिस पुरुष का हृदय पापिष्ट है परंतु मधुर भाषावाला है वह विषका कुंभ और मधुका ढक्कन वाला गिना जाता है ४ जिसका हृदय पापिष्ट है और मधुर भाषा भी नहीं वह विषका कुंभ और विषका ही ढक्कन वाला गिना जाता है ॥ २७ ॥ चार प्रकार के उपसर्ग कहे हैं १ देवता के उपसर्ग, २ मनुष्य

ति तिर्यंचके आ० आत्म सं० संवेदनीय। दि० देवता के उ० उपसर्ग च० चार प्रकारके हा० हास्य प० द्वेष वी० ईर्षा पु० विविध प्रकारके मा० मनुष्य के उ० उपसर्ग च चार प्रकारके हा० हास्य प० द्वेष वी० ईर्षा कु० कुशील सेवने का। ति० तिर्यंचके उ० उपसर्ग च० चार प्रकारके भ० भय प० द्वेष आ० आहारके लिये अ० अपत्य (बालक) सा० रक्षाके लिये आ० आत्म संवेदनीय उ० उपसर्ग च० चार

तिरिक्खजोणिया, आयसंवेयणिया दिव्वा उवसग्गा चउव्विहा प० त० हासा, प्पओसा, वीमंसा, पुढोवेमाया। माणुस्सा उवसग्गा चउव्विहा प० तं० हासा, प्पओसा, वीमसा, कुसील पडिसेवणया। तिरिक्खजोणिया उवसग्गा चउव्विहा प० तं० भया, पदोसा, आहारहेउ, अवच्चलेण सारक्खणया। आयसंवेयणिज्जा उवसग्गा चउव्विहा

के, ३ तिर्यंच के और ४ स्वतःने उत्पन्न किये हुवे, आत्मघातादि उस में से देवता के उपसर्ग चार प्रकार के कहे हैं १ हास्य से देवता उपसर्ग करे २ द्वेष से उपसर्ग करे, ३ ईर्षा से उपसर्ग देवे ४ विविध प्रकार से उपसर्ग देवे। मनुष्य के उपसर्ग चार प्रकार के हास्य से, द्वेष से, ईर्षा से, और कुशील सेवने से तिर्यंच के उपसर्ग चार प्रकार के भय से, प्रद्वेष से, आहार के लिये, और अपने बच्चेका रक्षण के लिये। आत्म संवेदनीय उपसर्ग चार प्रकार के १ संघट्टन से अर्थात् आंख में रज पडी होवे उसे हाथ से घसने से वेदना होवे सो २ गिरने से वेदना होवे सो ३ सोते उठते पांवादि स्तंभित होजावे सो और ४ वायु वगैरह से

१ संगमने महावीर स्वामी का उपसर्ग किये २ गोशालाने ईर्षासे महावीर स्वामी को उपसर्ग किये

प्रकारके प० सम्पूर्नसे प० गिरने से थं० स्तम्भ होनेसे ले० श्लिष्यता स ॥ २८ ॥ च० चार प्रकारके क० कर्म सु० शुभ ए० कितनेक सु० शुभ सु० शुभ ए० कितनेक अ० अशुभ ४। च० चार प्रकारके क० कर्म सु० शुभ ए० कितनेक सु० शुभ विपाक सु० शुभ ए० कितनेक अ० अशुभ विपाक ४। च० चार

प० तं० घट्टणया, पवडणया, थंभणया, लेसणया ॥ २८ ॥ चउव्विहे कम्मे प० तं० सुभेणामं एगेसुभे, सुभेणाममेगे असुभे, असुभे० ४ । चउव्विहे कम्मे प० तं० सुभेणाम एगे सुभविवागे, सुभेणामंएगे असुभविवागे, असुभेणाममेगे सुभविवागे, असुभेणाममेगे असुभविवागे, ॥ चउव्विहे कम्मे प० तं० पगडीकम्मे, ट्ठिईकम्मे,

पांच आदि अंग रहमाय सो ॥ २८ ॥ चार प्रकार के कर्म कहे १ एक कर्म शुभ पुण्य प्रकृतिरूप और भावि में भी शुभफल देने वाला सुबाहु कुमारवत् २ शुभ कर्म होकर अशुभ फल देवे संभूम चक्रीवत् ३ अशुभ कर्म होने पर शुभफलदवे हरकेश मुनिवत् और ४ अशुभ कर्म होकर अशुभ फल देवे कालकसोकरीकवत और भी चार प्रकार क कर्म कहे हैं १ एक शुभ कर्म पहिले बांधते समय सुखदन और उदय काल में भी सुखदवे २ एक बांधते समय शुभ परंतु उदय काल में अशुभ कर्म आजाने से अशुभ फलदेवे ३ एक बांधते समय अशुभ परंतु उदय काल में शुभ कर्म आजाने से शुभ फल देवे ४ एक बांधते समय अशुभ और उदय काल में भी अशुभ और भी चार प्रकार के कर्म कहे हैं १ प्रकृति-कर्मों का स्वभाव २ स्थिति कर्म ३

प्रकारके क० कर्म प० प्रकृति कर्म ठि० स्थिति कर्म अ० अनुभाव कर्म प० प्रदेश कर्म ॥ २९ ॥ च० चार प्रकारके सं० संघ स० साधु स० साध्वी सा० श्रावक सा० श्राविका ॥ ३० ॥ च० चार प्रकार की बु० बुद्धि उ० औत्पातिकी वे० वैनयिकी क० कार्मणकी पा० पारिणामिकी च० चार प्रकारकी म० मति ओ० अवग्रहमति ई० ईहा अ० अवाय धा० धारणा अ० अथवा च० चार प्रकारकी म० मति अ० कुभ

अणुभावकम्मे, पदेसकम्मे ॥ २९ ॥ चउव्विहे संघे प० त० समणा, समणीओ, सावगा, साविगाओ ॥ ॥ ३० ॥ चउव्विहा बुद्धी प० त० उप्पइया, वेणइया, कम्मिया, पारिणामिया ॥ चउव्विहा मई प० त० ओग्गहमई ईहामई, अवायमई, धारणा

अनुभाग कर्म-कर्मोंका रस और ४ प्रदेश कर्म पुद्गलोंका दल ॥ २९ ॥ चार प्रकारके संघ कहे हैं:-साधु, साध्वी, श्रावक, और श्राविका ॥ ३० ॥ चार प्रकारकी बुद्धि कही, औत्पातिकी अपूर्वतर्क २ वैनयिकी विनय से उत्पन्न होवे ३ कार्मणि की कर्म करने से उत्पन्न होवे ४ पारिणामिकी वय पकने से उत्पन्न होवे। चार प्रकार की मति कही १ अवग्रह सो प्रथम वस्तु ग्रहण २ ईहा सो वस्तु विचारना ३ वस्तु का निश्चय करना सो अवाय और ४ वस्तु को धारण करना सो धारणा। और भी चार प्रकार की मति कही १ असमर सो पानी के घडे समान बहुत अर्थ ग्रहण करसके नहीं २ विदुरोदक (कुवे के पानी) समान नये २

म० उ० पानी समान वि० विदुरादक समान स सरोवरके उ० पानी समान सा० सागरका उ० पानी समान ॥ ३१ ॥ च० चार प्रकारके सं० संसारको स० प्राप्त जी० जीवों ने० नारकी ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव च चार प्रकारके स० सब जी० जीव म० मनयोगी व० वचन योगी का० काय योगी अ० अयोगी अ० अथवा च० चार प्रकारके स० सब जीव इ० स्त्रीवेदक पु० पुरुषवेदक न० नपुंसक

मई । अहवा चउव्विहामई प० तं० अरजरोदग समाणा, खियरोदग समाणा स रोदगसमाणा, सागरोदगसमाणा ॥ ३१ ॥ चउव्विहा ससार समावन्नगा जीवा प० तं० णरइया, तिरिक्ख जोणिया, मणुस्सा देवा । चउव्विहा सव्वजीवा प० तं० मणजोगी, वयजोगी कायजोगी, अजोगी । अहवा चउव्विहा सव्वजीवा प० तं०

अर्थ ग्रहण करे ३ सर (तलाव) के पानी समान बहुत पानी की भावक जावक रहे और लोगों को उपकारी होवे ४ समुद्र के पानी समान सब पदार्थ विशेष जाने अक्षुद्र बुद्धि महा ज्ञानी ॥ ३१ ॥ चार प्रकार के संसारी जीव कहे १ नारकी २ तिर्यंच ३ मनुष्य और ४ देवता । सब जीव चार प्रकार के हैं: मनयोगी, वचनयोगी काययोगी, और अयोगी अथवा चार प्रकार के जीव स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी नपुंसक वेदी, और अवेदी और भी सब जीव चार प्रकार के चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी, अवधि दर्शनी, और केवलदर्शनी अथवा

वेदक अ० अवेदक अ० अथवा च० चार प्रकारके स० सब जीव च० चक्षुदर्शनी अ० अचक्षुदर्शनी ओ० अवधि दर्शनी के० केवल दर्शनी अ० अथवा च० चार प्रकारके स० सब जीव सं० संजती अ० असंजती सं० संजता संजती णो० नहीं संजवा संजती ॥ १२ ॥ च० चार पु० पुरुषजात मि० मित्र ए० कितनेक मि मित्र मि मित्र ए० कितनेक अ० अमित्र [शत्रु] च० चार पु० पुरुषजात मि० मित्र ए० कितनेक

इत्थिवेयगा, पुरिसवेयगा, णपुंसकवेयगा, अवेयगा। अहवा चउव्विहा सव्वजीवा प० तं० चक्खुदंसणी, अचक्खुदंसणी, ओहिदंसणी, केवलदंसणी । अहवा चउव्विहा सव्व जीवा प० तं० संजया, असंजया, संजयासंजया, णोसंजयासंजया ॥ १२ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० मित्तेनाममेगेमित्ते, मित्तेनाममेगे अमित्ते, अमित्ते नाममेगे मित्ते, अमित्ते नाममेगे अमित्ते । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० मित्तेणाममेगे मित्त-

चार प्रकार के जीवः-संजती, असंजती, संजतासंजती, नोसंजतासंजती ॥ १२ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे १ एक नाम भी मित्र है और कर्तव्य भी मित्र है सद्गुरुवत् इसलोक परलोक को उपकारी २ एक यहां तो मित्र है परन्तु आगे दुःखप्रद है विषयादिवत् ३ एक यहां शत्रु है परन्तु आगे मित्र है हित शिक्षा देनवाले गुरु ४ एक इसलोक और परलोक को दुःखदायी है स्नेही सम्बन्धी ॥ १२ ॥ और भी चार प्रकार के पुरुष

मि० मिश्ररूप ॥ ३३ ॥ च० चार पु० पुरुषजात मु० मुक्त ए० कितनेक मु० मुक्त मु० मुक्त ए० कितनेक अ० अमुक्त च० चार पु० पुरुषजात मु० मुक्त ए० कितनेक मु० मुक्तरूप ॥ ३४ ॥ पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच च० चार गतिवाले च० चार आगतिवाले पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यं० प० पंचेन्द्रिय तिर्यंच में उ० उत्पन्न होते णे० नारकी में से ति० तिर्यंच में से म० मनुष्य में से दे० देव में से उ० उत्पन्न होवे से वही प० पंचेन्द्रिय तिर्यंच पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंचपना वि० त्यजते णे० नारकीपने जा० यावत् दे० देवपने उ०

रूवे चउभंगो॥३३॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० मुत्तेणाममेगे मुत्ते, मुत्ते णाममेगे अमु
त्ते० । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० मुत्तेणाममेगे मुत्तरूवे, ४ ॥ ३४ ॥ पंचेंदिय
तिरिक्खजोणिया चउगइया चउआगइया प० त० पंचेंदियतिरिक्खजोणिए पंचेंदियतिरिक्ख
जोणिएसु उववज्जमाणे णेरइएहिंतो वा तिरिक्खजोणिएहिंतो वा,मणुस्सेहिंतोवा, देवेहिंतोवा,
उववज्जेजा, सेच्चेवणं से पंचेंदियतिरिक्खजोणिए पंचिंदियतिरिक्खजोणिय विप्पजह-
यमाणे णेरइयत्ताए जाव देवत्ताए उवागच्छेज्जा ॥ मणुस्सा चउगइया चउआगइया एवं

कहे १ एक मुक्त पुरुष और मुक्तरूप अर्थात् साधुवेष सहित यों चौभंगी जानना ॥ ३४ ॥ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले जीवको चार आगति व चार गति कही पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनि में उत्पन्न होनेवाला जीव नारकी, तिर्यंच मनुष्य और देवता में से आकर उत्पन्न होता है और उसमें से निकलकर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य, और देवता

उत्पन्न होवे म० मनुष्य च० चारगतिवाले च० चार आगतिवाले ए० एसे म० मनुष्य का ॥ ३८ ॥ बे० पञ्चन्द्रिय जीव का अ० आरंभ नहीं करनेवाले को च० चार प्रकारका सं० संयम क० करता है जि जिव्हाके विकारों के सो० सुखसे अ० दूर नहीं होना भ० होवे जि० जिव्हाके दुःख का भ० सयोग नहीं मिलाना भ० होवे फा० स्पर्शमय सु० सुख से अ० दूर नहीं होना भ० होवे फा० स्पर्शमय दुःख के अ०

चेवमणुस्सावि ॥ ३५ ॥ बेइंदियाण जीवा असमारभमाणस्स चउव्विहे सजमे कज्जइ तं० जिब्भामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ, जिब्भामएणं दुक्खेणं असजोगेत्ता भवइ, फासामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ, फासामयाओ दुक्खाओ असजोगेत्ता भवइ, । एव चेव बेइंदिया जीवा सामरभमाणस्स चउव्विहे असजमे कज्जइ, जिब्भामयाओ सोक्खाओ ववरोवित्ता भवइ, जिब्भामएण दुक्खेण संजोगेत्ता

में उत्पन्न होवे वैसेही मनुष्य की चार गति और चार आगति तिर्यंच पंचेन्द्रिय जैसे कहना ॥ ३८ ॥ बेइन्द्रिय जीव का आरंभ नहीं करने वाले को चार प्रकार का संयम कहा है १ जिव्हेन्द्रिय के सुख से रहित होवे नहीं २ जिव्हेन्द्रिय के दुःख होवे नहीं ३ स्पर्शेन्द्रिय के सुख से रहित होवे नहीं और ४ स्पर्शेन्द्रिय के दुःख होवे नहीं वैसेही बेइन्द्रिय जीव का आरंभ करने वाले को चार प्रकार का असंयम कहा है।

संभाग नहीं मिलाना भ० होवे ए० ऐसेही ते० तेइन्द्रिय जीव का स० सपारंभ करनेवाला को च० चार प्रकारका अ० असंयम क० करता है ॥ ३६ ॥ स० सम्यक् दृष्टि णे० नारकी को चार कि० क्रिया प० कही आ० आरंभिकी प० परिग्रहिकी मा० मायाप्रत्ययिकी अ० अप्रत्याख्यानिकी। स० सम्यक् दृष्टि अ० असुरकुमार को च० चार कि० क्रिया ए० ऐसेही ए० ऐसे वि० विकलेन्द्रिय व० छोडकर जा० यावत् वे० वैमानिकको ॥ ३७ ॥ च० चार कारन से स० होते हुवे गु० गुणों णा० नष्ट होवे को० क्रोधसे

भवइ, फासामयाओ सोक्खाओ ववरोवित्ता भवइ फासामएणं दुक्खेणं सजोगेत्ता भवइ, ॥ ३६ ॥ सम्मदिट्ठियाण णेरइयाणं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ तं० आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया। सम्मदिट्ठियाण असुरकुमाराण चत्तारि किरियाओ एवचेव । एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥३७॥ चउहिं ठाणहिं सते

मिथ्याके सुख मिले नहीं २ मिथ्याके दुःख मिले ३ स्पर्शेन्द्रिय के सुख मिले नहीं और ४ स्पर्शेन्द्रिय के दुःख मिले ॥ ३६ ॥ सम्यक्दृष्टि नारकी के जीव को चार क्रिया कही:-आरंभिया, परिग्रहिया, मायावत्तिया, और अपच्चक्खाण वत्तिया ऐसेही एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय और चौरेन्द्रिय को छोडकर अन्य सब जीवों को उक्त चार क्रिया कही ॥ ३७ ॥ चार कारन से विद्यमान गुणों का नाश होता है क्रोध, मद्वेष, कृत

प० प्रकृत स अ० कृतघ्नता से मि० मिथ्यात्वाभिनिवेश स च० चार कारनसे सं० होते हुवे गु० गुणों दी दीपते हैं अ० अभ्यास से प० अन्य के छं० अभिप्राय से व० वर्तने से क० कार्य के हेतु स क० कृतज्ञता से णे० नारकी को च० चार स्थानक णि० निर्वर्तित स० शरीर को० क्रोध निर्वर्तित जा यावत् लो० लोभ नि० निर्वर्तित ए० ऐसे जा० यावत् वे वैमानिक को च० चार ध० धर्मद्वार खं० क्षमा

गुणे णासेज्जा तं० कोहेण, पडिनिवेसेणं, अकयण्णुयाए, मिच्छत्ताहिणिवेसेण चउहिं ठाणेहिं संतगुणे दीवेज्जा त० अब्भासवत्तिय, परछंदाणुवत्तिय, कज्जहेउ, कयपडिकिए इवा । णेरइयाणं चउहिं ठाणेहिं सरीरुप्पत्ती सिया तं० कोहेण, माणेण, मायाए लोभेण, एवं जाव वेमाणियाणं । णेरइयाणं चउट्ठाण णिव्वत्तिए सरीरए तं० कोहनि व्वत्तिए जाव लोहनिव्वत्तिए । एवं जाव वेमाणियाणं । चत्तारि धम्मदारा प० तं०

घ्नता और मिथ्यात्व का अभिनिवेश स । चार कारन से विद्यमान गुणों की दिप्ति होती है १ अधिक २ गुणों का अभ्यास करने से २ अन्य के अभिप्राय अनुसार चलने से ३ कार्य के हेतु से और ४ प्रत्युप कार करने से । नारकी को चार कारन से शरीर उत्पन्न होवे:-क्रोध, मान, माया, व लोभ से ऐसेही चौविस दंडक के जीवों को मानना नारकी आदि सब जीवों को चार कारन से शरीर निवृत्ति होवे १ क्रोध, मान, माया, और लोभ निर्वर्तित । धर्म के चार द्वार कहे हैं क्षान्ति, मुक्ति, ऋजुता और मृदुता

मो० मुक्ति अ० ऋजुता म० मृदुता ॥ १८ ॥ च० चार ठा० कारन से जी० जीव णे० नारकीपने का क० कर्म प० करते हैं म० महा आरंभ से म० महा परिग्रह से पं० पंचेन्द्रिय के वध से कु० मांसाहार से। च० चार कारनसे जी० जीव ति० तिर्यंच का क० कर्म प० करते हैं मा० माया से नि० निविड माया से म० असत्य वचन से कू० खोटेतोल कू० खोटेमापेसे। च० चार कारनसे जी० जीव म० मनुष्यपन का क० कर्म प० करते हैं प० प्रकृतिभद्रिक से वि० विनीतपना से सा० दया से अ० मात्सर्यता रहित होनेसे।

खंति, मोत्ती, अज्जवे, मद्दवे ॥ १८ ॥ चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइयत्ताए कम्म पगरेंति त० महारंभयाए, महापरिग्गहयाए, पचेंदियवहेणं, कुणिमाहारेण। चउहिं ठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्म पगरेंति त० माइल्लयाए, नियडिल्लयाए, अलियवयणेणं, कूडतुल्लकूडमाणेणं। चउहिं ठाणेहिं जीवा मणुस्सत्ताए कम्मं पगरेंति त० पगइभद्दयाए, विणीयाए, साणुक्कोसयाए, अमच्छीरियाए। चउहिं ठाणेहिं जीवा देवा[illegible]त्ताए कम्म पगरेंति, स० सरा

॥ १८ ॥ चार कारन से जीव नारकी के कर्म बांधे [illegible] महापरिग्रह से, पंचेन्द्रिय के वध से, और मांस का आहार से चार कारनसे जीव [illegible] करते हैं माया करने से, रचना करने से, असत्य बोलने से, और खोटे तोले [illegible] चार [illegible] से जीव मनुष्य में उत्पन्न होने के कर्म करते हैं: भद्रिक स्वभाव से, विनीत स्वभाव से, दयावन्तपने से, और मात्सर्य भाव रहित होने से। चार

च० चार कारनसे जी० जीव दे० देवपने का क० कर्म प० करते हैं स० रागसहित स० संयम से सं० संयमासंयम से बा० अज्ञान तप कर्म से अ० अकाम निर्जरा से ॥ ३९ ॥ च० चार प्रकारके व० वादित्र त० तत वि० वितत घ० घन झु० झुसिर । च० चार प्रकारके ण० नाट्य अ० अचित रि० रिभित आ० आरभट भि० भिसोल । च० चार प्रकारके ग० गीत उ० उत्क्षिप्त प० पत्रक मं० मंदक रो० रोविंदक । च० चार प्रकारक की म० माल्य गं० गुंथी हुई वे० लपेटी हुई पू० पुरी हुई सं० एक एक से गुंथी हुई ।

गसंजमणं, सजमासजमेणं, बालतवोकम्मणं, अकामनिज्जराए ॥ ३९ ॥ चउव्विहे वज्जे प० तं० तते, वितते, घणे, झुसिरे । चउव्विहे णट्टे प० तं० अचिए, रिभिए, आरभडे, भिसोले । चउव्विहे गेये प० तं० उक्खित्ताए, पत्तए, मंदए, रोविंदए । चउव्विहे मल्ले प० तं० गथिमे वेढिमे, पुरिमे, संघाइमे, । चउव्विहे अलकारे प०

कारन से जीव देवता में उत्पन्न होने के कर्म करते हैं -सराग संयम से, संयमासयम से, बाल तप करने से, और अकाम निर्जरा से ॥ ३९ ॥ चार प्रकार के वादित्र कहे हैं १ तत विणादिक, २ वितत पडहादि, ३ घन कास्यतालादि और ४ झुसिर काष्ट की बांसली प्रमुख चार प्रकारके नाट्य कहे हैं:-अचित, रिभित, आरभट, और भिसोल । चार प्रकार के गीत उत्क्षिप्त, पत्रक, मंदक, और रोविंदक । चार प्रकार की माला कही १ सूत्रादिक से गुंथी हुई, २ अन्य माला से वेष्टित की हुई, ३ पत्रमाला से पूरी हुई और ४ परस्पर

च० चार प्रकार के अं० अलंकार क० केशालंकार व० वस्त्रालंकार म० माल्यालंकार आ० आभरणालं कार। च० चार प्रकार के अ० अभिनय दि० द्राष्टांतिक पा पांडुश्रुत सा० सामंतोपनीक लो० लोकमध्य अवसान ॥ ४० ॥ स० सनत्कुमार म० महेन्द्र दे० देव में वि विमान च० चार वर्णवाले णी० नीले, लो० रक्त ह० पीले सु० श्वेत म० महाशुक्र स० सहस्सार में क कल्प में दे० देवों के भ० भवधारणीय स० शरीर उ० उत्कृष्ट च० चार र० हाथ उ० ऊंचे प० कहे ॥ ४१ ॥ च० चार द० पानी के ग० गर्भ उ०

त० केसालकारे, वत्थालंकारे, मल्लालकारे, आभरणालकारे। चउव्विहे अभिणए प० त० दिट्ठतिए, पाडंसुए, सामंतोवाणिए, लोगमज्झवासिए ॥ ४० ॥ सणकुमारमाहिंदेसुणं कप्पेसु विमाणा चउवण्णा प० त० णीला, लोहिया, हलिद्दा, सुक्किला। महासुक्कसहस्सारेसु णं कप्पेसु देवाण भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेण चत्तारि रयणीओ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥ ४१ ॥ चत्तारि दगगब्भा प० त० उ

बहुत पुष्पों से गुंथी हुइ। चार प्रकार के अलंकार कहे १ केशालंकार, २ वस्त्रालंकार, ३ माल्यालंकार, और ४ आभरणालंकार, चार प्रकार के अभिनय कहे:-द्राष्टान्तिक, पाडश्रुत, सामतोपनीक और लोक मध्यावसान ॥ ४० ॥ सनत्कुमार और माहेन्द्रदेव लोक के विमान नीले, रक्त, पीत, और श्वेत ऐसे चार वर्णवाले हैं महाशुक्र और सहस्सार देवलोक के देवता की भवधारणीय अवगाहना उत्कृष्ट चार हाथ की

आम म० महिका (धूंअर) सी० शीत उ० ऊष्ण । च० चार द० पानी के ग० गर्भ हे० हिमका गिरना म० सघन बरस होना सी० शीतोष्ण पं० पंचरूपवाला मा० माघ में हे० हिमका ग० गर्भ फ फाल्गुनमें अ बद्दल का सी० शीतोष्ण चि चैत्रमें व० वैशाख में पं० पंचरूपी । च० चार म० मनुष्यणी का ग० गर्भ इ० स्त्रीपने पु पुरुषपने न० नपुसकपने बिं० बिंबपने अ० अल्प सु० शुक्र ब० बहुत ओ० ओज

रसा, महिया, सीया, उसिणा । चत्तारि दगगब्भा प० त० हेमगा अब्भसघडा, पचरूविया ॥ सिलोगो ॥ माहेउ हेमगा गब्भा । फग्गुणे अब्भसघडा ॥ सीओसिणा ओय चित्ते । वइसाहे पंचरूविया ॥ १ ॥ चत्तारि मणुस्सीगब्भा प० त० इत्थित्ताए, पुरिसत्ताए, णपुसगत्ताए, बिंबत्ताए। सिलोगो॥अप्पसुक्क बहु ओय। इत्थी तत्थप्पजायइ

करी ॥ ८१ ॥ चार प्रकार से पानी का गर्भ रहता है १ औस कि जो सदैव रात्रि में गिरता है २ महिका सो धूंअर ३ शीत और ४ ऊष्ण और भी चार प्रकार के पानी के गर्भ कहे हैं १ हिमपात २ बहुत बरस होना ३ बहुत ठंढ व ताप और ४ पंचरूप वाला आकाश होवे (गर्जारव, विद्युत्, जलपात, शीत, और बद्दल) माघ मास में हिमकागर्भ, फाल्गुन मास में बद्दलकागर्भ, चैत्रमास में शीतोष्ण और वैशाख मास में पंचरूपीपना होता है। मनुष्यणीकागर्भ चार प्रकार का कहा है १ पुरुषपने, स्त्रीपने, नपुसकपने और बिंबपने. १ स्त्री को ऋतु संबंधी रुधिर विशेष होवे और पुरुष का शुक्र अल्प होवे तब गर्भ में स्त्री उत्पन्न

(रक्त) र० स्त्री त० उस में प० उत्पन्न होता है अ० अल्प मा० आम ब० बहुशुक्र पु० पुरुष त० उसम मा० उत्पन्न होता है दो दोनों र० रक्त शु० शुक्रका तु० समपनामें न० नपुंसक इ० स्त्री क त० उसके आ० संयोगमें पि० पिंब त० वहां प० उत्पन्न होता है ॥ ८२ ॥ उ० उत्पाद पु० पूर्वकी च० चार चू० चूलिकावस्तु च० चार प्रकार के क० काव्य ग० गद्य प० पद्य क० कथा गे० गीत्साले ॥ ८३ ॥ णे० नारकीको च०

अप्पओय बहुसुक्क पुरिसो तत्थ जायइ ॥ १ ॥ दोण्हंपि रत्तसुक्काण, तुल्लभावे नपुंसओ, इत्थीआतस्समाओगे बिंब तत्थ प्पजायइ ॥ २ ॥ ४ २ ॥ उप्पायपुव्वस्सणं चत्तारि चूलियावत्थु प० । चउव्विहे कव्वे प० गज्जे,पज्जे,कत्थे, गेये॥४ ३॥णेरइयाणं

होती है २ अल्प रुधिर और बहुत वीर्य होवे तब पुरुष उत्पन्न होता है ३ रुधिर व शुक्र दोनों बराबर होवे तब नपुंसक उत्पन्न होता है और ४ एकस्त्री का रुधिर और दूसरी स्त्री का शुक्र जैसा श्वेत पदार्थ इनदोनों के संयोगमें पिम्ब उत्पन्न होताहै (इसमें हड्डी नहीं रहती है) ॥८२॥ उत्पाद पूर्व की चार चूलिका वस्तु (अध्ययन रूप) कही चार प्रकार के काव्य कहे १ गद्यबंध जिसमें छन्दादि होवे नहीं शस्त्र परिज्ञा अध्ययनवत् २ पद्य सो छन्द में पद्य हुवा विमुक्त अध्ययनवत् ३ कथाग्रंथ ज्ञाता सूत्रवत् और ४ गेय गाने योग्य उत्तराध्ययनवत् ॥ ८३ ॥ नरक व वायु काय के जीवों को चार समुद्घात कही, वेदनीय, कषाय, मारणान्तिक, और

चार स० समुद्घात वे० वेदनी समुद्घात क० कषाय स० समुद्घात मा० मारणान्तिक स० समुद् घात वे० वैक्रेय समुद् घात ए० ऐसे वा वायु काय के भी ॥ ४४ ॥ अरिहंत अ० अरिष्टने मी के च० चारसो चो चौदपूर्व वाले अ० अजिन जि जिनसदृश स० सर्वाक्षर स० सनिपात वाले जि० जिनजैसे अ० यथातथ्य वा बोलने वाले की उ० उत्कृष्ट चो० चौदपूर्व की सं० संपदा हो० थी । स० श्रमण भगवंत म० महावीर को च० चारसो वा० वादी की स० देव सहित म० मनुष्य अ० असुर की स० सभा

चत्तारि समुग्घाए प० तं० वेयणसमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणांतिय समुग्घाए, वेउव्वियसमुग्घाए । एवं वाउकाइयाणवि ॥ ४४ ॥ अरहओण अरिट्ठनेमिस्स चत्तारि सया चोद्दसपुव्वीण, अजिणाण, जिणसंकासाणं, सव्वक्खरसन्निवाईण, जि णेइव अवितहं वागरमाणाण, उक्कोसिया चोद्दस पुव्विसपया होत्था । समणस्स भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वाईण सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाण

वैक्रेय ॥४४॥ अरिहन्त अरिष्टनेमी भगवन्त को चौदह पूर्व का ज्ञान धारण करने वाले चार सो साधु थे वे जिन नहीं परंतु जिन सरिखे, सर्वाक्षर सनिपात योग को जानने वाले, और समभाव करने वाले थे श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी की उत्कृष्टी चार सो वादीकी संपदा थी कि जो वादी देवता मनुष्य व असुर की

में अ० अपराजित व उत्कृष्ट वा० वादी की सं संपदा हो० थी ॥ ४८ ॥ हे० नीचे के च० चार क० कल्प (देवलोक) अ० अर्धचंद्र संठान से सं० संस्थित सो० सौधर्म ई० ईशान सं० सनत्कुमार म० महेन्द्र म० बीच के क० देवलोक प० प्रतिपूर्णचंद्र के स० संस्थान से सं० संस्थित बं० ब्रह्मलोक लं० लंतक म० महाशुक्र स० सहस्सार उ० उपरके च० चार क० देवलोक अ० अर्धचंद्राकार आ० आणत पा० प्राणत आ० आरण अ० अच्युत ॥ ४९ ॥ च० चार स० समुद्र प० प्रत्येक के ल० लवण वा० वारुण खी०

उक्कोसिया वाइसपया होत्था ॥ ४५ ॥ हेट्ठिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचंदसठाण संठिया प० तं० सोहम्मे, ईसाणे सणंकुमारे, माहिंदे । मज्झिल्ला कप्पा पडिपुण्णचं दसठाणसंठिया, प० तं० बंभलोगे, लंतए, महासुक्के, सहस्सारे । उवरिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचंद संठाण संठिया प० तं० आणए, पाणए, आरणे, अच्चुए ॥४६॥ चत्तारि

परिषदा में कोई जीत सके नहीं ॥ ४ ॥ नीचे के सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, और माहेन्द्र ऐसे चार देवलोक अर्धचंद्राकार है। ब्रह्मदेवलोक, लंतक, महाशुक्र और सहस्सार इन चारों का संस्थान पूर्ण चन्द्रमा के आकारका है आणत, प्राणत, आरण, और आच्युत इन चारों को अर्धचंद्राकार संठान कहे।४९। पृथक् २ रसवाले चार समुद्र कहे १ लवण समुद्र लवण जैसा खारा पानीवाला २ वारुणोदधि मदिरा जैसा

क्षीर घि० घृतोदक ॥ ४७ ॥ च चार प्रकार के आ० आवर्त ख० खारावर्त उ० उन्नतावर्त गू० गुप्तावर्त आ० मांसावर्त । ए० ऐसेही च० चार क० कषाय ख० खारावर्त समान को० क्रोध उ० उन्नतावर्त समान मा० मान गू० गुप्तावर्त समान मा० माया मा० मांसावर्त समान लो० लोभ ख० खारावर्त समान को०

समुद्दा पत्तेयरसा प० तं० लवणोदए वारुणोदए खीरोदए, घिओदए ॥ ४७ ॥ चत्तारि आवत्ता प० तं० खरावत्ते, उन्नयावत्ते, गूढावत्ते, आमिसावत्ते । एवामेव चत्तारि कसाया प० त० खरावत्तसमाणे कोहे, उन्नयावत्तसमाणेमाणे, गूढावत्तसमाणामाया, आमिसावत्त समाणे लोभे । खरावत्तसमाणं कोहमणुप्पविट्ठे जीवे कालंकरेइ णेरइएसु उववज्जइ, उन्नयावत्तसमाणं एवचेव, गूढावत्तसमाणं मायमेवचेव, आमिसावत्तसमाणं लोभं

३ क्षीरोदधि क्षीर जैसा और ४ घृतोदधि घी समान पानीवाला ॥ ४७ ॥ पानी के चार आवर्त कहे हैं १ खारावर्त सो कठिन चक्रकी तरह पानी का फीरना २ उन्नतावर्त सो पानी का ऊंचे चढना ३ गुप्तावर्त उपर बराबर रहे परंतु पानी में गुप्त चक्र फीरता रहे और ४ मांसावर्त जैसे चील मांस के लिय भ्रमण करे ऐसेही पानी फीरता रहे ऐसेही चार कषाय कहे १ खारावर्त समान क्रोध, २ उन्नतावर्त समान मान, ३ गूढावर्त समान माया और मांसावर्त समान लोभ खारावर्त समान क्रोध करनेवाला जीव मरकर नरक में उत्पन्न होता है. २ ऐसेही उन्नतावर्त समान मान, गूढावर्त समान माया और मांसावर्त समान लोभ करनेवाला जीव

क्रोध अ० करने वाला का० कालकरे णे० नारकी में उ० उत्पन्न होवे ॥ ४८ ॥ अ० अनुराधा न० नक्षत्र के च० चार ता० तारे पु० पूर्वाषाढा ए० ऐसेही उ० उत्तराषाढा ॥ ४९ ॥ जी० जीवों च० चार कारन से नि० निवर्तित पो० पुद्गल पा० पापकर्मपने चि० इकठेकिये चि० इकठे करते हैं कि० इकठे करेंगे ऐसे नि० निवर्तित पो० पुद्गल पा० पापकर्मपने चि० इकठेकिये चि० इकठे करते हैं कि० इकठे करेंगे ऐसे नारकी णि० निवर्तित ति० तिर्यचयोनि णि० निवर्तित म० मनुष्य निवर्तित दे० देवनिवर्तित ए० ऐसे उ० उपचिनें, उ० उपचिनते हैं उ० उपचिनेंगे ए० ऐसे चि० चिण, उ० उपचिण बं० बंध उ० उदीरणा वे० वेद

मणुष्पविट्ठे जीवे कालं करेइ णेरइएसु उववज्जइ ॥ ४८ ॥ अणुराहा णक्खत्ते चउतारे प० । पुव्वसाढा एवंचेव । उत्तरासाढा एवंचेव ॥ ४९ ॥ जीवाणं चउ ट्ठाण निव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए—चिणिंसुवा, चिणिंतिवा, चिणिस्संतिवा तं• णरइयणिव्वत्तिए, तिरिक्खजोणिणिव्वत्तिए, मणुस्सणिव्वत्तिए, देवणिव्वत्तिए । एवं उवचिणिंसुवा, उवचिणतिवा, उवचिणिस्संतिवा । एवं चिणउवचिणबंधोदीरवेयतह

मरकर नरक में उत्पन्न होता है ॥ ४८ ॥ अनुराधा, पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा नक्षत्र के चार तारे कहे हैं ॥ ४९ ॥ जीवने चार स्थानक में उत्पन्न होने जैसे पुद्गल को पापकर्मपने संचय किया, संचय करता है और संचय करेगा १ नारकी निवर्तित, तिर्यच योनि निवर्तित, मनुष्य निवर्तित और देव निवर्तित ऐसेही तीनों

र्थ

१० तैसे नि० निर्जरा ॥ ५० ॥ च० चार प्रदेशी खं० स्कंध अ० अनंत प० कहे च० चार प्रदेशावगाढ पो० पुद्गल अ० अनंत प० कहे च० चार स० समयकी ठि० स्थितिवाले पो० पुद्गल अ० अनंत कहे च० चार गुणकाला पा० पुद्गल अ० अनंत जा० यावत् च० चार गुण लु० रूक्ष अ० अनंत ॥ ५१ ॥ *

णिज्जरा चेव ॥ ॥ ५० ॥ चउप्पएसिया खंधा अणता पण्णत्ता । चउप्पएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता । चउसमयठिईया पोग्गला अणंता पण्णत्ता, चउगुणकाल पोग्गला अणता पण्णत्ता । जाव चउगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥ ५१ ॥

इति चउट्ठाणस्स चउत्थोद्देसो सम्मत्तो । चउट्ठाणं सम्मत्तं ॥ * *

काल आश्री उपचिणे, बांधे, उदीरे, वेदे, व निर्जरे ॥ ५० ॥ चार प्रदेशी स्कन्ध अनंते कहे, चार प्रदेशी अवगाहकर रहनेवाले पुद्गल अनंते कहे, चार समय की स्थितिवाले पुद्गल अनंते कहे, और चार गुण काला यावत् रूक्ष पुद्गल अनंते कहे ॥ ५१ ॥ यह चौथा स्थानक समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ × ×

पञ्चम स्थानकम्

पं० पांच म० महाव्रत स० सर्वथा पा प्राणातिपातसे वे० निवर्तना स० सर्वथा मु० मृषावाद से वे० निवर्तना जा० यावत स० सर्वथा प० परिग्रह से वे० निवर्तना पं० पांच अ० अनुव्रत थू० स्थूल पा० प्राणातिपात से वे० निवर्तना थू० स्थूल मु० मृषावाद से वे० निवर्तना थू० स्थूल अ० अदत्तादान से वे० निवर्तना स० स्वदारा मे सं० संतोष इ० इच्छा परिमाण ॥ १ ॥ पं० पांच व० वर्ण कि० कृष्ण, नी०

पंच महव्वया प० तं० सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, जाव सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं। पंचाणुव्वया प० तं० थूलाओ पाणाइ-वायाओ वेरमणं, थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं, थूलाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं, सदारसंतोसे, इच्छापरिमाणे ॥ १ ॥ पंचवण्णा प० तं० किण्हा, नीला, लोहिया, हा

श्री श्रमण भगवन्तने पांच महाव्रत करूपे हैं १ सर्व प्राणातिपातसे निवर्तना २ सर्व मृषावादसे निवर्तना ३ सर्व अदत्तादानसे निवर्तना ४ सर्व मैथुनसे निवर्तना और ५ सर्व परिग्रहसे निवर्तना पांच अनुव्रत कहे १ स्थूल प्राणातिपातसे निवर्तना, २ स्थूलमृषावादसे निवर्तना ३ स्थूल अदत्तादान से निवर्तना ४ स्वस्त्रीसे संतोष रखना और ५ इच्छानुसार परिग्रह का परिमाण रखना ॥ १ ॥ पांच वर्ण कहे—कृष्ण, नील, रक्त, हरित

नील, लो० रक्त इ० पीला, सु० शुक्ल पं० पांच र० रस ति० तिक्त क० कटुक क० कषायला अं० खट्टा
प० लिए प० पांच का० कामगुण स० शब्द रू० रूप गं० गंध र० रस फा० स्पर्श प पांच कारन से
जी० जीव स० उद्यम करते हैं स० शब्द में जा० यावत् फा० स्पर्श में र० रमते र० आनंद पाते हैं
मु० मूर्च्छित होते हैं गि० गृद्ध होते हैं अ० तन्मय बनते हैं पं० पांच कारन से जी० जीव वि० विनि
घात का आ० प्राप्त होते हैं, पं० पांच ठा० स्थानक को अ० नहीं जानने वाला जी० जीव अ० अहित

हलिद्दा, सुक्किला, । पंचरसा प० तं० तित्ता, कडुया, कसाया, अंबिला, महुरा ।
पंचकामगुणा प० तं० सद्दा, रूवा, गंधा, रसा, फासा। पंचहिं ठाणेहिं जीवा सज्जंति
तं० सद्देहिं, जाव फासेहिं । एवं रज्जंति, मुच्छंति, गिज्झति, अज्झोववज्जंति ॥ पंच-
हिं ठाणेहिं जीवा विणिघायमावज्जइ, तं० सद्देहिं जाव फासेहिं । पंचठाणा अपरिण्णाया
जीवाणं अहियाए, असुभाए, अखमाए, अणिस्सेसाए, अणाणुगामियत्ताए भवंति तं०

[पीत] और शुक्ल. पांच रस कहे-तिक्त, कटुक, कषाय, अम्बट, व मधुर पांच काम गुण कहे हैं
शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श । पांच कारनसे जीव उद्यत होता है शब्द, वर्ण, गंध, रस और स्पर्श
इसही इन पांचों कारनोंमें जीव रमता है, मूर्च्छित होता है, गृद्ध होता है, विशेष गृद्ध होता है- और
तन्मय होता है इन पांचों कारणोंको नहीं जानने वाला जीव को अहित, अशुभ, अक्षम, अक्षेम, व अननु

केलिये भ० भशुभ भ० भक्षम भ०अनिःश्रेय भ० भनानुगामि केलिये भ०होते हैं प० पच ठा० स्थानक सु०भच्छी तरह से जाना हुवा भी जीव हि० हित सु०शुभ जा०यावत् भ०भनुगामी केलिये भ०होते हैं पं० पचस्थानक भ० नहीं जानने वाला जी० जीव दु० दुर्गतिगामी भ होवे हैं प० पांच ठा० स्थानक प० जानने वाला जी० जीव सु सुगतिगामी भ० होते हैं ॥ २ ॥ पं० पांच ठा० कारन से जी० जीव दु० दुगति में ग० जाते हैं पा० माणातिपात से जा यावत् प परिग्रह से प० पांच ठा० स्थानक से भी जीव सो० सुगति में ग० जाते हैं पा० माणातिपात से वे० निवर्तने से जा० यावत् प० परिग्रह से निवर्तने

सद्दा जाव फासा। पचठाणा सुपरिण्णाया जीवा ण हियाए, सुभाए, जाव आणुगामिय त्ताए भवंति त० सद्दा जाव फासा। पचठाणा अपरिण्णाया जीवाणदुग्गइगमणत्ताए भवति त० सद्दा जाव फासा। पचठाणा परिण्णाया जीवाण सुगइगमणत्ताए भवति त० सद्दा जाव फासा ॥ २ ॥ पचहिं ठाणेहिं जीवा दुग्गइ गच्छति त० पाणाइ वाएणं जाव परिग्गहेण। पचहिं ठाणेहिं जीवा सोगइ गच्छंति त० पाणाइवाय

गामी होता है भच्छीतरहसे जाने हुवे उक्त पांच स्थानक जीव को हित, शुभ, यावत् भनुगामी होता है इन पांच को नहीं जाननेवाला जीव दुर्गति में जानेवाला होता है, और इन को जाननेवाला जीव सुगति में जानेवाला होवा है ॥ २ ॥ माणातिपातादि पांच कारनसे जीव दुर्गति में जाता है और इन पांचोंसे

स ॥ ३ ॥ प० पांच प० पडिमा भ० भद्रा सु० सुभद्रा म० महाभद्रा स० सर्वतोभद्रा भ० भद्रोत्तर भडिमा ॥ ४ ॥ प० पांच था० स्थावर काय इं० इन्द्रस्थावर काय बं० ब्रह्मस्थावर काय सि० शिल्प स्थावर काय स० समिति स्थावरकाय प० प्राजापत्य स्थावर काय पं० पांच था० स्थावर काया के अ० अधिपति इं० इन्द्रस्थावर काया के अ० अधिपति जा० यावत् प० प्राजापत्य स्थावर काया के अ० अधिपति ॥ ५ ॥ पं० पांच ठा० स्थानक से ओ० अवधि दर्शन स० उत्प ... उसको प० प्रथम

वेरमणं जाव परिग्गह वेरमणं ॥ ३ ॥ पंच पडिमाओ पण्णत्ताओ तं० भद्दा, सुभद्दा, महाभद्दा, सव्वओ भद्दा, भद्दुत्तरपडिमा ॥४॥ पंच थावरकाया प० तं० इंदेथावरकाये, बंभेथावरकाये सिप्पेथावरकाये,सम्मईथावरकाये, पयावच्चथावरकाये । पंचथावरकायाहिवई प० तं० इंदेथावरकायाहिवई जाव पयावच्चथावरकायाहिवई ॥ ५ ॥ पंचहिं ठाणेहिं

निवर्तनेसे मोक्ष अच्छीगति में जाता है ॥ ३ ॥ पांच प्रकार की पडिमा कही १ भद्रा, २ सुभद्रा, ३ महा भद्रा, ४ सर्वतो भद्रा, और ५ भद्रोत्तर पडिमा ॥ ४ ॥ पांच स्थावर काय कही १ इन्द्रस्थावर काय पृथ्वी, ब्रह्मस्थावर काय पानी, ३ शिल्पस्थावर काय अग्नि ४ समितिस्थावर काय वायु, और ५ प्राजापत्य स्थावरकाय सो वनस्पति पांच स्थावर काया के अधिपति कहे हैं इन्द्रस्थावर कायके अधिपति यावत् प्रजापति स्थावर काया अधिपति ॥ ५ ॥ पांच कारनसे जीवको अवधि दर्शन उत्पन्न होकर पहिले समय मेंही

समय में ख० क्षोम पावे अ० अल्प भू० जीवों पा० देखकर त० उसके प० प्रथम समय में स० क्षोभपावे कुं० कुंथु कु० जंतु के समुह वाली पु पृथ्वी पा० देखकर त उसके प० प्रथम समय में० स० क्षोम होवे म० बहुत म० बडे म० सर्पके स० शरीर पा० देखकर त० उसके प० प्रथम समय में स० क्षोम होवे दे० देव को म० महर्द्धिक ना यावत् म० महासुखी पा० देखकर त० उसके प० प्रथम समय में स० क्षोम होवे पु० नगर में पो० प्राचिन म० बहुत म० बडे म० बडे णि० निधान प० नष्ट सा० स्वामी वाले

ओहिदंसणे समुप्पज्जिउकामेवि तप्पढमयाए खभाएज्जा त० अप्पभूयं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा, । कुंथुं कुंथुरासिभूयंवा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा । महइ महालयं वा महोरगसरीरं पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा । देवं वा महिड्ढियं जाव महेसक्खं पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा । पुरेसु वा पोराणाइ महइ महालयाइ, महाणिहाणाइ, पहीण सामियाइ, पहीण सेउयाइ, पहीण गोत्तागाराइ,

स्खलना पाता है १ पृथ्वी थोडी और बहुत जीवोंसे भरी देखकर स्खलना पाता है अथवा पहिले बहुत पृथ्वी जानता था परंतु पीछेसे थोडी देखकर स्खलना पावे २ अत्यन्त सूक्ष्म कुंथुवेकी राशिसे भरी हुइ पृथ्वी देखकर स्खलना पावे ३ बहुत लम्बे सर्पादिकका शरीर देखकर [विस्मयसे या भयसे] क्षोभ पावे ४ देवताकी महार्द्धि और महत सुख देखकर क्षोभपावे ५ बडे पुराने ग्राम नगर में बहुत कालका

प० नष्ट से० सेवक वाले न० नष्ट गो० गोत्रघर उ० उच्छेद सा० स्वामी उ० उच्छेद से० सेवक उ० उच्छेद गो० गोत्रघर जा० जो इ० ये गा० ग्राम आ० आगर (घर) न० नगर खे० खेडा क० कर्बट म० मडप दो० द्रोणमुख प० पाटण आ० आश्रम स० सबास स० सन्निवेश सिं० सिंघोडे के आकार जैसे ति० त्रिक च० चतुष्क च० चच्चर च० चौमुख म० विशाल मार्ग में ण० नगर के णि० पानी जाने के माग में सु० स्मशान सु० शून्यघर गि पर्वत के गुफा स० शान्तिगृह से० शैलगृह उ० उपस्थान

उष्छिण्णसामियाइं, उच्छिण्णसेउयाइं, उच्छिण्णगोत्तागाराइं, जाइं इमाइं गामागरनगर खेडकव्वड मडंव दोणमुह पट्टणासम सबाहसानिवेसेसु, सिंघाडग तिग चउक्क चच्चर चउम्मुह महापह पहेसु, णगरणिद्धमणेसु, सुसाण सुण्णागार गिरिकंदरसंति सेलोवट्ठाण भवणगिहेसु सनिक्खित्ताइं चिट्ठंति, ताइंवा पासित्ता तप्पढमयाए खमाएज्जा । इमेएहिं

गडाहुवा बहुत द्रव्यका निधानदेखे और जिनके मालीक मरगयेहोवे, पुत्र पौत्रादिकभी नष्ट होगये होवे, जिसका गोत्रभी विच्छेद हुवाहोवे, जिसके स्वामीका सर्व विच्छेद हुवा होवे, ऐसा धन ग्राम, नगर, आगार, खेड, कव्वड, मडप, द्रोणमुख, पाटण, आश्रम, सबास, सन्निवेश वगैरह वसतिमें, त्रिकोण, चतुष्कोन, सिंघाडेका आकारमें, बहुतरस्ते फटते होवे जहां, चौमुखमें, महापंथमें नगरकी नालियोंमें, शून्यागारमें, पहाडोंमें, शान्तिस्थान (देवालयादियोंमें) पहाडोंमें बनाये हुये घरोंमें, सभामें, महाकुटुम्बियोंके घरोंमें, वगैरह

भ० भवनगृह म स० गाडा हुवा पि० रहा है ता० उन्हें पा० देखकर त० उसके प० पहिले समय में स० क्षोभ पावे इ० इन पं० पांच ठा० स्थानक से ओ० अवधि दर्शन स० उत्पन्न होवे त० उसके प० पहिले समय में स० क्षुभित होवे ॥ ६ ॥ पं० पांच कारन से के० केवलवर ना० ज्ञान दर्शन स० उत्पन्न होते त० पहिले समय में णो० नहीं स० क्षुभित होवे अ अल्प भूतवाली पु० पृथ्वी पा० देखकर से० शेष त० तैसे जा० यावत् भ० भवनगृह में स० गाडे हुवे चि रहे ता० उन्हें पा० देखकर त० पहिले समय में णो० नहीं स० क्षुभित होवे से० शेष त० तैसे इ० इन पं० पांच ठा० कारन से णा० यावत णो०

पचहिं ठाणेहिं ओहिदंसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए खभाएज्जा ॥ ६ ॥ पचहिं ठाणेहिं केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए णो खभाएज्जा त० अप्पभूय वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए णो खभाएज्जा, सेस तहेव जाव भवणगिहेसु सन्नि क्खित्ताइं चिट्ठंति ताइंवा पासित्ता तप्पढमयाए णो खभाएज्जा, सेस तहेव । इच्चेएहिं

स्थानोंमे गाडकर रखा होवे उसे देखकर क्षोभ पावे [इतना धन बिना मालिकका है ऐसा विचारसे] इन पांच कारणसे उत्पन्न होता अवधि दर्शन प्रथम समय में क्षोभ पानेसे पीछा चला जाता है ॥ ६ ॥ केवल ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुए पीछे पहिले समय में जीव पांच कारनसे क्षोभ नहीं पाता है अल्पभूत पृथ्वी देखकर यावत् भवनगृहमें स्थापन किया हुवा द्रव्यका निधान देखकर क्षोभ

नहीं स० सुमित होवे ॥ ७ ॥ णे० नारकी के स० शरीर पं० पांच व० वर्णवाले पं० पांचरसवाले कि० कृष्ण जा० यावत् सु० शुक्ल ति० तिक्त जा० यावत् म० मधुर ए० ऐसे नि० निरंतर जा० यावत् वे० वैमानिकको ॥ ८ ॥ पं० पांच स० शरीर ओ० उदारिक वे० वैक्रेय आ० आहारक ते० तेजस क० कार्माण ओ० उदारिक स० शरीर पं० पांच वर्णवाले पं० पांचरसवाले कि० कृष्ण जा० यावत् सु० शुक्ल ति० तिक्त जा० यावत् म० मधुर ए० ऐसे जा० यावत् क० कार्माण स० शरीर स० सब बा० बादर बों० शरीर धारण करने वाले क० कलेवर प० पांचवर्ण वाले पं० पांचरस वाले दु० दो गंध वाले अ० अष्टस्पर्श वाले

पंचाहिं जाव णो सभाएज्जा ॥ ७ ॥ णेरइयाणं सरीरगा पंचवण्णा पंचरसा प० त० किण्हा जाव सुक्किला । तित्ता जाव महुरा । एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं ॥ ८ ॥ पंच सरीरगा प० त० ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए कम्मए । ओरालिय सरीरे पंचवण्णे पंचरसे प० तं० किण्हे जाव सुक्किले । तित्ते जाव महुरे । एवं जाव कम्मगसरीरे ॥ सव्वेविणं बादरबोंदिधरा कलेवरा पंचवण्णा, पंचरसा, दुगंधा, अट्ठ-

न पावे ॥ ७ ॥ सब जीवोंको पांच वर्ण और पांच रस कहे हैं ॥ ८ ॥ पांच शरीर मरूपे हैं उदारिक, वैक्रेय, आहारक, तेजस, और कार्माण ये पांचो शरीर पांच वर्णवाले और पांच रस वाले हैं सब बडे आकार वाले बादर पर्याप्त शरीर को पांच वर्ण, पांच रस, दो गंध और आठ स्पर्श कहे

॥ • ॥ प० पांच ठा० कारन से पु० पहिले प० पीछे के जि० जिनके दु० दुर्गम भ० होता है दु० दुआख्यान दु० दुविभाज्य दु० दुपश्य दु० दुतितिक्ष दु० दुरनुचर प० पांच ठा० कारन से म० मध्य के सु० सुगम भ० होता है ॥ १० ॥ प० पांच स्थानक स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीरने स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ को णि० नित्य व० वर्णने णि० नित्य कि० कीर्तिवकिये णि० नित्य बु० कहे णि० नित्य

फासा ॥ १ ॥ पंचहिं ठाणेहिं पुरिमपच्छिमगाणं जिणाण दुग्गमे भवइ तं० दुआइक्खं, दुव्विभज, दुपस्सं, दुतितिक्खं, दुरणुचरं । पंचहिं ठाणेहिं मज्झिमगाणं जिणाणं सुग्गमं भवइ तं० सुआइक्खं, सुविभजं सुपस्सं, सुतितिक्खं, सुरणुचरं ॥ १० ॥ पंचठाणाइ समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं निग्गंथाण णिच्चं वण्णियाई णिच्चं

हैं ॥ १ ॥ प्रथम और अन्तिम तीर्थंकरके साधुओंको पांच कारनसे तत्त्व समझाना बहुत मुश्किल होता है (वक्र और जड होनेसे) १ शिष्यको कहनाही मुश्किल होता है २ भेद, भावना, व विभाग दुःखसे समझे ३ जीवाजीवको दुःखसे देखे ४ परिषहादि दुःखसे सहन करे और ५ आचार पालना ही बहुत मुश्किल होवे अन्य बाइस तीर्थंकरोंके साधुओंको पांच कारनसे तत्त्व समझाना बहुत सरल होता है १ कहना सहज, २ भावभेद समझाना सहज ३ जीवादिकका बताना सहज ४ परिषह जीतना सहज और ५ आचार पालना सहज ॥ १० ॥ श्री श्रमण भगवन्त महावीरने साधुओंको क्षमा, निर्लोभता, ऋजुता

प० प्रशंसा की णि० नित्य भ० आज्ञादी ख० क्षान्ति मो० मुक्ति अ० ऋजुता म० मृदुता ला० लघुता प० पांच ठा० स्थानक स० श्रमण को जा० यावत् अ० आज्ञादी भ० होती है स० सत्य सं० संयम त० तप चि० त्याग ब० ब्रह्मचर्यवास ॥ १२ ॥ प० पांच स्थानक स० श्रमण को जा० यावत् भ० आज्ञादी भ० होती है उ० उत्क्षिप्तचर णि० निक्षिप्तचर अं० अंतचर पं० प्रांतचर लू० रूक्षचर पं० पांच स्थानक जा० यावत् भ० आज्ञादी भ० होती है अ० अज्ञातचर अ० अन्नग्लायचर मो० मौनचर सं० संसृष्टचर त० तज्जात

कित्तियाइं, णिच्चं वुइयाइं, णिच्चं पसत्थाइं, णिच्चमब्भणुण्णायाइं भवंति तं० खंती, मोत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे। पंचठाणाइ समणाणं जाव अब्भणुन्नायाइं भवंति तं० सच्चे, संजमे, तवे, चियाए, बंभचेरवासे। ॥ ११ ॥ पंचठाणाइं समणाणं जाव अब्भणुण्णायाइं भवंति तं० उक्खित्तचरए, णिक्खित्तचरए, अंतचरए, पंतचरए, लूहचरए, । पंचठाणाइं जाव अब्भणुन्नायाइं भवंति तं० अन्नायचरए, अन्नवेलचरए, मोणचरए,

मृदुता, और लघुता ये पांच स्थानक प्रविधि हैं उनकी कीर्ति की है, प्रशंसा की है, और सदैव नामसे बोलये हैं और भी पांच स्थानक साधुओंको श्री श्रमण भगवन्त महावीरने बखाणे हैं यावत् नामसे बोलाये हैं सत्य, संयम, तप त्याग और ब्रह्मचर्य ॥ ११ ॥ श्री श्रमण भगवन्त महावीरने पांच स्थानककी आज्ञादी है १ अपनेलिये भाजनमेंसे नीकालना २ आहार लेनेकी गवेषणा, ३ खाते पीते बचा हुवा लेऊंगा ४ अंत, प्रांत

संसठ प० पांच स्थानक जा० यावत् भ आज्ञादी भ० होती है आ० आयंबिल नि० निवी पु० पुरिमड्ढ प० परिमित पिंडवाइ भि० भिन्न पिंडवाइ प० पांच स्थानक जा० यावत् भ० आज्ञादी भ० होती अ० अरस आहारी वि० विरस आहारी अ० अंताहारी प० प्रान्ताहारी लू० रुक्षाहारी पं० पांच स्थानक जा० यावत् भ० होते हैं अ०अरसजीवी वि० विरसजीवी अं०अंतजीवी पं० प्रांतजीवी लू० रुक्षजीवी

ससट्ठकप्पिए, तज्जाय ससट्ठकप्पिए । पंच ठाणाइं जाव अब्भणुन्नायाइं भवंति तं० उवनिहिए,सुद्धेसणिए संखादत्तिए,दिट्ठलाभिए पुट्ठलाभिए। पंचठाणाइं जाव अब्भणुन्नायाइं भवंति तं० आयंबिलए,निव्विइए,पुरिमड्ढिए, परिमियपिंडवाइए भिन्नपिंडवाइए। पंचठाणाइं जाव अब्भणुन्नायाइं भवंति तं० अरसाहारे, विरसाहारे, अंताहारे, पंताहारे लूहाहारे ।

घने आदि लेऊंगा ५ रस विना घी तेल वाली वस्तु लेना । पांच स्थानकमें भगवन्तने आज्ञा दी है १ जाति कुल जाने विना आहार लेना २ भोजन समय छोडकर गौचरीजावे ३ मौनव्रत रखकर गोचरीकरे ४ सरस हायस कल्पनीय आहार लेवे ५ विना सरटे हायस लेवे । पांच स्थानककी आज्ञा दी है १ किसी अन्यके लिये लाया हुआ आहार लेवे २एषणा समिति युक्त आहार लेवे ३दातिकी संख्या करलेवे, ४चक्षुसे देखकरलेवे ५ पृच्छा कर लेवे पांच स्थानककी यावत् आज्ञा दी है १ आयंबिल करे, २ नीवी करे ३ पुरिमार्द्ध (दोपहर) करे ४ परिमित द्रव्य कर आहार लेवे ५ निक्षमा (नांखने योग्य) आहार लेवे । पांच स्थानक की यावत आज्ञादी है १ अरस लवणादि

प० पांच स्थानक जा० यावत म० होते हैं ठा० कायोत्सर्गकरे उ० उत्कट आसन से प० प्रतिज्ञा में रहे वी० वीरासन में रहे ने० निषेधिका आसन में रहे प० पांच स्थानक जा०, यावत् म० होते हैं दं० दंडका आसन ल० लकुटासन आ० आतापनालेवे अ० शीत ताप सहे अ० खुरज खणे नहीं ॥ १२ ॥ पं० पांच

पचठाणाइ जाव भवति त० अरसजीवी, विरसजीवी, अंतजीवी, पंतजीवी लूहजीवी, पंचठाणाइं जाव भवंति तजहा ठाणाइए उक्कुडुआसणिए पडिमट्ठाइ वीरासणिए णेसज्जिए। पंचठाणाई जाव भवति त० दडायइए, लगडसाई, आयावए, अवाउडए अकंडुयए। ॥ १२ ॥ पचहिं ठाणेहिं समणे निग्गथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ

रहित आहार से जीवे २ विरस पुराणे धान्यका आहारसे जीवे ३ पचाहुवा आहारसे जीवे ४ प्रान्त आहारसे जीवे, रूक्ष आहारसे जीवे। पांच स्थानक की यावत् आज्ञादी है १ कायोत्सर्गकरे २ उत्कट आसन करे, ३ एक रात्रि प्रमुख प्रतिमा विशेष करे ४ वीरासन करे ५ निषेधिका आसन करे। पांच स्थानक की यावत आज्ञादी है १ दंडकी तरह लम्बा सोताहुवा कायोत्सर्ग करे २ लगडकी तरह मस्तक और पांव दोनों जमीनको लगाकर और सब शरीर अधर रखे ३ शीत उष्णकी आतापना लेवे ४ वस्त्र रहित रहे और ५ खुजली खुपरे नहीं ॥ १२ ॥ पांच कारणसे श्रमण निर्ग्रंथ महानिर्जरा करनेवाले, और संसारका अंत

कारन से स श्रमण नि• निर्ग्रन्थ म० महानिर्जरा म० महापर्यवसान भ होवे अ० अग्लानपना से आ• आचार्य की वे० वैयावृत्त्य क० करते ए० ऐसे उ० उपाध्याय की वे० वैयावृत्त्य थे० स्थविर की वे• वैयावृत्त्य त० तपस्वी की वे० वैयावृत्त्य गि ग्लानिकी वे० वैयावृत्त्य क० करते पं० पांच ठा० स्थानक से स० श्रमण निर्गन्थ म० महानिर्जरा म० महापर्यवसान भ० होवे अ० अग्लानपना से से० शिष्यकी वे० वैयावृत्त्य क० करते अ० अग्लानपना से कु० कुलकी वे• वैयावृत्त्य क० करते अ० अग्लानपना से ग० गणकी वे० वैयावृत्त्य क० करते अ अग्लानपना से स० संघकी वे० वैयावृत्त्य क० करते अ० अग्लानपना से सा०

तं• अगिलाए आयरिय वेयावच्च करेमाणे, एव उवज्झाय वेयावच्च, थेरवेयावच्चं, तवस्सि वेयावच्चं, गिलाणवेयावच्च करेमाणे, । पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ त• अगिलाए सेहवेयावच्च करेमाणे, अगिलाए कुलवेयावच्च करेमाणे अगिलाए गणवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए संघवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए साहंमिय वे-

करनेवाले होवे १ अग्लानपने आचार्यकी वैयावृत्त्य करते २ ऐसेही उपाध्याय ३ स्थविर ४ तपस्वी और ५ रोगीकी वैयावृत्त्य करते । १ लघु शिष्य २ कुल ३ गण, ४ संघ और ५ स्वधर्मी इन पांचोंकी अग्लानपने वैयावृत्य करनेवाला श्रमण महानिर्जरा व संसारका अंत करनेवाला होवे ॥ १३ ॥ पांच कारनसे

स्वधर्मी की वे वेयावृत्य क० करता ॥ १३ ॥ प० पांच ठा कारन से स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ सा० स्वधर्मी सं० समोगिक को वि० विसंभोगिक क० करते णा० अतिक्रमे नहीं स० क्रिया सहित स्थानक प० सेवनेवाला भ० होवे प० सेवकर णो० नहीं आ० आलोच आ० आलोचकर णो० नहीं प० स्थापना करे प० स्थापनकरके णा० नहीं पि० प्रवेश करे (आचरण करे) जा० जो इ० ये ये० स्थविरके ठि० स्थिति कल्प भ० हैं ता० उन को अ० अतिक्रम २ कर प सेवे से० उन्हे इ० स्वेदार्थ इ० मैं प० सेवूं किं० क्या मे० मेरा थे० स्थविर क० करेंगे प० पांच कारन से स० श्रमण णि० निर्ग्रंथ सा० स्वधर्मी पा पारंचिक क० करते णा० अतिक्रमे नहीं कु० कुलमें व० रहे कु० समुदाय के भे० भेद

यावच्च करेमाणे, ॥ १२ ॥ पचहिं ठाणेहिं समणे निग्गथे साहम्मियं समोइयं विसंभोइय करेमाणे णाइक्कमइ-त० सकिरियट्ठाण पडिसेवित्ता भवति, पडिसेवित्ता णो आलोइए, आलोएत्ता णो पट्ठिवेइ, पट्ठिवेत्ता, णो णिव्विसइ, जाइ इमाइ थेराण ठिइप्पकप्पाइ भवं ति ताइं अइयंचिय २ पडिसेवइ से हंद ह पडिसेवामि किंमे थेरा करिस्सति ॥ पचहिं

श्रमण निर्ग्रंथ अपने संभोगिक स्वधर्मीको विसंभोगिक (मंडली बाहिर) करते हुवे जिनाज्ञाका उल्लंघन नहीं करते हैं १ सक्रिय (पापयुक्त) स्थानका सेवन करे २ सक्रिय स्थानका सेवन किये पीछे गुरुकी आगे उसकी आलोयणा करे नहीं ३ आलोयणा कर गुरुने दिया हुवा प्रायश्चित अंगीकार करे नहीं ४ प्रायश्चित तप अंगीकार कर उसे पूर्ण करे

कु लिये अ० उपस्थित रहे ग० गण के भे० भेद के लिये अ० उपस्थित होवे हिं० हिंसाप्रेक्षी छि० छिद्र प्रेक्षी अ० वारंवार प० प्रश्न प० प्रयोग करनेवाला भ० होता है आ० आचार्य उ० उपाध्याय की ग० समुदाय में प० पांच उ० अवग्रह स्थानक आ० आचार्य उ० उपाध्यायके ग० गण में आ० आज्ञा धा० धारणा णो० नहीं स० सम्यक् प्रकारसे प० प्रयुंजनेवाला भ० होवे आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० समुदाय में अ० यथा रा० रत्नाधिक को कि० कृतिकर्म णो० नहीं स० सम्यक् रीति से प० प्रयुंजनेवाला भ० होवे आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गण में जे० जो सु० श्रुत प० पर्याय जा० जात धा० धारण

ठाणेहिं समणे निग्गंथे साहंमिय पारंचिय करेमाणे णाइक्कमइ तं० कुलेवसइ कुलस्स भेयाए अब्भुट्ठेत्ता भवइ, गणस्स भेयाए अब्भुट्ठेत्ता भवइ, हिंसप्पेही, छिद्दप्पेही, अभिक्खणं २ पसिणाए तेणाइ पउत्ता भवइ । आयरियउवज्झायस्सणं गणंसि पंच वुग्गहट्ठाणा पण्णत्ता तं० आयरियउवज्झायस्सण गणंसि आणंवा धारणंवा नोसम्मं

नहीं और ५ जो मासिक स्थविरकल्पी मुनिके स्थिति प्रकल्प, मासकल्प, पिंड, शय्यादि आचार है उस का उल्लंघनकर अनाचार का सेवन करे और विचारे कि गुरुजी नाराज होगा तो मेरा क्या करेंगे। श्रमण निर्ग्रन्थ अपने स्वधर्मीको पांच कारनसे प्रायश्चित्त करता हुआ आज्ञा नहीं लोपते हैं १ जिस समुदायमें रहे उसमें भेद करे २ गच्छमें भेद करे ३ हिंसा करे ४ साधुके छिद्र देखे ५ और गच्छको ग्रहे बनानेके लिये वारंवार प्रश्न पूछे ।

तं० वह का० योग्य समय में स० सम्यक प्रकार से अ० पढनेवाला भ० होवे आ० आचार्य उ० उपाध्यायके गण में गि० रोगी से० शिष्यकी वे० वैयावृत्य णो० नहीं स० सम्यक् प्रकार से अ० करनेको तत्पर भ० होवे आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गण में अ० बिना पूछे चलनेवाले णो नहीं आ० पूछकर चलनेवाले आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गण में प पांच अ० अव्युद्ग्रह ठा० स्थानक आ० आचार्य उ० उपाध्याय के गण में आ० आज्ञा धा० धारणा स० सम्यक् प्रकार से पं० प्रयुंजनेवाले भ० होवे

पउजित्ता भवइ, आयरियउवज्झाए ण गणंसि अहाराइणियाए किइकम्मं णोसम्मं पउजित्ता भवइ, आयरिय उवज्झाए णं गणंसि जे सुयपज्जवजाए धारेइ ते काले णो सम्ममणुप्पवाएत्ता भवइ, आयरियउवज्झाएण गणंसि गिलाणसेहवेयावच्च णोसम्म मब्भुट्ठित्ता भवइ, आयरियउवज्झाएण गणंसि अणापुच्छियचारीयावि हवइ, णोआपुच्छियचारी, आयरियउवज्झायस्सण गणंसि पंच अवुग्गहट्ठाणा प० तं० आयरिय उव-

आचार्य उपाध्यायके गच्छमें पांच व्युद्ग्रह (कलहके कारन) कहे हैं १ आचार्य उपाध्यायके गच्छमें जो आज्ञा, धारणा, या संयम प्रयुंजनेवाला न होवे सो कलहकारी जानना २ आचार्य उपाध्याय के गच्छ में रत्नाधिक (बडे) को यथायोग्य वंदना न करे तो ३ आचार्य उपाध्यायके गच्छमें जिस श्रुत पर्याय जाने और उसके अर्थकी धारना करे उसका यथोक्त कालमें अध्ययन करे नहीं परंतु अकाल में अध्ययन करे ४

ए० ऐसे अ० यथारत्नाधिक स० सम्यक् प्रकार से आ० आचार्य उ० उपाध्याय के गण में जे० जो सु० श्रुत प० पर्यव जा० जात ध० धारता है ते० वे का० काल में स० सम्यक् प्रकार से ए० ऐसे गि० रोगी से० शिष्य वे० वैयावृत्य आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गण में आ० पूछकर चलनेवाला भ० होवे णो० नहीं अ० अनापुच्छाचारी ॥ १५ ॥ पं० पांच नि० बैठने के आसन प० कहे उ० उत्कटुकासन गो०

ज्झाएणं गणंसि आणवा धारणवा सम्मंपउंजित्ता भवइ, एवं अहारायणियाए सम्मं, आयरि

यउवज्झाएण गणंसि जेसुयपज्जवजाए धारेइ ते काले सम्म० । एवं गिलाण सेह

वेयावच्चं सम्म०, आयरियउवज्झाएण गणंसि आपुच्छियचारीयावि भवइ, णोअणा

पुच्छियचारी ॥ १४ ॥ पंचनिसिज्जाओ पण्णत्ताओ तं० उक्कुडुया, गोदोहिया समपा

आचार्य उपाध्यायके गच्छमें ग्लानिकी सम्यक् प्रकारसे वैयावृत्य करे नहीं ५ आचार्य उपाध्यायके गच्छ में गुरुको विनापूछे विहार कर गुरुकी आज्ञामें चले नहीं वे पांचों क्लेशके उत्पादक जानना । आचार्य उपाध्यायके गच्छमें पांच अव्युद्ग्रहस्थान (आधारभूत) कहे हैं १ आचार्य उपाध्यायके गच्छमें आज्ञा धारना सम्यक प्रकारसे प्रयुंजे २ रत्नाधिक को वंदना नमस्कार करे ३ जिस सूत्रकी धारना करे उस का काल में पठन करे ४ ग्लानि शिष्य की वैयावृत्य करे और ५ गच्छमे गुरुको पूछ कर विहार करे अर्थात् गुरुकी आज्ञानुसार चले. ॥ १५ ॥ पांच निषद्या (बैठनेका स्थान) कही १ उत्कटुकासनसे बैठना, २ गोदुहासन, ३

गोदुह स० बरावर पा० पाद प पल्यकासन अ० अधपल्यंकासन ॥ १५ ॥ प० पांच अ० आर्जवस्थानक मा अच्छी अ० सरलता सा० अच्छी म० मृदुता ला० लघुता खं० क्षमा मो० मुक्ति ॥ १६ ॥ पं० पांच जो० ज्योतिषी चं० चंद्र सू० सूर्य ग ग्रह न० नक्षत्र ता० तारे ॥ १७ ॥ पं० पांच प्रकार के दे० देव भ० भविद्रव्यदेव ण० नरदेव ध० धर्मदेव दे० देवाधिदेव भा० भावदेव ॥ १८ ॥ पं० पांच प्रकारकी प०

यपुया, पलियका, अद्धपलियका ॥ १५ ॥ पंच अज्जवठाणा प० त० साहुअज्जवं, साहुमद्दव, साहुलाघव,साहुखंति, साहुमोत्ती ॥ १६ ॥ पंचविहा जोइसिया प० त० चंदा, सूरा, गहा, णक्खत्ता, ताराओ ॥ १७ ॥ पंचविहादेवा प० त० भवियदव्वदेवा, णरदेवा, धम्मदेवा, देवातिदेवा, भावदेवा ॥ १८ ॥ पंचविहा परियारणा प० त० का-

दोनोंपाँव बराबर जोडकर बैठना, ४ पालखी लगाकर बैठना ५ और आधी पालखी लगाकर बैठना ॥१५॥ पांच आर्जव (संवर)स्थान कहे हैं१ अच्छी सरलता, २ अच्छी मृदुता ३ अच्छी लघुता ४ अच्छी क्षमा, और ५ अच्छी मुक्ति (निर्लोभता) ॥ १६॥ पांच जातिके ज्योतिष कहे हैं-चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारे ॥ १७ ॥ पांच प्रकारके देव १ भविद्रव्य देव, नरदेव, धर्मदेव, देवाधिदेव और भावदेव ॥ १८ ॥ पांच प्रकारकी परियारणा

यपरियारणा, फासपरियारणा, रूवपरियारणा, सद्दपरियारणा, मणपरियारणा ॥ १९ ॥

चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त० काली, राइ, रयणी, विज्जु, मेहा । बलिस्सण वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त० सुभा णिसुभा रंभा, णिरंभा, मयणा ॥ २० ॥ चमरस्सण असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो पंच संगामिया अणिया पंच संगामिया अणियाहिवई

... सं० शब्द परिचारणा म० मन परिचारणा ॥ १९ ॥ च० चमर अ० असुरेन्द्र अ... २० राजा पं० पांच अ० अग्रमहिषी का० काली रा० रामी र० रजनी वि० विद्युत् मे० मेघा ... वैरोचनेन्द्र वै० वैरोचन राजा को पं० पांच अ० अग्रमहिषियों सु० सुभा नि० निसुभा रं० रंभा णि० निरंभा म० मदना ॥ २० ॥ च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुर कुमार राजा का पं० पांच ... ग्रामिक अ० अनीक पं० पांच स० संग्रा...

परिचारणा ॥ १९ ॥ असुर कुमारके चमरेन्द्रको पांच अग्रमहिषी कही १ काली, २ राजी, ३ रजनी, ४ विद्युत् और ५ मघा बलेन्द्र नामक वैरोचनेन्द्रको पांच अग्रमहिषी कही सुभा, निसुभा, रंभा, निरंभा और मदना ॥ २० ॥ चमर नामक असुरेन्द्रको पांच सांग्रामिक-लडाइकी सेना और पांच सांग्रामिक-सैन्यके अधिपति कहे हैं १ पादात्यानीक (पैदल) २ पीठानीक (घोडेस्वार) ३ हस्तीकी सेना ४ भैंसाकी

मकि म० मनिक के अ० अधिपति पा० पादात्यनिक पी० पीठानिक [घोडेस्वार] कुं० कुंजरानिक (हाथी की सेना) म० भैंसे की सेना र० रथानिक दु० द्रुम पा० पादातानिक का अधिपति सो० सोदाम अ० अश्वराज पी० पीठानिक का अ० अधिपति वे० वैकुंथु ह० हस्तिराज कु० कुंजरानिक का अ० अधिपति लो० लोहिताक्ष म० महिषानिक के अ० अधिपति कि० किन्नर र० रथानिक के अ० अधिपति। ब० बलि वे० वैरोचनेन्द्र व० वैरोचन र० राजा को पं पांच स० संग्रामिक अ० अनिक प० पांच स० संग्रा

प० तं० पायत्ताणिए, पीढाणिए, कुंजराणिए, महिसाणिए, रहाणिए । दुमे-पायत्ता णियाहिवई, सोदामी आसराया पीढाणियाहिवई वेकुंथु हत्थिराया-कुंजराणियाहिवई, लोहियक्खे महिसाणियाहिवइ, किन्नरे रहाणियाहिवई ॥ बलिस्सण वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो पंच संगामिया अणिया, पंच संगामिया अणियाहिवई प० तं० पायत्ताणिए, जाव रहाणिए । महादुमे पायत्ताणियाहिवई, महासोदामे आसराया, पीढाणियाहि-

सेना और ५ रथकी सेना। पांच अधिपति १ पादात्यानिक का अधिपति द्रुम २ पीठानिक का अधिपति सौदाम ३ कुंजरानिक का अधिपति वैकुंथु ४ भैंसाकी सेनाका अधिपति लोहिताक्ष और ५ रथानिकके अधिपति किन्नर। बलि नामक वैरोचनेन्द्र को पांच सांग्रामिक सेना और पांच उनके अधिपति कहे हैं पादात्यानिक यावत रथानिक. उनके अधिपति १ महाद्रुम, २ महा सोदाम ३ मात्स्यकार ४ महा लोहिताक्ष

निक अ० अनिकाधिप प० पादात्यानिक आ० यावत् र० रथानिक म महाद्रुम प० पादात्यानिक के अ० अधिपति म० महा सो० सौदाम आ० अश्वराज पी० पीठानिक के अ० अधिपति मा० माल्यंकार ह० हस्तिराजा कुं० कुंजरानिक के अ० अधिपति म० महा लोहिताक्ष म० महिषानिक के अ० अधिपति किं० किंपुरुष र रथानिक के अ० अधिपति ध धरणेन्द्र ना० नागेन्द्र ना० नागकुमार राजाको पं० पांच सांग्रामिक अ० अनिक (सैन्य) पं० पांच सं० सांग्रामिक अ० अधिपति भ० भद्रसेन ज० जसोधर सु० सुदर्शन

वई, माल्यंकार हत्थिराया कुंजराणियाहिवई, महालोहिअक्खे महिसाणियाहिवई, किंपुरिसे रहाणियाहिवई, ॥ धरणिंदस्सण नागिंदस्स नागकुमाररन्नो पंच संगामिया अणिया, पंच संगामिया अणियाहिवई, प० तं० पायत्ताणिए जाव रहाणिए । भद्दसेणे पायत्ताणियाहिवई, जसोधर आसराया पीढाणियाहिवई, सुदंसणे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई, नीलकंठे महिसाणियाहिवई, आणंदे रहाणियाहिवई, ॥ भूयाणंदस्सणं नाग

मोर ५ किंपुरुष । नागकुमार राजाके धरणेन्द्रके पांच सांग्रामिक अनिक और पांच उनके अधिपति कहे हैं: पादात्यानिक यावत् रथानिक उनके पांच अधिपति क्रमसे जानना १ भद्रसेन, २ यशोधर ३ सुदर्शन ४ नीलकंठ और ५ आनन्द नागकुमारके भूतानेन्द्रको पांच सांग्रामिक अनिक और पांच उनके अधिपति कहे हैं: पादात्यानिक यावत रथानिक उनके अधिपति १ दक्ष २ सुग्रीव ३ सुविक्रम ४

नी० नीलकंठ भा० आनंद भू० भूतानेन्द्र ना० नागेन्द्र ना० नागकुमार राजाको पं० पांच सं० सांग्रामिक अ० सैन्य पृ० पांच म सांग्रामिक अ० सैन्य के अ० अधिपति द० दक्ष सु० सुग्रीव सु० सुविक्रम से० श्रयकंठ नं० नंदोत्तर वे० वेणुदेव सु० सुवर्णेन्द्र सु० सुवण कुमार राजा पं० पांच सं० सांग्रामिक अ० अनिक के अ० अधिपति पा० पादात्यनिक ए० ऐसे ज० जैसे ध० धरणेन्द्र त० तैसे वे० वेणुदे रका वे० वेणुदाल को ज० जैसे भू० भूतानेन्द्र ज० जैसे ध० धरणेन्द्रको त० तैसे स० सब दा० दक्षिणके

कुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो पंच संगामिया अणिया पंचसंगामिया अणियाहिवई प० त० पायत्ताणिए जाव रहाणिए । दक्खे पायत्ताणियाहिवई, सुग्गीवे आसराया पीढाणियाहिवई, सुविक्कमे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई, सेयकंठे महिसाणियाहिवई, णंदुत्तरे रहाणियाहिवइ ॥ वेणुदेवस्सणं सुवन्निंदस्स सुवन्न कुमाररन्नो पंच संगामिया अणिया, पंचसंगामिया अणियाहिवई प० तं० पायत्ताणिए एवं जहा धरणस्स तहा

श्रयकंठ और ५ नंदोत्तर सुवर्णेन्द्र वेणुदेवको पांच सांग्रामिक अनिक और पांच उनके अधिपति धरणे न्द्रकी समान जानना और जैसे भूतानेन्द्रके पांच सांग्रामिक सेना व उनके अधिपति कहे हैं वैसेही वेणु- दालको जानना और अन्य सब दक्षिण दिशाके इन्द्रके पांच सांग्रामिक सेना व उनके आधिपति धरणे न्द्र समान जानना, और उत्तरदिशा के इन्द्रकी पांच सेना व अधिपति भूतानेन्द्र समान जानना शक्रेन्द्रकी

जा० यावत् पो० पापका म० जैसे भू० भूतानेन्द्र त० तैसे स० सब उ० उपरक जा० यावत् म० महाघो ष को स शक्र दे देवेन्द्र दे० देवराजा को पं० पांच सं० सांग्रामिक अ० आनेक पं० पांच सं० सांग्रामि क अ० अनिक के अ० आधिपति पा० पादात्यानीक जा० यावत् उ० ऋषभानेक ह० हरिणगमषी प० पादात्यानिकके अ० अधिपति वा० वायु आ० अश्वराज पी० पीठानिक अ० अधिपति ए० एरावण ह० हस्तीराजा कुं० कुंजरानिकके अ० अधिपति दा० दामाखी उ० ऋषभानिके अ० अधिपति मा० मा

वेणुदेवस्सवि। वेणुदालियस्स य जहा भूताणंदस्स। जहा धरणस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाण जाव घोसस्स। जहा भूयाणदस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाण जाव महाघोसस्स॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो पंच संगामिया आणिया पंच संगामिया आणियाहिवई प० त० पायत्ताणिए जाव उसभाणिए। हरिणेगमेसी पायत्ताणियाहिवई, वाऊ आसराया पीढाणियाहिवई ऐरावणे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई दामड्ढी उसभाणियाहिवई,

पांच सांग्रामिक सेना व उनके पांच आधिपति कहे हैं १ पादात्यानिक यावत् वृषभानिक रथानिक उनके आधिपति १ हरिणगमेषी २ वायु ३ ऐरावण ४ दामास्ति और ५ माठर ईशानेन्द्र देवताको पांच आनिक व पांच उनके अधिपति कहे हैं, पादात्यानीक यावत् रथानीक उनके अधिपति १ लघु पराक्रम, २ महावाय ३ पुष्पदंत ४ महादामाल्लि और ५ महामाठर जैसे शक्रेन्द्रके पांच आनिक व उनके

हर र० स्थानिकके अ० अधिपति ई० ईशान दे० देवेन्द्रको दे० देवराजा पं० पांच सं० सांग्रामिक अ०अनिक ल० लघुपराक्रम म महावायु अ०अश्वराज पु०पुष्पदंत ह०हस्तिराज म०महासामास्ति म०महामाढर ज०जैसे स शक्रके त०तैसे स०सब दा०दक्षिणके दे० देवताओंके जा० यावत् आ० आरणके ज० जैसे ई० ईशानका त० तैसे स० सब उ० उत्तरके जा० यावत् अ० अच्युतके स शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की अ आभ्यंतर प० परिषदाके दे० देवताको पं० पांच प० पल्योपमकी ठि० स्थिति ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजाकी अ० आभ्यंतर प० परिषदामें दे० देवीकी पं० पांच प० पल्योपमकी ठि० स्थिति

माढरे रहाणियाहिवई। ईसाणस्सण देविंदस्स देवरण्णो पंच संगामिया आणिया जाव पायत्ताणिए पीढा कुंजरा उसभा रहाणिओ। लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवई, महावाऊ आसराया पीढा णियाहिवई, पुप्फदंते हत्थिराया कुंजराणियाहिवई, महादामट्ठी उसभाणियाहिवई महामाढरे रहाणियाहिवई। जहा सक्कस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव आरणस्स। जहा ईसाणस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव अच्चुयस्स। सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो अब्भिंतरपरिसाए देवाणं पंचपलिओवमाइं ठिई प०। ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरण्णो अब्भिंतरपरिसाए देवीणं पंचपलिओवमाइं ठिई प०॥ २१॥ पंच-

अधिपति कहे वैसे आरण तक सब दक्षिण दिशाके इन्द्रको कहना और जैसे ईशानेन्द्र को कहा वैसे अच्युत तक सब उत्तर दिशाके इन्द्रको कहना शक्रेन्द्रकी आभ्यन्तर परिषदाके देवताकी पांच पल्योपमकी

विहा पडिहा प० तं० गइपडिहा, ठिइपडिहा, बंधणपडिहा, भोगपडिहा, बलवीरियपुरिसकार परक्कमपडिहा ॥ २२ ॥ पंचविहे आजीवे प० तं० जाइआजीवे, कुलाजीवे, कम्माजीवे, सिप्पाजीवे, लिंगाजीवे ॥ २३ ॥ पंचरायककुहा प० तं० खग्ग, छत्त, उप्फेसे वाहणाओ, वालवीयाणी ॥ २४ ॥ पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थेण उदिण्ण परिस

॥ २१ ॥ प० पांचप्रकारकी प० प्रतिघात ग० गतिप्रतिघात ठि० स्थितिप्रतिघात बं० बंधप्रतिघात भो० भोगप्रतिघात ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम प० प्रतिघात ॥ २२ ॥ प० पांचप्रकारकी आ० आजीविका जा० जातिआजीविका कु० कुलआजीविका क० कर्मसे आजीविका सि० शिल्पसे आ० आजीविका लिं० लिंगसे आजीविका ॥ २३ ॥ पं० पांच रा० राजाके क० चिन्ह ख० खड्ग छ० छत्र उ० मुकुट प० पगरखी वा० चम्मर ॥ २४ ॥ प० पांच ठा० कारनसे छ० छद्मस्थ उ० उदय

स्थिति कही और ईशानेन्द्रकी आभ्यन्तर परिषदाकी देवीकी पांच पल्योपमकी स्थिति कही ॥ २१ ॥ पांच प्रकारके प्रतिघात कहे १ गति प्रतिघात, २ स्थिति प्रतिघात ३ बंध प्रतिघात ४ भोग प्रतिघात और ५ बल, वीर्य, पुरुषात्कार, व पराक्रम का प्रतिघात ॥ २२ ॥ पांच प्रकारकी आजीविका कही १ जाति बताकर आजीविका करे, २ कुल बताकर आजीविका करे, ३ कृषी वगैरह कर्म कर आजीविका करे, ४ शिल्पादिसे आजीविका करे और ५ साधुका लिंग (वेष) धारन कर आजीविका करे ॥ २३ ॥ पांच प्रकारके राज्यचिन्ह कहे हैं १ खड्ग, २ छत्र ३ मुकुट ४ पगरखी और ५ चमर ॥ २४ ॥

भायाहुवा प० परीषह उ० उपसर्गको स० सम्यक्प्रकारसे स० सहनकरे ख० खमे वि० तितिसे अ० अहियासे तं० यह ज० जैसे उ० कर्मउदयसे ख० निश्चयार्थमें अ० यह पु० पुरुष उ० उन्मत्त भू० हुवा ते० इसलिये मे० मुझे ए यह पु पुरुष अ० आक्रोशकरताहै अ० उपहास्यकरताहै णि फेंकरादि डाल्ताहै नि० कुवचनबोल्ताहै बं० बांधताहै रुं० रुंधनकरताहै छ० अंगोपांगछेदताहै प० मारताहै उ० उद्वेगउपजाताहै व० वस्त्र प० पात्र कं० कंबल पा० रजोहरण आ० लूटलेताहै वि० फेंकताहै भि० फोडताहै अ० लेजाताहै ज० यथाविध ख० निश्चय अ० यह पु० पुरुष ते इसलिये ए० यह पु०

झोवसम्मो सम्मं सहेज्जा, खमेज्जा, तितिक्खेज्जा, अहियासेज्जा तं• उदिन्नकम्मे खलु अयं पुरिसे उम्मत्तगभूए तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइवा, अवहसइवा, णिच्छोडइवा, णिज्झत्थेइवा, बंधइवा, रुंधइवा, छविच्छेय करेइवा, पमारंवाणेइ, उद्दवेइवा, वत्थपडिग्गहं कंबलं पायपुच्छणमाच्छिंदइवा, विच्छिंदइवा, भिंदइवा, अवहरइवा । जक्खाइट्ठे खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइवा तहेव जाव अवहरइवा । ममंचणं तब्भवभेय,

पांच स्थानकसे छद्मस्थ जीव उदय आये हुवे परिषह सहन करे १ यह पुरुष सरेखर कर्मोदयसे उन्मत्त हुआ है इसलिये मुझे आक्रोश करता है, हसता है; इत्यादिसे कंकर डालता है, कुवचनसे निर्भत्सन करता है, बांधता है, रुंधता है, चर्मछेद करता है. मारता है, उद्वेग उपजाता है, वस्त्र, पात्र, रजोहरणा

.... तम जा० यावत् अ० लेजाता है म० मेरे त० पूर्व भव के वे० वेदनीय क कर्म उ० उदय भ० हुा है त० इस लिये मे० मुझ ए य० पु पुरुष अ० आक्रोश करता है जा० यावत् अ० लेजाता है म० मेरे स सम्यक् प्रकारसे अ० नहीं सहते अ० नहीं खमते अ० नहीं तितिक्षा करते अ नहीं अहियासते कि क्या अ० अन्य क० होगा ए० एकान्त मे पा० पापकर्म क० करता है म० मेरे स सम्यक प्रकारसे स० सहन करते अ० अहियासते कि० क्या अ० अन्य क० होगा ए० एकान्त से नि निर्जरा होवे इ० यह पं० पांच ठा० कारनसे छ० छद्मस्थ उ० उदय हुवे प० परीषह उ० उप

णिज्जे कम्मे उदिन्ने भवइ तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइ जाव अवहरइवा। ममंचणे सम्मं असहमाणस्स, अखममाणस्स अतितिक्खेमाणस्स, अणहियासेमाणस्स, किम्मन्ने कज्जइ ? एगतसो मे पावकम्मे कज्जइ,। ममचणं सम्म सहमाणस्स जाव आहियासेमाणस्स किमन्न कज्जइ, एगतसो मे निज्जरा कज्जइ,। इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे

दि ले लेता है ऐसा विचार कर सहन करे २ यह पुरुष स्वेच्छ यक्षाविष्ट है इसलिये मुझे आक्रोश करता है यावत् मेरे वस्त्रादि लेलेता है ३ मुझे इस भव क वेदनीय कर्म उदय आये हुवे हैं इसलिय यह आक्रोश करता है यावत् मेरे वस्त्रादि लेलेता है ४ यदि उदय आये हुवे पाप कर्म सम्यक भावसे नहीं सहूंगा तो एकान्त पापकर्म होगा और ५ उन्हे मैं सम्यक भावसे सहूंगा तो एकान्त

सर्ग स० सम्यक् स० सहे जा० यावत् अ० अहियासे ॥ ७५ ॥ पं० पांच ठा० कारनसे के० केवली उ उदय हुवे प० परीसह उ० उपसर्ग स० सम्यक् स० सहे जा० यावत् अ० अहियासे सि० खिन्न चित्तवाला अ० यह पु० पुरुष ते० इस लिये म० मुझे ए० यह पु० पुरुष अ० आक्रोश करता है जा० यावत् अ० लेजाता है दि० दीप्त चित्तवाला अ० यह पुरुष ते० इस लिये मे० मुझे ए० यह पुरुष जा० यावत् अ० लेजाता है ज० यक्षाविष्ट अ यह ते० इस लिये मे० मुझे ए० यह पुरुष जा० यावत् अ० लेजाता है म०

उदिन्ने परीसहोवसग्गे सम्म सहेज्जा जाव आहियासेज्जा ॥ २५ ॥ पचहिं ठाणेहिं केवली उदिन्ने परीसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा जाव आहिआसेज्जा तं० खित्तचित्ते खलु अय पुरिसे तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा तहेव जाव अवहरइवा । दित्तचित्ते खलु अयंपुरिसे तेण मे एस पुरिसे जाव अवहरइवा। जक्खाइट्ठे खलु अय पुरिसे तेण मे एस पुरिसे जाव अव

निर्जरा होगी ऐसे पांच प्रकारके विचारमे उत्पन्न हुवे उपसर्ग समभावसे सहन करे ॥ २५ ॥ पांच स्थानकर्से केवली प्राप्त परिषह सहन करे १ पुत्रादि वियोगके शोकसे नष्ट चित्त वाला यह पुरुष मुझे आक्रोश करता है यावत् मेरेपात्रादि अपहरता है २ पुत्रजन्मादिमे उन्मत्त चित्तवाला यह पुरुष मुझे आक्रोश करता है यावत् मेरेपात्रादि ले लेता है ३ यह पुरुष यक्षाविष्ट हुआ है इसलिये मुझे आक्रोश करता है यावत् मेरे

मेरे त० पूर्व भव के वे० वदनीय कर्म उ० उदय हुवे ते० इस लिये ए० यह पुरुष जा० यावत् अ० सेजाता है म० मेरे स० सम्यक् स० सहते ख० खमते ति० तितिक्षा करते अ० अहियासते पा० देख कर ब० बहुत अ० अन्य छ० छद्मस्थ नि० निर्ग्रन्थ उ० उदय हुवे प० परीषह उ० उपसर्ग ए० एसे स० सम्यक् स० सहन करेंगे जा० यावत् अ० अहियासेंगे इ० इन पं० पांच ठा० कारन से के० केवली उ० उदय हुवे प० परीषह उ० उपसर्ग स० सम्यक् स० सहे जा० यावत् अ० अहियासे ॥ २६ ॥ पं० पांच

हरछत्ता । ममचण तब्भववेयणिज्जे कम्मे उदिण्णे भवइ तेणमे एस पुरिसे जाव अवहरं-इत्ता। ममचणं सम्मं सहमाणं खममाण तितिक्खमाण अहियासेमाण पासित्ता बहवे अन्ने छउमत्था समणा निग्गंथा उदिन्ने परीसहोवसग्गे एवं सम्मं सहिस्सति जाव आहियासिस्संति। इच्चेएहिं पचहिंठाणहिं केवली उदिन्ने परीसहोवसग्गे सम्म सहेज्जा जाव अहियासेज्जा।२६।प

वस्त्र पात्रादि अपहरता है ४ मुझ पूर्वभवके कर्म उदय आये हैं इसलिये यह आक्रोश करता है यावत् मेरे वस्त्रपात्रादि लेजाता है ५ मुझ सम्यक् प्रकारसे परिषह सहन करते देख अन्य छद्मस्थ श्रमण निर्ग्रन्थ उत्पन्न हुवे परिषह सम्यक् रीतिसे सहन करेंगे यावत् अहियासेंगे इन पांच कारनोंसे केवली सम्यक् भावसे परिषह सहन करे ॥ २६ ॥ पांच प्रकारके अनमानादि हेतु कहे हैं १ हेतु न जाने, २ हेतु नदेखे ३

[illegible] हेतु [illegible] हेतु को [illegible] जानता है हे० हेतु को प० नहीं पा० देखता है हे० हेतुको न० नहीं म० समझता है हे० हेतु को न० नहीं भ० श्रद्धता है हे० हेतु को न० नहीं भ० अनुसरता है हे० हेतु को अ० अज्ञान म० मरण म० मरता है पं० पांच हे० हेतु हे० हेतुसे ण० नहीं जा० जाने जा० यावत् हे० हेतुसे अ० अज्ञान म० मरण म मरे पं० पांच हेतु हे० हेतुको जा० जाने जा० यावत् हे० हेतु छ० छद्मस्थ म० मरण म० मरता है प० पांच हेतु हे० हेतुसे जा० जाने जा० यावत् हे० हेतुसे छ० छद्मस्थ म० मरण म० मरता है पं० पांच अ० अहेतु अ० अहेतुको ण० नहीं जा० जानता है जा० या

चहेऊ प० तं० हेउं न जाणइ, हेउ ण पासइ, हेउ ण बुज्झइ, हेउं णाभिगच्छइ, हेउमन्नाणमरणं मरइ । पचहेऊ प० त० हेउणा ण जाणइ जाव हेउणा अन्नाणमरण मरइ । पंचहेऊ प० तं० हेउं जाणइ जाव हेउं छउमत्थमरणमरइ । पचहेऊ प० त० हेउणा जाणइ जाव हेउणा छउमत्थ मरण मरइ । पंचअहेऊ प० त० अहेउं ण जाणइ जाव अहेउ छउमत्थमरणं मरइ । पचअहेऊ प० त० अहेउणा

हेतु न श्रद्धे ४ हेतु हृदयमें नलावे, और ५ हेतु अज्ञान मृत्युसे मरे ये हेतु मिथ्यात्वियोंको होते हैं। औरभी पांच प्रकारके हेतु कहे हैं हेतुसे धर्मजाने नहीं यावत् हेतुसे अज्ञान मृत्युमरे । औरभी पांच प्रकारके हेतु कहे हैं हेतु जाने यावत हेतु छद्मस्थ मरण मरे । पांच प्रकारके हेतु कहे हेतुसे जाने यावत् हेतुसे छद्मस्थ

नजाणइ जाव अहेउणा छउमत्यमरणं मरइ । पंचअहेऊ प० तं० अहेउं जाणइ जाव अहेउं केवलिमरणं मरइ ॥ २७ ॥ केवलिस्सण पंचअणुत्तरा प० तं० अणुत्तरे नाणे, अणुत्तरे दंसणे, अणुत्तरे चरित्ते, अणुत्तरे तवे, अणुत्तरे वीरिए ॥ २८ ॥ पउमप्पभेण अरहा पंचचित्ते होत्था तं० चित्ताहिं चुए चइत्ता गब्भवक्कंते, चित्ताहिं जाए, चित्ताहिं

...मरता है पं० पांच अ० अहेतु अ० अहेतुसे न० नहीं जा० जाने जा० यावत् अ० अहेतुसे छ० छद्मस्थ म० मरण म० मरे पं० पांच अहेतु प० प्ररूपे अ० अहेतुको जा० जाने जा० यावत् अ० अहेतु के० केवली मरण म० मरे ॥ २७ ॥ के० केवलीके पं० पांच अ० उत्कृष्ट अ० उत्कृष्ट ज्ञान अ० उत्कृष्ट दर्शन अ० उत्कृष्ट चारित्र अ० उत्कृष्ट तप अ० उत्कृष्ट वीर्य ॥ २८ ॥ प० पद्मप्रभ अ० अरिहंत के प० पांच चि० चित्रा नक्षत्रमें हो० हुवे चि० चित्रामें चु० चवे च० चवकर

...मरण मरे । पांच अहेतु कहे हैं: अहेतुसे जाने यावत् अहेतुसे छद्मस्थ मरणमरे पांच अहेतु कहे अहेतुसे जाने यावत् अहेतुसे केवली मरण मरे ॥ २७ ॥ केवलीको पांच उत्कृष्ट (प्रधान) कहे हैं १ अनुत्तर ज्ञान, २ अनुत्तर दर्शन, ३ अनुत्तर चारित्र, ४ अनुत्तर तप और ५ अनुत्तर वीर्य ॥ २८ ॥ पद्मप्रभ अरिहंतके पांच कल्याणक चित्रा नक्षत्रमें हुवे १ चवकर गर्भमें उत्पन्न होना, २ जन्म ३ गृहवास छोडकर दीक्षा

ग० गर्भ में च० आये चि० चित्रा में जा० जन्महुआ चि० चित्रा में मु० मुण्डहुवे अ अगार से अ० अनगार को प० ग्रहण कीया चि० चित्रा में अ० अनंत अ०उत्कृष्ट णि०निर्व्याघात नि० निरावरण क० कृत्स्न के० केवलवर ना० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न हुआ चि० चित्रा में प० निर्वाण पधारे पु० पुष्पदंत अ० अरिहंत के पं० पांच मू० मूल नक्षत्र में हो० हुवे मू० मूल में चु० चवे च० चवकर ग० गर्भ में आ० आये ए० ऐसे ए० इस अ० अभिलाप से इ० इस गा० गाथा से अ० जानना प० पद्मप्रभु के चि० चित्रा में मू० मूल में पु०

मुंडेभवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, चित्ताहिं अणते अणुत्तरे- णिव्वाघाए, निरावरणे, कसिणे,पडिपुन्ने, केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने, चित्ताहिं परिनिव्वुए ॥ पुप्फ दंतेणं अरहा पंच मूले होत्था मूलेणं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते एवंचेव, एएणं अभिला- वेणं इमाओ गाहाओ अणुगतव्वाओ ॥ पउमप्पभस्स चित्ता, मूले पुण होइ पुप्फदंतस्स,

अंगीकार करना, अनंत, उत्कृष्ट, निर्व्याघात, आवरण रहित, प्रतिपूर्ण केवल ज्ञान उत्पन्न होना, और ५ मोक्ष पहुंचना ऐसेही पुष्पदंत अरिहंतके पांच कल्याणक मूल नक्षत्रमें हुए पुष्पदंत स्वामीके मूलनक्षत्र में, शीतल नाथ स्वामी के पूर्वाषाढामें, विमलनाथ स्वामी के उत्तराषाढामें (१) अनंतनाथ स्वामी के रेवती नक्षत्रमें, धर्मनाथ स्वामी के पुष्यमें, शान्तिनाथ स्वामी के भरणीमें, कुंथुनाथ स्वामीके कृत्तिकानक्षत्रमें और अरनाथ स्वामी के रेवती नक्षत्रमें हुए (२) मुनि सुव्रत के श्रवण नक्षत्रमें, नमिनाथ स्वामी के अश्विनीमें, नेमिनाथ

पुष्पदंत के पु० पूर्वाषाढा में सी० शीतलनाथ के उ० उत्तराभाद्रपद में वि० विमलनाथ के रे० रेवती में अ० अनंतनाथ के पु० पुष्य में ध० धर्मनाथ के स० शांतिनाथ भ० भरणी में कु० कुंथुनाथ के कृ० कृत्तिका में अ० अरनाथ के रे० रेवती में मु० मुनिसुव्रत क स० श्रवण में अ० अश्विनी में न० नमिनाथ के ने० नेमनाथके चि० चित्रा में पा० पार्श्वनाथ क वि० विशाखा मे पं० पांच ह० उत्तराफाल्गुनी मेंवी० वीर क स० श्रमण भ० भगवन् म० महावीर के पं० पांच ह० उत्तराफाल्गुनी में हो० हुये ह० उत्तराफाल्गुनी में च्यू० चवे च० चवकर ग० गर्भ में ह० आये ह० उत्तराफाल्गुनी में ग० गर्भ में सा० साहरण कीया ह० उत्त

पुव्वा आसाढा सीयलस्स, उत्तरा विमलस्स भद्दवया (१) रेवइय अणतजिणो, पूसो धम्मस्स, संतिणो भरणी, कुंथुस्स कत्तियाओ, अरस्स तहा रेवईओय (२) मुणिसुव्वय स्स सवणो, आसिणीनमिणोय, नेमिणाचित्ता पासस्स विसाहाओ, पंचयहत्थुत्तरेवीरो॥ समणे भगवं महावीरे पंच हत्थुत्तरे होत्था, तं० हत्थुत्तराहिं चुए चइत्ता गब्भंवक्कंते, हत्थुत्तराहिं गब्भाओगब्भं साहरइ, हत्थुत्तराहिंजाए, हत्थुत्तराहिं मुंड

स्वामी के चित्रामें, पार्श्वनाथ स्वामी के विशाखा, और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रमें महावीर स्वामी के पांच कल्याणक हुए श्री श्रमण भगवंत महावीर उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमें चवकर गर्भमें आये, देवानंदाकी कुक्षिसे साहरण होकर त्रिशला की कुक्षिमें आये, उत्तरामें भगजित धनकर अनगार हुए और उत्तरा

रा फाल्गुनी में गा० उत्पन्न हुवे ह० उत्तरा फाल्गुनी में मुं० मुण्डहोकर प० प्रव्रजित हुवे ह० उत्तराफाल्गुनामें अ० अनंत अ उत्कृष्ट जा० यावत् के केवलवर ना० ज्ञान द० दर्शन स० उत्पन्न हुवा॥ २९ ॥ नो० नहीं क० कल्पता है नि० साधु नि० साध्वी को इ० इन उ० कहीहुइ ग० गिनिहुइ प्रगटकी पं० पांच म० महार्णव म० महानदीयों अ० एकमास में दु० दोवार ति० तीनवार उ० उतरने को स० तीरने को त० वह ज० जैसे गं० गंगा ज० जमुना स० सरयू ए० ऐरावती म० मही प० पांच ठा० कारन

मन्विचा जाव पव्वइए। हत्थुत्तराहिं अणते अणुत्तरे जाव केवलवरनाणदंसणेसमुप्पन्ने ॥ २९ ॥ इति पचमट्ठाणस्स पढमोद्देसो सम्मत्तो ॥ * *

ना कप्पइ निग्गंथाणवा निग्गंथीणंवा इमाओ उद्दिट्ठाओ, गणियाओ, वियंजियाओ पंच महण्णवाओ महाणईओ अंतोमासस्स दुखुत्तोवा, तिखुत्तोवा, उत्तरित्तएवा, संत्तरित्तएवा तं० गंगा, जउणा, सरऊ, एरावती, मही। पंचहिं ठाणेहिं कप्पंति तं०

में ही केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ॥ २९ ॥ यह पांचवे स्थानक का पहिला उद्देशा पूर्णहुआ इसमें अन्तिम महावीर स्वामी के पांच उत्तम कल्याण कहे हैं उनोने ही साधु धर्म बतलाया है इसलिये आगे उसका कथन चलता है * * * * * *

गंगा, जमुना, सरयु, ऐरावती और मही ये पांच महाख्यात व बहुत पानी वाली नदियों को एक मासमें

भ० क० कल्पता है भ० भयसे दु० दुर्भिक्षसे प० प्रवाह में इ० डालनेसे को० कोइ उ० नदी के ओ० ओघमें प० तणाते म० महे अ० अनार्य से णो० नहिं क० कल्पता है णि० साधु णि० साध्वी को प० प्रथम पा० वर्षाकाल में गा० ग्रामानुग्राम दू० विचरना पं० पांच ठा० कारन से क० कल्पता है भ० भयसे दु० दुर्भिक्ष मे जा० यावत् म० महे अ० अनार्यसवा वर्षाकाल तक आ० आवास प० पर्युषणकल्प णो० नहिं क० कल्पता है णि० साधु णि० साध्वी गा० ग्रामानुग्राम दू० विचरनेका प० पांच ठा० कारन से क० कल्पता है णा० ज्ञानकेलिये द० दर्शन

भयंसिवा, दुब्भिक्खंसिवा पव्वाहेज्जवणकोइ उदयोघंसि एज्जमाणंसि महतावा अणा-रिएहिं ॥ णो कप्पइ णिग्गंथाणवा णिग्गंथीणंवा पढमपाउसंसि गामाणुगामं दूइ-ज्जित्तए पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ तं० भयंसिवा, दुब्भिक्खंसिवा, जाव महता वा अणारिएहिं वासावासं पज्जोसवित्ताणं । णोकप्पइ णिग्गंथाणवा निग्गंथीणंवा गामा णुगामं दूइज्जित्तए । पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ त० णाणट्ठयाए, दंसणट्ठयाए, चरित्तट्ठयाए,

दो वस्त्र, तीन वस्त्र, नावादिकसे उतरना या भुजादिकसे तीरना साधु साध्वीको कल्पता नहीं। परंतु पांच स्थानकमें अपवाद मार्गसे कल्प १ राजादिकके डरसे, २ दुष्कालसे ३ कोई शत्रु उठाकर उसमें डाल देवेतो ४ पानी उन्मार्गमें जाकर तानकर लावेतो और ५ अनार्य म्लेच्छोंके उपद्रवसे प्रथम वर्षा कालमें साधु साध्वीको ग्रामानुग्राम विहार करना नहीं कल्पता है परंतु पांच कारनसे अपवाद मार्गमें कल्पता है राजादिकके डरसे यावत् अनार्य म्लेच्छादिक

कामिये च० चारित्र केलिए आ० आचार्य उ० उपाध्याय वी० कालकर आ० आचाय उ० उपाध्याय ब० बाहिर वे० वैयावृत्य क०करनेको ॥ १ ॥ पं० पांच अ० अनुद्घातिम ह० हस्तकम क० करते मे० मैथुन प० सेवते रा० रात्रि भोजन भुं० करत सा० शय्यान्तर पिंड भु० भोगवते रा० राजपिंड भुं० भोगवते पं० पांच ठा कारनसे स० श्रमण निर्ग्रन्थ रा अन्त पुर में अ० प्रवेशकरता ना० उल्लंघन करेनहीं

आयरिय उवज्झाएवा से वीसुभेज्जा, आयरियउवज्झायाण वा बहिया वेयावच्चकरणयाए ॥ १ ॥ पच अणुग्घाइमा प० त० हत्थकम्मकरेमाणे, मेहुणपडिसेवमाणे, राइभोयण भुंजमाणे, सागारियपिंड भुंजमाणे, रायपिंड भुंजमाणे। पचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे रायतेउर मणुपविसमाणे नाइक्कमइ तं० णगरेसिया सव्वओसमता गुत्ते गु

के उत्क्रम। वर्षाकाल-चातुर्मासमें साधु साध्वीको विहार करना नहीं कल्पता है, परंतु अपवाद मार्गमें पांच कारनसे कल्पता है ज्ञानके लिये, दर्शन के लिये, चारित्रके लिये, आचार्य उपाध्याय क मरणादि या रोगादि कारणसे, और क्षेत्रबाहिर रहे हुवे आचार्य उपाध्याय की वैयावृत्य करनके लिये ॥१॥ पांच अनुद्घातिम कहे हैं १ हस्तकर्म करताहुआ, २ मैथुनसेवन करता हुआ ३ रात्रिभोजन करता हुआ, ४ शय्यान्तर पिंड भोगता हुआ और ५ राजपिंड भोगता हुआ पांच कारनसे श्रमण निर्ग्रन्थ राजाके अन्तपुरमें

---

१ यहांपर पर्युषण पर्व तककी गणना की है

प० नगरमें स० हार स० चारों बाजुसे गु गुप्त गु० गुप्तद्वार ब० बहुत स० श्रमण मा० माहण णो० नहीं स० समर्थ होवे भ० भक्त पा पानी नि० नीकलने प०प्रवेश करने ते०उनकेलिये वि०विनंति करनेको रा० अन्तःपुरमें अ० प्रवेशकरे प० पाडीहारु पी० पाट फ० बाजोठ से० शैय्या स० संथारा प० पीछादेनेको रा० अन्त पुरमें अ० जावे ह० अश्व ग० हस्ति दु० मस्त आ० आता भी० डराहुवा रा० अन्तःपुरमें अ० जावे प० दूसरा स० सहसात्कारसे ब० बलसे वा० हस्त से ग० ग्रहणकर रा० अन्तःपुरमें अ० जावे ब० बाहिर

णगरंसि सव्वतो समंता गुत्ते गुत्तदुवारे बहवे समणमाहणा णो संचाएइ भत्ताएवा पाणाएवा निक्खमित्तएवा पवि सित्तए वा तेसिं विणवण्णट्ठयाए रायतेउर मणुपविसेज्जा, पाडिहारिएवा पीढफलगसेज्जा संथारगं पच्चप्पिणमाणे रायतेउर मणुपविसेज्जा, हयस्सवा, गयस्सवा, दुट्ठस्स, आग च्छमाणस्स भीए रायतेउर मणुपविसेज्जा, परो वाणं सहसावा बलसावा बाहाए गहाय

प्रवेश करते आज्ञाका उल्लंघन करे नहीं १ किसी कार्य प्रसंगसे नगरके चारों तरफके द्वार बंध कीये होवे और आहार पानीके लिये शाक्यादि साधु नीकलने प्रवेश करने को शक्तिवन्त न हो उनके लिये राजाको अंतःपुरमें जानकर वहां जावे क्योंकि साधु सर्वत्र विश्वासपात्र है २ पीढ, फलग, शैय्या संथारादि लाये हुवे होवे उसे पीछादेनेके लिये जावे ३ मदोन्मत्त अश्व या हस्ती को सामने आता हुआ देखकर उनसे

न० वनमें आ० बगीचे में गये हुवे उ० उद्यान में गये हुवे रा० अन्तःपुरके ज मनुष्य स० चारोंबाजु से सं० घेराये हुवे नि रहे इ० इन पं० पांच ठा० कारन से स श्रमण नि० निर्ग्रंथ जा० यावत ण० नहीं अ० अतिक्रमे ॥ २ ॥ पं० पांच ठा० कारन से इ स्त्री पु पुरुषकी स० साथ अ नहीं संयोग करती ग० गर्भ ध० धारन करती है मि० स्त्री दु० वस्त्ररहित खराब रीतिसे दु० बैठी हुइ सु० शुक्र के पुद्गल अ० ग्रहणकर सु० शुक्र पुद्गलसे स० खरडाया से० वस्त्र व० वस्त्र अं० अंदर जो० योनिमें अ० प्रवेश करे स स्वयं सु० शुक्र

रायंतेउर मणुपविसेज्जा, बहिया वण आरामगयंवा उज्जाणगयंवा रायंतेउरजणो सव्व
ओ समता सपरिक्खिवित्ताणं निविसेज्जा । इच्चेएहिं पचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे
जाव णाइक्कमइ ॥ २ ॥ पचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं असंवसमाणीत्रि गब्भ
धरेज्जा त० मित्थी दुव्वियडा दुन्निसन्ना सुक्कपोग्गले अहिट्ठेज्जा, सुक्कपोग्गलसंसिट्ठे वा से
वत्थे अतो जाणिए अणुपविसज्जा, सय वा से सुक्क पोग्गले अणुपविसेज्जा परो वा से सु

हरकर राजाके अंतःपुरमें लावे ४ कोई बलात्कारसे हाथ पकडकर अंतःपुरमें लेजावे तो वहां जावे, अथवा ५ कोइ साधु बाहिर बगीचेमें गये होवे और वहांपर राजाका अंतःपुर क्रीडाके लिये आकर रहे तो वहां साधु भी रहे ॥ २ ॥ स्त्री पुरुषकी साथ नहीं रहती हुइ भी पांच कारनसे गर्भ धारन करे १ कोइ स्त्री वस्त्र रहित या फटे हुवे वस्त्रसे बैठी होवे और उस स्थानपर शुक्र (वीर्य) के पुद्गल लगे होवे तो उन पुद्गलों

के पुद्गल अ० ग्रहण करे प० दुसरा सु० शुक्र के पु० पुद्गल अ० प्रवेश करावे सी० शीत पानी कों वि० याति आ० पूर्व पतित सु० शुक्र के पुद्गल अ० ग्रहण करे इ० इन पं० पांच कारनसे जा० यावत् ध० धारन कर ।० पांच कारन से इ० स्त्री पु० पुरुषसाथ सं० रहती हुइ भी ग० गर्भ नो० नहीं ध

छक्कपोग्गले अणुपविसेज्जा, सीओदगवियडेण वा से आयममाणीए सुक्कपोग्गले अणुपवि सेज्जा। इच्चेएहिं पंचहिंठाणेहिं जाव धरेज्जा ॥ पंचहिं ठाणेहिं इत्थीपुरिसेण सद्धिं सवसमाणीवि गब्भ नो धरेज्जा तं० अप्पत्त जोव्वणा, अइक्कंत जोव्वणा जाइवंज्झा, गेलन्नपुट्ठा, दोमणंसिया

को यानिभागसे ग्रहण करे और गर्भ रहे २ शुक्रसे भराहुआ वस्त्र योनिमें प्रवेश करे और पुद्गल ग्रहण करेतो गर्भ रहे ३ अपन शील व लज्जाका रक्षण करती हुइ पुन मासिके लिये किसी पास शुक्रके पुद्गल मंगवाकर योनिमें रखे ४ श्वश्रू प्रमुख पुत्रकी इच्छासे वधूकी योनिमें शुक्रके पुद्गल रखे ५ नदी द्रहमें स्नान करते पूर्व पतित वीयके पुद्गल योनिमें प्रवेशकरे और गर्भ धारन करनेका समय होवेतो गर्भ धारन करे इन पांच कारनसे पुरुषसे दूर रहती हुइ स्त्री गर्भ धारन करे स्त्री पुरुषकी साथ रहती हुइ भी पांच कारनसे गर्भ धारन कर नहीं १ अप्राप्त यौवनी होवे २ अतिक्रान्त यौवना होवे ३ जातिवंध्या ४ रोगिष्ट ५ और शोकादिक मानसिक पीडायुक्त। औरभी स्त्री पुरुषकी साथ रहती हुइ पांच कारणसे गर्भ धारन

१ अमित कालमें १२ वरसकी कन्या अप्राप्त यौवना कहलाती है २ वृद्ध स्त्री अतिक्रान्त यौवना कहलाती है

धारन कर अ० अप्राप्त यौवन अ० अतिक्रान्त यौवन जा० जाति वंध्या गे० रोगीष्ट दो० मानसीक पीडा युक्त पं० पांच कारनसे इ० स्त्री पु० पुरुष साथ सं० रहती हुई भी ग० गर्भ नो० नहीं ध० धारन करे नि० नित्य ऋतुवाली अ० ऋतु विना की वा नष्ट सो० गर्भाशय वा० घातवाला सो स्रोत अ० काम प० सेवनेवाली प पांच कारनसे इ० स्त्री पु० पुरुष साथ सं० रहती हुई भी ग० गर्भ, नो० नहीं ध धारन करे उ० ऋतु में णो० नहीं णि० काम प० सेवनेवाली भ० होवे स आये हुवे सु० शुक्र

इच्चेएहिं पचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं सवसमाणीवि गब्भ नो धरेज्जा ॥ पचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं सवसमाणीवि गब्भ नो धरेज्जा तं० निच्चाउआ, अणोउया, वावन्नसोया, वाविद्धसोया, अणेगपडिसेविणी, । इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेणसद्धिं सवसमाणीवि गब्भ नो धरेज्जा ॥ पचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि गब्भ नो धरेज्जा त० उउंसि णो णिगामपडिसेविणी यावि भवइ, समागं

करे नहीं १ नित्यर्तुका सदैव रक्तका प्रस्राव होता होवे २ अनर्तुका रक्तका प्रस्राव नहीं होता होवेसो ३ व्यापन्न स्रोता सो रोगादि कारनसे गर्भाशय नष्टहुवा होवे ४ व्याविग्ध स्रोता विद्यमान स्रोत वातादि कारनसे शक्ति रहित होनेसे ५ और बहुत काम सेवन करनेसे गणिका प्रमुख पांच कारनसे स्त्री पुरुषकी साथ रहती हुइभी गर्भ धारन करे नहीं १ ऋतुकालमें बहुत कामसेवन नहीं करनेसे २ योनिदोषसे वीर्यके

पुद्गल प० नष्ट होवे उ० स्तीन पि० पित्त सो० रुधिर पु० पहिले दे० देव क० कर्म से पु० पुत्रफल नो० नहीं नि० प्राप्त भ० होवे ॥ १ ॥ पं० पांच कारनसे नि० साधु नि० साध्वी ए० एक स्थान में ठा० कायोत्सर्ग से०शयन नि०स्वाध्याय चे०करते णा उल्लघन नहीं करते हैं ए० कितनेक नि साधु नि० साध्वी म० बडी भा० आवुड छि० विना मनुष्य के ही दीर्घ अ मार्ग अ० अटवीमें अ० गये हुवे

या वा से सुक्कपोग्गले पडिविद्धंसाति, उदिन्नेवासे पित्तसोणिए पुरा वा देवकम्मुणा, पुत्तफले वा नो निविट्ठे भवइ इच्चेएहिं जाव णोधरेज्जा॥ ३॥ पंचहिं ठाणेहिं निग्गंथाय निग्गंथीओय एगयओ ठाणंवा, सेज्जंवा निसीहियंवा चेएमाणा णाइक्कमति तं॰ अत्थेगइया निग्गंथाय निग्गंथी ओय एग मह आगामियं छिन्नावाय दीह मद्धमडवि मणुपविट्ठा तत्थेगयाओ ठाणंवा

पुद्गल योनिमें आनेपरभी बाहिर नीकल जावे ३ उत्कट आकरा स्त्रीको पित्तका रक्त होवे ४ कर्म दोषसे और ५ पुत्र प्राप्ति रूप कर्मकी पूर्वभवमें उपार्जना नहीं की है उससे इन पांच कारनसे स्त्रीको पुरुषका संयोग होते हुवेभी गर्भ नहीं रहता है ॥ ३ ॥ पांच कारनसे साधु साध्वी एकत्र कायोत्सर्ग करते हुए आज्ञाका विराधक नहोवे १ कोई साधु साध्वी ऐसी अटविमें पडगये होवेकि जहां कोई आनेकी वांच्छा करे नहीं, साथ मनुष्य मीले नहीं, वस्ती नहीं होवेतो वहां पास पास शैय्यादि करते आज्ञाका विराधक होवे

त० तहां प० साथ ठा० कार्योत्सर्ग से० शयन नि० स्वाध्याय चे० करते णा० उल्लंघन करते नहीं हैं अ० हैं ए० कितनेक णि० साधु गा० ग्राम में न० नगर में रा० राजधानि में वा० वास को उ० गये हुवे ए० एकदा उ० उपाश्रय लु० मीले ए० एकदा णो० नहीं लु० मीले त० तहां ए० साथ ठा० कायोत्सग णा० उल्लंघन नहीं करते हैं अ० हैं ए० कितनेक णि० साधु णि० साध्वी णा० नाग कुमार के वास में सु० सुवर्ण कुमार के वास में वा० रहने को उ भये हुवे त० तहां ए० साथ ठा० कायोत्सर्ग णा० उल्लंघन नहीं करते हैं आ० चोर

सेज्जं वा निसीहियंवा चेएमाणा णाइक्कमति, अत्थेगइया णिग्गथा गामसिवा नगरसिवा जाव रायहाणिंवा वासं उवगया एगइया यत्थ उवस्सय लभति एगइया णोलभति तत्थेगयाओ ठाणवा जाव णाइक्कमति। अत्थेगइया णिग्गंथा णिग्गथीओय णागकुमारावासासिवा, सुवण्णकुमारावाससिवा, वासं उवगया तत्थेगयाओ ठाणवा जाव णाइक्कमंति। आमोसगा दीसंति इच्छंति णिग्गंथीओ चीवरपडियाए पडिगाहेत्तए,

नहीं २ ग्राम या नगरमें आये पीछे रहनेक लिये एक ही स्थान मीले अन्य मीले नहीं तो वहां साथ रहते हुवे आज्ञा के विराधक होवे नहीं, ३ कोई साधु साध्वी नागकुमारादि यक्षके मंदिरमें आये वहां रहते आज्ञाका उल्लंघन करे नहीं ५ चोरादि स्त्रनकी इच्छा करेतो उनका रक्षणके लिये उनकी साथ रहते आज्ञाका उल्लंघन होवे नहीं ५ कोई युवान पुरुष साध्वी साथ मैथुन करनेकी इच्छासे उनकी पास आवे

दी० दीसता है इ० इच्छता है णि० साध्वी की पी० सारी प० पकडने को ठा० कायोत्सग जा० यावत् णा० उल्लंघन नहीं कर जु० युवान दी० दीसता है इ० इच्छता है णि० साध्वी मे० मैथुन कोलिये प० पकडने को त० वहां ए साथ ठा० कायोत्सर्ग जा० यावत णा० उलंघन करे नहीं प० पांच कारन से स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ अ० वस्त्ररहित स० वस्त्रसहित णि० साध्वी साथ सं० रहता हुवा ना० उल्लंघन नहीं करे तं० यह खि० खिप्तचित्तवाला स० श्रमण णि० निर्ग्रंथ नि० निर्ग्रंथ अ० रहित अ० वस्त्र रहित म० वस्त्र सहित नि० साध्वी साथ स० रहता हुवा ना० उल्लंघन करे नहीं ए० ऐसे

तत्थे गयओ ठाणवा जाव णाइक्कमति । जुवाणा दीसंति ते इच्छति णिग्गथीओ मेहु-णपडियाए पडिगाहेत्तए तत्थे गयओ ठाणवा जाव णाइक्कमति । इच्चेएहिं पचहिं ठा-णेहिं जाव णाइक्कमंति ॥ पचहिं ठाणेहिं समणे निग्गथ अचेलए सचेलियाहिं निग्ग थीहिं सार्द्ध संवसमाणे नाइक्कमइ खित्तचित्ते समणे निग्गथे निग्गंथेहिं अविज्जमाणेहिं

उस समय उसकी साथ रहते आज्ञाका उल्लंघन होवे नहीं इन पांच कारनसे साधु साध्वीकी साथ रहते हुए जिनाज्ञाका उल्लंघन करे नहीं और भी पांच कारनसे वस्त्र रहित साधु वस्त्र सहित साध्वी साथ रहते हुए जिनाज्ञाका उल्लंघन करे नहीं १ किसी शोकादि कारनसे कोई साधु व्याकुल चित्तवाला होवे और उसकी साथ अन्य साधु नहोवे तब उस वस्त्र रहित साधुको साध्वी पुष्पवत कर रखे; और इस तरह एकत्र

प० इस ग० आलाप से दि० दिप्तचित्तवाला ज० यक्षाविष्ट उ० उन्मत्त नि० साध्वी से प० प्रव्रजित हुवा स० श्रमण नि० निर्ग्रंथों से अ० रहित अ वस्त्र रहित स० वस्त्र सहित नि० साध्वी स० साथ सं० रहता हुवा ना० उल्लंघन करे नहीं ॥ ४ ॥ पं० पांच आ० आश्रवद्वार मि मिथ्यात्व अ० अविरति प० प्रमाद क० कषाय जो० योग प० पांच स० संवरद्वार प० प्ररूपे स सम्यक्त्व वि० विरति अ० अप्रमाद अ०

अचेलओ सचेलियाहिं निग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे नाइक्कमइ एवमेएण गमएण दित्त चित्ते,जक्खाइट्ठे,उम्मायपत्ते निग्गंथीपव्वाविए समणे निग्गंथेहिं अविज्जमाणेहिं अचेलए सचेलियाहिं निग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे णाइक्कमइ ॥४॥ पंच आसवदारा प० तं० मिच्छत्त, अविरई, पमाओ, कसाया, जोगा ॥ पंच संवरदारा प० तं० समत्तं, विरती, अपमा

रखते हुए आज्ञाका उल्लंघन करे नहीं २ ऐसेही दर्पसे दीप्तचित्त वाला हुवा होवेतो रखे ३ ऐसेही भूतादि ४ वायुसे उन्मत्त हुवा होवे और पुत्रवत् समझ कर उनको अपनी पास रखेतो आज्ञाका उल्लंघन करे नहीं और ५ कीसी साध्वीने कारन विशेषसे अपने पुत्रको दीक्षादी होवे और कारनवशात् वस्त्र रहित होवे तोभी साथ रखते जिनाज्ञाका उल्लंघन होवे नहीं ॥ ४ ॥ पांच आश्रव द्वार कहे हैं मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग पांच संवर द्वार कहे हैं सम्यक्त्व, विरति, अप्रमाद, अकषाय, और उत्तमयोग पांच

कपाय ओ० याग पं० पांच दंड अ० अर्थदंड म० मनर्थदंड हिं० हिंसादंड अ० अकस्मात् दंड दि० दृष्टिविपर्यास दंड प० पांच क्रिया आ० आरभिया प० परिग्राहिया मा मायावत्तिया अ० अपचक्खाण मि० मिथ्यादर्शन वत्तिया मि मिथ्यादृष्टि ने० नारकी को पं० पांच कि० क्रिया आ० आरभिया जा० यावत् मि० मिथ्यादर्शन वत्तिया ए० ऐसे स मग में नि० निरंतर जा० यावत् मि० मिथ्यादृष्टि वे० वैमानिक को ण० विशेष वि० विकलेन्द्रिय मि० मिथ्यादृष्टि से० शेष त० तैसे ही पं पांच कि० क्रिया का०

ओ, अकसाया * जोगिचं ॥ पचदंडा प० तं० अट्ठादंडे, अणट्ठादंडे, हिंसादंडे, अकम्हादंडे, दिट्ठिविपरियासियादंडे ॥ पचकिरियाओ पण्णत्ताओ तं० आरभिया, परिग्गहिया मायावत्तिया, अपच्चक्खाणाकिरिया, मिच्छादसणवत्तिया । मिच्छदिट्ठिनेरइयाणं पचकिरियाओ प० तं० आरभिया जाव मिच्छादसणवत्तिया । एवं सव्वेसिं निरतरं जाव मिच्छदिट्ठियाणं वेमाणियाण । णवर विगलेंदिया मिच्छादिट्ठी नभन्नति सेसतहे

दंड कहे हैं अर्थदंड, अनर्थदंड, हिंसादंड अकस्मातदंड और दृष्टिविपर्यासदंड पांच क्रिया कही, आरंभिया, परिग्राहिया, मायावत्तिया, अपचक्खाणवत्तिया और मिथ्यादर्शनवत्तिया मिथ्यादृष्टि नारकी को पांच क्रिया कही आरंभिया यावत मिथ्यादर्शन वत्तिया ऐसेही चौवीस दंडकके मिथ्यादृष्टि जीवको पांच क्रिया

* मकसूदाबाद की प्रतीमें "वइमजोगिचं" ऐसा पाठहै ।

काइया अ० अधिकरणिया पा० पाउसिया प० परितापणिया पा० प्राणातिपात ने० नारकी का प० पांच प० ऐसे नि० निरन्तर जा० यावत वे० वैमानीक को पं० पांच क्रिया दि० दिठिया पु० पुठिया पा० पाडुच्चिया सा० सामन्तोवनिया सा० साहत्थिया ने नारकी को जा० यावत् वे० वेमानीक को पं० पांच क्रिया ण० नेसत्थिया आ० आणवणिया वे० विदारणीया अ० अनाभोगवत्तिया अ० अनवकंखवत्तिया

व ॥ पंचकिरियाओ पण्णत्ताओ त० काइया, अहिगरणिया पाओसिया, परियावणिया, पाणाइवायकिरिया। नेरइयाण पंच एवंचेव ॥एवं निरंतर जाव वेमाणियाण ॥पंच किरिया ओ प० तं० दिट्ठिया, पुट्ठिया पाडुच्चिया, सामंतोवणिवाइया, साहत्थिया, । एवं णेर- इयाण जाव वेमाणियाण । पंचकिरियाओ प० त० णेसत्थिया, आणवणिया, वेयारणिया, अणाभोगवत्तिया, अणवकंखवत्तिया । एवं जाव वेमाणियाण ।

जानना पांच क्रिया कही कायिकी, अधिकरणकी, प्रद्वेषकी, परितापकी और प्राणातिपातिकी नारकी आदि सब दंडकके जीवों को उक्त पांच प्रकारकी क्रिया कही और भी पांच प्रकारकी क्रिया कही दिठिया, पुठिया, पाडुच्चिया, सामंतोवनिका और साहत्थिया पांचोंक्रिया चौवीसही दंडक के जीवोंको जानना औरभी पांच क्रिया कही नेसत्थिया आणवणिया, विदारणिया, अनाभोगवत्तिया और अणवकंखवत्तिया ये पांचो क्रिया नारकी आदि सब दंडकमें पाती हैं और पांच क्रिया कही पेज्जवत्तिया,

... यावत् व० वमानिक का पं० पांच क्रिया पे० पेमवत्तिया दो० दोसवत्तिया प० मयोग क्रिया स० समुदानी ई० ईर्यापथिक म० मनुष्य को से० दुसर को न० नहीं है ॥ ५ ॥ पं० पांच प० परिज्ञा उ० उपधिपरिज्ञा उ० उपाश्रयपरिज्ञा क० कषायपरिज्ञा जो० योगपरिज्ञा भ० भक्तपानपरिज्ञा ॥ ६ ॥ प० पांच मकारके व० व्यवहार भ० आगम सु० सूत्र आ० आज्ञा धा० धारना जी० जीत ज० जैसे से० व

पंचकिरियाओ पण्णत्ताओ त० पेज्जवत्तिया, दोसवत्तिया, पओगाकिरिया, समुदाणकिरिया, इरियावहिया । एवं मणुस्साणवि सेसाणं णत्थि ॥ ५ ॥ पंचविहा परिन्ना प० तं० उवहिपरिन्ना, उवस्सयपरिन्ना, कसायपरिन्ना जोगपरिन्ना, भत्तपाणपरिन्ना ॥ ६ ॥ पंचविहे ववहारे प० तं० आगमे, सुए, आणा, धारणा, जीए, । जहा से तत्थ आगमे

द्वेषवत्तिया, मयोगवत्तिया, सामुदानक्रिया और ईर्यापथिक ये पांच क्रियाओ मनुष्यको होती है अन्य जीवोंको नहीं है ॥ ५ ॥ वस्तु को त्यागने योग्य जानकर त्यागना उसे परिज्ञा कहते हैं ऐसी परिज्ञा पांच प्रकारकी है १ वस्त्रादि उपधि अशुद्धकी परिज्ञा, २ उपाश्रय अशुद्धकी परिज्ञा, ३ कषाय परिज्ञा ४ योग परिज्ञा, ५ भक्त प्रत्याख्यान परिज्ञा ॥ ६ ॥ पांच प्रकारके व्यवहार कहे हैं १ जिससे सर्व जाना जावे उसे आगम व्यवहार कहते हैं, यह आगम व्यवहार केवल, मनःपर्यव, अवधि, चौदह पूर्व तथा नवपूर्वके धारक को होता है २ शेष आचारांगादि सूत्र सो सूत्र व्यवहार ३ आज्ञा व्यवहार जो गीतार्थ देश

यह त॰ तहां आ॰ आगम सि॰ होवे आ॰ आगमसे व॰ व्यवहार प॰ स्थापनकरे णो॰ नहीं से॰ यह त॰ तहां आ॰ आगम सि॰ होवे ज॰ जैसे से॰ यह त॰ तहां सु श्रुत सि॰ होवे सु॰ श्रुतसे व॰ व्यवहार प॰ स्थापनकरे णो॰ नहीं से॰ यह त॰ तहां सु॰ श्रुत सि॰ होवे ए॰ ऐसे ज॰ जैसे त॰ तहां जी जीत सि॰ होवे जी॰ जीतसे व॰ व्यवहार प॰ स्थापनकरे इ॰ इन पं॰ पांचोंसे व॰ व्यवहार प॰ स्थापनकरे आ आगमसे जा॰ यावत् जी जीतसे ज॰ जैसे २ स॰ यह स॰ त

सिया आगमेण ववहारे पट्ठवेज्जा णो से तत्थ आगमोसिया, जहा से तत्थ सुए सियासुत्ते ण ववहारे पट्ठवेज्जा, णो से तत्थ सुएसिया, एव जाव जहा से तत्थ जीए सिया, जीएण ववहारे पट्ठवेज्जा । इच्चेएहिं पंचहिं ववहारं पट्ठवेज्जा आगमेण जाव जीएणं, जहा २

न्तरमें होवे, वसे किसी गुणार्थ पद से अगीतार्थ को प्रायश्चित्तादि करलावे और उस अनुसार ग्रहण करे ४ किसी गीतार्थने अन्य किसीको प्रायश्चित्त दीया होवे उसे धारकर प्रसगवशात अन्यकोभी ऐसा प्रायश्चित्त देवे सो धारना व्यवहार, ५ जो बहुश्रुतने तपादि आचरा होवे उसे आचरसे रहनासो जीत व्यवहार जो आगम व्यवहारी होते हैं वे अपने ज्ञानसे व्यवहारकी स्थापना करे प्रायश्चित देवे २ सूत्रव्यवहारी व्यवहार स्थापे परंतु प्रायश्चित देवे नहीं जब सूत्र व्यवहार न होवे तब आज्ञा व्यवहार अनुसार चले, और जब धारना व्यवहार न होवे तब जीत

सेतत्थ आगमे जाव जीए तहा २ ववहार पट्ठवेजा, । से किमाउ भंते आगम बलि या समणा निग्गंथा इच्चेय पंचविहं ववहार जया२ जहिं२ तया २ तहिं२ अणिस्सिओव-स्सियं सम्मं ववहारेमाणे समणे निग्गंथे आणाए आराहए भवइ ॥ ७ ॥ संजयमणु

धा आ॰ आगम जा॰ यावत् जी॰ जीत॰ त॰ तैसे २ व व्यवहार प॰ स्थापनकरे से॰ वह किं॰ कैसा भं॰ भगवन् आ॰ आगम ब॰ बलवन्त स॰ श्रमण नि॰ निग्रन्थ इ॰ इन पं॰ पांचप्रकारके व॰ व्यवहार ज॰ जिस २ समय ज॰जहां २ त॰तब २ त॰तहां २ अ॰अनिश्रित व॰ वास स सम्यक् व॰व्यवहारपालता स॰ श्रमण नि॰ निर्ग्रन्थ आ॰ आज्ञाका आ॰ आराधक भ॰ होवे ॥ ७ ॥ सं॰ संयति म॰ मनुष्य सु॰ सोतेको पं॰ पांच जा॰ जाग्रत प॰ मरूपे स॰ शब्द जा॰ यावत् फा॰ स्पर्श सं संयति म॰ मनुष्य जा॰

व्यवहार अनुसार चले पांच व्यवहारमें से जहां जिस व्यवहारकी जरूरत होवे वहां उसकी स्थापना कर उस मुजब चले ॥ अहोभगवन्त ! किस कारनसे इन व्यवहारोंको स्थापनकरनेकी जरूरत होतीहै? १ अहो शिष्य! इन पांच व्यवहारको जिस २ समय जहां २ जैसा क्षेत्र काल होउप २समय वहां २वैसे आहारादिककी लालच रहित शिष्यादिककी अपेक्षा छोडकर सम व्यवहार से चलताहुवा साधु निर्गन्थ जो व्यवहार होवे उस मुजब चले, और ऐसे चलताहुवा जिनाज्ञाका आराधक होवाहै ॥ ७ ॥ संयमवन्त मनुष्य (साधु) को पांच बातोंसे सोते हुवे भी जागते कहे हैं: शब्द, वर्ण, गंध, रस, और स्पर्शसे जागते हुए संयमवन्त मनुष्यको पांच कारणसे

जागतेको पं० पांच सु० निद्रिव स० शब्द जा० यावत् फा० स्पर्श अ० असंयति म० मनुष्यको सु० सोतेको जा० जागतेको पं० पांच जा० जागत स० शब्द जा० यावत् फा० स्पर्श ॥ ८ ॥ पं० पांच ठा० कारनसे जी० जीव र० रज (पापकर्म) आ० ग्रहे पा० प्राणातिपातसे जा० यावत् प० परिग्रहसे पं० पांच ठा० कारनसे जी० जीव र० रज व० वमे पा० प्राणातिपातसे वे० निवर्तना जा० यावत् प० परिग्रहसे वे० निवर्तना पं० पांच मा० मासकी भि० भिक्षुप्रतिमा प० प्रतिपन्न अ० साधुको क० कल्प ती है पं० पांच दं० दाती भो० भोजनकी प० लेनेको पं० पांच पा० पानीकी ॥ ९ ॥ पं० पांचप्रकारकी

स्साणं सुत्ताणं पचजागरा प० तं० सद्दा जाव फासा । संजयमणुस्साणं जागराणं पंचसु

त्ता प० तं० सद्दाजावफासा, असंजय मणुस्साणं सुत्ताणवा जागराणंवा पंचजागरा प० तं०

सद्दाजावफासा ॥८॥ पंचहिं ठाणेहिं जीवारयं आदिज्जति तं० पाणाइवाएणं जाव परिग्गहेणं ।

पंचहिं ठाणेहिं जीवा रयं वमंतितं० पाणाइ वायवेरमणेणं जाव परिग्गहवेरमणेणं॥पंचमासिएण

भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति पंचदत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेत्तए पंचपाण-

मनमसे इन्द्रियां भोगवत जागते करते हैं शब्दसे यावत् स्पर्शसे सोते हुवे या जागत हुवे असंयति मनुष्य को पांच वातोंसे जागते हुए कहे हैं ॥ ८ ॥ जीव पांच कारनसे कर्मरूपी रज ग्रहण कर बांधता है प्राणातिपात यावत् परिग्रहसे पांच कारनसे जीव पापकर्मका वमन करता है प्राणातिपातसे निवर्तनेसे यावत् परिग्रहसे निवर्तनेसे पांच मासकी भिक्षुपडिमा अंगीकार करनेवाले को पांच दात आहार की और पांच दात

उ० उपघात उ० उद्गमनउपघात उ० उत्पादनउपघात ए० एपणाउपघात प० परिकर्मउपघात प० परिहरण उपघात पं० पांचप्रकारकी वि० विशुद्धि उ० उद्गमनविशुद्धि उ० उत्पादन ए० एपणा प० परिकर्म प परिहरण पं० पांच ठा० कारनसे जी० जीव दु० दुर्लभ बो० बोधिपने क० कर्म प० बांधे अ० अरिहंतके अ० अवर्णवाद व० बोलते अ० अरिहंत प० प्ररूपा ध० धर्मके अ० अवर्णवाद व० बोलते अ० आचार्य उ० उपाध्यायके अ० अवर्णवाद व० बोलते चा० चतुर्विध सं० संघ अ० अवर्णवाद

गस्स॥ १॥ पंचविहे उवघाए प० तं० उग्गमोवघाए, उप्पायणोवघाए, एसणोवघाए परिकम्मोवघाए, परिहरणोवघाए । पंचविहे विसोही प० त० उग्गमविसोही, उप्पायणविसोही एसणाविसोही, परिकम्माविसोही परिहरणाविसोही । पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुल्लभबोहियत्ताए कम्मं पगरेंति त० अरहंताणमवन्नं वदमाणे, अरहंत पण्णत्तस्स धम्मस्स अवन्नं वदमाणे,

पावीकी रचना करता है ॥ १ ॥ पांच प्रकारके उपघात (आहारके दोष) कहे हैं १ उद्गमनदोष (आधाकर्मादि से सोलह प्रकार आहार के दोष) यह दोष साधुलगावे २ उत्पादन आहारादि देवे अन्यगृहस्थादि से लगे ३ शंकितादि दश दोष एपणाके ४ वस्त्र पात्रादि विना कारनसे छेदे संधे सो परिकर्म दोष, वसतिमें मर्यादासे अधिक रहे सो परिहरन। पांच प्रकारकी विशुद्धि कही है उक्त पांचो दोष न लगावे सो पांच कारनसे जीव दुर्लभ बोधि होनेका कर्म करता है १ अरिहंतका अवर्णवाद बोलते २ अरिहंत प्ररूपा धर्मका अवर्ण

ब० बोलते वि० विरक्त त० तप बं० ब्रह्मचर्य दे० देवताके अ० अवर्णवाद व० बोलते प० पांचकारनसे जी० जीव सु० सुलभ बोधिपने क० कर्म प० बांधे अ० अरिहंतके व० वर्णवाद व० बोलते जा० यावत् वि० विरक्त बं० ब्रह्मचर्य दे० देवके व० वर्णवाद व० बोलते ॥ १० ॥ पं० पांच प० प्रतिसलीनता सो० श्रोतेन्द्रिय जा० यावत फा० स्पर्शेन्द्रिय पं० पांच अ० अप्रतिसलीनता सो० श्रोतेन्द्रिय जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रिय पं० पांच प्रकारका सं० संवर सो० श्रोतेन्द्रिय जा० यावत्

आयरियउवज्झायाणमवन्नं वदमाणे, चाउवण्णस्स संघस्स अवन्नं वदमाणे, विविक्कतवबंभचेराणं देवाणं अवन्नं वदमाणे, पंचहिं ठाणेहिं जीवा सुलभबोहियत्ताए कम्मं पगरेंति—अरहंताणं वन्नं वदमाणे, जाव विविक्कतवबंभचेराणं देवाणं वन्नं वदमाणे॥ १०॥ पंचपडिसंलीणा प० तं० सोइंदियपडिसंलीणे, जाव फासिंदियपडिसंलीणे पंच अपडिसंलीणा प० तं० सोइंदिय अपडिसंलीने जाव फासिंदिय अपडिसंलीने ॥ पंचविहे संवरे प० तं० सोइंदिय संवरे जाव फासिंदिय संवरे । पंचविहे असंवरे प० तं० सोइंदिय असंवरे जाव फासिंदि

धर्म बोलते ३ आचार्य उपाध्यायका अवर्णवाद बोलते ४ चतुर्विध संघका अवर्णवाद बोलते और तप ब्रह्मचर्यासे देवपना पानेवालेका अवर्णवाद बोलते । पांच कारनसे जीव सुलभ बोधिपनेका कर्म करता है अरिहंतका गुणानुवाद बोलते यावत् तपादिसे देवपना पानेवाले देवताओंका गुणानुवाद बोलते ॥ १० ॥ पांच प्रकारकी प्रति संलीनता (इन्द्रियनिग्रह करना) कही श्रोतेन्द्रिय प्रतिसंलीनता यावत् स्पर्शेन्द्रिय

फा० स्पर्शेन्द्रिय प० पांच प्रकारका अ० असंवर सो० श्रोतेन्द्रिय जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रिय ॥ ११ ॥ प० पांच प्रकारका स० संयम सा० सामायिक छे० छेदोपस्थापनीय प० परिहार विशुद्ध सु० सूक्ष्म संपराय अ० यथाख्यात ए० एकेन्द्रिय जी० जीव अ० असमारंभ प० पांच प्रकारका सं० संयम क० करे तं० वह अ० ऐसे पु० पृथ्वी काय सं० संयम जा० यावत् व० वनस्पति काय स० संयम ए० एकेन्द्रिय जी० जीव स० समारंभ पं० पांच प्रकारका अ० असंयम क० करे पु० पृथ्वी काय असंयम जा० यावत् व० वन

स्पति असंवरे ॥ ११ ॥ पंचविहे संजमे प० तं० सामाइय संजमे छेदोवट्ठावणिय संजमे, परिहारविसुद्धिय संजमे, सुहुमसंपराय संजमे, अहक्खाय संजमे, ॥ एगिंदियाणं जीवा असमारभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जइ, तं० पुढविकाइयसंजमे, जाव वणस्सइकाइय संजमे,। एगिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जइ, तं० पुढविकाइय असंजमे जाव वणस्सइकाइय असंजमे ॥ पंचेंदियाणं जीवाणं असमा

प्रतिसंलीनता वैसेही उससे विरुद्ध पांच प्रकारकी अप्रतिसंलीनता कही पांच प्रकारके संवर कहे श्रोतेन्द्रिय संवर यावत् स्पर्शेन्द्रिय संवर वैसेही उससे विरुद्ध पांच प्रकारके असंवर कहे हैं ॥ ११ ॥ पांच प्रकारका संयम (चारित्र) कहा है, १ सामायिक चारित्र, २ छेदोपस्थापनीय चारित्र, ३ परिहारविशुद्ध चारित्र ४ सूक्ष्मसंपराय संयम और ५ यथाख्यात संयम एकेन्द्रिय जीवों नहीं मारने वालेको पांच प्रकारका

रमभमाणस्स पचविहे सजमे कज्जइ तं० सोइंदिय संजमे जाव फासिंदिय संजमे, । पंचें-
दियाण जीवा समारभमाणस्स पचविहे असजमे कज्जइ त० सोइंदिय असंजमे जाव
फासिंदिय असजमे॥ सव्वपाणभूय जीव सत्ताण असमारभमाणस्स पंचविहे संजमे क-
ज्जइ त० एगिंदिय सजमे जाव पंचेंदिय सजमे । सव्वपाण भूय जीव सत्ताण समा-

स्पर्श काय असंयम पं० पंचेन्द्रिय जी० जीव अ० असमारंभ पं० पांच प्रकारका सं० संयम क० करे सो० श्रोतेन्द्रिय जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रिय जी० जीव स० समारंभ पं० पांच प्रकारका अ० असंयम क० करे सो० श्रोतेन्द्रिय जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रिय स० सर्व पा० प्राणी भू० भूत जी० जीव स० सत्त्व अ० असमारंभ पं० पांच प्रकारका सं० संयम ए० एकेन्द्रिय जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय स० सर्व पा० प्राणी भू० भूत जी० जीव स० सत्त्व स० समारंभ पं० पांच प्रकार अ० असंयम क० करे

संयम होता है पृथ्वीकायिक संयम यावत् वनस्पतिकायिक संयम, और एकेन्द्रिय जीवोंका समारंभ करने वालेका उक्त पांच प्रकारका असंयम कहा है पंचेन्द्रिय जीवोंका समारंभ नहीं करनेवालेको पांच प्रकारका संयम कहा है श्रोतेन्द्रिय संयम यावत् स्पर्शेन्द्रिय संवर और पंचेन्द्रिय जीवोंका समारंभ करनेवालेको उक्त पांच प्रकारका असंयम कहा है सब प्राण, भूत, जीव, और सत्त्वका समारंभ नहीं करने वालेको पांच प्रकारका संयम कहा है एकेन्द्रिय संवर यावत् पंचेन्द्रिय संवर. और उनका समारंभ करनेवाले को

रममाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जइ तं• एगिंदिय असंजमे जाव पंचिंदिय असंजमे ॥ १२ ॥ पंचविहा तणवणस्सइ काइया प• तं• अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया, खंधबीया बीयरुहा ॥ १३ ॥ पंचविहे आयारे प• तं• णाणायारे, दंसणायारे, च-रित्तायारे तवायारे, वीरियायारे ॥ पंचविहे आयारपकप्पे प० तं• मासिएउग्घाइए,

ए० एकेन्द्रिय जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय ॥ १२ ॥ पं० पांच प्रकारकी त० तृणवनस्पति का• काय अ० अग्रबीज मू० मूलबीज पो० पर्वबीज खं० स्कन्ध बीज बी• बीजरूह ॥ १३ ॥ पं० पांच प्रकारका आ० आचार णा० ज्ञानाचार दं० दर्शनाचार च० चारित्राचार त० तपाचार वी० वीर्याचार पं• पांच प्रकारका आ• आचार कल्प मा० मासिक उ० उद्घातिक मा० मासिक अ० अनुद्घातिक च० चार मासिक

उक्त पांच प्रकारका असंयम कहा है ॥ १२ ॥ पांच प्रकारकी तृण वनस्पति काय कही १ अग्रबीजवाली कोरंटादिवृक्ष, २ मूलबीजवाली उत्पलादिकंद, ३ पर्वबीज सेलडी प्रमुख ४ स्कन्धबीज शाखि प्रमुख और ५ बीज ऊगसो शाली प्रमुख ॥ १३ ॥ पांच प्रकारका आचार कहा १ ज्ञान देशकाल देखकर भक्तियादि आठ दोषका टालना सो ज्ञानाचार, २ समकितके शंका कांक्षादि दोष टालना सो दर्शनाचार ३ चारित्रकी पांच समिति तीन गुप्ति पालना सो चारित्राचार ४ अनशनादि द्वादश प्रकारका तप करना सो तपाचार और ५ धर्ममार्गमें बल वीर्यादिकका फोडना सो वीर्याचार । पांच प्रकारका उत्कृष्ट आचार कहा १

उ० उद्घातिक च० चार मासिक अ० अनुद्घातिक आ० आरोपना आ० आरोपना पं० पांच प्रकारकी प० प्रस्थापित ठ० स्थापित क० पूर्ण अ० अपूर्ण हा० यथायोग्य ॥ १४ ॥ जं० जंबूद्वीप मं० मेरुकी पु० पूर्व में सी० सीता म० महानदी के उ० उत्तरमें प० पांच व० वक्षसार पर्वत मा० माल्यवंत चि० चित्रकूट

मासिएअणुग्घाइए, चउमासिए उग्घाइए चउमासिए अणुग्घाइए आरोवणा। आरोवणा पंच विहा प० त० पट्ठविया, ठविया, कसिणा, अकासिणा, हाडहडा ॥१४॥ जबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीयाए महानदीए उत्तरेण पचवक्खार पव्वया प० तं०

पारणे सहित एक मासका प्रायश्चित (एक उपवास एक पारणा यों १५ उपवास १५ पारणा) सो उद्घातिक २ गुरुमास सो बिना पारणा किये एक मासका प्रायश्चित देवेसो अनुद्घातिक ३ पारणा सहित चार मासका तप करना सो चौमासिक उद्घातिक ४ पारणा बिना चार मासका तपकरे सो चौमासिक अनुद्घातिक और ५ यथा प्रायश्चित देवेसो आरोपना। उसमेंसे आरोपना पांच प्रकारकी कही १ प्रस्थापिता सो शीघ्र तप करना २ स्थापिता सो स्थापनकर रखे ३ क्रोध रहित तप करे सो पूर्णतप, ४ क्रोध सहित करे सो अपूर्ण और ५ उक्त प्रकारका जो लघु गुरु तप है सो वय व शक्ति वगैरह देखकर देवे ॥ १४ ॥ जम्बूद्वीपके मेरु पर्वतकी पूर्वदिशाकी सीता महानदीसे उत्तरमें पांच वक्षस्कार पर्वत कहे हैं १ माल्यवंत, २ चित्रकूट ३ पद्मकूट,

प० पद्मकूट प० नलीनकूट ए० एकशैल जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु पर्वत के पु० पूर्व में सी० सीता म० महानदीके दा० दक्षिण में पं० पांच व० वक्षस्कारपर्वत ति० त्रिकुट वे० वैश्रमणकूट अं० अंजन मा० मातंजन सो० सोमनस जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी प० पश्चिम में सी० सीतोदा म० महानदी के दा० दक्षिण में पं० पांच व० वक्षारापर्वत वि० विद्युत्प्रभ अं० अंकावती प० पद्मावती आ० आशीविष सु० सुखावह जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु पर्वत की प० पश्चिम में सी० सीतोदा म० महानदी की उ० उत्तर में पं० पांच व०

मालवए, चित्तकूडे, पम्हकूडे, णलिणकूडे, एगसेले। जंबूमंदरस्स पुरए सीयाए महाणदीए दाहिणेण पंचवक्खारपव्वया प० त० तिकूडे, वेसमणकूडे, अंजणे, मायंजणे सोमणसे, । जंबूमंदरपव्वयस्स पच्चत्थिमेण सीओयाए महाणदीए दाहिणेण पंचवक्खार पव्वया प० तं० विज्जुप्पभे, अंकावई, पम्हावई, आसीविसे, सुहावहे, । जंबूमंदरपच्च-त्थिमेण सीओयाए महाणईए उत्तरेण पंच वक्खारपव्वया प० त० चंदपव्वए, सू

४ नालिनकूट, और ५ एक शैल और उस सीता महानदीके दक्षिणमें पांच वक्षस्कार पर्वत कहे हैं १ त्रिकूट, २ वैश्रमणकूट, ३ अंजन, ४ मातंजन और ५ सोमनस जम्बूद्वीपके मेरु पर्वतकी दक्षिणमें आइ हुइ सीतोदा महानदीसे दक्षिणमें पांच वक्षस्कार पर्वत कहे हैं १ विद्युत्प्रभ, २ अंकावती, ३ पद्मावती ४ आशीविष और ५ सुखावह और उस सीतोदा महानदीकी उत्तरमें पांच दूसरे वक्षस्कार पर्वत कहे

वक्खारा प० पर्वत चं० चंद्र पर्वत सू० सूर्य पर्वत णा० नाग पर्वत दे० देव पर्वत गं० गंधमावन जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु पर्वतकी दा० दक्षिणमें दे० देवकुरुमें पं० पांच म० महाद्रह नि० निषधद्रह दे० देवकुरुद्रह सू० सूरद्रह सु० सुलसद्रह वि० विद्युत्प्रभद्रह जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु की उ० उत्तर में उ० उत्तर कुरु में पं० पांच म० महाद्रह नी० नीलवंत उ० उत्तरकुरुद्रह चं० चंद्रद्रह ए० ऐरावणद्रह मा० माल्यवंतद्रह स० सर्व व० वक्खारा पर्वत सी० सीता सी० सीतोदा म० महानदी मे० मेरुसे पं० पंच जो० योजन स० शत उ० ऊंचे उ०

रपव्वए, णागपव्वए, देवपव्वए गंधमायणे । जंबूमंदर दाहिणेणं देवकुराए कुराए पंच महद्दहा प० तं० निसहदहे, देवकुरुदहे, सूरदहे, सुलसदहे, विज्जुप्पहदहे । जंबूमंदरउत्तरेणं उत्तरकुराए कुराए पंचमहद्दहा प० त० नीलवंतदहे, उत्तरकुरुदहे, चंददहे एरावणदहे, मालवंतदहे । सव्वेविणं वक्खारपव्वया सीयासीओयाओ महाणई ओ मंदरंवा पव्वयं तेणं पंचजोयणसयाई उड्ढं उच्चत्तेणं पंचगाउयसयाई, उव्वेहेणं ।

हैं १ चंद्रपर्वत, २ सूर्यपर्वत, ३ नागपर्वत, ४ देवपर्वत और ५ गंधमादन जम्बूद्वीपके मेरुसे दक्षिणमें देव कुरुमें पांच महाद्रह कहे हैं निषधद्रह, देवकुरुद्रह, सूरद्रह, सुलसद्रह, और विद्युत्प्रभद्रह जम्बूद्वीपके मेरुसे उत्तरमें उत्तरकुरुमें पांच द्रह कहे हैं नीलवन्तद्रह, उत्तरकुरुद्रह, चंद्रद्रह, ऐरावणद्रह और माल्यवंतद्रह सब वक्खार पर्वत सीता सीतोदा नदी और मेरुकी तरफ पांचसो योजनके ऊंचे और पांचसो गाउके ऊंडे कहे

ऊचपने उ० ऊंचे धा० धातकी खंडकी पु० पूर्वमें मं० मेरुकी पु० पूर्वमें सी० सीतोदा म० महानदीकी उ० उत्तरमें पं० पांच व० वखारा पर्वत मा० माल्यवंत ए० ऐसे ज० जैसे जं० जंबूद्वीप में त० तैसे जा० यावत् पो० पुष्करवरद्वीप अ० अर्ध प० पश्चिमार्धमें व० वखारा द० द्रह प० वखार पर्वतका उ० ऊंचपना भा० कहना स० समयक्षेत्रमें पं० पांच भ० भरत पं० पांच ए० ऐरवत ए० ऐसे ज० जैसे च० चौथे ठाणमें बि० दूसरे उद्देशे में त० तैसे ए० यहां भा० कहना जा० यावत् पं० पांच मं० मेरु पं० पांच मं० मेरु चूलिका ण० विशेष उ०

धायइसंडदीव पुरत्थिमद्धेणं मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीओयाए महाणदीए उत्तरेण पच वक्खार पव्वया प० तं० मालवते एवं जहा जंबूदीवे तहा जाव पोक्खर वरदीवड्ढ पच्चत्थिमद्धे वक्खारा दहा य वक्खारपव्वयाणं उच्चत्तं भाणियव्व । समयखेत्तेणं पच भरहाइं पच एरवयाइ एवं जहा चउट्ठाणे बिइए उद्देसे तहा एत्थवि भाणियव्व

हैं धातकी खंडद्वीप के पूर्वार्द्धमें मेरु पर्वत से पूर्वदिशा की सीतोदा महानदी से उत्तर में पांच वखार पर्वत कहे हैं माल्यवन्त, चित्रकूट, पद्मकूट नलिनकूट और एकशैल इसतरह जैसे जम्बूद्वीप का वर्णनकिया वैसेही अर्ध पुष्करवर द्वीप तक का अधिकार मानना समयक्षेत्र (अढाई द्वीप) में पांचभरत पांच ऐरवत आदि सब अधिकार चतुर्थ स्थानकका दूसरा उद्देशा अनुसार पांच मेंदर और पांच मंदर चूलिका तकका

इषुकार पर्वत ण० नहीं है ॥ १८ ॥ उ० ऋषभदेव अ० अरिहंत को० कोशली पं० पांच ध० धनुष उ० ऊंचे उ० ऊंचपने हो० थे भ० भरतराजा चा० चार दिशा च० चक्रवर्ती पं० पांच ध० धनुष्य उ० ऊंचे उ० ऊंचपने हो० थे बा० बाहुबली अ० साधु ए० ऐसे बं० ब्राह्मी सु० सुंदरी पं० पांच कारन से सु० सोताहुवा बु० जागे स० शब्दसे फा० स्पर्शसे भो० भोजन परिणामसे णि० निद्रापूर्ण होनेसे सु०

जाव पच्चमंदरा पंचमदरचूलिया । णवरं उसुयारा णत्थि ॥ १५ ॥ उसभेणं अरहा कोसलिए पचधणुसयाइ उड्ढं उच्चत्तेण होत्था । भरहेणराया चाउरत चक्कवट्टी पचधणुसयाई उड्ढंउच्चत्तेण होत्था । बाहुबलीण मणगारे एवंचेव । बंभीण अज्जा एवं चेव । एव सुदरीवि ॥ पचहिं ठाणेहिं सुत्तेवि बुज्झेज्जा तं॰ सद्देण, फासेण, भोयणपरिणामेण, णिद्दक्खएण, सुविणदसणेणं, ॥ पंचहिंठाणेहिं समणे निग्गंथे

जानना यहां इतना विशेष जानना कि इषुकार पर्वत नहीं ग्रहण किया है ॥ १८ ॥ कोशली ऋषभदेव अरिहंत का शरीर पांचसो धनुष्य का ऊंचाथा भरत नामक चक्रवर्ती, बाहुबलि अनगार और ब्राह्मी व सुंदरी आर्याजी के शरीर की अवगाहना पांच सो धनुष्यकी थी । पांचकारनसे सोता हुवा मनुष्य जाग्रत होताहै १ शब्दसुनकर २ किसीका स्पर्शलगने से ३ सुधालगनेसे ४ निद्रापूर्ण होनेसे और ५

स्वप्न देखनेसे ५ पांच कारन से स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ नि० साध्वीको गि० ग्रहणकरता अ० पकडता
पा० उल्लंघन करे नहीं नि साध्वीको भ० कोई प० पशु प० पक्षी ओ० पकडे त० वहां नि० निर्ग्रंथ
नि० साध्वीको गि० ग्रहणकरते अ० पकडते पा उल्लंघन करे नहीं नि० निर्ग्रंथ नि० साध्वीको दु
कठिन वि विषम प० लपसती प० पडतीहुइ को गि० ग्रहण करते अ० पकडते पा० उल्लंघन करे
नहीं नि० निर्ग्रंथ नि० साध्वी को से० पानीमें प० कादवमें प० नीलनफुलनमें उ० पानीमें उ० लपसती

निग्गथिं गिण्हमाणेवा अवलबमाणेवा णाइक्कमइ त० निग्गंथिं च णं अन्नयरे पसुजा-
इएवा पक्खिजाइएवा, ओहाएज्जा तत्थ निग्गथे निग्गथिं गिण्हमाणेवा अवलबमाणेवा
णाइक्कमइ । निग्गथे निग्गथिं दुग्गसिवा, विसमसिवा पक्खलमाणिंवा पवडमाणिंवा
गेण्हमाणेवा, अवलबमाणेवा णाइक्कमइ । निग्गथे णिग्गथिं सेससिवा, पंकसिवा, पणगं
सिवा, उदगंसिवा उक्कस्समाणिंवा, उवुज्झमाणिंवा, गिण्हमाणेवा, अवलबमाणेवा,

स्वप्न देखनेसे ॥ पांच कारनसे श्रमण निर्ग्रन्थ साध्वी का हस्त ग्रहण करते, अवलम्बन करते जिनाज्ञा नहीं
अतिक्रमते है कोई पशु पक्षी साध्वी को मारने के लिये आवे उस समय उसका रक्षणके लिये साधु साध्वी
का हस्त ग्रहण करते या अवलम्बन करते जिनाज्ञा उल्लंघे नहीं, २ साध्वीको दुर्गम या विषम स्थानसे
गिरती हुइ पकडनेसे जिनाज्ञा का उल्लंघन नहीं होता है ३ पानीमें, कीचडमें, नीलन फुलन में, दु

उ० दुवती को गि० ग्रहण करते णा० उल्लंघन करे नहीं नि० निग्रंथ नि० साध्वी को आ० चढाते ओ० उतारते णा० उल्लंघन करेनहीं खे०क्षिप्तचित्त दि०दिप्तचित्त ज० यक्षाविष्ट उ० उन्माद को प्राप्त उ०उपसर्ग को प्राप्त सा०क्रोधादियुक्त स०मायाश्रित युक्त भ०भक्त पा० पानीका प०प्रत्याख्यानयुक्त अ०अर्थजात नि०निग्रंथ नि० साध्वी को गि० ग्रहणकर अ० पकडते णा० उल्लंघनकरे नहीं ॥ १६ ॥ आ० आचार्य उ० उपाध्या

णाइक्कमइ । निग्गंथे निग्गंथिं णावं आरुहमाणेवा, ओरुहमाणेवा णाइक्कमइ । खेत्त चित्तं, दित्तइत्त, जक्खाइट्ठं, उम्मायपत्तं, उवसग्गपत्तं साहिगरण, सपायच्छित्तं भत्तपाणपडियाइक्खित्तं अट्ठजायं निग्गंथे निग्गंथिं गिण्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइ ॥ १६ ॥ आयरिय उवज्झायस्सण गणंसि पंचअतिसेसा प० तं० आय-

नदी, तलावादिमें पडती हुइ साध्वी को साधु पकड रखे तो जिनाज्ञा उल्लंघे नहीं ४ साधु साध्वीको नावामें बैठाते व उतारते तो जिनाज्ञा उल्लंघे नहीं ५ रागसे, भयसे, अपमानसे, यक्षाधिष्ठित चित्तसे, उन्मादसे, मोहनीयकर्मके उदय से, और उपसर्ग व उपद्रवसे व्याप्त चित्त जिसका हुवा है ऐसी अथवा क्रोधादिकसे आहार पानीका प्रत्याख्यान किया है जिनोंने ऐसी किसी साध्वी को साधु स्पर्शकरे या पकडरखे तो जिनाज्ञाका उल्लंघन करे नहीं ॥ १६ ॥ आचार्य उपाध्याय के गच्छ में पांच अतिशेष कहे १ आचार्य उपाध्याय

रिय उवज्झाए अंताउवस्सयस्स पाये निगिज्झिय २ पप्फोडेमाणेवा, पमज्जेमाणेवा, णाइक्कमइ, । आयरिय उवज्झाए अंतो उवस्सयस्स उच्चार पासवण विगिंचमाणेवा विसोहेमाणेवा णाइक्कमइ । आयरिय उवज्झाए पभू इच्छा वेयावडियं करेज्जा इच्छा णो करेज्जा । आयरियउवज्झाए अंतोउवस्सयस्स एगराइवा दुराइंवा वसमाणे णाइक्कमइ ।

१० पाव थ० निश्चय आ० आचार्य उ० उपाध्यायका अं० उपाश्रयमें पा० पांव नि० पकड कर प० झटकता प पूंजता णा० उल्लंघन करे नहीं आ० आचार्य उ० उपाध्याय अं० उपाश्रयमें उ० उच्चार प्रश्रवण वि० डालते वि० शुद्ध करते णा० उल्लंघन करनहीं आ० आचार्य उ० उपाध्याय प० समर्थ इ० इच्छा वे० वैयावृत्य क० करे इ० इच्छा णा० नहीं क० करे आ० आचार्य उ०

बाहिर से उपाश्रय में आवे उस समय उन के पाँव रजोहरण से या किसी पादपूंछनेसे यत्ना पूर्वक पूंजता हुवा आज्ञा अतिक्रमे नहीं २ आचार्य उपाध्याय लघुनीत बडीनीत परठाकर उपाश्रय में आवे उस समय उन के पाँव वगैरह विधि अनुसार प्रमार्जे तो आज्ञा अतिक्रमे नहीं ३ आचार्य उपाध्याय की इच्छा होवेतो वैयावृत्य करे और न होवे तो न करे ४ आचार्य उपाध्याय की आज्ञा से ज्ञान ध्यान साधनेके लिये उपाश्रयकी बाहिर एक या दो रात्रि रहेतो आज्ञा अतिक्रमे नहीं ५ आचार्य उपाध्याय की आज्ञा से

उपाध्याय म० उपाश्रयमें ए० एकरात्रि दु० दोरात्रि ए० एकाकी व० रहते णा० उल्लंघन करेनहीं प० पांच कारनसे आ० आचार्य उ० उपाध्यायके ग० गच्छापक्रम आ० आचार्य उ० उपाध्यायके ग० गच्छमें आ० आज्ञा धा धारना नो० नहीं स० सम्यक् प० प्रयुंजनेवाला भ० होवे आ० आचार्य उ० उपाध्यायके ग० गणमें अ० रत्नाधिक कि० कृतिकर्म व० विनय नो० नहीं स० सम्यक् प० प्रयुंजनेवा भ० होवे आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गण में जे० जो सु० श्रुतपर्याय धा० धारन करता

आयरिय उवज्झाए बाहिं उवस्सगस्स एगराइ दुराइवा एकागी वसमाणे णाइक्कमइ ॥

पंचहिं ठाणेहिं आयरिय उवज्झायस्स गणावक्कमणे प० तं० आयरिय उवज्झाए गणसि आणवा धारणंवा नोसम्म पउजित्ता भवइ । आयरिय उवज्झाए गणसि अहाराय णियाए किइकम्म वेणइयं नो सम्म पउजित्ता भवइ । आयरिय उवज्झाए गणसि जे सुयपज्जवजाए धारिंति ते काले णो सम्म मणुप्पवादेत्ता भवइ । आयरिय उवज्झाए

शून्य गृहान्कि में एक दो रात्रि रहता हुवा आज्ञा अतिक्रमे नहीं । पांच प्रकारके गच्छापक्रम (गच्छका दूर करने वाले) कहे १ आचार्य उपाध्याय के गच्छकी जो आज्ञा है उसे सम्यक् प्रकार से प्रयुंजे नहीं २ आचार्य उपाध्याय के गच्छ में छोटा बडे को वंदना करे ऐसी जो मर्यादा है उसे सम्यक् प्रकारसे प्रयुंजे में को. रु १ र्व २ घ रन की उसे योग्य समयमें सम्यक् प्रकार से पढे

है से० उसको का० काल में नहीं स० सम्यक् अ० पढना भ० होवे आ आचार्य उ० उपाध्याय के ग गण में स० अपनेगण की प० दूसरे गणकी नि० साध्वी की साथ ब० आसक्त भ० होवे मि० मित्र णा० ज्ञाति ग० गण में से० उसके ग० गणसे अ० अपक्रमे ते० उनकेलिये सं संग्रह उ० उपग्रह केलिये ग० गणापक्रमण प प्ररूपा पं० पांच प्रकार के इ० ऋद्धिवन्त म० मनुष्य अ० अरिहंत च० चक्रवर्ती ब० बलदेव वा० वासुदेव भा० भवितात्मा अ० साधु ॥ १७ ॥ ✱ ✱

गणंसि सगणियाएवा, परिगणियाएवा, निग्गथीए बहिल्लेस्से भवइ । मित्ते णाइगणेवा से गणाओ अवक्कमेज्जा, तेसिं संगहावग्गहट्ठयाए गणावक्कमणे पण्णत्ते ॥ पंचविहा इड्ढिमंता मणुस्सा प० त० अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेवा, वासुदेवा भावियप्पाणो अणगारा ॥१७॥

इति पंचमट्ठाणस्स बिईओद्देसो सम्मत्तो ✱ ✱ ✱ ✱

नहीं ४ आचार्य उपाध्याय के गच्छमें, रहनेवाला अपने गच्छ में या दूसरे गच्छ में किसी साध्वी साथ अशुभ कर्मों द्वयसे धर्मध्यान से बाहिर बरत अथवा शिथिल परिणामि होता हुवा मित्र स्वजनादि के गच्छ से बाहिर बरतेवो ५ स्वमनों को बहारादिक का आधार देवे और गच्छ से बाहिर निकल कर उसकी निन्दा करे पांच प्रकार के ऋद्धिवन्त मनुष्य कहे हैं आरिहन्त, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव और भवितात्मा (लब्धिवन्त साधु) ॥ १७ ॥ यह पांचवे स्थानकको द्वितीयउद्देशा संपूर्ण हुवा इसके अन्त में ऋद्धिवन्त पुरुष कहे हैं वे लोक में होते हैं और लोक भी पंचास्तिकायरूप है सो बताते हैं ॥ ५ ॥ २ ॥ ✱ ✱

पं पांच अ० अस्तिकाय ध० धर्मास्तिकाय अ० अधर्मास्तिकाय आ० आकाशास्तिकाय जी० जीवा स्तिकाय पो पुद्गलास्तिकाय ध० धर्मास्तिकाय अ० अवर्ण अ० अगंध अ० अरस अ० अस्पर्श अ० अरूपि अ० अजीव सा० शाश्वत अ० अवस्थित लो० लोक द्रव्य स० संक्षेप से पं० पांच प्रकार का द० द्रव्य से खे० क्षेत्र से का० काल से भा० भाव से गु० गुण से द० द्रव्य से ध० धर्मास्तिकाय ए एकद्रव्य खे० क्षेत्र से लो० लोकप्रमाण का० कालसे न० नहीं क० कदापि ण० नहीं आ० थी न० नहीं क०

पंच अत्थिकाया प० तं० धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए जीवत्थि काए पोग्गलत्थिकाए। धम्मत्थिकाए–अवन्ने, अगंधे, अरसे, अफासे, अरूवी, अजीवे,सासए, अवट्ठिए,लोगदव्वे,से समासओ पंचविहे प० त० दव्वओ खेत्तओ,कालओ, भावओ, गुणओ। दव्वओणं धम्मत्थिकाए एगदव्वं, खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते, कालओ नक

पांच प्रकारकी अस्तिकाय कही १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय ४ जीवा स्तिकाय और ५ पुद्गलास्तिकाय धर्मास्तिकाय वर्ण, गंध, रस व स्पर्श रहित अरूपी, निर्जीव, अवस्थित, लोक में रही हुइ है. उसके संक्षेपसे पांच भेद कहे हैं द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और गुण द्रव्यसे धर्मा स्तिकाय एक; क्षेत्र से लोक प्रमाण; कालसे पूर्वकाल में नहीं थी, वर्तमान में नहीं है व भविष्य में नहीं होगी वैसा नहीं, परन्तु भूत में थी, वर्तमान में है, और भविष्य में होगी यों तीनों काल में ध्रुव, नित्य,

कदापि न० नहीं भ० है ण० नहीं क० कदापि न० नहीं भ० होगा भ० थी भ० है भ० होगी धु० ध्रुव सा० शाश्वत अ० अक्षय अ० अव्यय अ० अवस्थित नि० नित्य भा० भाव से अ० अवर्ण अ० अगंध अ० अरस अ० अस्पर्श गु० गुण से ग० गमन गु० गुण अ० अधर्मास्तिकाय अ० अवर्ण ए० ऐसे न० विशेष गु० गुण से ठा० स्थिर गु० गुण आ० आकाशास्तिकाय अ० अवर्ण ए० ऐसे ण० विशेष खे० क्षेत्रसे लो० लोकालोक प्रमाण गु० गुण से अ० अवगाहना गु० गुण से० शेष जी० जीवास्तिकाय अ० अवर्ण ण० विशेष द० द्रव्य से जी० जीवास्तिकाय अ० अनंत द० द्रव्य अ० अरूपी जीव सा० शाश्वत

यावि णासी न कयावि न भवइ,ण कयावि न भविस्सइ,भुविंच भवइय भविस्सइय धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे । भावतो अवन्ने अगंधे अरसे अफासे । गुणओ गमणगुणेय । अधम्मात्थिकाये—अवण्णे एवचेव नवर गुणओ ठाणगुणे । आगासत्थिकाए अवन्ने एवचेव, णवरं खेत्तओ लोगालोगप्पमाणे गुणओ अवगाहणा

शाश्वत, अक्षय, अव्यय अवस्थित व नित्य रहेगी, भाव से वर्ण, गंध, रस व स्पर्श रहित, गुणसे गमन गुण ऐसेही अधर्मास्तिकाय भी वर्ण रहित यावत् स्पर्शरहित है विशेष इतना कि इसका स्थिरगुण है आकाशास्तिकाय भी वैसेही मानना विशेष इतना कि क्षेत्रसे लोकालोक प्रमाण और गुणसे अवकाश गुण मानना जीवास्तिकाय वर्ण यावत् स्पर्श रहित मानना विशेष में जीव द्रव्यसे अनंत कहे हैं अरूपी व

पुर्गिदिया जाव पचेंदिया ॥ पचविहा बादर तेउकाइया प० त० इंगाले, जाला, मुम्मुरे, अच्ची, अलाए । पच बादर बाउकाइया प० तं० पाईणवाए, पडीणवाए, उदीणवाए, दाहिणवाए, विदिसिवाए । पंचविहा अचित्तावाउकाइया प० त० अक्कंते, धते, पीलिए, सरीराणुगए, समुच्छिमे ॥ २ ॥ पंचनियंठा प० तं० पुलाए, वउसे

ति० तिर्यक्लोक में प० पांच बा० बादर ए० एकान्द्रिय जा० यावत् प० पंचेन्द्रिय पं० पांच प्रकार का बा० बादर ते० तेउकाय इं० अगारा जा० ज्वाला मु० मुर्मुर अ० झाल अ० निभाडा पं० पांच बा० बादर वायुकाय पा० पूर्ववायु प० पश्चिमवायु उ० उत्तरवायु दा० दक्षिणवायु वि० विदिशा का वायु प० पांच प्रकार की अ० अचित्त वा० वायु काय अ० चलने से ध० धमण का पी० वस्त्र नीचोवे स० श्वासोश्वास का स० संमूर्च्छिम ॥ १ ॥ पं० पांच नि० निर्यंठा पु० पुलाक ब० बकुश कु० कुशील

क् लोकमें एकेन्द्रियसे लगाकर पंचेन्द्रिय तकके पांच बादर कहे हैं बादर तेउकाय पांच प्रकारकी कही १ अंगारा २ ज्वाला ३ मुर्मुर ४ अर्ची (मुखमें अग्निकी झाल) और ५ निभाडा (कुंभारका) पांच प्रकारकी बादर वायुकाय कही १ पूर्वदिशा का वायु, २ पश्चिमदिशाकावायु ३ उत्तरदिशा का वायु, ४ दक्षिणदिशा का वायु और ५ विदिशा का वायु पांच प्रकारकी अचित्तवायुकाय कही १ पांव प्रमुखसे चलनेसे नीकले सो २ धमनप्रमुख फुंकनेसे निकले सो ३ भीजोया हुवा वस्त्रनीचोवे वायुहोवेसो ४ श्वासोश्वासादिकसे वायु नीकले सो और ५ पत्नेप्रमुख मे वायु नीकले सो संमूर्च्छिम ॥ १ ॥ पांच प्रकारके नियंठे (निर्ग्रन्थ) कहे हैं

नि॰ निग्रंथ सि॰ स्नातक पु॰ पुलाक प॰ पांच प्रकार का णा॰ ज्ञान पुलाक दं॰ दर्शन पुलाक च॰ चारित्र पुलाक लिं॰ लिंगपुलाक अ॰ यथासूक्ष्म पुलाक ब॰ बकुश पं॰ पांच प्रकार का आ॰ आभोग बकुश अ॰ अनाभोग बकुश सं॰ संवृत्त अ॰ असंवृत्त अ॰ यथासूक्ष्म कु॰ कुशील पं॰ पांच प्रकार का णा॰

कुसीले नियंठे, सिणाए । पुलाए पंचविहे प॰ तं॰ णाणपुलाए, दंसणपुलाए, च रित्तपुलाए, लिंगपुलाए, अहासुहुमपुलाए नामंपचमे । बउसे पंचविहे प॰ तं॰ आभोगबउसे, अणाभोगबउसे, संवुडबउसे, असंवुडबउसे, अहासुहुमबउसे णाम पंचमे । कुसीले पंचविहे

१ पुलाक, बकुश, कुशील, निग्रंथ, और स्नातक पुलाक सो कण रहित तुष समान अर्थात् खेतमें कांगुने शालीके पूलमें धान्य कम रहता है, और तुष विशेष रहता है, वैसेही जिन साधु को पुलाक लब्धि उत्पन्न हुई है वे धर्म की हीलना आदि कारन देख अपनी लब्धि फोडकर चक्रवर्ती की सेना का भी संहार करदेवे वैसे संयम के सार रहित पुलाक निग्रंथ कहे जाते हैं इसके पांचभेद ज्ञान पुलाक, दर्शन पुलाक, चारित्र पुलाक, लिंगपुलाक (अधिक वस्त्रादि रखे) और यथासूक्ष्म पुलाक प्रमाद से अकल्प नीय वस्तु ग्रहण करे बकुश निग्रंथ जैसे शालीकेपूले में से घास नीकाले तथापि उस में धान्य की अपेक्षा घास विशेष रहता है वैसेही इसमें गुणापेक्षा दोषकी अधिकता रहती है इसके पांचभेद कहे हैं १ आभोग बकुश जानकर दोषोंका सेवन करे २ अनाभोग बकुश अज्ञानपने, दोषोंका सेवन करे ३ संवृत्त बकुश

ज्ञान कुशील द० दर्शन कुशील च० चारित्र कुशील लिं० लिंगकुशील अ० यथासूक्ष्म कुशील नि० निर्ग्रंथ प० पांच प्रकार का प० प्रथम समय अ० अप्रथम समय च० चरिम समय अ० अचरिम समय का अ० यथासूक्ष्म निर्ग्रंथ सि० स्नातक पं० पांच प्रकार का अ० अच्छवी अ०

प०तं०णाणकुसीले,दसणकुसीले,चरित्तकुसीले,लिंगकुसीले, अहासुहुमकुसीले णामं पंच-मे। नियंठे पंचविहे प० तं० पढमसमयनियंठे, अपढमसमयनियंठे, चरिमसमयनियंठे अचरिमसमयनियंठे, अहासुहुमनियंठे णाम पंचमे। सिणाए पंचविहे प० तं०

सो पांच प्रकार पावे ५ अपंवृत्त बकुश सो मूलोत्तर गुणमें सवरी असवरी होवे और ५ यथासूक्ष्म बकुश सो कुच्छ २ दोषों का सेवन करे तीसरा कुशील निर्ग्रंथ-जैसे घास से पृथक् किया हुवा धान्य वायु से उफणकर उसमें से कचरा दूर करते हैं उसमें धान्य की अपेक्षा से कचरा कम रहता है वैसेही इसमें दोषों की अपेक्षा से गुण अधिक रहते हैं अर्थात् मूलगुणों में दोष लगावे नहीं परंतु प्रमाद से उत्तर गुणों में दोष लगावे इसके पांचभेद ज्ञानकुशील, दर्शन कुशील, चारित्र कुशील, लिंगकुशील और यथासूक्ष्म कुशील। निग्रन्थ-जैसे उस दाने में स्वच्छ किया हुआ धान्य को किसी विशाल पात्र में लेकर कंकरादि नीकाल डाले और थोडा बहुत कचरा रहजावे वैसेही इस नियंठावाले साधु मूल व उत्तर गुणों में दोष लगावे नहीं परंतु उपशान्त कषाय रूप मैल रहता है इसके पांचभेद कहे हैं २ मोहनीय की ग्रन्थि छोड

असबल अ० अकर्मांश स शुद्ध ना० ज्ञान दं० दर्शन ध० धरनहार अ० भारहत जि० जिनकवल्म के० अपरिश्रावी ॥ ४ ॥ क० कल्पता है नि साधु नि० साध्वी को पं० पांच वस्त्र धा० धारन करने को

अच्छवी, असंबले, अकम्मंसे, संसुद्धणाणदसणधरे अरहाजिणे केवली अपरिस्सावी ॥४॥ कप्पइ निग्गंथाणंवा निग्गंथीणंवा पचवत्थाइं धारेत्तएवा परिहारित्तएवा तं० जंगिए, भंगिए, साणए, पोत्तिए, तरीडपट्टए णाम पंचमए ॥ कप्पइ निग्गंथाणवा निग्गंथिणंवा

कर निर्ग्रंथपने में आवे उसमें जो पहिला समय हुवा होवे सो प्रथम समय का निर्ग्रंथ २ प्रथम समय व्यतीत हुए पीछे अन्य समय में जावे सो अप्रथम समय का निर्ग्रन्थ, ३ अंत समय में होवे सो चरिम समय निर्ग्रन्थ ४ दो समय बाकी रहे हुवे सो अचरिम समय निर्ग्रन्थ और ५ सब समय में रहे सो यथासूक्ष्म नामक पांचवा नियंठा। पांचवा स्नातक निर्ग्रन्थ जैसे उसकुने हुवे धान्यको पानीसे धोकर व कपडेसे पुंछकर स्वच्छ मल रहित करते हैं वैसेही इस निर्गन्थ वाला शुद्ध संयमी व निःकपायी होता है इसके पांच भेद कहे हैं १ काया के योगों का रुंधन करने से अच्छवी हुवे २ सब अतिचार रहित होनेसे असबल ३ घनघाति कर्मोंका क्षय करने से अकर्मांश ४ ज्ञानावरणीय के क्षय से अत्यंत शुद्ध ज्ञान दर्शन के धारक बने इसलिये केवली और ५ सब योगों का निरुंधन होनेसे अपरिश्रावी ॥ ४ ॥ साधु साध्वी को पांच

प० पहिनने को सं० ऊनका मं० रेशम का सा० सनका पो० कपास का त० वृक्षकी छाल का क० कल्पता है नि० साधु नि० साध्वी को पं० पांच र० रजोहरण धा० धारन करने को प० रखने को उ० ऊनका उ० ऊंटके रोमका सा० सनका प० तृणका मु० कुट्टित मुंजका ॥ ९ ॥ ध० धर्म में च० रहता हुवा पं० पांच नि० विश्रामस्थान छ० छकाय ग० गच्छ रा० राजा गा० गाथापति स० शरीर प० पांचनिधि

पन्नत्ताइं रयहरणाइं धारित्तएवा परिहरित्तएवा तं० उण्णिए, उट्टिए साणिए, पच्चापिच्चिए मुंजापिच्चिए णामं पंचमे ॥ ५ ॥ धम्मंचरमाणस्स पंचनिस्सट्ठाणा प० तं० छक्काया गणो राया गाहावई सरीरं । पचणिही प० तं० पुत्तणिही, मित्तणिही, सिप्पणिही, धण

प्रकारके वस्त्र रखना कल्पता है १ ऊनके वस्त्र कम्बलादि २ रेशमके ३ सनके ४ कपास के और ५ तृण, घास वृक्षकी छाल के साधु साध्वी को पांच प्रकार के रजोहरण रखना कल्पता है १ ऊन का, २ ऊंटके रोम का ३ सण का ४ तरमघास का और ५ कुट्टित मुंज का ॥ ५ ॥ धर्म करनेवाले प्राणि को पांच अवलम्बन स्थान कहे[1] १ छःकाया २ गच्छ ३ राजा ४ गाथापति और ५ शरीर कि जिससे धर्म

[1] पृथ्वीकाय निष्पन्न अवलम्बन सो स्थान आसनादि, अपकाय सो आचमन प्रक्षालन के लिये कल्पनी रकादि, तेउसे अचित हुवा अन्नपानी वगैरह, वायुसे श्वासोश्वासादि, वनस्पतिसे ठेप्यासनवस्त्र पात्रादि और त्रस सो शिष्य श्रावकादि यों षट् कायाका आधार धर्मात्मा को होता है

पु० पुत्रनिधि मि मित्रनिधि सि शिल्पनिधि म धननिधि घ० धान्यनिधि प० पांच प्रकार का सो० शोच पु० पृथ्वी शौच आ० अप्शौच ते० अग्निशौच मं० मंत्रशौच ब० ब्रह्मचर्य शौच पं० पांच ठा० स्थान छ० छद्मस्थ स० सर्व भाव से ण नहीं या० जाने प० नहीं पा० देखे ध० धर्मास्ति काय अ अधर्मास्तिकाय आ० आकाशास्तिकाय जी० जीव अ० अशरीर प्र प्रतिबद्ध प० परमाणु पुद्गल ए० उनको उ उत्पन्न ना० ज्ञान दं० दर्शन धरनहार अ० अरिहंत जि० जिन क० केवली स० सर्वभाव से जा० जाने पा० देखे ध० धर्मास्तिकाय जा० यावत् प० परमाणु पुद्गल अ० अधोलोक में प० पांच अ० उत्कृष्ट म० बड़े म० महा

णिही, धण्णणिही,। पंचविह सोए प० तं० पुढविसोए, आउसोए, तेउसोए, मंतसोए, बंभ-सोए ॥ पंचट्ठाणाई छउमत्थे सव्वभावेणं ण याणइ ण पासइ तं० धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थि-काय आगासत्थिकायं, जीवं, असरीरपडिबद्धं परमाणुपोग्गलं, ॥ एयाणिचेव उप्पन्ननाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ धम्मत्थिकाय जाव परमाणु-

संपदादि होनके पांच प्रकारके निधि कहे हैं १ पुत्र निधि, २ मित्र निधि, ३ विज्ञान निधि ४ धन निधि और ५ धान्य निधि पांच प्रकार की शुचि कही १ पृथ्वी से शुचि होवे २ पानीसे शुचि होवे, ३ अग्नि से शुचि होवे ४ मंत्र से शुचि होवे और ५ ब्रह्मचर्यसे शुचि। पांच वस्तुको छद्मस्थ सर्वभावसे नहीं जान सकता है धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय, शरीर रहित जीव और परमाणु पुद्गल और उन पांचों

स्य म०नरकावास का०काल म०महाकाल रो रोरुय म०महारोरुयअ अ०अप्रतिष्ठान उ ऊर्ध्व लोकमें पं०पांच अ०उत्कृष्ट म० बडे म महालय वि० विजय वि वैजयन्त ज जयन्त अ० अपराजित स० सर्वार्थसिद्ध ॥१॥ पं० पांच पु०पुरुष जात हि०लज्जासत्व हि०हीमनसत्व च०चलसत्व थि०स्थिरसत्व उ उदयनसत्व पं० पांच म०मत्स्य अ० अनुस्रोतचारी प०प्रतिस्रोतचारी अं०अंतचारी म० मध्यचारी स० सबचारी ए० ऐसे भि०

पोग्गल ॥ अहेलोगेणं पंच अणुत्तरा महइमहालया महाणिरया प० तं० काल महाकाले रोरुए महारोरुए अप्पइट्ठाणे । उड्ढलोगेण पंचअणुत्तरा महइमहालया महाविमाणा प० तं० विजये वेजयंते जयते अपराजिए, सव्वट्ठसिद्धे ॥ १ ॥ पंच पुरिस जाया प० त० हिरिसत्ते, हिरिमणसत्ते, चलसत्ते, थिरसत्ते उदयणसत्ते

वस्तु को ज्ञान दर्शन धारन करन वाले अरिहंत केवली स्वभावसे जान व देख सकते हैं अधोलोक में प्रधान व सबसे बडे पांच नरकावास कहे हैं १ काल, २ महाकाल ३ रोरुय, ४ महारोरुय और ५ अप्रतिष्ठान, और ऊर्ध्वलोक में पांच बडे अनुत्तर विमान कहे हैं १ विजय, २ वैजयंत, ३ जयंत ४ अपराजित और ५ सर्वार्थसिद्ध ॥ १ ॥ पांच प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक लज्जासे सत्व रखे २ एक लज्जासे मन में सत्व रखे ३ चल सत्व ४ स्थिर सत्व और ५ उदयन सत्व सो उत्पन्न होकर वृद्धि पाता जावे

भिक्षाचर त०तद्यथा ज०जैसे अ०अनुस्रोत चारी जा०यावत् स०सर्वस्रोतचारी प०पांच व० वनीपक अ०अतिथि कि०कृपणवनीपक मा०ब्राह्मण वनीपक सा० श्वानवनीपक स०श्रमणवनीपक पं०पांच कारन से अ० अचेलक प० प्रशस्त भ० होवे अ० अल्पप्रतिलेखासे ल० लघुतासे रू० रूपविश्वाससे त० तपमें अ० अनुज्ञा

पचमच्छा प० त० अणुसोयचारी, पडिसोयचारी, अतचारी, मज्झचारी, सव्वचारी। एवामेव पच भिक्खागा प० त० अणुसोयचारी जाव सव्वसोयचारी पच वणीमगा प० तं० अतिहिवणीमए, किवणवणीमए, माहणवणीमए, साणवणीमए, समणवणीमए ॥ पचहिं ठाणेहिं अचेलए पसत्थे भवइ त० अप्पा पडिलेहा,

पांच प्रकार के मच्छ कहे हैं १ एक मच्छ जलके प्रवाह की साथ चले २ एक जल के प्रवाह की सन्मुख चले ३ एक पानीपर चले ४ एक पानी की बीच में चले और ५ एक सर्वत्र चले ऐसेही पांच भिक्षाचर कहे हैं १ एक उपाश्रय से नीकल कर भीक्षा लेता हुवा चला जावे २ एक पीछे आते समय भीक्षा लेवे ३ ऊपर के घरोंसे भीक्षा लेवे ४ नीचे के घरोंसे भीक्षा लेवे और ५ सर्व स्थान से भीक्षा लेवे पांच प्रकार के वनीपक कहे हैं १ अतिथि वनीपक, २ कृपण वनीपक, ३ ब्राह्मण वनीपक, ४ श्वान वनीपक और ५ श्रमण वनीपक पांच कारण से अचेलक साधु प्रशस्त (अच्छा) गिनाता है १ अल्प प्रतिलेखना होवे अर्थात् बहुत संभाल करनेका होवे नहीं २ विहारादि में हल्कापना होवे ३ निर्ममत्व होनेसे सब को

मे वि० बहुत इ० इन्द्रिय नि० निग्रह पं० पांच उ० उत्कट पं० दंड उत्कट र० राज्य उत्कट स० शरीर उत्कट दे० देश उत्कट स० सत्त्व उत्कट पं० पांच स० समिति इ० ईर्या समिति भा० भाषा जा० यावत् प० परिस्थापनीय ॥ ७ ॥ प० पांच प्रकार के सं० संसार स० मास जी० जीव ए० एकेन्द्रिय जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय ए० एकेन्द्रिय पं० पांच गति पं० पांच आगति ए० एकेन्द्रिय ए० एकेन्द्रियमें उ० उपजता ए० एकेन्द्रियसे जा० यावत् पं० पंचेन्द्रियमें से उ० उत्पन्न होवे

लाघविएपसत्थे, रूवेनेसासिए, तवे अणुण्णाए, विउलेइदियनिग्गहे ॥ पंच उक्कला प० तं० दडुक्कले, रज्जुक्कले, तणुक्कले, देसुक्कले, सत्तुक्कले ॥ पंच समिइओ प० तं० इरियासमिई, भासा जाव परिट्ठावणिया समिई ॥ ॥ ७ ॥ पञ्चविहा संसारसमावन्नगा जीवा प० त० एगिंदिया, जाव पचेंदिया ॥ एगिंदिया पञ्चगइया पचागइया प० त० एगिंदिए एगिंदिएसु उववज्जमाणे एगिंदिएहिंतो वा

निस्थापनीय होवे ४ शीतादि सहने से तपकी वृद्धि होवे और ५ इन्द्रिय का बहुत निग्रह होवे पांच प्रकार का उत्कट कहा है २ अपराधी दंड पावे २ राजाका उत्कट समुदय, ३ शरीरका उत्कट सत्त्वयुक्त, ४ देशका उत्कट और ५ सेनाका उत्कट पांच प्रकार की समिति कही है ईर्यासमिति, भाषा समिति यावत् परिठावणीया समिति ॥ ७ ॥ एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के पांच प्रकार के जीवों- संसार

जाव पंचिंदिएहिंतो वा उववज्जेज्जा, सेचेवण से एगिंदिए एगेंदियत्त विप्पजहमाणे एगेंदियत्ताएवा, जाव पचेंदियत्ताएवा गच्छेज्जा । बेइंदिया पंचगइया पंचागइया एवंचेव एव जाव पचेंदिया पंचगइया पचागइया प॰ तं॰ पचेंदिया जाव गच्छेज्जा ॥ ८ ॥ पंचविहा सव्व जीवा प॰ त॰ कोहकसायी जाव लोभकसायी, अकसायी । अहवा पंचविहा सव्वजीवा प॰ तं॰ नेरइया जाव देवा सिद्धा ॥ अह भंते कलमसूर

से॰ वह ए॰ एकेन्द्रिय ए॰ एकेन्द्रियपना को वि॰ छोडता हुवा ए॰ एकेन्द्रियपने जा॰ यावत् पं॰ पचेन्द्रियपने ग॰ जावे बे॰ बेइन्द्रिय प॰ पांचगति पं॰ पांच आगति ए॰ ऐसे जा॰ यावत् प॰ पंचेन्द्रिय प॰ पांचगति प॰ पांच आगति ॥ ८ ॥ पं॰ पांच प्रकार के स॰ सर्व जीव को॰ क्रोध कषायी जा॰ यावत् लो॰ लोभ कषायी अ॰ अकषायी अ॰ अथवा ने॰ नारकी जा॰ यावत् दे॰ देव सि॰ सिद्ध भं॰ भगवन् क॰ कलम म॰ मसूर ति॰ तिल मु॰ मुग मा॰ उडद् पि॰ वाल कु॰ कुल्थ

में परिभ्रमण करनेवाले कहे हैं एकेन्द्रिय जीवों की पांच गति और पांच आगति कही है एके न्द्रियमें उत्पन्न होनेवाला जीव एकेन्द्रिय यावत पंचेन्द्रियमें से आता है और एकेन्द्रियमें से चवकर उनमें जाता है ऐसेही बेइन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय तक की गति आगति का अधिकार जानना ॥ ८ ॥ सब जीव पांच प्रकार के कहे हैं क्रोध कषायी, मानकषायी, मायाकषायी, लोभकषायी, और अकषायी, और भी सब

मा० चौला स० तूभर प० मने ए० इन प धान्य को को० कोठे में म० ऐसे सा० शाली के० कितना काल तक जो० योनि मं० रहती है गो० गौतम ! ज० जघन्य अ० अन्तर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट पं० पांच सप ते० पीछे जो योनि प म्लानहोतीहै ते० पीछे जोनि वो० विच्छिन्न प० प्ररूपी ॥ ९ ॥ पं० पांच सं० संवत्सर ण० नक्षत्र संवत्सर जु० युगसंवत्सर प० प्रमाणसवत्सर ल० लक्षणसंवत्सर स० शनैश्चर

तिलमुग्गमासणिप्फावकुलत्थआलिसदगसईणपलिमथगाणं, एएसिण धन्नाणं कोट्ठुत्ताणं जहा सालीण जाव केवइय काल जोणी सचिट्ठइ ? गोयमा ! जहन्नेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण पंच संवच्छराइ, तेणपर जोणी पमिलायइ जाव तेण परं जोणी वो च्छेदे पनत्त ॥ ९ ॥ पच संवच्छरा प० त० णक्खत्तसंवच्छर, जुगसंवच्छरे, पमा णसंवच्छरे, लक्खणसंवच्छरे, सणिचरसंवच्छरे । जुगसंवच्छरे पचविहे प० त०

जीवों के पांच भेद किये हैं नारकी, मनुष्य, तिर्यंच, देवता और सिद्ध अहो भगवन् ! कलम, वटले, चने, मसूर, तील, मूंग, उडद, वाल, कुलथ, चोला, महूडा, तूभर व इसजाति के अन्य भी धान्य को कोठे में रख कर यावत् क्रिया होवे तो कितना काल तक उनकी योनि ठहरती है ? हे गौतम ! उस धान्य की योनि जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पांच संवत्सरतक रहती है फीर योनि विच्छेद होजाति है ॥ ९ ॥ पांच प्रकार के संवत्सर कहे हैं १ नक्षत्र संवत्सर, २ युग संवत्सर, ३ प्रमाण संवत्सर, ४ लक्षण संवत्सर और ५

संवत्सर जु० युगसंवत्सर प पांच प्रकारका च० चं० चं चंद्र अ० अभिवर्द्धित चं० चंद्र आभवर्द्धित प० प्रमाणसंवत्सर ण० नक्षत्र चं० चंद्र ऊ० ऋतु आ आदित्य अ० अभिवर्द्धित ल० लक्षण सं० संवत्सर पं० पांच प्रकारका स सम्यक् न० नक्षत्रयोग जो० योगे सं० सम्यक् ऊ० ऋतु प० परिणमे ण० नहीं अ० अति उ० उष्ण सी० शीत ब० बहुपानी न० नक्षत्र स शशी स० सकल पु० पूर्णमासी जो० योजे

चंदे, चंदे, अभिवड्डिए चंदे, अभिवड्डिएचेव । पमाणसंवच्छरे पंचविहे प० तं० ण क्खत्ते, चंदे, उऊ आइच्चे अभिवड्डिए । लक्खणसंवच्छरे पंचविहे प० त० समगं नक्खत्ता योग जोयति । समग उऊ परिणमंति ॥ णच्चुण्हणाइसीओ । बहूदओ होइ

शनिश्चर संवत्सर. युगसंवत्सर पांच प्रकार का कहा १ चंद्रसंवत्सर, २ चंद्रसंवत्सर, ३ अभिवर्द्धित संवत्सर ४ चंद्रसंवत्सर और ५ अभिवर्द्धित संवत्सर, प्रमाण संवत्सर पांच प्रकार का १ नक्षत्र संवत्सर २७ दिन और एकदिन के ६७ भाग में से २१ भाग इतना नक्षत्र संवत्सर का एक मास होता है और इसतरह बारह महिने के ३२७ दिन और ५७ के ५१ भाग होते हैं २ चंद्रप्रमाण संवत्सर सो यदि प्रतिपदा से पूर्णिमा पर्यंत उसके दिन २८ और ३२ भाग ६७ में के यों बारह महिने के ३५४ दिन २१ भाग ६२ को होते हैं ३ ऋतुप्रमाण संवत्सर उसके एक महिने के ३० दिन पूरे होते हैं यों बारह महिने के ३६० होते हैं ४ आदित्य (सूर्य) संवत्सर उसके एक महिने के ३०॥ दिन और बारह महिने के ३६६ दिन होते

वि० विषमचारी न० नक्षत्र क० कटुक ब० बहुत उ० पानी त० उसको आ० कहा सं० संवत्सरचंद्र वि० विषम प० पुष्प प० होवे अ० विनाऋतुमें दे० देवे पु० पुष्पफल वा० वर्षा न० नहीं स० अच्छीतरह वा० वर्षे त० उसको सं० संवत्सरकर्म पु० पृथ्वी द० पानीका र० रस पु० पुष्पफलको दे० देवे आ० आ

नक्खत्तो ॥१॥ ससिसगल पुण्णमासी। जोएइ विसमचारिणक्खत्ते। कडुओबहूदओय।
तमाहु संवच्छरं चंद ॥२॥ विसम पवालिणो। परिणमति अणुदूसु देंति पुप्फफलं।

है और ५ अभिवर्द्धित संवत्सर सो तेरह मास का होता है इसमें एक अधिक मास आता है इन पांचों संवत्सर को पांच प्रकार के लक्षण प्रत्यक्ष प्रमाणसे गाथा द्वारा कहते हैं जैसा जिस महिने का नाम हो वैसा उसमहिने की पूर्णिमा की रात्रिको उसी नाम का नक्षत्र चंद्रमाका संयोग जोडे जैसे कार्तिकी पूर्णिमा को कृत्तिका, ज्येष्ठ की पूर्णिमा को ज्येष्ठा, इत्यादि महिने के सदृश नक्षत्र के नाम होवे और ऋतु भी अनुक्रम से परिणमें जैसे कार्तिकी पूर्णिमा पीछे हेमंतऋतु और पोष पूर्णिमा पीछे शिशिरऋतु इत्यादि समऋतु परिणमें विषम परिणमें नहीं और उत्सर्प में ज्यादा उष्णता व शीत नहोवे वैसेही विशेष वर्षा भी नहोवे इन लक्षणों से जाना जावे कि इसे नक्षत्र संवत्सर कहा है। जब महिने की पूर्णिमा के दिन उसी नाम का नक्षत्र नहोवे परंतु अन्य नक्षत्र होवे जैसे ज्येष्ठ की पूर्णिमा को मूल नक्षत्र, श्रावण की पूर्णिमा को धनिष्ठा मृगशीर्ष की पूर्णिमा को आर्द्रा नक्षत्र यों मास से विषमचारी होवे, व उत्सर्प में अति शीत, अत्यंत उष्णता

त्रित्य अ० थोडी श० वर्षासे स० अच्छा नि० होवे सा० धान्य आ० आदित्यक ते० तापस त० तपाहुवा स० क्षण ल० लव दि० दिवस उ० ऋतु प० परिणमें पू० पूरे थ० स्थलको त० उसको अ० अभिव र्द्धित जा० जानना ॥ ९ ॥ पं० पांच जी० जीवको णि० निकलनेका म० मार्ग पा० पगसे उ० जं घासे उ० हृदयसे सि० शीर्षसे स० सर्वांगसे पा० पावसे णि निकलता नि० नरकगामि उ० जया

वासं ण सम्म वासइ । तमाहु संवच्छरं कम्मं ॥३॥ पुढविदगाणं तु रस । पुप्फफलाणं

तु देंति आइच्चो॥ अप्पेण वि वासेण। सम्म निप्फज्जए सास ॥४॥ आइच्चतेयतविया। ख

णलवदिवसाउऊ परिणमंति॥ पूरेइ य थलयाइं । तमाहु अभिवड्ढियं जाण ॥ १० ॥

पंचविहे जीवस्स णिज्जाणमग्गे प० तं० पाएहिं, उरूहिं, उरेणं, सिरेण सव्वंगेहिं ॥

व अत्यंत वर्षा हो इन लक्षणोंसे उसको चंद्र संवत्सर जानना 'विषमऋतु परिणमें अर्थात् विनाऋतु फलपत्र आवे, वर्षा भी अच्छी तरह से न होवे उसे ऋतु संवत्सर या कर्म संवत्सर कहते हैं जिस वर्ष में वर्षाद के पानी का रस मीठ व स्निग्ध होवे यथोचित काल में फुल फल देवे उसे आदित्य संवत्सर कहते हैं इसमें थोडे वर्षावसे धान्य अच्छा होता है। सूर्यके तेजसे क्षण, मुहूर्त, लव सो ४८ श्वासप्रमाण, दिन सो अहोरात्रि, ऋतुसो दो मास प्रमाण जानी जावे और वायुसे बहुत पुल उछती होवे सो अभिवर्द्धित संवत्सर जाना जाता है अहो शिष्य? इसे तू आचार्य के कहने से जान ॥ १० ॥ पांच प्रकार से जीवको नीकलने का

मे णि० नीकलता ति• तिर्यक्गामि उ० हृदयसे णि• निकलता म० मनुष्यमेंजानेवाला सि० शीर्षसे णि० नीकलता व० देवगामि स० सर्वांगस णि० नीकलता सि० सिद्धिगति प० पर्यवसान पं० पांच प्रकारका उ० उत्पन्न उ० उत्पादछेदन वि० व्ययछेदन ब० बंधनछेदन प० प्रदेशछेदन दो० द्विधाछेदन

पाएहिं णिज्जाणमाणे निरयगामी भवइ, उरूहिं णिज्जाणमाणे तिरियगामी भवइ, उरेणं णि *ज्जाणमाणे मणुयगामी भवइ, सिरेण णिज्जाणमाणे देवगामीभवइ, सव्वगेहिं णिज्जाणमाणे सिद्धिगतिपज्जवसाणे पण्णत्ते ॥ पंचविहे छेयणे प० त० उप्पायच्छेयणे वियच्छेयणे, बंधणच्छेयणे, पएसच्छेयणे, दाधारच्छेयणे, ॥ पचविहे आणंतरिए प० त०

मार्गकहा पाँव से, जंघा से, हृदय से, मस्तक से और सर्वांग से १ पाँवसे नीकलनेवाला जीव मरकर नरक में जाता है २ जंघासे नीकलनेवाला जीव तिर्यच गामी होता है ३ हृदय से नीकलनेवाला जीव मनुष्य में जाता है शिरसे निकलने वाला देवलोकमें जाताहै, और ५ सर्वांगसे नीकलनेवाला जीव सिद्ध होताहै पांच प्रकारसे आयुष्य का छेदन होता है १ देव व नरक में उत्पन्न होना सो उत्पात; मनुष्यकी पर्यायान्तर होवे सो व्ययछेदन ३ जीव को कर्मबंध से मुक्त होना सो बंधन छेदन, ४ जीव के प्रदेशभिन्न होना सो प्रदेशछेदन ५ जीव व प्रदेश भिन्न होना सो द्विधाछेदन पांच प्रकार से अंतररहितपना कहा १ उत्पात का निरंतर जीव को उत्कृष्ट असंख्यात समय का विरह नहीं है इस लिये २ मनुष्य पर्याय में विशेष काल लगे नहीं सो व्यय ३

प० पांच मा० आनपर्य उ० उत्पाद वि० व्यय प० प्रदेश स० समय सा० सामान्य आनंतर्य प० पांच अ० अनंत णा० नाम ठ० स्थापना द० द्रव्य ग० गणित प० प्रदेश अ० अथवा ए० एकप्रकारसे दु० दोकारनसे दे० देशविस्तार स० सर्वविस्तार सा० शाश्वतविस्तार ॥ ११ ॥ पं० पांच प्रकारकाज्ञान

उप्पायणंतरिए, वियणतरिए, पएसाणतरिए, समयाणतरिए सामणाणतरिए पंचविहे अणंतए प० तं० णामाणंतए, ठवणाणंतए, दव्वाणंतए, गणणाणंतए, पएसा णंतए, । अहवा पंचविहे अणंतए प० तं० एगओणतए, दुहओणंतए, देसवित्थारा णतए, सव्ववित्थाराणतए सासयाणंतए ॥ ११ ॥ पंचविहे णाणे पण्णत्ते तं० आभिनिबोहियणा

प्रदेश २ में अंतर नहीं सो प्रदेशान्तर ४ समय २ में अंतर नहीं है सो समयान्तर और ५ सामान्य से सब जीव का अनंतर ८ समय का है सो सामान्यानतर पांच वस्तु अनंत कही नाम अनंत, स्थापना अनंत, द्रव्य अनंत, गणित अनंत, और ५ देश अनंत और भी पांच प्रकार के अनंत कहे हैं १ एक अनंत लम्बपने अनंत एक श्रेणिरूप, २ दो प्रकार लम्बाइ जैसे पूर्व पश्चिम, उत्तर दक्षिण ३ देश विस्तार अनंत पूर्वादि एक दिशि अनंत प्रदेशात्मक ४ सर्व विस्तार अनंत सो सर्वाकाश रूप और ५ शाश्वता अनंत सो अनादि अनंत रूप ॥ ११ ॥ पांच प्रकार से ज्ञान कहा मति ज्ञान, श्रुति ज्ञान, अवधि ज्ञान, मन पर्यव ज्ञान, व

मा० मतिज्ञान सु० श्रुतज्ञान ओ० अवधिज्ञान म० मनःपर्यवज्ञान के० केवलज्ञान पं० पांच प्रकारका णा ज्ञानावरणीय कर्म आ० मतिज्ञानावरणीय जा० यावत् के० केवलज्ञानावरणीय पं० पांच प्रकारकी स० स्वाध्याय वा० वांचना पु० पृच्छना प० पर्यटना अ अनुपेक्षा ध० धर्मकथा प० पांचप्रकारका प० प्रत्याख्यान स० श्रद्धा सु० शुद्ध वि० विनयशुद्ध अ० अनुभाषनाशुद्ध अ० अनुपालनाशुद्ध भा० भावशु द्ध प० पांचप्रकारका प० प्रतिक्रमण आ आश्रवद्वार मि० मिथ्यात्व क० कषाय जो० योग भा० भा

णे, सुयणाणे, ओहिणाणे मणपज्जवणाणे, केवलणाणे । पचविहे णाणावरणिज्जेकम्मे प० तं० आभिणिबोहियनाणावरणिज्जे, जाव केवल णाणावरणिज्ज ॥ पंचविहे स ज्झाए प० तं० वायणा, पुच्छणा, परियट्टणा अणुप्पेहा, धम्मकहा ॥ पंचविहे पच्च- क्खाणे प० त० सद्दहणसुद्धे, विणयसुद्धे, अणुभासणासुद्धे, अणुपालणासुद्धे, भावसुद्धे ॥

केवल ज्ञान पांच प्रकार के ज्ञानावरणीय कर्म कहे हैं मतिज्ञानावरणीय, श्रुतिज्ञानावरणीय, अवधि ज्ञानावरणीय, मनःपर्यवज्ञानावरणीय, व केवलज्ञानावरणीय पांच प्रकार की स्वाध्याय कहीः—वाचना, पृच्छना, पर्यटना, अनुप्रेक्षा व धर्मकथा पांच प्रकार के प्रत्याख्यान कहे हैं श्रद्धना शुद्ध, विनय शुद्ध, अनुभाषना शुद्ध, अनुपालना शुद्ध और भाव शुद्ध पांच प्रकार का प्रतिक्रमणः—आश्रवद्वार प्रतिक्रमण,

* गुरुने प्रत्याख्यान कराये पीछे ' वोसरामि ' ऐसापाठ कहना सो

पमतिक्रमण प० पांच कारनस सु० सूत्रवांचना सं० संग्रहकेलिये उ० उपग्रहकेलिये नि० निर्मरकेलिये सु सूत्र मे० मेरा प० शुद्ध म० होगा सु० सूत्रका अ० अविच्छेदकेलिये प० पांच कारनसे सु० सूत्र सि०, सिखे णा० ज्ञानकेलिय दं० दर्शनकेलिय च चारित्रकेलिय बु० व्युदग्रह वि० विमोचनाकेलिये अ० यथार्थ भा० भाव ना० जनूंगा सो० सौधर्म ई० ईशान क० देवलोकमें वि० विमान पं० पांचवर्णके कि० कृष्ण जा० यावत् सु० शुक्ल सा० सौधर्म ई० ईशान क० देवलोकमें वि० विमान पं० पांच जो० योजन स० शत

पचविहे पडिक्कमणे प० तं० आसवदारपडिक्कमणे, मिच्छत्तपडिक्कमणे, कसाय पडिक्कमणे, जोगपडिक्कमणे; ॥ पचहिं ठाणेहिं सुत्त वाएज्जा तं० संगहट्ठयाए, उवग्गहट्ठयाए, निज्जरट्ठयाए, सुत्त वा मे पज्जवयाए भविस्सइ, सुत्तस्सवा अव्वोच्छित्तिणयट्ठयाए ॥ पचहिं ठाणेहिं सुत्त सिक्खेज्जा तं० णाणट्ठयाए, दंसणट्ठयाए चरित्तट्ठयाए, वुग्गह विमोयणट्ठयाए अहत्थे वा भावे जाणिस्सामि तिकट्टु ॥ सोहम्मीसाणेसुण क

मिथ्यात्व प्रतिक्रमण, कषाय प्रतिक्रमण, योग प्रतिक्रमण और भाव प्रतिक्रमण पांच कारन से सूत्र की वांचनादेनी कल्पती है १ शिष्य का संग्रह क लिये २ उपग्रह के लिये अर्थात् पढाने से शिष्य भक्त पान वस्त्रादि लाने को समर्थ होगा ३ कर्मनिर्जराके लिये ४ पढानेसे मुझे सूत्र की विस्मृति हुई होगा सो अच्छी होगा इस लिये और ५ पढानसे सूत्र बहुत कालतक रहेगा, विच्छेद नहीं होगा इसलिय पांच कारन

उ० ऊंचे च० ऊंचपने बं० ब्रह्मदेवलोक ल० लंतक क० देवलोकमें दे० देवोंका भ० भवधारणीय स० शरीर उ० उत्कृष्ट प० पांचहाथ उ० ऊंचे उ० ऊंचपने णे० नारकीको पं० पांचवर्णके प० पांचरसके पो० पुद्गल बं० बांधे बं० बांधते है बं० बांधेंगे कि० कृष्ण जा० यावत सु० शुक्ल ति० तिक्त जा० यावत् म० मधुर ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ १२ ॥ जंबूद्वीपके मं० मेरुकी दा० दक्षिणमें गं० गंगामहानदी

ऐसु विमाणा पंचवन्ना प० तं० किण्हा जाव सुक्किल्ला, ॥ सोहम्मीसाणेसु ण कप्पेसु विमाणा पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण प० । बंभलोगलंतएसुणं कप्पेसु देवाण भव-धारणिज्जसरीरगा—उक्कोसेण पंचरयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं प० । णेरइयाणं पंचवन्ने पंच-रसे पोग्गले बंधिसुवा, बंधतिवा बंधिस्सतिवा, तं० किण्हे जाव सुक्किल्ले। तित्ते जाव मधुरे । एवं जाव वेमाणिया ॥ १२ ॥ जंबूदीवेदीवे मंदरस्स दाहिणेण गंगामहाणदिं पंच

से सूत्र सिखता है ज्ञान के लिये, दर्शन के लिये, चारित्र के लिये, अन्यको मिथ्यात्वाभिनिवेष से मुक्त करने को और यथार्थभाव मानने को सौधर्म और ईशान कल्प में विमान पांच वर्णवाले कहे हैं, कृष्ण यावत् शुक्ल सौधर्म ईशान देवलोक में विमान पांचसो योजन के ऊंचे कहे हैं ब्रह्म देवलोक और लंतक में देवताओंकी भवधारणीय अवगाहना पांच हाथ की कही है नरक से लेकर वैमानिक तक में कृष्णादि पांच वर्ण और तिक्तादि पांच रसके पुद्गल बांधते है, बांधेंगे और बांधे ॥ १२ ॥ जम्बूद्वीप के

में पं० पांच म० महीनदीयां स मीलती हैं ज० जमुना स० सरयू आ० आदी को० कौशी म० मही म० जम्बूद्वीपक मं० मेरुकी दा० दक्षिणमें सिं० सिंधुमहानदीमें पं० पांचमहीनदियां स० मीलतीहै स० सद्रु मा० मानीवस्ती व० वमासा ए० ऐरावती च० चंद्रभागा जं० जंबूद्वीपके मे० मेरुकी उ० उत्तरमें र० रक्ता महानदीमें प० पांच महीनदियां स० मीलतीहै कि० कृष्णा म० महाकृष्णा नी० नीला म० महानीला म० महातीरा ज० जम्बूद्वीपके म० मेरुकी उ० उत्तरमें र रक्तावतीमहानदीमें पं०पांचमहीनदियां स० मीलतीहै इं०

महाण दीओ समप्पेंति तं० जउणा सरऊ, आदी, कोसी, मही। जम्बूमदरस्स दाहिणेणं सिंधुमहानदिं पचमहाणदीओ समप्पेंति तं० सद्रु, माविततथी, वमासा, एरावई, चदमागा। जम्बूमदरउत्तरेणं रत्तं महानइ पचमहाणईओ समप्पेंति, त० किण्हा, महाकिण्हा, नीला, महानीला, महातीरा। जबूमदरउत्तरेण रत्तावइ महाणदिं पंच महाणईओ समप्पेंति

मेरु पवत की दक्षिण दिशा में गंगा महानदी को यमुना, सरयू, आदी, कोशी और मही नामक पांच नदियाँ मीलती हैं और सिंधु का सद्रु, मावितस्ती, वमासा, ऐरावती, चंद्राभागा नामक पांच नदियां मीलती हैं जम्बूद्वीप के मेरु से उत्तर दिशा में रक्ता महानदी को कृष्णा, महाकृष्णा, नीला, महानीला, व महातीरा नामक पांच नदियां मीलती हैं और रक्तावती महानदी को इन्द्रा, इन्द्रसेना, सुषेना, वारिषेना

इन्द्रा इं० इन्द्रसेना सु० सुषेणा वा० वारिषेणा म० महाभागा ॥ १३ ॥ प० पांच ति० तीर्थंकर कु० कुमारावस्थामें व रहकर मुं० मुंड जा० यावत् प० प्रव्रजितहुवे भ वासुपुज्य म० मल्लीनाथ अ० अरिष्टनेमि पार्श्वनाथ वी० महावीर चं० चमरचंचा रा० राजधानम पं० पांच स० सभा सु० सुधर्मा उ० उपपात अ० अभिषेक अ० अलंकारिक व० व्यवसाय ए०एक इं०इन्द्रकस्थानम पं०पांच स० सभा सु०सुधर्मा जा० यावत व० व्यवसाय पं० पांचनक्षत्रके प० पांचतारे ध० धानष्टा रो० रोहिणी पु० पुनर्वसु ह० हस्त वि० वि

इंदा, इंदसेणा, सुसेणा, वारिसेणा, महाभागा ॥ १३ ॥ पंचतित्थगरा कुमारवास मज्झे वसित्ता मुंड जाव पव्वइया तं० वासुपुज्जे, मल्ली अरिट्ठनेमी, पासे, वीरे ॥ चमरस्सणंअसुरिंदस्स...

चमरस्सणं राजधाणीए पंचसभाओ प० तं० सभासुहम्मा, उववायसभा, अभिसेयसभा, आलंकारियसभा, ववसायसभा ॥ एगमेगेणं इंदट्ठाणे पंचसभाओ प० तं० सभासुहम्मा जाव ववसायसभा ॥ पंच णक्खत्ता पंचतारा प० तं० धणिट्ठा, रो

और महाभागा नामक पांच नदियों मीलती हैं ॥ १३ ॥ श्री वासुपुज्य, श्री मल्लीनाथ स्वामी, श्री अरिष्टनेमी, श्री पार्श्वनाथ स्वामी और श्री महावीर स्वामी य पांचो तीर्थंकरों कुमारवास में रहकर अनगार हुए चमर चंचा राजधानि में पांच सभाओं कहीं १ सुधर्मा सभा, २ उपपात सभा, ३ अभिषेक सभा ४ अलंकार सभा और ५ व्यवसाय सभा एक २ इन्द्रको उपर्युक्त पांच २ सभाएं कहीं पांच २

घास्ला मी०मीव पं० पांचस्थान णि निवर्तित पो० पुद्गल पा० पापकमपन । १ एकठाकय ।प० एकठे करते हैं चि० एकठेकरेंगे ए० एकेन्द्रिय णि० निवर्तित जा० यावत पं० पचेन्द्रिय नि० निवर्तित ए० ऐस चि० चिन उ० उपचिन ब० बन्ध उ० उदीर वे० वेद नि निर्धरा प० पांच प० प्रदेशी स० स्कन्ध अ० अनन्त प० प्ररूप पं० पांच प्रदेशी अवगाहा पो० पुद्गल अ० अनंत प० प्ररूपे जा० यावत् पं० पांच गुणरूक्ष पु० पुद्गल अ० अनंत प० प्ररूपे ॥ १४ ॥ * * *

हिणी, पुणव्वसू हत्थो, विसाहा ॥ जीवाणं पच ट्ठाणणिव्वात्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसुवा, चिणिंतिवा, चिणिस्सतिवा तं० एगेंदियनिव्वत्तिए जाव पचेंदिय निव्वात्तिए ॥ एवं चिणउवचिणबंधउदीर वेदतह निज्जराचेव ॥ पंचपएसिया खंधा अणता प० पंचपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता । जाव पचगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता ॥ १४ ॥ इति पचमट्ठाण सम्मत्त * *

तारेवाले पांच नक्षत्र कहे धनिष्ठा, रोहिणी, पुनर्वसु, हस्त, और विशाखा जीवने पांच स्थानक से निवर्तित पुद्गल पापकर्मपने एकत्रित किये, करेंगे और करते हैं एकेन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय ऐसेही उपचिने, बांधे, उदीरे, वेदे और निर्जरे पांच प्रदेशी स्कंध अनंत कहे हैं पांच प्रदेश अवगाहना करनेवाले पुद्गल अनंते कहे यावत् पांच गुणरूक्ष पुद्गल अनंत कहे ॥ १४ ॥ यह पांचवा ठाणा समाप्त हुआ इस में जीवादिपदार्थों का अधिकार कहा आगे छठ्ठे निक्षेप बतलाते हैं * * *

॥ षष्ठं स्थानकम् ॥

छ० छकारन से अ० अनगार अ० योग्य है ग० गणको धा० धारन करने को सि० श्रद्धावन्त स० सत्यवन्त मे० मेधावी ब० बहुश्रुत स० सत्ववन्त अ अल्प अधिकरण वाला छ० छकारन से नि० साधु नि० साध्वी को गि० ग्रहण करता अ० अवलम्बता ना० उल्लंघन करे नहीं खि० खिप्तचित्तवाली दि० दिप्तचित्तवाली ज० यक्षाविष्ट उ० उन्माद प्राप्त उ० उपसर्ग प्राप्त सा० अधिकरण सहित को छ० छकारन

छहिं ठाणेहिं सपन्ने अणगारे अरिहइ गण धारित्तए त• सड्डिपुरिसजाए सच्चेपुरिसजाए, मेहावीपुरिसजाए, बहुस्सुएपुरिसजाए, सत्तिमंअप्पाहिगरणे ॥ छहिं ठाणेहिं निगंथे निग्गंथिं गिण्हमाणेवा अवलंबमाणेवा नाइक्कमइ त• खित्तचित्त, दित्तचित्त, जक्खाइट्ठ उम्मायपत्तं, उवसग्गपत्त, साहिगरणं १ छहिं ठाणेहिं निग्गथा निग्ग-

भावार्थ—छगुण संपन्न साधु अरिहंत भगवन्त के गण (साधु, साध्वी श्रावक श्राविका) को धारण करने योग्य होते हैं १ श्रद्धावंत (दूसरे की श्रद्धा निश्चल करसकता है) २ सत्यवंत (सब को विश्वासनीय होवाहे) ३ बुद्धिवन्त (सबकोमानीय) ४ बहुश्रुत (अन्य को ज्ञानादि देने में समर्थ होवाहे) ५ सत्ववंत परीषहादि में अडग रहसकता है, और अल्प अधिकरण वाला सो क्रोधादि रहित साधु साध्वी का अवलम्बन करते छ कारन से जिनाज्ञा अतिक्रमे नहीं १ खिप्त चित्तसे २ हर्षमे व्याप्तचित्त वाला, ३ यक्षाविष्ट ४ उन्माद

से नि० साधु नि० साध्वी सा० स्वधर्मीविना का० काल को मास स० आचरते णा० उल्लंघन करे नहीं अं० अदरसे बा० बाहिर णी० निकालते बा० बाहिरसे णि० दूर णी० नीकालते उ० बंधनकरते उ० जागरण करते अ० मणाते तु० मौनपने स परठने को आते छ० छकारन से छ० छद्मस्थ स० सर्वभावसे ण० नहीं या० जाने ण० नहीं पा० देखे ध धर्मास्तिकाय अ० अधर्मास्तिकाय आ० आकाशास्तिकाय जी० जीव अ० अशरीर प्रतिबद्ध प० परमाणु पुद्गल स० शब्द उ० उत्पन्न णा० ज्ञान द०

थीआय साहम्मियं कालगयं समायरमाणा णाइक्कमइ त० अंतोहिंतो बाहिं णीणेमाणा, बाहिहिंतो बाणिब्बाहिं णीणेमाणा, उवेहमाणावा, उवासमाणावा, अणुन्नवेमाणावा, तुसिणीएवा सपव्वयमाणा (२) छट्ठाणाई छउमत्थे सव्वभावेणं ण याणइ णपासइ तं० धम्मत्थिकाय मधम्मत्थिकाय, आगासं, जीव मसरीरपडिबद्ध, परमाणुपोग्गलं

प्राप्त ५ उपसर्ग उत्पन्न होते और ६ अधिकरण सहित अर्थात् क्रोधसे हठ में आजावे छ कारन से साधु साध्वी अपने स्वधर्मी साधु साध्वीका का काल प्राप्त हुवे जानकर उन को उठाने प्रमुखका व्यवहार करते जिनाज्ञा अतिक्रमे नहीं १ उपाश्रय से बाहिर नीकालते २ बाहिर से विशेष बाहिर नीकालते ३ बंधनादि करते ४ रात्रि जागरणादि उपासना करते ५ उन के स्वजनादिक का परिठाने को जनाते और ६ मौनस्थ परिठाने को जाते छद्मस्थ छ वस्तु को सब भावसे जान नहीं सकता है व देख नहीं

दर्शन ध० धारन करने वाले अ० अरिहंत जि०० जिन स० सर्वभाव को जा० जाने पा० देखे ध० धर्मा
स्तिकाय जा० यावत् स० शब्द छ० छकारन से स० सर्व जीव को ण० नहीं है इ० ऋद्धि जा० यावत्
प० पराक्रम जी० जीव को अ० अजीव क० करने को अ० अजीव को जी० जीव करने को ए० एक
स० समय में दो० दोभाषा भा० बोलने को सं० स्वयं क० किया हुवा क० कर्म वे० भोगवन मा० नहीं वे०
भोगवने प० परमाणु पुद्गल छ० छेदने को भि० भेदने को अ० अग्निसे द० जलाने को ब० बाहिर लो०

सद्दं ॥ एयाणिचेव उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा जिणे जाव सव्वभावेणं जाणइ पासइ
धम्मत्थिकायं जाव सद्द (३) छहिं ठाणेहिं सव्वजीवाणं णत्थि इड्ढीतिवा जाव परक्कमे
तिवा तं० जीववा अजीव करणयाए, अजीव वा जीवं करणयाए, एगेसमएणवा दोभा
साओ भासित्तए, सय कडवा कम्मवेएमिवा मा वा वेएमि, परमाणुपोग्गलवा छिंदित्त

सकता है १ धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, शरीर रहित जीव, परमाणु पुद्गल और
शब्द इन छेही वस्तु को अरिहंत जिन केवली सब भाव से जान व देख सकते हैं छ कार्य करने
को कोई भी जीव ऋद्धि से, द्युति से, तेज से यावत् पराक्रम से समर्थ नहीं है जीव का अजीव करने
को, अजीव का जीव करने को, एक समय में दो भाषा बोलने को, अपने किये हुवे कर्म वेदू या वेदू
नहीं ऐसा करने को, परमाणु पुद्गलों को छेदन, भेदन या अग्निकायासे भस्म करने को, और लोक के

लोक से ग० जाने को ॥ १ ॥ छ० छजीवनिकाय पु० पृथ्वीकाय जा० यावत् त० त्रसकाय छ० ताराग्रह सु० शुक्र बु० बुध व० बृहस्पति अ० मंगल स० शनैश्चर क० केतु छ० छप्रकार के स० संसारी जी० जीव पु० पृथ्वीकाय जा० यावत् त० त्रसकाय पु० पृथ्वीकाय को छ० छगति छ० छआगति पु० पृथ्वीकाय पु० पृथ्वीकाया में उ० उपजता पु० पृथ्वीकाय में से जा० यावत् त० त्रसकाय में से उ० उपजे पु० पृथ्वीकाय पु० पृथ्वीकाय को वि० छोडता पु० पृथ्वीकायपने जा० यावत् त० त्रसकायपने ग०

एथा भिंदित्तएवा, अगणिकाएण वा समोदहित्तए, वहियात्रा लोगंतागमणयाए (५) ॥ १ ॥ छजीवनिकाया प० तं० पुढविकाइया जाव तसकाइया (६) छ ताराग्गहा प० तं० सुक्के, बुधे, बहस्सई, अगारए, सणिच्चरे, केऊ, (७) छव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा प० तं० पुढविकाइया जाव तसकाइया (८) पुढविकाइया छगइया छआगइया प० तं० पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतोवा जाव तसकाइएहिंतोवा उववज्जेजा ॥ सोचेवणं सेपुढविकाइए पुढविकाइयत्तं विप्पज-

बाहिर अलोक में जाने को ॥ १ ॥ छ जीवनिकाय कहे पृथ्वीकाय, अप्काय, तेऊकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय छ ग्रह तारारूप कहे शुक्र, बुध, बृहस्पति, अंगारक, (मंगल) शनैश्चर और केतु पृथ्वीकायादि छप्रकारके जीव संसार में परिभ्रमण करनेवाले कहे पृथ्वी कायादि छही

जावे भा० अपूकाय छ० छगति छ० छआगति ए० ऐसे जा० यावत् त० त्रसकाय छ० छप्रकार के स० सर्व जीव मा० मतिज्ञानी जा० यावत के० केवल ज्ञानी अ० अज्ञानी अ० अथवा ए० एकेन्द्रिय जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय अ० अनेन्द्रिय अ० अथवा ओ० औदारिक वं० वैक्रेय आ० आहारिक ते० तेजस क० कार्माण अ० अशरीरी छ० छप्रकार की त० तृणवनस्पति अ० अग्रबीज मू० मूलबीज पो० पर्वबीज

इमाणे पुढविकाइयत्ताएवा जाव तसकाइयत्ताएवा गच्छेज्जा । आउकाइया छगइया छआगइया एवचेव । जाव तसकाइया (९) छव्विहा सव्व जीवा प० त० आभिणियोहियणाणी जाव केवलणाणी, अन्नाणी (१०) अहवा छव्विहा सव्व जीवा प० तं० एगिंदिया जाव पंचिंदिया, अणिंदिया (११) अहवा छव्विहा सव्व जीवा प० तं० ओरालियसरीरी, वेउव्वियसरीरी, आहारगसरीरी, तेयगसरीरी, कम्मगसरीरी असरीरी (१२) छव्विहा तणवणस्सइकाइया प० त० अग्गबीया, मूलबी

कायों की उक्त छही कायामें गति होती है और उसमेंसे आगति होती है सब जीवोंके छभेद किये गये हैं मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्यव ज्ञानी, केवल ज्ञानी, व अज्ञानी और भी सबजीवोंके छभेदरूप हैं औदारिक शरीरी, आहारक शरीरी, तेजस शरीरी, कार्माण शरीरी, और अशरीरी छप्रकार की

सं० स्कन्धबीज बी० बीजरूह स० समूर्च्छिम ॥ २ ॥ छ० छस्थान स० सर्व जीव को णो० नहीं सु०सुलभ भ० होवे म० मनुष्यभव आ० आर्यक्षेत्र में ज० जन्म सु० अच्छाकुल में प० जन्मना के० केवली प० प्ररूपा ध० धर्म स० सुनना सु० सूत्र में श्रद्धा स० श्रद्धकर प० विश्वासकर रो० पसंदकर का० काया से फा० फरसना करनी छ० छ इं० इन्द्रिय के अर्थ सो० श्रोतेन्द्रिय का अर्थ जा० यावत् स० स्पर्शेन्द्रिय का अर्थ णो० नोइन्द्रिय(मन)का अर्थ छ० छप्रकारका स० संवर सो० श्रोतेन्द्रिय संवर जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रिय

या, पारबीया, खंधबीया, बीयरुहा, समुच्छिमा (१३)॥२॥छट्ठाणाइं सव्वजीवाणं णोसु-लभाइं भवंति माणुस्सएभवे, आयरिए खेत्ते जम्मं, सुकुले पच्चायाती, केवलीपन्नत्तस्स धम्मस्ससवणया सुयस्सवा सद्दहणया सद्दहियस्सवा पत्तियस्सवा, रोइयस्सवा, सम्म काएण फासणया (१४) छइंदियत्था प० त० सोइंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे, णोइंदियत्थे (१५) छव्विहे संवरे प० तं० सोइंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे णो-इंदियसंवरे (१६) छव्विहे असंवर प० तं० सोइंदियअसंवरे जाव फासिंदिय

तृण वनस्पतिकाय अग्रबीज, मूलबीज, स्कंधबीज, बीजरूह और समूर्च्छिम ॥ २ ॥ सब जीवों को छ स्थानककी प्राप्तिहोनी सुलभ नहीं है १ मनुष्यभव २ आर्यक्षेत्र में जन्म, ३ उत्तमकुल में उत्पन्न होना ४ केवली प्ररूपित धर्मसुनना ५ उसकी श्रद्धा, प्रतीति व रुचि करना और ६ श्रद्धा प्रतीति व रुचि

नो० मनसवर छ० छप्रकार का अ० असंवर प० प्ररूपा सो० श्रोतेन्द्रिय असवर जा० यावत् का स्पर्श न्द्रिय नो० मनअसंवर छ० छप्रकार की सा० साता सो० श्रोतेन्द्रिय साता जा० यावत् नो० मनसाता छ०प्रकार की अ०असाता सो०श्रोतेन्द्रिय असाता जा०यावत नो०मनअसाता ॥२॥ छ०छप्रकार का पा० प्राय श्चित्त आ० आलोचना प० प्रतिक्रमण उ० आलोचना प्रतिक्रमण वि विवेक वि० कायोत्सर्ग त० तप

असवरे, णोइंदिय असंवरे (१७) छव्विहे साए प० तं० सोइंदियसाए जाव नो इंदियसाए (१८) छव्विह असाए प० त० सोइंदियअसाए, जाव नोइंदियअसाए (१९) ॥ २ ॥ छव्विहे पायच्छित्ते प० त० आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदु भयारिहे विवेगारिहे, विउस्सग्गारिहे, तवारिहे छव्विहा मणुस्सा प० त० जंबूदीवगा

कर के सम्यक् प्रकार से काया से अंगीकार करना। इन्द्रियों के छ विषय कहे हैं श्रोतेन्द्रिय का विषय, चक्षुइन्द्रिय का विषय, घ्राणेन्द्रिय का विषय, रसेन्द्रिय का विषय स्पर्शेन्द्रिय का विषय और नोइन्द्रिय का विषय, ऐसेही छ इन्द्रियों को संयम में रखने से छ प्रकार का संवर कहा है और संयम में नहीं रखने से उक्त छ प्रकार का असंवर गिनाजाता है उक्त छ प्रकार से छ इन्द्रिय की छ साता व छ असाता कही है ॥ ३ ॥ छ प्रकार के प्रायश्चित्त कहे हैं १ आलोचना योग्य २ प्रतिक्रमण योग्य ३ दोनों योग्य ४ विवेक योग्य ५ कायोत्सर्ग योग्य और ६ तप योग्य। छ प्रकार के मनुष्य कहे हैं १ जम्बूद्वीप के

छ० छप्रकार के म० मनुष्य ज० जम्बूद्वीप के धा० धातकी खंडद्वीप के पु० पूर्वार्ध के धा० धातकी खंडद्वीप के प० पश्चिमार्ध के पो० पुष्करार्धद्वीप के पु० पूर्वार्ध के पु० पुष्करार्ध के प० पश्चिमार्ध के अ० अन्तरद्वीपके अ०अथवा छ० छप्रकारके म० मनुष्य स० सम्मूर्च्छिम क० कर्मभूमिके अ० अकर्मभूमिके अ० अन्तरद्वीप के ग० गर्भज म० मनुष्य क० कर्मभूमि के अ अकर्मभूमिके अ० अन्तरद्वीपके छ० छप्रकार के इ० ऋद्धिवन्त म मनुष्य अ० अरिहंत च चक्रवर्ती ब० बलदेव वा० वासुदेव चा० चारण वि० विद्याधर छ०

जम्बूद्दीवपुरत्थिमद्धगा, धायइसंडदीवपच्चत्थिमद्धगा, पोक्खरवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धगा, पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धगा, अंतरदीवगा। अहवा छव्विहा मणुस्सा प० तं० संमुच्छिममणुस्सा-कम्मभूमिगा, अकम्मभूमिगा, अंतरदीवगा, गब्भवक्कंतियमणुस्सा कम्मभूमिगा, अकम्मभूमिगा, अंतरदीवगा (२०) छव्विहा इड्ढिमंता मणुस्सा प० तं० अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेवा, वासुदेवा, चारणा, विज्जाधरा (२१) छव्विहा अ

२ धातकी खंडके पूर्वार्ध भाग के ३ धातकी खंड के पश्चिमार्ध भाग के ४ पुष्करार्धद्वीप के पूर्वार्ध के ५ पुष्करार्ध द्वीप के पश्चिमार्ध और ६ अंतरद्वीप के और भी छ प्रकार के मनुष्य कहे १ सम्मूर्छिम मनुष्य १ कर्मभूमिके, २ अकर्मभूमि के ३ अंतरद्वीप के ४ कर्म भूमि के गर्भज मनुष्य ५ अकर्म भूमि के गर्भज मनुष्य और ६ अंतरद्वीप के गर्भज मनुष्य । छ प्रकार के ऋद्धिवंत मनुष्य कहे १ अरिहंत

(क अ० अकर्मभूमि म० मनुष्य है० हेमवन्त के ए० एरणवन्त के ह० हरिवर्ष के र० रम्यकवर्ष के कु० कुरुवर्ष के अं० अन्तरद्वीप के छ छप्रकार की उ० अवसर्पिनी सु० सुषम सुषम जा० यावत् दु० दुषम दुषम छ० छप्रकार की ओ० उत्सर्पिणी दु० दुषम दुषम जा० यावत् सु० सुषम सुषम जं० जम्बूद्वीप के भ० भरत ए० एरवत ती० अतीत उ० उत्सर्पिणी में सु० सुषम सुषम स० काल में म० मनुष्य छ० छ ध० धनुष्य की स० सहस्र उ० ऊंच उ० ऊंचपने हो० थे छ० छअर्ध प० पल्योपम प० उत्कृष्ट

णिछिमता मणुस्सा प० तं० हेमवतगा, एरण्णवंतगा, हरिवसगा, रम्मगवसगा, कुरुवासिणो, अंतरदीवगा (२२) छव्विहा उसप्पिणी प० त० सुसमसुसमा, जाव दुसमदुसमा (२३) छव्विहा ओसप्पिणी प० त० दुसमदुसमा जाव सुसमसुसमा (२४) जम्बूदीवे दीवे भरहएरवएसु वासेसु तीताए उसप्पिणीए, सुसमसुसमाए समाए मणुया छधणुसहस्साइं उड्ढमुच्चत्तेण होत्था, छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं

२ चक्रवर्ती ३ बलदेव ४ वासुदेव ५ चारण और ६ विद्याधर। छ प्रकार के ऋद्धि रहित मनुष्य कहे हेमवंत के एरणवन्त के, हरिवास के, रम्यकवास के, कुरु (देवकुरु उत्तर कुरु) के और अंतर द्वीप के। छ प्रकार की उत्सर्पिणी सुषम सुषमा, सुषमा, सुषम दुषमा, दुषम सुषमा, दुषमा और दुषम दुषमा इससे उलटी छ प्रकार की अवसर्पिणी कही, दुषम दुषमा यावत् सुषम सुषमा जम्बूद्वीप में भरत

आ० आयुष्य पा० पूर्णकर जं० जंबूद्वीप के भ० भरत एरवत की इ० इस उ० अवसर्पिणी में सु० सुषम सुषम स० काल में ए० ऐसे ज० जंबूद्वीप के भ० भरत एरवत की आ० आगामिक ओ० उत्सर्पिणी में सु० सुषम सुषम में ऐ० ऐसे ज० जंबूद्वीप के दे० देवकुरु उ० उत्तरकुरु के म० मनुष्य छ० छ ध० धनुष्य स० सहस्र उ० ऊंचे उ० ऊंचपने छ० छके अर्ध प० पल्योपम उ० उत्कृष्ट आ० आयुष्य पा० पालते हैं ए० ऐसे धा० धातकीखण्डद्वीप के पु० पूर्व में च० चार आ० आलापक जा० यावत् पु०

पालइत्ता (२५) जंबूदीवेदीवे भरहेरवएसु वासेसु इमीसे उसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए एवंचेव (२६) जंबूभरहेरवए आगमिस्साए ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए एवंचेव, जाव छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउ पालइस्संति (२७) जंबूदीवेदीवे देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया छधणुसहस्साइं उड्ढमुच्चत्तेणं प० छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पाल्यति (२८) एवं धायइसंडदीवे पुरत्थिमद्धे चत्तारि आलावगा।

एरवत क्षेत्र में अतीत उत्सर्पणी के सुषम सुषम समय में मनुष्य की छ हजार धनुष्य की अवगाहना थी और छ अर्धपल्योपम अर्थात् तीन पल्योपम की स्थिति थी वैसेही वर्तमान अवसर्पिणी में है, और अनागत में होगा। जम्बूद्वीप में देवकुरु उत्तरकुरु में मनुष्य की छ हजार धनुष्य की अवगाहना और छ अर्धपल्योपम की स्थिति कही ऐसेही धातकी व पुष्करार्ध द्वीपके पूर्व पश्चिम के मीलकर चार २ आलापक

पुष्करार्ध के प० पश्चिमार्ध में च० चार आ० आलापक ॥४॥ छ० छप्रकार के स० संघयन व० वज्रऋषभ नाराच उ ऋषभनाराच ना० नाराच अ० अर्धनाराच की० कीलिका छे० छेवट छ० छप्रकार का सं० संठान स० समचतुरस्र नि० न्यग्रोध परिमंडल सा० सादि खु० कुब्ज वा० वामन हु० हुंड छ० छ सं० संस्थान अ आत्मस्वभाव रहित को अ अहित अ० अशुभ ज्ञा० यावत् अ० अनागामी

चत्तारि पुक्खरवरदीवड्ढ पच्चत्थिमद्धे चत्तारि आलावगा (२९) ॥ ४ ॥ छव्विहे संघयणे प० तं० वइरोसभणारायसंघयणे, उसभनारायसंघयणे, नारायसंघयणे, अद्धणरायसंघयणे, कीलियासंघयणे, छेवट्ठसंघयणे (३०) छव्विहे संठाणे प० त० समचउरंसे, णिग्गोहपरिमंडले, साई, खुज्जे, वामणे, हुंडे (३१) छट्ठाणा

मानना ॥ ४ ॥ छ संघयन कहे हैं १ वज्र ऋषभ नाराच संघयण २ ऋषभ नाराच संघयण ३ नाराच संघयण ४ अर्ध नाराच संघयण ५ कीलिका संघयण और ६ छेवट संघयण छ संस्थान कहे १ समचौरस संस्थान २ न्यग्रोध परिमंडल संस्थान ३ सादि, ४ कुब्ज ५ वामन और ६ हुंड अनात्मवंत (कषाय सहित पुरुष) को छस्थानक अहित करनेवाले, अशुभ, अक्षम, अनिश्रेय यावत् अनानुगामी होते हैं १ दीक्षा या जन्म का अभिमान करे २ शिष्यादिपरिवारका अभिमान करे ३ सूत्रज्ञानका अभिमान करे ४ तपश्चर्या का अभिमान करे ५ लाभका मान करे और ६ पूजा सत्कार का मानकरे आत्मस्वभावमें

वाले भ० हैं प० पर्याय प० परिवार सु० सूत्र त० तप ला० लाभ पू० पूजासत्कार छ० छस्थान अ० आत्मस्वभाव पानेको हि० हित जा० यावत् अ० संसार का अतकरने वाला भ० हैं प० पर्याय प० परिवार जा० यावत पू० पूजासत्कार छ० छप्रकार के जा० जातिआर्य म० मनुष्य अं० अंबष्ट क० कलिन्द् वे० विदेह वे० विदेहगा ह० हरिता चु० चुंचुणा छ० छह प० प्रकार इ० इभ्य जाति के छ० छप्रकार के कु० कुलआर्य म० मनुष्य उ० उग्र भो० भोग रा० राज इ० इक्ष्वाकु

अणत्तवतो अहियाए असुभाए जाव अणाणुगामियत्ताए भवति तं० परियाए, परियाले, सुए, तवे, लाभे, पूयासक्कारे (३२) छट्ठाणा अत्तवतो हियाए जाव अणुगामियत्ताए भवंति, त० परियाए, परियाले जाव पूयासक्कारे (३३) छव्विहा जाइ अरियामणुस्सा प० त० अंबट्ठाय, कलंदाय, वेदेहा वेदिगाइया हरिया, चुंचुणाचेव छ-ब्भेयाइब्भ जाइओ (३४) छव्विहा कुलारिया मणुस्सा प० त० उग्गा, भोगा,

रमण करनेवालेको छ स्थानक हित, शुभ, क्षेम यावत् अनुगामी होते हैं दीक्षा, परिवार, सूत्र तप, लाभ व पूजासत्कार का अभिमान नहीं करना छ प्रकारसे जाति[1] आर्य मनुष्य कहे हैं १ अंबष्ट २ कलिंद ३ विदेह ४ विदेहगा ५ हरिता ६ और चुंचुणा (ये छः इभ्यजातिकी स्त्री के पुत्र है) छ प्रकार

१ जाति आर्य मातृपक्षमे गिनागया है २ कुल पितृपक्ष में गिना जाता है

नि० विकुर्वणा ग० गतिपर्याय स० समुद्घात का० कालसंयोग द० दर्शनाभिगम णा० ज्ञानाभिगम जी० जीवाभिगम ए० एसे पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच जो० योनिवाले को म० मनुष्य को ॥ ८ ॥ छ० छकारन से स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ आ० आहार आ० करता णा० उल्लंघन करे नहीं वे० वेदना वे० वैयावृत्य इ० ईर्यासमितिकेलिये सं० संयमकेलिये पा० प्राणरक्षने केलिये छ० छ ध० धर्म

गइपरियाए, समुग्घाए, कालसंजोगे दसणाभिगमे, णाणाभिगमे, जीवाभिगमे, अजी वाभिगमे एवं पचेंदिय तिरिक्खजोणियाणवि मणुस्साणवि (३८) ॥ ५ ॥ छहिं ठाणेहिं समणे निग्गथे आहार माहारेमाणे णाइक्कमइ तं० वयणवेयावच्चे, इरियट्ठाए, य संजमट्ठाए, तहपाणवत्तियाए, छट्ठंपुणधम्मचिंताए। छहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे आहारं

जीव गमन करता है ऐसेही उक्त छ दिशाओ में जीवका आना, उत्पन्न होना, आहार लेना, वृद्धिपाना, हीन होना, विकुर्वणा करना, गतिपयाय, समुद्घात, कालसंयोग, दर्शनाभिगम, ज्ञानाभिगम, जीवाभिगम, अजीवाभिगम होता है वैसेही तिर्यंच पंचेन्द्रिय को जानना ॥ ५ ॥ छ कारन से साधु निग्रन्थ आहार करता हुआ जिनाज्ञा उल्लंघे नहीं १ क्षुधावेदनीयकी शांति करनेको २ वैयावृत्य करने को ३ ईर्यासमिति पालने को ४ संयम पालने को ५ प्राणरक्षण के लिए और ६ धर्मचिन्तवन के लिये । छ कारण से साधु आहार त्यजता हुआ जिनाज्ञा उल्लंघे नहीं १ रोग उत्पन्न होने से २ उपसर्ग प्राप्त होने से ३ ब्रह्मचर्य की गुप्ति के लिये

पा० ज्ञात को कौरव छ० छप्रकार की लो लोकस्थिति आ आकाश प० प्रतिष्ठित वा० वायु वा० वायु प० प्रतिष्ठित उ० उदधि उ० उदधि प० प्रतिष्ठित पु पृथ्वी पु पृथ्वी प प्रतिष्ठित त० त्रसस्थावर प्राणी अ० अजीव जी० जीव प० प्रतिष्ठित जी० जीव क० कर्म प० प्रतिष्ठित छ० छदिशा प० प्ररूपी पा पूर्व प पश्चिम दा० दक्षिण उ उत्तर उ० ऊर्ध्व अ अधो छ० छदिशा जी जीव को ग० गति प० प्रवर्तिक पा० पूर्व जा० यावत् अ० अधो ए० एते आ० आगति व० व्यतिक्रान्ति अ आहार बु वृद्धि नि० हानि

राइन्ना, इक्खागा, णाया, कोरवा (३५) छव्विहा लोगट्ठिई प० तं० आगास पइट्ठिए वाए, वायपइट्ठिएउदही, उदहिपइट्ठिया पुढवी, पुढविपइट्ठिया तसा थावरा पाणा, अजीवाजीवपइट्ठिया, जीवाकम्मपइट्ठिया, (३६) छद्दिसाओ पण्णत्ताओ त० पाईणा, पडीणा, दाहिणा, उईणा उड्ढा, अहा (३७) छहिं दिसाहिं जीवाणं गई पवत्तइ त० पाईणाए जाव अहाए। एवं मागई, वक्कती, आहारे, वुड्ढी, निवुड्ढी, विगुव्वणा,

से कुल आर्य का है १ उग्रकुल, २ भोगकुल ३ राजन्यकुल ४ इक्ष्वाकुकुल ५ ज्ञात कुल ६ कौरव कुल छ प्रकार की लोक स्थिति कही १ आकाश प्रतिष्ठित वायु २ वायु प्रतिष्ठित उदधि, ३ उदधि प्रतिष्ठित पृथ्वी ४ पृथ्वी प्रतिष्ठित त्रस स्थावर प्राणी रहे हैं ५ जीव के आधार से अजीव और ६ कर्म प्रतिष्ठित जीव रहा हुवा है छ दिशा कही:—पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, ऊंची और नीची उक्त छ दिशाओं में

उपाध्याय के अ० अवर्णवाद व० बोलता चा० चतुर्विधसंघ के अ० अवर्णवाद ब० बोलता म० पतके अ० आवेश से मो० मोहनीय क० कर्म के उ० उदय से छ० छ प० प्रमाद म० मद्य णि० निद्रा वि० विषय क० कषाय जु० जुत प० प्रत्युपेक्षणा छ० छप्रकार की प० प्रमाद प्रतिलेखना आ० आरभट संमर्दना व० वर्जना मो० मोसली प० प्रफ्फोट वि० व्याक्षिप्ता वे० वेदिका छ० छप्रकार की अ० अप्रमाद प० प्रतिलेखना अ० वस्त्रादि नचाव नहीं अ० शरीर नचावे नहीं अ० विक्षेप झटके नहीं मो० विनादेखे पछाडे नहीं छ० छपुरिमा व वखोडा पा० प्राणी पा० पानी में वि० शोधना छ० छ ले० लेश्या

पडिलेहणापमाए, छव्विहा पमायपडिलेहा, प० तं० आरभडासम्मद्दा, वज्जेयव्वायमा सलीतइया, पप्फोडणी चउत्थी, विक्खित्ता, वेइयाछट्ठा। छव्विहा अप्पमाय पडिलेहा प० त० अणच्चावियं अवलियं, अणाणुबंधी अमोसलिं चेव, छप्पुरिमाणवखोडा, पाणी

छ प्रकार की प्रमाद प्रतिलेखना कही १ आरभट जल्दी २ वस्त्रादि प्रतिलेखे २ समर्दना परस्पर वस्त्र लगावे ३ मोसली तिर्च्छा या गूढरसरसे ४ प्रस्फोटनी वस्त्र झटकना ५ व्याक्षिप्त ऊंचा नीचा डाले और ६ वेदिका घुटनेपर हाथ रखे। छप्रकारकी अप्रमाद प्रतिलेखना १ वस्त्रादि नचावे नहीं २ शरीर नचावे नहीं ३ विक्षेपझटके नहीं ४ विनादेखे वस्त्र रखे नहीं ५ प्रत्येक वस्त्र तीनविभागसे अलग २ देखे, पूंजे, और उसी वस्त्रके इसी तरफ के तीन विभाग से अलग २ देखे व पूंजे यह ६ पूरीमा और पीछे किये हुवे तीन

चितवना केलिये छ० प्रकारन से स० श्रमण नि० निग्रंथ आ० आहार को वो० छोडता उ० उल्लंघनकर नहीं आ० रोग से उ० उपसर्ग से ति० सहनशीलता ब ब्रह्मचर्य केलिये पा० प्राणदया त० तपकेलिये स० शरीर वो० छोडने को छ० छ कारन से आ० आत्मा उ० उन्माद पा० पावे अ० अरिहंत के अ० अवर्ण वाद व० बोलता अ० अरिहंत प्ररूपा ध धर्म का अ० अवर्णवाद ब० बोलता आ० आचार्य उ०

वोच्छिदमाणे णाइक्कमइ तं० आतंके, उवसग्गे, तितिक्खणे बंभचेरगुत्तीए, पाणदया तवहेउ,सरीरवोच्छेयणट्ठाए। छहिं ठाणेहिं आया उम्माय पाउणेज्जा तं० अरहंताणमवण्णवदमाणे, अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्ण वदमाणे, आयरियउवज्झायाणमवन्न वदमाणे, चाउवन्नस्ससंघस्सय अवन्न वदमाणे, जक्खावेसेणचेव मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएण

छव्विहे पमाए प० तं० मज्जपमाए णिद्दापमाए विसयपमाए, कसायपमाए, जूयपमाए,

४ जीव दया निमित्त से ५ तप करनेमे और ६ शरीर छोडनेसे (अनशन करनेसे) छ कारण से जीव उन्माद (मिथ्यात्व) पाता है १ अरिहंत के अवर्णवादबोलते २ अरिहंत प्ररूपित धर्मका अवर्णवाद बोलते ३ आचार्य उपाध्याय के अवर्णवाद बोलते, ४ चतुर्विध संघके अवर्णवाद बोलते ५ यक्षादिकके आवेशसे और ६ मोहनीय कर्मके उदयसे। छ प्रकार के प्रमादकहे १ मद्यप्रमाद २ निद्राप्रमाद ३ विषयप्रमाद ४ कषाय प्रमाद ५ जुवाखेलनेका प्रमाद और ६ प्रत्युपेक्षण प्रमाद (आहारादिक की गवेषणा करे नहीं)

रिपत्रा के दे• देवकी छ० छ पल्योपमकी ठि० स्थिति छ० छ दिशाकुमारी म० बडी रू० रूपा रू० रूपांसा सु• सुरूपा रू• रूपवती रू० रूपकांता रू० रूपप्रभा छ० छविद्युत्कुमारी म• बडी अ० आला स• शक्रा स० सतरा सो० सौदामिनी इं० इन्द्रा घ घनविद्युता घ० धरण णा० नागकुमारेन्द्रके णा० नागकुमारराजाका छ० छ अ० अग्रमहिषी भू० भूतान णा• नागकुमारेन्द्र के णा० नागकुमार राजा को छ• छअग्रमहिषी म• जैसे घ धरणेन्द्र को व० कहे स० सर्व दा• दक्षिण के जा० यावत् घो० घोष को स०

छद्दिसकुमारि महत्तरियाओ पण्णत्ताओ तं• रूवा, रूवंसा, सुरूवा, रूववइ, रूअकंता, रूयप्पभा (४९) छविज्जुकुमारि महत्तरियाओ पण्णत्ताओ तं• अला, सक्का, सतेरा, सोयामणा, इंदा, घणविज्जुया (५०) धरणस्सणं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो छअग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं• अला, सक्का, सतेरा, सोदामणा, इंदा, घणविज्जुया (५१) भुयाणंदस्सण णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो छअग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं• रूवा, रूवंसा, सुरूवा, रूववई रूवकंता, रूयप्पभा (५२)

स्थिति कही छ दिशा कुमारी कही १ रूपा, २ रूपांसा ३ सुरूपा ४ रूपवती ५ रूपकांता और ६ रूपप्रभा छ विद्युत् कुमारी कही १ आला २ शक्रा ३ सतेरा ४ सौदामिनी ५ इन्द्रा और ६ घनविद्युता धरणेन्द्र के नागकुमार का छ अग्र महिषियों कही आला, शक्रा, सतेरा, सौदामिनी, इन्द्रा और घनविद्युता

छ० कृष्ण आ० यावत् सु० शुक्ल प० पंचेंद्रिय ति० तिर्यंचयोनिकको छ० छलेश्या क० कृष्ण जा० यावत् सु० शुक्ल ए० ऐसे म० मनुष्यका दे० देवताको ॥ ३ ॥ स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा के सो० सोम म० महाराजाको छ० छ अ० अग्र देवी प० प्ररूपी ज० यम दे० देवेन्द्र दे० देवराजाके ज० यम म० महाराजाको छ० छ अ० अग्रमहिषी प० प्ररूपी ई० ईशान दे० देवेन्द्रकी म० मध्यम प० प

पाणविसोहणी। छल्लेस्साओ प०तं० कण्हलेस्सा, जाव सुक्कलेस्सा। पंचेंदियतिरिक्ख जोणियाणं छल्लेस्साओ प०तं० कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा, एवंमणुस्सदेवाणवि ॥ ६ ॥ सक्करसण देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारण्णो छअग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, (४६) सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो जमस्स महारन्नो छअग्गमहिसीओ प० (४७) ईसाणस्सणं देविंदस्स मज्झिम परिसाए देवाणं छपलिओवमाइं ठिई प० (४८)

विमाग को ऊपर नीचे और बीचमें यों तीनों विभागों को अलग २ देखे व पूंजे यह नवपखोडे हुए और ६ छेश्या मनुष्य जैसे इनमें लेकर इनना छ लेश्याओं कहीं कृष्ण नील, कापुत, तेजु, पद्म और शुक्ल यह छ लेश्याओं तिर्यंचपंचेन्द्रिय, मनुष्य व देवता को होती हैं ॥ ६ ॥ शक्रेन्द्र देवता के पूर्व दिशाके लोकपाल सोमनामक महाराजा को छ अग्रमहिषियों कहीं और दक्षिण दिशाके यम लोकपालको भी छ अग्रमहिषियों कहीं ईशान देवेन्द्र के मध्यम परिषदा के देवताओं की छ पल्योपमकी

से गि० ग्रहणकरे अ० संदेह रहित गि० ग्रहणकरे छ० छप्रकार कीई० ईहामति खि० शीघ्र इ० विचारकरे प० बहुतसार आ० पावत अ० संदेह रहित इ० विचारकरे छ० छप्रकार की अ अवायमति खि० शीघ्र अ० निश्चय करना जा० पावत् अ० संदेह रहित छ छप्रकार की धा० धारना ब० बहुत धा० धारनकरे ब बहुत प्रकार से धा० धारनकरे पो० पुरानीबात धा० धारनकरे दु० दुधर धा धारनकरे अ० अनिश्रित धा धारनकरे अ० संदेह रहित धा०

तं० खिप्पमीहइ, बहुमीहइ, जाव असंदिद्धमीहइ (५७) छव्विहा अवायमई प० तं० खिप्पमवेइ जाव असंदिद्ध अवेइ (५८) छव्विहा धारणा प० तं० बहुधारइ, बहुविह धारइ, पोराणंधारेइ, दुद्धर धारइ अणिस्सियं धारेइ, असंदिद्धधारेइ (५९) छव्विहे बाहिरए तवे प० तं० अणसणं, आमोयरिया, भिक्खायरिया, रसपरिच्चाए,

से अर्थ ग्रहण करे ४ संदेह अर्थ ग्रहण करे ५ चिन्हके अनुमान से ग्रहण करे और ६ संदेह रहित ग्रहण करे. जो विषय इन्द्रियोंने ग्रहण किया उसका विचार करे सो ईहा इसके छ भेद अवग्रह जैसे मानना विचारके निश्चय करना उसे अवाय कहते हैं इसके भी छ भेद उपर्युक्त कथनानुसार जानना और निश्चित की हुइ बात को बहुत काल तक याद रखना उसे धारना कहते हैं इसके छ भेद १ शीघ्र धारन करे २ बहुत प्रकार से धारण करे ३ पुरानी बात धारन करे ४ दुर्धर धारण करे ५ अनिश्रित धारन करे और ६ संदेह रहित धारन करे छ प्रकार के बाह्यतप कहे हैं १ अनशन, २ अवमोदर्य ३

ऐसे भू० भूतानेन्द्र के त० वैसे स० सब उ० उत्तर के णा० यावत् म० महाघोष के ध० धरणके णा० नागकुमार के णा० नागकुमार राजा को छ० छ सा० सामानिक स० सहस्र प० ऐसे भू० भूतानेन्द्र को णा० यावत् म० महाघोष को ॥ ७ ॥ छ० छप्रकार की आ० अवग्रहमति खि० शीघ्र गि० ग्रहणकरे ब० बिलम्ब से गि० ग्रहणकरे ब० बहुतरीति से मि० ग्रहणकरे धु० ध्रुव गे० ग्रहणकरे अ० अनुमान से

जहा धरणस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाण जाव घोसस्स (५३) जहा भूयाणंदस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाण जाव महाघोसस्स (५४) धरणस्सणं णागकुमारिन्दस्स णागकुमाररन्नो छसामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ एवं भूयाणंदस्सवि जाव महाघोसस्स (५५)॥७॥ छव्विहा ओग्गहमई प०तं० खिप्पमोगिण्हइ, बहुमोगिण्हइ बहुविधमोगिण्हइ, धुवमोगिण्हइ, अणिस्सियमोगिण्हइ, असंदिद्धमोगिण्हइ, (५६) छव्विहा ईहामई प०

भूतानेन्द्रके नाग कुमारकी छ अग्रमहिषियों कहीं रूपा, रूपांसा, सुरूपा रूपवती रूपकांता और रूपप्रभा ऐसेही धरणेन्द्रसमान सब दक्षिण दिशा के इन्द्रों को छ अग्रमहिषियों और भूतानेन्द्र समान सब उत्तर दिशाके इन्द्रोंको छ अग्रमहिषियों मानना नागकुमार राजाके धरणेन्द्रको छ हजार सामानिक देवता मानना और ऐसेही भूतानेन्द्र से लेकर महाघोष तक सब को छ२ हजार सामानिक मानना ॥ ७ ॥ अवग्रह मतिके छ भेद १ शीघ्रतासे अर्थ ग्रहण करे २ बहुत समय पीछे अर्थ ग्रहण करे ३ बहुत प्रकार

से गि० ग्रहणकरे अ० संदेहरहित गि० ग्रहणकरे छ० छप्रकार की ई० ईहामति खि० शीघ्र ई० विचारकरे ब० बहुतप्रकार
मा० यावत् अ० संदेह रहित ई० विचारकरे छ० छप्रकार की अ० अवायमति खि० शीघ्र अ० निश्चय करना जा०
यावत् अ० संदेह रहित छ० छप्रकार की धा० धारना ब० बहुत धा० धारनकरे ब० बहुत प्रकार से धा० धारनकरे पा०
पुरानीबात धा० धारनकरे दु० दुर्धर धा० धारनकरे अ० अनिश्रित धा० धारनकरे अ० संदेह रहित धा०

त० खिप्पमीहइ, बहुमीहइ, जाव असंदिद्धमीहइ, (५७) छव्विहा अवायमई प० त० खिप्पमवेइ जाव असंदिद्ध अवेइ (५८) छव्विहा धारणा प० त० बहुंधारइ, बहुविहं धारइ, पोराणंधारेइ, दुद्धरं धारेइ, अणिस्सियं धारेइ, असंदिद्धंधारेइ (५९) छव्विहे बाहिरए तवे प० तं० अणसणं, ओमोयरिया, भिक्खायरिया, रसपरिच्चाए,

मे अर्थ ग्रहण करे ४ संदेव अर्थ ग्रहण करे ५ चिन्हके अनुमान से ग्रहण करे और ६ संदेह रहित ग्रहण करे जो विषय इन्द्रियोंने ग्रहण किया उनका विचार करे सो ईहा इसके छ भेद अवग्रह जैसे जानना विचारके निश्चय करना उसे अवाय कहते हैं इसके भी छ भेद उपर्युक्त कथनानुसार जानना और निश्चित की हुई बात को बहुत काल तक याद रखना उसे धारना कहते हैं इसके छ भेद १ शीघ्र धारन करे २ बहुत प्रकार से धारण करे ३ पुरानी बात धारन करे ४ दुर्धर धारण करे ५ अनिश्रित धारन करे और ६ संदेह रहित धारन करे छ प्रकार के बाह्यतप कहे हैं १ अनशन, २ अवमोदर्य ३

कायकिल्सो, पडिसलीणया (६०) छव्विहे अब्भंतरिए तवे प० तं० पायच्छित्तं, विणओ, वेयावच्चं, सज्झाओ, झाणं, विउस्सग्गो (६१) छव्विहे विवादे प० तं० ओसक्कइत्ता, उस्सक्कइत्ता, अणुलोमइत्ता, पडिलोमइत्ता, मइत्ता, भेलइत्ता (६२) ॥ ८ ॥ छव्विहा खुड्डापाणा प० तं० बेंदिया, तेंदिया, चउरिंदिया, समुच्छिम पंचि-

भावार्थ-करे छ० छप्रकार का बा० बाह्यतप अ० अनशन आ० ऊनोदरी भि० भिक्षाचर्य र० रसपरित्याग का० कायक्लेश प० प्रति-संलीनता छ० छप्रकार का अ० आभ्यन्तरतप पा० प्रायश्चित्त वि० विनय वे० वैयावृत्य स० सज्झाय झा० ध्यान उ० कायोत्सर्ग छ० छप्रकार का वि० विवाद ओ० सरककर उ० उत्सुक बनकर अ० अनुकूल होकर प० प्रतिकूल होकर भ० सेवाकर मे० मीलकर ॥ ८ ॥ छ० छप्रकार

भिक्षाचर्य ४ रसपरित्याग ५ कायक्लेश ६ प्रति-संलीनता । आभ्यंतर तपके छ भेद कहे हैं प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान, और कायोत्सर्ग । छ प्रकार के विवाद कहे हैं १ अवसर देखकर एक बार पीछे हटे और फीर विवाद करे २ उत्सुक बनकर विवाद करे ३ प्रतिपक्षीका वचन पकडकर विवाद करे ४ प्रतिकूल वचन से विवाद करे ५ एक पक्ष सेवा कर विवाद करे और ६ प्रतिपक्षियों में मीलकर विवाद करे ॥ ८ ॥ क्षुद्रप्राणी के छ भेद कहे हैं द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, संमूर्च्छिम तीर्यंच

के स्तु• छद्मस्थ बें० बेइन्द्रिय तें० तेइन्द्रिय च० चौरेन्द्रिय स० समूर्च्छिम पं० पचेन्द्रिय ति० तिर्यंच योनिवाले ते• तेऊकाय वा० वायु काय छ० छप्रकार की गो० गोचरी प० कही अ० अर्धपेटा गो० गोमू त्राकार प० पतंग के मार्ग जैसे स० शंखावर्त की जैसे ग० जाकर प० पीछा आना जं० जम्बूद्वीप के मं० मेरुपर्वत की दा दक्षिण में इ• इस र० रत्नप्रभा पु पृथ्वी में छ० छअक्रमनीय म० महानरक लो• लोल लो० लोलुक उ० उदिष्ट नि० निर्दिष्ट ज० जरक प० प्रजरक च० चौथी पं० पंकप्रभा पु०पृथ्वी

विय तिरिक्खजोणिया, तेउकाइया, वाउकाइया (१३) छव्विहा गोयरचरिया प• तं• पेढा, अद्धपेढा, गोमुत्तिया, पतंगवीहिया संवुक्कवट्टा, गंतुपच्चागया [१४] जंबुद्दीवे-दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण मिमीसे रयणप्पभाए पुढवीए छ अवक्कंत महा निरया प• तं• लोले, लोलुए उद्दड्ढे, निद्दड्ढे जरए पज्जरए (१५) चउत्थीएण पंकप्प भाए पुढवीए छ अवक्कंत महानिरया प• तं• आरे, वारे, मारे रोरे रोरुए, खाड

पचेन्द्रिय, तेऊकाय और वायुकाय साधु छ प्रकार से गोचरी करते हैं १ पेटीके आकार से चार कोनेके चार घर स्पर्शे २ अर्धपेटीके आकार से दो कोनेके दो घर स्पर्शे ३ गोमूत्राकार एक इधरका और एक उधरका ४ पतंग की तरह छुटकर घरकी गोचरी ५ शंखके आवर्त समान एक घर उपरका और एक नीचेका और ६ उपाश्रय से नीकलता हुवाही गोचरी करता जावे अथवा पीछे आता गोचरी करता

छ० छ म० अकम्पीप म० महानरक मा० आर मा० मार मा मार रो० रोर रो० रोरुय खा० खाडखड ४ प्रथमदेवलोक में छ० छ वि० विमान पाथडा अ० अरत वि० विरत नी० नीरत नि० निर्मल वि० वितिमिर वि० विशुद्ध चं० चंद्र जो० ज्योतिष इन्द्र के ज्यो० ज्योतिष राजा के छ० छनक्षत्र पु० पूर्व में स० समक्षेत्र ती० तीसमुहूर्त के पु० पूर्वाभाद्रपद क० कृतिका म० मघा पु० पूर्वाफाल्गुनी मू० मूल पु० पूर्वाषाढा चं० चन्द्र ज्योतिषेन्द्र के ज्यो० ज्योतिष राजा को छ० छनक्षत्र ण० नक्षभाग अ० अर्धक्षेत्र प०

खडे (१६) बमलोएण कप्पे छविमाणपत्थडा प० त० अरए, विरए, नीरए निम्मले, वितिमिर, विसुद्दे [१७] चंदस्सण जोइसिंदस्स जोइसरन्नो छणक्खत्ता पुव्वंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता प० त० पुव्वाभद्दवया, कत्तिया, महा, पुव्वाफग्गुणी, मूलो, पुव्वासाढा (१८) चंदस्सण जोइसिंदस्स जोइसरन्नो छणक्खत्ता णत्तभागा

भावे जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की दक्षिण में रत्नप्रभा पृथ्वी में अकम्पनीय (बहुत खराब) छ नरक कहे १ लोल २ लोलुक, ३ उदग्ध ४ निर्दग्ध, ५ जरक और ६ प्रजरक चतुर्थ पंकप्रभा पृथ्वी में छ अपक्रांत नरक कहे १ आर २ वार ३ मार, ४ रोर, ५ रोरुय, ६ खाडखड छठा ब्रह्म देवलोक में छ विमान के पाथडे कहे हैं १ अरत, २ विरत, ३ नीरत, ४ निर्मल, ५ वितिमिर और ६ विशुद्ध ज्योतिष के इन्द्र चंद्रमा को पूर्वभाग में तीसमुहूर्त के छ नक्षत्र समक्षेत्र वाले कहे हैं १ पूर्वाभाद्रपद,

पन्दरह मुहूर्त के स० शतभिषा भ० भरणी अ० आर्द्रा अ० अश्लेषा सा० स्वाति जे० ज्येष्ठा चं० चन्द्र जो० ज्योतिषइन्द्र के जो० ज्योतिष राजा के छ० छ नक्षत्र उ० उभयभाग दि० दिनका अर्धक्षत्र प० पेंतालीस मुहूर्त के रो० रोहिणी पु० पुनर्वसु उ० उत्तरा फाल्गुनी वि० विशाखा उ० उत्तराषाढा उ० उत्तराभाद्र पद ॥ २ ॥ अ० अभिचन्द्र कु० कुलकर छ० छ ध धनुष्य स० सो उ० ऊंचे उ० ऊंचपने हो० थे भ० भरत रा० राजा चा० चातुरंत च० चक्रवर्ती छ छ पु० पूर्व स० लाख म० महाराज हो० थे पा०

अन्नखुक्खेत्ता पन्नरसमुहुत्ता प० तं० सयाभिसया, भरणी, अद्दा, अस्सेसा, साई, जेट्ठा (६६) चंदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसरन्नो छणक्खत्ता उभयभागा दिवड्ढक्खेत्ता पणयालीसमुहुत्ता प० तं० रोहिणी, पुणव्वसू, उत्तराफग्गुणी, विसाहा, उत्तरासाढा, उत्तराभद्दवया (७०) ॥ १ ॥ अभिचंदेणं कुलकरे छधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था (७७) भरहेणं राया चाउरंत चक्कवट्टी छपुव्वसयसहस्साइं महाराया होत्था

२ कृत्तिका ३ मघा ४ पूर्वाफाल्गुनी ५ मूल और ६ पूर्वाषाढा ज्योतिषके इन्द्र चंद्रमाके छ नक्षत्र सम योग के अर्धक्षेत्रवाले पंद्रह मुहूर्त के कहे हैं १ शतभिषा २ भरणी ३ आर्द्रा ४ अश्लेषा ५ स्वाति और ६ ज्येष्ठा ज्योतिष के इन्द्र चन्द्र को छ नक्षत्र उभयभाग के पेंतालीस मुहूर्त के कहे हैं १ रोहिणी २ पुनर्वसु ३ उत्तराफाल्गुनी ४ विशाखा ५ उत्तराषाढा और ६ उत्तराभाद्रपद ॥ १ ॥ अभिचन्द्र नामक

छ छ अ० अकमनीय म० महानरक मा० मार मा० मार मा मार रो० रोर रा० रोरुय खा० खादखड श महसेवलोक में छ० छ वि० विमान पाथड़ा अ० अरत वि०विरत नी०नीरत नि० निर्मल वि० वितिमिर वि० विशुद्ध च० चंद्र भो ज्योतिष इन्द्र के मा० ज्योतिष राजा के छ० छनक्षत्र पु० पूर्व में स० समक्षेत्र ती० तीसमुहूर्त के पु० पूर्वाभाद्रपद क० कृत्तिका म० मघा पु० पूर्वाफाल्गुनी मू० मूल पु० पूर्वा षाढा चं० चन्द्र ज्योतिषेन्द्र के मा० ज्योतिष राजा को छ० छनक्षत्र ण नक्तभाग अ० अर्धक्षेत्र प०

सहे (१६) बम्भलोए कप्पे छविमाणपत्थडा प० तं० अरए, विरए, नीरए निम्मले, वितिमिर, विसुद्दे [१७] चंदस्सण जोइसिंदस्स जोइसरन्नो छणक्खत्ता पुव्वभा गा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता प० तं० पुव्वाभद्दवया, कत्तिया, महा पुव्वाफग्गुणी, मूलो, पुव्वासाढा (१८) चदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसरन्नो छणक्खत्ता णत्तभागा

भावे जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की दक्षिण में रत्न प्रभा पृथ्वी में अकमनीय (बहुत खराब) छ नरक कहे १ लोल २ लोलुक, ३ उद्दिष्ट ४ निर्दिष्ट, ५ नरक और ६ प्रनरक चतुर्थ पंकप्रभा पृथ्वी में छ अपक्रांत नरक कहे १ आर २ वार, ३ मार, ४ रोर, ५ रोरुय, ६ खाडखड छट्ठा ब्रह्म देवलोक में छ विमान के पाथड़े कहे है १ अरत, २ विरत, ३ नीरत, ४ निर्मल, ५ वितिमिर और ६ विशुद्ध ज्योतिष के इन्द्र चंद्रमा को पूर्वभाग में तीसमुहूर्त के छ नक्षत्र समक्षेत्र वाले कहे हैं १ पूर्वाभाद्रपद,

के सो० सुख से म० अलगकरे नहीं ए० ऐसे फा० स्पर्शेन्द्रिय को ते० तेइन्द्रिय जीव स० समारंभी छ० छप्रकार का अ० असंयम क करे घा० घ्राणेन्द्रिय के सा० सुख से अ० अलगकरे घा० घ्राणेन्द्रिय दु० दुःख से स० संयोग म० होवे जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रिय क दु० दुःख से स० संयोग म० होवे जं० जंबूद्वीप में छ० छ अ० अकर्मभूमि हे० हेमवय ए० एरणवय ह० हरिवर्ष र० रम्यकवर्ष द० देवकुरु उ० उत्तरकुरु जं० जंबूद्वीप में छ० छक्षेत्र भ० भरत ए० एरवत हे० हेमवय ए० एरणवय ह० हरिवष

सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ एवंचेव फासामयाओवि, (७६) तेइंदियाण जीवा समारंभमाणस्स छव्विहे असयमे कज्जइ तं० घाणामयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवइ, घाणामएणं दुक्खेणं सजोयेत्ता भवइ, जाव फासामएणं दुक्खेणं संजोयेत्ता भवइ (७७) जम्बूद्दीवदीवे छअकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ तं० हमवए एरण्णवए,

छ प्रकारका संयम होता है घ्राणेन्द्रिय के सुखका वियोग होवे नहीं २ घ्राणेन्द्रिय के दुःखका संयोग बने नहीं ३ जिव्हेन्द्रिय के सुखका वियोग होवे नहीं ४ जिव्हेन्द्रिय के दुःखका संयोग होवे नहीं ५ स्पर्शेन्द्रिय के सुखका वियोग होवे नहीं और ६ स्पर्शेन्द्रिय के दुःखका संयोग मीले नहीं तेइन्द्रिय जीवोंका आरंभ करनेसे छ प्रकार का असंयम होता है घ्राणेन्द्रिय के सुखका वियोग होवे यावत् स्पर्शेन्द्रिय के दुःखका संयोग मीले. जम्बूद्वीप में छ अकर्मभूमी कही हैं १ हेमवय २ एरणवय ३ हरिवर्ष ४ रम्यकवर्ष ५ देवकुरु

र० रम्यकवर्ष ज० जंबुद्वीप में छ० छवर्षधर पर्वत चु० चुल्लहिमवन्त म० महाहिमवन्त नि० निषध नी० नीलवन्त रु० रुप्पी सि० शिखरी जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी दा० दक्षिण में छ० छकूट चु० चुल्लहिमवन्त वे० वैश्रमण म० महाहिमवन्त वे० वेरुलिय नि० निषध रु० रुचक ज० जंबूद्वीप के मं० मेरु की उ० उत्तर में छ० छकूट नी० नीलवन्त उ० उपदर्शन रु० रुप्पी म० मणिकंचन सि० शिखरी ति० तिगिच्छ ज० जंबू

हरिवासे, रम्मगवासे, देवकुरा, उत्तरकुरा (७८) जंबूदीवेदीवे छव्वासा प० तं० भरहे, एरव ए, हमवए, एरण्णवए, हरिवासे, रम्मगवासे, (७९) जम्बूदीवे छ वासहरपव्वया प० तं० चुल्लहिमवंते, महाहिमवंते, निसढे, नीलवंते, रुप्पी, सिहरी, (८०) जम्बूमंदरदाहिणेणं छकूडा प० तं० चुल्लहिमवंतकूडे, वेसमणकूडे महाहिमवंतकूडे, वेरुलियकू

और ६ उत्तरकुरु जम्बूद्वीप में छ क्षेत्र कहे हैं १ भरत २ एरवत ३ हेमवय ४ एरणवय ५ हरिवर्ष और ६ रम्यक्वर्ष जम्बूद्वीप में छ वर्षधर पर्वत १ चुल्लहिमवंत २ महाहिमवंत ३ निषध ४ नीलवंत ५ रुप्पी और ६ शिखरी जम्बूद्वीप के मेरुकी दक्षिण में छ कूट १ चुल्ल हिमवंत कूट, २ वैश्रमण कूट ३ महाहि मवंतकूट ४ वेरुलियकूट ५ निषध कूट और ६ रुचक कूट. जम्बूद्वीपके मेरुकी उत्तर में छ कूट १ नील वंतकूट, २ उपदर्शन कूट ३ रुप्पीकूट, ४ मणिकंचन कूट ५ शिखरी कूट और ६ तिगिच्छ कूट. जम्बूद्वीप में

द्वीप में छ० छमहाद्रह प० पद्मद्रह म० महापद्मद्रह ति० तिगिच्छद्रह के० केसरीद्रह पुं० पुंडरीकद्रह म० महापुंडरीकद्रह त० तहां छ० छदेवियों म० महर्धिक जा० यावत् प० पल्योपम ठि० स्थिति की प० रहती हैं सि० श्री हि० ह्री धि० धृति कि० कीर्ति बु० बुद्धि ल० लक्ष्मी जं० जंबूद्वीप के म० मेरु की दा० दक्षिण में छ० छमहानदियों गं० गंगा सि० सिन्धु रो० रोहिता रो० रोहितांसा ह० हरी ह० हरीकान्ता

डे, रुयगकूडे, (८२) जंबूमंदरउत्तरेणं छकूडा प० तं० नीलवंतकूडे, उवदंसणकूडे, रुप्पिकूडे माणिकंचणकूडे, सिहरिकूडे, तिगिच्छकूडे, (८२) जंबूद्दीवेदीवे छ महा दहा प० तं० पउमद्दहे, महापउमद्दहे, तिगिच्छद्दहे, केसरिद्दहे, पुंडरीयद्दहे, महा पुंडरीयद्दहे, (८३) तत्थणं छदेवयाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठिईया

पवत कूट ४ वेरुलिय कूट ५ निषध कूट और ६ रुचक कूट. जम्बूद्वीपके मेरुकी उत्तर में छ कूट १ नीलवंत कूट, २ उपदर्शन कूट ३ रुप्पि कूट, ४ मणिकंचन कूट ५ शिखरी कूट और ६ तिगिच्छ कूट जम्बूद्वीप में छ महाद्रह कहे १ पद्मद्रह, २ महापद्मद्रह, ३ तिगिच्छद्रह ४ केसरीद्रह ५ पुंडरीकद्रह और ६ महा पुंडरीकद्रह वहांपर पल्योपम की स्थितिवाली छ महर्धिक देवियों रहती हैं -श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी जम्बूद्वीप के मेरुकी दक्षिण में छ बडी नदियों कही हैं गंगा, सिंधु, रोहिता, रोहितांसा, हरि

ज॰ जंबूद्वीप के मे॰ मेरु की उ॰ उत्तर में छ॰ छमहानदी न॰ नरकान्ता णा॰ नारीकान्ता सु॰ सुवर्ण कुला रु॰ रूप्यकुला र॰ रक्ता र॰ रक्तवती ज॰ जंबूद्वीप के मे॰ मेरुकी पु॰पूर्वमें सी॰ सीतामहानदी के उ॰ दोनोंबाजु छ॰ छअंतरनदियों गा॰ गाहावती द॰ द्रहवती प॰ पंकवती त॰ तप्तजला म॰ मत्तजला उ॰ उन्मत्तजला जं॰ जंबूद्वीप के मे॰मेरुकी प॰पश्चिममें सी॰सीतोदा म॰ महानदी के उ॰ दोनों बाजु छ॰ छअन्तर

परिवसंति तं॰ सिरी, हिरी, धिई, कित्ती, बुद्धी, लच्छी (८४) जंबूमंदरदाहिणेणं, छमहानईओ पण्णत्ताओ तं॰ गंगा, सिंधू, रोहिया, रोहियंसा, हरी, हरिकंता (८५) जंबूमंदरस्स उत्तरेणं छ महाणईओ पण्णत्ताओ तं॰ णरकंता, णारिकंता, सुवण्णकूला रुप्पकूला, रत्ता, रत्तवई, (८७) जंबूमंदरपुरच्छिमेण सीयाए महाणदीए उभयकूल छ अंतरनईओ प॰ तं॰ गाहावई, दहवई, पंकवई, तत्तजला, मत्तजला, उम्मत्तजला, [८८] जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीओयाए महाणईए उभयकूले छ अंतर-

और हरिकान्ता जम्बूद्वीप के मेरुकी उत्तर में छ बडी नदियों कही हैं नरकान्ता, नारीकान्ता, सुवर्णकूला रूप्यकूला, रक्ता और रक्तवती जम्बूद्वीप के मेरु पर्वतकी पूर्वदिशा में सीता महानदी के दोनों किनारे पर छ अंतर नदियों कही हैं १ गाहावती २ द्रहवती ३ पंकवती ४ तप्तजला ५ मत्तजला और ६ उन्मत्तजला जम्बूद्वीप के मेरुकी पश्चिम दिशा में सीतोदा महानदी के दोनों किनारेपर छ अंतर नदियों कही

नदियां सी० सीरोदा सी० सिंहस्रोता अं० अंतर्वाहिनी ऊ० ऊर्मिमालिनी फे० फेनमालिनी ग० गंभीर मालिनी धा० धातकी खंडद्वीप के पु० पूर्वार्ध में छ० छ अकर्मभूमि हे० हेमवय ज० जैसे जं० जंबूद्वीप में त० तैसे जा० यावत् अं० अन्तरनदियां पु० पुष्कर वरद्वीप के प० पश्चिमार्ध में भा० कहना ॥ १० ॥ छ० छ ऋतु पा० प्रावृट् व० वर्षाऋतु स० शरद् हे० हेमन्त सि० शिशिरऋतु व० वसन्त गि० ग्रीष्म छ० छ ओ० अवमरात्रि त० तीजापक्ष में स० सातवापक्ष में ए० ग्यारवापक्ष में प० पन्दरहवेपक्ष में ए० गु

णईओ प० तं० खीरोदा, सीहसोया, अंतोवाहिणी, उम्मिमालिणी, फेनमालिणी, गंभी-रमालिणी (८९) धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धेण छ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ तं० हेमवए जहा जंबुदीवे तहा जाव अंतरणईओ जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे भा-णियव्वं (९०) ॥ १० ॥ छ उऊ प० तं० पाउसे, वरिसारत्ते, सरए, हेमंते, सि सिरत्ते, वसंते, गिम्हे (९१) छ ओमरत्ता प० तं० तइएपव्वे, सत्तमेपव्वे,

है सीरोदा सिंहस्रोता, अंतर्वाहिनी ऊर्मिमालिनी, फेनमालिनी, और गंभीरमालिनी जैसे जम्बूद्वीपका अधिकार कहा वैसेही धातकी खंडके पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध तथा अर्ध पुष्कर द्वीपके पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध का अधिकार जानना ॥ १० ॥ ऋतुके छ भेद कहे हैं १ वर्षाऋतु, २ शरद् ३ हेमन्त ४ शिशिर ५ वसन्त और ६ ग्रीष्म. छ अवमरात्रि (तिथिक्षय) कही १ तीसरा पक्ष सो भाद्रपदका कृष्णपक्ष में

१ जैन सूत्रानुसार आषाढ वदी प्रतिपदा से संवत्सर गिनाजाता है

मं० जंबूद्वीप के प० मेरु की उ० उत्तर में छ० छमहानदी ण० नरकान्ता णा० नारीकान्ता सु० सुवर्ण कूला रु० रूपकूला र० रक्ता र० रक्तवती जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी पु०पूर्वमें सी० सीतामहानदी के उ० दोनोंबाजु छ० छअंतरनदियाँ गा० गाहावती द० द्रहवती प० पंकवती त० तप्तजला म० मत्तजला उ० उन्मत्तजला जं० जंबूद्वीप के मं०मेरुकी प०पश्चिममें सी०सीतोदा म महानदी के उ० दोनों बाजु छ० छअन्तर

परिवसंति तं० सिरी, हिरी, धिई, कित्ती, बुद्धी, लच्छी (८४) जंबूमंदरदाहिणेणं, छमहानईओ पण्णत्ताओ तं० गंगा, सिंधू, रोहिया, रोहियंसा, हरी, हरिकंता (८६) जंबूमंदरस्स उत्तरेणं छ महाणईओ पण्णत्ताओ तं० णरकंता, णारिकंता, सुवण्णकूला रुप्पकूला, रत्ता, रत्तवई, (८७) जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणदीए उभयकूले छ अंतरनईओ प० तं० गाहावई, दहवई, पंकवई, तत्तजला, मत्तजला, उम्मत्तजला, [८८] जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीओयाए महाणईए उभयकूले छ अंतर

और हरिकान्ता जम्बूद्वीप के मेरुकी उत्तर में छ बडी नदियाँ कही हैं नरकान्ता, नारीकान्ता, सुव र्णकूला रूपकूला, रक्ता और रक्तवती जम्बूद्वीप के मेरु पर्वतकी पूर्वदिशा में सीता महानदी के दोनों किनारे पर छ अंतर नदियाँ कही हैं १ गाहावती २ द्रहवती ३ पंकवती ४ तप्तजला ५ मत्तजला और ६ उन्मत्तजला जम्बूद्वीप के मेरुकी पश्चिम दिशा में सीतोदा महानदी के दोनों किनारेपर छ अंतर नदियाँ कही

नदियां सी० क्षीरोदा सी० सिंहश्रोता अं० अंतर्वाहिनी उ० ऊर्म्मिमालिनी फे० फेनमालिनी ग० गंभीर मालिनी धा० धातकी खंडद्वीप के पु० पूर्वार्ध में छ० छअकर्मभूमि हे० हेमवय ज० जैसे जं० जम्बूद्वीप में त० तैसे जा० यावत् अं० अन्तरनदियां पु० पुष्कर वरद्वीप के प० पश्चिमार्ध में भा० कहना ॥ १० ॥ छ० छऋतु पा० प्रावृट व वर्षाऋतु स० शरद हे० हेमन्त सि० शिशिरऋतु व० वसन्त गि० ग्रीष्म छ० छ ओ० अवमरात्रि त० तीजापक्ष में स० सातवापक्ष में ए० अगीयारवापक्ष में प० पन्नरहवेपक्ष में ए० गु

णईओ प० तं० खीरोदा, सीहसोया, अंतोवाहिणी, उम्मिमालिणी, फेनमालिणी, गभीरमालिणी (८९) धायइखंडदीवपुरच्छिमद्धेण छ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ तं० हेमवए जहा जंबुदीवे तहा जाव अंतरणईओ जाव पुक्खरवरदीवपच्चत्थिमद्धे भाणियव्वं (९०) ॥ १० ॥ छउऊ प० तं० पाउसे, वरिसारत्ते, सरए, हेमंते, सिसिरत्ते, वसंते, गिम्हे (९१) छ ओमरत्ता प० तं० तइएपव्वे, सत्तमेपव्वे,

है क्षीरोदा सिंहश्रोता, अंतर्वाहिनी ऊर्मिमालिनी, फेनमालिनी, और गंभीरमालिनी जैसे जम्बूद्वीपका अधिकार कहा वैसेही धातकी खंडके पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध तथा अर्ध पुष्कर द्वीपके पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध का अधिकार जानना ॥ १० ॥ ऋतुके छ भेद कहे हैं १ वर्षाऋतु, २ शरद् ३ हेमन्त, ४ शिशिर ५ वसंत और ६ ग्रीष्म. छ अवमरात्रि (तिथिक्षय) कही [१] तीसरा पक्ष सो भाद्रपदका कृष्णपक्ष में

[१] जैन सूत्रानुसार श्रावण वदी प्रतिपदा से संवत्सर गिनाजाता है

एगारसमेपव्वे, पन्नरसमेपव्वे, एगूणवीसइमेपव्वे तेवीसइमे पव्वे (१२) छ अइरत्ता प० तं०
घठत्थेपव्वे अट्ठमेपव्वे, दुवालसमेपव्वे, सोलसमेपव्वे, वीसइमेपव्वे, चउवीसइमेपव्वे
(१३) आभिणिबोहियणाणस्सणं छव्विहे अत्थोग्गहे प० तं० सोइंदियत्थोग्गहे
जाव नोइंदियत्थोग्गहे (१४) छव्विहे ओहिणाणे प० तं० अणुगामिए, अणाणुगा

भवमें पक्ष में ते० तेवीसवेपक्ष में छ० छअतिरात्रि च० चौथापक्ष में अ० आठवापक्ष में दु० द्वादशपक्ष में सो० सोलहवपक्ष में वी० वीसवपक्ष में च० चौवीसवेपक्ष में आ० मतिज्ञान को छ० छप्रकार का अ० अर्थावग्रह सो० श्रोतेन्द्रिय जा० यावत् नो० मन अर्थावग्रह छ० छप्रकार का ओ० अवधिज्ञान अ० अनुगामिक अ० अननुगामिक व० वर्द्धमान ही० हीयमान प० प्रतिपाती अ० अप्रतिपाती नो० नहीं क० कल्पता है नि० साधु

एक तिथिका क्षय होवे २ सातवा पक्ष सो कार्तिक कृष्ण पक्ष में एक तिथिक्षय होवे ३ अग्यारहवा पक्ष सो पोषवदी में एक तिथि क्षय होवे ४ पनरहवा पक्ष सो फाल्गुन कृष्ण पक्ष में एक तिथिका क्षय होवे ५ गुनीसवा पक्ष सो वैसाख वदी में एक तिथिका क्षय होवे और ६ तेइसवा पक्ष सो अषाड वदी में एक तिथि का क्षय होवे छ अतिरात्रि (तिथि बढना) कही १ चौथा पक्ष भाद्रपद शुदी में एक तिथि बढे २ आठवा पक्ष सो कार्तिक शुदि में एक पक्ष बढे ३ बारहवा पक्ष सो पोष शुदी में एक तिथि बढे ४ सोलवा पक्ष फाल्गुन शुदी में एक तिथि बढे ५ वीसवा पक्ष सो वैशाख शुदी में एक तिथि बढे और ६ चोवीसवा

नि० साध्वी को अ० अवचन व० बोलने को अ० झुठावचन ही० हीलना का वचन खिं० ईर्षाका वचन फ० कठिन वचन गा० गृहस्थ वचन वि० समाहुवा पु० फीर उ० उदय करने को छ० छ क० साधुको प० प्रायश्चित्त पा० प्राणातिपातका व० वचन बोलता मु० मृषावादका व० वचन बोलता अ० अदत्तादान का वचन व बोलता अ अविरति वचन व० बोलता अ० अपुरुष का वचन बोलता दो० दोष व० वचन बोलता

मिए वड्डमाणए, हीयमाणए, पडिवाइ, अपडिवाइ (१५) नोकप्पइ निग्गंथाणवा निग्गंथीणवा इमाइं छ अवयणाइ वइत्तए तं० अलियवयणे, हीलियवयणे, खिंसियवयणे फरुसवयणे, गारत्थियवयणे, विउसमियवापुणोउदीरेत्तए (१६) छ कप्पस्स पत्थारा प० तं० पाणाइवायस्स वायं वयमाणे, मुसावायस्सवायंवयमाणे, अदिन्नादाणस्स वायं वयमाणे,

पस सो अपाद सुदी में एक तिथि बढे मति ज्ञान के छ प्रकार का अर्थावग्रह कहा है श्रोतेन्द्रिय अर्थाव ग्रह, चक्षुइन्द्रिय अर्थावग्रह, घ्राणेन्द्रिय अर्थावग्रह, रसेन्द्रिय अर्थावग्रह, स्पर्शेन्द्रिय अर्थावग्रह और नोइन्द्रिय अर्थावग्रह अवधि ज्ञानके छ भेद अनुगामी, अननुगामि, वर्धमान, हीयमान, प्रतिपाति और अप्रतिपाति साधु साध्वी को छ प्रकार स अवक्तव्य वचन बोलना नहीं कल्पता है १ असत्य वचन, २ हीलणाका वचन ३ खि० णा छिद्र प्रगट करनेका वचन ४ कठिन वचन ५ गृहस्थका वचन (मा पुत्र वगैरह) और ६ शान्त हुआ क्लेश की उदीरणा होवे वैसा छ प्रकार के वचन बोलने से साधु को प्रायश्चित्त आता है १ प्राणातिपातका

इ० इन छ० छ क० साधु को प० प्रायश्चित स० सम्यक् प्रकार स अ०प्रायश्चित नहीं लेता ठ० उस ठा० स्थान को प० प्राप्त है छ० छ क० साधु को प० पलिमंथु कु० कुचेष्टा करता सं० संयम का मो० मुखरी स० सत्यवचन का च० चक्षुलोलुपी इ० ईर्यासमिति का ति० तिंतिणीक ए० एषणा समिति का इ०इच्छालाभी मो०मुक्तिमार्गका भि० लोभसे नि० नियाणा करने से मो०मोक्षमार्गका स०सर्वस्थान

अविरइवायंवयमाणे, अपुरिसवायंवयमाणे, दोसवायंवयमाणे, इच्चेए छ कप्पस्स पत्थारे पत्थरेत्ता सम्मम पडिपूरेमाणे तट्ठाणपत्ते (१७) छ कप्पस्सपलिमंथू प० त० कु क्कुइए संजमस्सपलिमंथू, मोहरिए सच्चवयणस्स पलिमंथू चक्खुलोलए इरियावहिया पलिमंथू, तिंतिणिए एसणागोयरस्सपलिमंथू, इच्छालोभे मोत्तिमग्गस्सपलिमंथू, भिज्जा

वचन बोलते २ मृषावाद बोलते ३ अदत्तादान की वार्तालाप करते ४ अविरति स्त्री की कथा करते, ५ यह नपुंसक है ऐसी बात करते और ६ किसी के दोष प्रगट करते इन छ की कथा करने से गुरु प्रा प्रायश्चित देवे उसे अंगीकार न करे तो वह उन प्राणातिपातादिक का करनेवाला है ऐसा जानना आचार में छ प्रकार के पलिमंथु (मैथनकरनेवाले) कहे १ कुत्सित मनुष्य की तरह अंगकी व उपकरण की कुचेष्टा करे सो संयमका पलिमंथु, २ बिना विचारा वचन बोले सो सत्य वचन का पलिमंथु ३ चक्षुलोलुपी सो ईर्यापथिक का पलिमंथु ४ अलाभ से खिजता हुआ इच्छानुसार बोले सो पलिमंथु ५ लोभरसे सो

म० भगवानने अ० अनियाणा प० प्रशस्त कीया छ० छप्रकार की क० कल्पस्थिति सा० सामायिक छ० छेदोपस्थापनिक नि० परिहार विशुद्ध नि परिहार विशुद्ध पूर्ण की जि० जिनकल्प की थे० स्थविर कल्प की ॥ ११ ॥ स० श्रमण भ भगवान् म० महावीर छ० छठ भक्त से अ० चौविहार मुं० मुंड जा० यावत् प० प्रव्रजित हुवे अ० अनंत अ० अनुत्तर जा० यावत् म० उत्पन्न हुआ सि० सिद्धुत्र

णिदाणकरणे मोक्खमग्गस्सपलिमंथू । सव्वत्थभगवया अणिदानता पसत्था (९८)
छव्विहा कप्पट्ठिई प० त० सामाइयकप्पट्ठिई, छेओवट्ठावणीयकप्पट्ठिई, नि
व्विसमाणकप्पट्ठिई, निव्विट्ठकप्पट्ठिई, जिणकप्पकप्पट्ठिई, थेरकप्पट्ठिई, (९९) ॥ ११॥
समणे भगवं महावीरे छट्ठेण भत्तेणं अपाणएण मुंडे जाव पव्वइए (१००)

मुक्तिमार्ग का पलिमंथु और ६ नियाणा करने वाला होवे सो मोक्षमार्ग का पलिमंथु क्योंकि भगवन्तने सर्वत्र नियाणा नहीं करना श्रेष्ठ कहा है छ प्रकार की कल्पस्थिति कही है:-सामायिक कल्पस्थिति छेदोपस्थापनीय कल्पस्थिति, परिहार विशुद्ध चारित्र पालता है जिसकी कल्पस्थिति, परिहार विशुद्ध चारित्र पाल चुके उसकी कल्पस्थिति, जिनकल्पी साधु की मर्याद, और स्थविर कल्पस्थिति ॥ ११ ॥ श्रमण भगवंत महावीर चौविहार छठ भक्तसे प्रव्रजित हुवे और चौविहार छठ भक्तसे अनंत अनुत्तर केवल ज्ञान दर्शन

ना० यावत् स० सर्व दुःख छोडे स० सनत्कुमार मा० माहेन्द्र क० कल्प में वि० विमान छ० छसोमने स० सव र ऊंचे उ० ऊंचपने स० सनत्कुमार मा० माहेन्द्र कल्प में दे० देवकी भ० भवधारनीय स० शरीर उ० उत्कृष्ट छ छहाथ उ० ऊंचे उ० ऊंचपने छ० छप्रकार का भो० भोजन परिणाम म० मनोज्ञ र० रसयुक्त पी० प्रीणनीय बिं बृंहणीय दी० दीपनीय द० दर्पणीय छ० छप्रकार का वि० विषपरिणाम

समणस्स भगवओ महावीरस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं अणंते अणुत्तरे जाव समुप्पन्ने (१•१) समणे भगवं महावीरे छट्ठेण भत्तेणं अपाणएण सिद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे (१•२) सणंकुमारमाहिंदेसुण कप्पेसु विमाणा छजोयणसयाई उड्ढं उच्चत्तेणं प• (१•३) सणकुमार माहिंदेसुणं कप्पेसु देवाण भवधारणिज्जगा सरीरगा उक्कोसेणं छरयणीओ उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ता (१•५) छव्विहे भोयण-

उत्पन्न हुआ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी चौविहार छठ भक्त से सब दुःख रहित बन मुक्ति में गये तीसरा सनत्कुमार और चौथा माहेन्द्र देवलोक में छसो योजन के विमान कहे हैं और इस में रहनेवाले देवताओं की भवधारणीय अवगाहना उत्कृष्ट छ हाथ की कही है छ प्रकार के भोजन के परिणाम कहे हैं १ मनोज्ञ रसका भोजन अभिलषणीय होता है २ रसित सो मधुर रसादियुक्त ३ प्रीणनीय सो सप्तधातु को सम करता है ४ बृंहणीय सो धातु की पुष्टि करता है ५ दीपनीय जठराग्नि व शक्ति

परिणामे प० त० मणुन्ने, रासिए, पीणणिज्जे, विंहणिज्जे, दीवणिज्जे, दप्पाणिज्जे, (१०५) छव्विहे विसपरिणामे प० त० डक्के, भुत्ते, निव्वइए, मसाणुसारी, सोणियाणुसारी, अट्ठिमिंजाणुसारी (१०६) छव्विहे पट्ठे प० तं० ससयपट्ठे, वुग्गहपट्ठे, अणुजोगी, अणुलोमे, तहणाणे, अतहणाणे (१०७) चमरस्सणं रायहाणी उक्कोसेण छमासा विरहिया उववाएण (१०८] एगमेगेणं इंदट्ठाणे उक्कोसेण

द० दाहका मु० खानेयोग्य का नि० उपगमानका हुवा म० मांसानुसारी सो० शोणितानुसारी अ० अस्थामिं जानुसारी छ० छमकार की प० पृच्छा सं० संशय वु० व्युद्ग्रह अ० अनुयोग अ० अनुलोम त० तथ्य ज्ञान अ० अज्ञान च० चमरचंचा रा० राजधानी में उ० उत्कृष्ट छ० छमास का वि० विरह उ० उपजन का ए० एक २ इं० इन्द्रस्थान में उ० उत्कृष्ट छ० छमास का वि विरह उ० उपजने का

बढ़ता है और ६ दर्पणीय सो उत्साह में वृद्धि करता है छ मकार का विषका परिणाम कहा है १ डक्क सो दाढ में विष जैसे सर्प मनुष्य के २ भुक्त खाने योग्य अफीम प्रमुख ३ उपर लगने से विष परिणमे सो सोमलादि ४ कितनेक विष मांस में परिणमनेवाले होते हैं ५ कितनेक रुधिर में परिणमनेवाले होते हैं और ६ कितनेक विष हड्डीकी मिंमी में परिणमने वाले होते हैं छ मकार के प्रश्न कहे हैं १ संशय उत्पन्न होनेसे पूछे २ दूसरे पक्ष को दोष देनेके लिये पूछे ३ अनुयोग सो व्याख्यान करते समय प्रश्न

आयुष्य १० बांधे ए० ऐसे अ० असुर कुमार जा० यावत् थ० स्थनितकुमार अ० असंख्यात वा० वर्ष के आ० आयुष्य वाले स० सन्नी प० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच णि० निश्चय छ० छमास अ० अवशेष आ० आयुष्य प० दूसरा भवका आ० आयुष्य प० बांधे अ० असंख्यात वा० वर्षके आ० आयुष्य वाले स० सन्नी म० मनुष्य णि० निश्चय जा० यावत् प० बांधे वा० व्यानव्यं जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक ज० जैसे ण० नारकी ॥ १२ ॥ छ० छप्रकार का भा० भाव उ० उदय उ० उपशम ख० क्षायिक ख० क्षयोप

णामणिहत्ताउए एवं जाव वेमाणियाण (११३) णेरइया छम्मासावसेसाउया परभवियाउय पगरेंति ॥ एव असुरकुमाराधि जाव थणियकुमारा ॥ असंखेज्जवासाउया सन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिया णियमं छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पगरेंति ॥ असंखेज्जवासाउया सन्निमणुस्सा णियमं जाव पगरेंति ॥ वाणमंतरजोइसिया वेमाणिया जहा णेरइया (११४) ॥ १२ ॥ छव्विह भावे प० तं० उदइए, उवसमिए,

नाम कर्म, ४ अवगाहना सो औदारिक शरीर से बंधा हुआ आयुष्यकर्म ५ आयुष्य कर्मके प्रदेश से बंधा हुआ सो प्रदेश नाम कर्म और ६ उस के रससे बांध सो अनुभाग नामकर्म नारकी से लेकर वैमानिक तक सब जीवोंका छ प्रकार का आयुष्य का बंध कहा है सात नारकी, दश भुवनपति, असंख्यात वर्षके आयुष्य वाले सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, असंख्यात वर्षकी स्थिति वाले मनुष्य, व्यंतर, ज्योतिषी वैमानिक य सब अपना आयुष्य छमास शेष रहे तब पूर्व भवका आयुष्य बांधते हैं ॥१२॥ छभाव कहे हैं आगे

श्रम प० पारिणामिक स० सन्निपातिक छ० छप्रकारका प० प्रतिक्रमण उ० वडीनीतका पा० लघुनीतका इ० थोडाकालका आ० महाव्रतरूप पं० कांई मि० मिथ्यात्व सो० कायोत्सर्ग क० कृत्तिका प नक्षत्रके छ० छतारे अ० अश्लेषा ण० नक्षत्रके छ छतारे छ छस्थान नि० निर्वर्तिक पो० पुद्गल पा० पापकर्मपने

खइए, खयोवसमिए, पारिणामिए, संनिवाइए (११५) छव्विहे पडिक्कमणे प० तं० उच्चारपडिक्कमणे, पासवणपडिक्कमणे, इत्तरिए, आवकहिए, जकिंचिमिच्छा, सोमणंइए (११६) कत्तियाणक्खत्ते छतारे प० (११७) आसिलेसाणक्खत्ते छतारे प० (११८) छट्ठाणानिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसुवा चिणितिवा,

कर्म उदय में भाव सो उदयभाव, २ मोहनीय कर्मका उपशम होवेसो उपशम भाव ३ आठों कर्मोका क्षय करे सो क्षायिकभाव ४ चार घनघाति कर्मोका क्षयकरे सो क्षायोपशमिक ५ पारिणामिक भाव सो कर्म स्वभाव और ६ सन्निपातिक भाव उक्त पांचो में एक से एकका या विशेषका संयोग होना छप्रकार के प्रतिक्रमण कहे १ वडीनीत परठावे पीछे ईर्यावहि करे २ लघुनीति परठावे पीछे ईर्यावहि करे ३ इत्वर थोडा कालका प्रतिक्रमण देवसी रायसी प्रमुख, ४ आप कहा जैसा महाव्रत कहा है वैसा जाव जीव तक पालनेरूप ५ थोडा दोष लगेतो मिथ्या दुष्कृत देना और ६ निद्रा में से उठकर ईर्यावहि पडिकमें कृत्तिका व अश्लेषा नक्षत्र के छ तारे कहे हैं छ स्थान निष्पन्न पुद्गल जीवने गतकाल में

चि० इकठ्ठे किये पु० पृथ्वीकायनिवार्तक जा० यावत् त० त्रसकाय नि० निवर्तिक चि० चिन उ० उप चिन बं० बंध उ० उदीर वे० वेद नि० निर्जरा छ० छप्रदेशी खं० स्कन्ध अ० अनंत प० प्ररूपे छ० छप्रदेशमवगाढा पो० पुद्गल अ० अनंत छ० छसमय की ठि० स्थितिवाले पो० पुद्गल अ० अनंत छ० छगुण काला पो० पुद्गल जा० यावत् छ० छगुणरूक्ष पो० पुद्गल अ० अनंत प० प्ररूपे ॥ १३ ॥ * *

चिणिस्सतिवा त० पुढविकाइय निव्वत्तिए जाव तसकाइय निव्वत्तिए ॥ एवं चिण उवचिणबंधउदीरवेयतहानिज्जरा चेव (११८) छप्पएसियाणं खधा अणता प० (११९) छप्पएसोगाढा पोग्गला अणंता (१२०) छसमयट्ठिईया पोग्गला अणंता (१२१) छ गुणकालगापोग्गला जाव छगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता (१२२) ॥ १३ ॥ इति छट्ठट्ठाण सम्मत्त ॥ * * *

चिने [संचयकिये], करता है करेगा, पृथ्वीकाय निवार्तिक यावत् त्रसकाय निवर्तिक ऐसेही चिन, उपचिन, बंध, उदिरणा, वेद और निर्जराका जानना छ प्रदेशी स्कन्ध अनंत छ प्रदेश अवगाढा पुद्गल अनंत, छ समय की स्थितिवाले पुद्गल अनत और छ गुणकाला यावत् छ गुणरूक्ष पुद्गल अनंत कहे हैं यह छठा ठाणा समाप्त हुआ * * *

॥ सप्तमं स्थानकम् ॥

स॰ सात प्रकारसे कहे हैं ग॰ गणापक्रमण स॰ सर्वधर्म रो॰ रुचता है ए॰ कुच्छ रो॰ रुचता है ए॰ कुच्छ नो॰ नहीं रो॰ रुचता है स॰ सर्वधर्म वि॰ संशय करता हूं ए॰ कुच्छ वि॰ संशय करता हूं ए॰ कुच्छ नो॰ नहीं

सत्तविहे गणावक्कमणे प॰ तं॰ सव्वधम्मारोएमि, एगइया रोएमि, एगइया नो रोएमि, सव्वधम्मावितिगिच्छामि, एगइया वितिगिच्छामि, एगइया नो वितिगिच्छामि, सव्व

सात कारन से साधु को गण में से नीकलने का कहा है: अपने गुरु की आज्ञा लेकर सर्व धर्म की रुचि करने के लिये दूसरे गच्छ में जावे २ कुच्छ श्रुत चारित्र की रुचि हुई है, और कुच्छ नहीं हुई है; इसलिये संपूर्ण करने को गुरुकी आज्ञा लेकर अन्य गच्छ में जावे ३ सब धर्म में अनुकूल लक्षण है परंतु उस में संशय रहा हुवा है, इस से उसे मिटाने को अन्य गच्छ में जावे ४ कितनीक बातों का संशय है और कितनीक बातों का संशय नहीं है इस लिये निस्संदेह होने को दूसरे गच्छ में ज्ञानी जानकर जावे ५ मेरे गच्छ में ऐसा योग्य पात्र नहीं है कि जिनको मैं सब धर्मज्ञान दे सकूं इसलिये दूसरे गच्छ में जावे ६ ज्ञान दे सकूं ऐसा थोडा बहुत पात्र है और नहीं भी है तो संपूर्ण ज्ञान देनेके लिये अन्य गच्छ में ऐसा पात्र देखकर जावे ७ और गुरुकी पास आकर कहे कि अहो भगवंत मुझे अकेला विहार करने

वि० संभव करताहूं स० सर्वधर्म मु० देताहूं ए० कुच्छ मु० देताहूं ए० कुच्छ नो० नहीं मु० देताहूं इ० इच्छताहूं भं० भगवन् ए० एकलविहार प० प्रतिमा उ० अंगीकार कर वि० विचरनेको ॥ १ ॥ स० सात प्रकारका वि० विभंगज्ञान ए० एकदिशिमें लो० लोकका अ० ज्ञान पं० पांचदिशामें लोकका अ० ज्ञान कि० क्रिया जीव मु० मुतकजीव अ० अमुतकजीव रू० रूपीजीव स० सर्व इ० यह जी० जीव त० तहां

धम्माजुहुणामि, एगयाजुहुणामि एगइया नोजुहुणामि, इच्छामिणंभंते एगल्लविहारपडिमं उव संपज्जित्ताणं विहरित्तए ॥ १ ॥ सत्तविहे विभंगणाणे प० तं० एगदिसिंलोगाभिगमे, पंचदिसिंलोगाभिगमे, किरियावरणेजीवे, मुदग्गे जीवे, अमुदग्गेजीवे रूवीजीवे, सव्वमिणं जीवा, तत्थखलुइमे पढमे विभंगणाणेजयाणं तहारूवस्स समणस्सवामाहणस्सवा विभंगणाणे समुप्पज्जइ, सेणतेणं

ना भाव है इसलिये आपकी अनुज्ञा होवे तो करूं यदि गुरु आज्ञा देवे तो गच्छ से अलग निकल कर अकेला विहार करे ॥ १ ॥ सात प्रकार का विभंग ज्ञान कहा है १ एक दिशाके लोक को जाने, २ पांच दिशाके लोक को जाने ३ क्रिया करने से क्रिया ही जीव है कि कोई अन्य जीव है ऐसा जाने ४ बाह्य आभ्यंतर पुद्गल से बना हुआ जीव है ऐसा जाने ५ बाह्य आभ्यंतर पुद्गल रहित जीव है ऐसा जाने ६ जीव रूपी है ऐसा जाने ७ सब पुद्गलादि वस्तु चलती है इसलिये सब जीव है ऐसा जाने । इन सात में से पहिला विभंग ज्ञान का स्वरूप बताते हैं १ जिस समय तथारूप मिथ्यात्वी श्रमणादि श्रमण माहण

११ यह प० प्रथम वि० विभंगज्ञान भ० भिन्नक त० तथारूप स० श्रमण मा० माहणको वि० अभंग ज्ञान म० उत्पन्न होवे ते० उस वि० विभंग ज्ञान से स० उत्पन्न हुवा पा० देखे पा० पूर्व प० पश्चिम दा० दक्षिण उ० उत्तर उ० ऊर्ध्व जा यावत् सो० सौधर्मदेवलोक त० उसको ए० ऐसा म० होवे अ० है प० मुझ को अ० उत्कृष्ट णा ज्ञान दर्शन स उत्पन्न हुवा ए० एकदिशि में लो० लोक का अ० ज्ञान सं०

विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ, पाईणंवा, पडीणंवा, दाहिणंवा, उदीणंवा उड्ढंवा, जाव सोहम्मो कप्पो तस्सणं एवं भवइ अत्थिणं मम, अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने एगादिसिं लोगाभिगमे, संतेगइया समणावा माहणावा एवमाहंसु पंचदिसिं लोगाभिगमे जेते एवमाहंसु मिच्छंते एवं माहंसु पढमेविभंगणाणे, ॥अहावरे दोच्चे विभंगणाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्स

को अज्ञान तपकरने से विभंग ज्ञान उत्पन्न होता है; और उस ज्ञान की प्रबलता से पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण ऊंचे यावत् सौधर्म देवलोक तक देखसकता है; उस समय उनको ऐसा विचार उत्पन्न होवे कि मुझे उत्कृष्ट ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुआ है और एक दिशिके लोक का जानता हूं परंतु कितनेक शाक्यादि श्रमण माहण ऐसा बोलते हैं कि पांचदिशि लोक का अभिगम है सो मिथ्या है यह [1]विभंगज्ञान का प्रथम भेद जानना २ जिस समय तथारूप [1]मिथ्यात्वी श्रमण माहण विभंग ज्ञान उत्पन्न होने से पूर्व,

---

[1] विभंग ज्ञानवाले को अधोलोक देखना दुरभिगम है

है ए० कितनेक स० श्रमण मा० माहण ए० ऐसा आ० कहते हैं पं० पांचदिशि में लो० लोक का अ० ज्ञान जे० जो ते० वे ए० ऐसा मा० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे ए० ऐसा मा० कहते हैं प प्रथम विभंग ज्ञान अ० अथ दो दूसरा वि० विभंग ज्ञान ज० जिसवक्त त० तथारूप स श्रमण को मा० माहण को वि० विभंग ज्ञान स० उत्पन्न होवे ते० उस वि० विभंग ज्ञान से स० उत्पन्न हुवा पा० देखे पा० पूर्व प० पश्चिम दा० दक्षिण उ० उत्तर ऊ० ऊर्ध्व जा० यावत् सो० सौधर्मदेवलोक त० उसको ए०

घा विभंगणाणे समुप्पज्जइ सेणं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ-पाईणंवा,पडीणंवा, दाहिणंवा उदीणंवा उड्ढं जाव सोहम्मोकप्पो तस्सणमेवं भवइ अत्थिण मम अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने पंचदिसिं लोगाभिगमे संतेगइया समणावा माहणावा एवमाहंसु एगदिसिं लोगाभिगमे जे ते एवमाहंसु मिच्छंते एवमाहंसु दोच्चे विभंगणाणे । अहावरे तच्चे विभंगणाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा विभंगणाणे समुप्पज्जइ सेणं तेणं विभंग

पश्चिम, उत्तर, दक्षिण ऊर्ध्व यावत सौधर्म देवलोक देखे उस समय उस को ऐसा होवे कि मुझे उत्कृष्ट ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुआ है और पांच दिशा के लोक को जानता हूं अब जो श्रमण माहण ऐसा कहते हैं कि एक दिशि में ही लोक का अभिगम है सो मिथ्या है यह दूसरा विभंग ज्ञान २ अब तीसरा विभंग ज्ञान का स्वरूप बताते हैं जिस समय तथारूप मिथ्यात्वी श्रमण माहण को विभंग ज्ञान उत्पन्न होने से जीवों

ऐसा म० होवे अ० है म० मुझे अ० उत्कृष्ट ना० ज्ञान दर्शन स० उत्पन्न हुवा पं० पांचदिशा में लो० लोक का अ० ज्ञान सं० हैं ए० कितनेक स० श्रमण मा० माहण ए० ऐसे भा० कहते हैं एकदिशा में लो० लोक का अ० ज्ञान जे० जो ते० वे ए० ऐसा भा० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे ए० ऐसा भा० कहते हैं दो० दूसरा विभंग ज्ञान अ० अथ त० तीसरा वि० विभंग ज्ञान ज० जिसवक्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण को वि० विभंग ज्ञान स० उत्पन्न होवे ते० उस वि० विभंग ज्ञान से पा० ऐसे पा० प्राणा

पाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ पाणअइवाएमाणे, मुसं वयमाणे, अदिन्नमादियमाणे, मेहुणं पडिसेवमाणे, परिग्गहं परिगेण्हमाणेत्रा, राइभोयणं भुंजमाणेत्रा, पावंचणं कम्मं कीरमाणं णो पासइ तस्सणमेवं भवइ अत्थिणं मम अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने कि-रियाचरणे जीवे संतेगइया समणावा माहणावा एवमाहंसु णोकिरियावरणे जीवे जे ते एवमाहंसु मिच्छंते एवमाहंसु तच्चेविभंगणाणे । अहावरे चउत्थे विभंगणाणे जयाणं

को प्राणातिपात करते, मृषावाद बोलते, अदत्तादान सेवे, मैथुन सेवते, परिग्रह रखते, रात्रि भोजन करते, व पापक्रिया करते हुए देखे, उस समय उस को ऐसा विचार होवे कि मुझ अतिशय ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुआ है और इस से मैं जानता हूं कि क्रिया परन जीव है जो ऐसा कहते हैं कि क्रियावरण जीव नहीं है सो मिथ्या है यह तीसरा विभंग ज्ञान. ४ अब चतुर्थ विभंग ज्ञान का

विपाव करता मु० मृषावाद प० बोलता अ० अदत्त आ० ग्रहण करता मे० मैथुन प० सेवता प० परिग्रह प० सेवा रा० रात्रि भोजन भो० भोगवता पा० पापकर्म की० करता पा० देखे त० उसको अ० होवे अ० है अ० मुझ अ० उत्कृष्ट णा० ज्ञान दर्शन स० उत्पन्न हुवा कि० क्रिया जीव सं० हैं ए० कितनेक स० श्रमण मा० माहण ए ऐसे आ० कहते हैं नो० नहीं कि० क्रिया जीव जे० जो० ते० वे ए० ऐसे आ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे आ० कहते हैं त० तीसरा वि० विभंग ज्ञान अ० अब च० चौथा वि० विभंग ज्ञान म जिससे त० तथारूप स० श्रमण आ० यावत् स० उत्पन्न होता है वे० वे वि०

तहारूवस्स समणस्सवा जाव समुप्पज्जइ सेणं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं देवामेव पासइ बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ता पुढेगत्त णाणत्तं फुसित्ता फुरित्ता फुट्टित्ता विउव्वित्ता णं चिट्ठित्तए तस्सणं मेवं भवइ—अत्थिणं मम अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने मुदगो जीवे संतेगइया समणावा माहणावा एवमाहंसु अमुदगो

स्वरूप कहते हैं. जिस समय तथारूप मिथ्यात्वी श्रमण माहण विभंग ज्ञान से मात्र देवता को ही बाह्याभ्यंतर पुद्गल ग्रहण करता हुवा अथवा नहीं ग्रहण करता हुवा या भिन्नरूप स्पर्शता यावत् विकुर्वणा करता हुवा देखता है उस समय ऐसा विचार होता है कि मुझे अतिशायी ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुवा है और इस से मैं देख सकता हूं कि मृतक जीव बाह्याभ्यंतर पुद्गल रहित शरीर से जाता है इस मृतक

विभग ज्ञान से उ० उत्पन्न हुवा दे० देवता को पा० देखता बा० बाह्य अ० आभ्यतर पो० पुद्गल प०परिणमाकर पु०पृथक् ए०एकत्व णा०विविधरूप फु०स्पर्शकर फु० स्फुरितकर फु०भमटकर वि०विकुर्वणाकर चि० रहता हुवा त० उसको म० होवे अ० है म० मुझे अ० उत्कृष्ट णा० ज्ञान दर्शन स० उत्पन्न हुवा पु० मृतक जीव स० हैं ए० कितनेक स० श्रमण मा० माहण ए० ऐसा आ० कहते हैं अ० अमृतक जीव में० जो ए० ऐसा भा० कहते है मि० मिथ्या ते० वे ए० ऐसे भा० कहते हैं च० चौथा वि० विभंग ज्ञान अ० अब प० पांचवा वि० विभंग ज्ञान ज० जिसवक्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण

जीवे जेते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु चउत्थे विभगणाणे।अहावरे पंचमेविभगणाणे-जयाणं तहारूवस्स समणस्स जाव समुप्पज्जइ सेणं तेणं विभगणाणेणं समुप्पन्नेणं देवामेव पासइ बा हिरब्भतरए पोग्गलए अपरियाइत्ता पुढेगत्तं णाणत्त जाव विउव्वित्ता चिट्ठित्तए, तस्सणमेव भवइ—अत्थि जाव समुप्पन्ने अमुदगोजीवे संतेगइया समणावा माहणावा एवमाहंसु

को जब कितनेक श्रमण माहण ऐसा कहते हैं कि अमृतक जीव पुद्गल रहित है सो मिथ्या है यह चौथा विभग ज्ञान जिस समय तथारूप श्रमण माहण को विभग ज्ञान उत्पन्न होवे उस समय भवधारणीय शरीर उत्पन्न होने के समय में देवता को बाह्याभ्यंतर पुद्गल लिये बिना रहे अथवा वैक्रेय समुद्घात में वैक्रेय पुद्गल का ग्रहण करते देखे तब ऐसा विचार उत्पन्न

जा० यावत् स० उत्पन्न होता है से० उस वि० विभग ज्ञान से उ० उत्पन्न हुवा दे० देवताको दी पा० दखे पा० बाह्य म० आभ्यंतर पो० पुद्गल को अ० अपरिणमाकर पु पृथक् णा० विविधरूप जा० यावत् वि० विकुर्वणाकर चि० रहा हुवा त० उसको म० होवे अ० है जा० यावत् स० उत्पन्न अ० पुद्गल रहित जीव स० है ए० कितनेक स० श्रमण मा० माहण ए० ऐसे आ० कहते हैं पु० पुद्गलजी० जीव मि० मिथ्या ए० ऐसा मा कहते हैं म० अथ छ० छठा वि० विभंग ज्ञान म० जिसवक्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण को जा० यावत् स० उत्पन्न होवे ते० उस वि० विभंग ज्ञान से उ० उत्पन्न हुवा दे० देवता को पा०

मुदग्गो जीवे जे ते एवमाहंसु मिच्छंते एवमाहंसु पंचमे विभंगणाणे, । अहावरे छट्ठे विभं गणाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा जाव समुप्पज्जइ सेणंतेण विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं देवामेव पासइ-बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्तावा अपरिया इत्तावा पुढेगत्तं णाणत्तं फुसिया जाव विउव्वित्ताणं चिट्ठित्तए तस्सणमेवं भवइ अत्थि

होवे कि मुझे अतिशायी ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुआ है कि अमृतक जीव है परंतु कितनेक श्रमण ब्राह्मण ऐसा कहते हैं कि मृतक जीव है सो मिथ्या है यह पांचवा विभंगज्ञान ५ अब छठा विभंगज्ञान कहते हैं जिससमय तथारूप श्रमण माहण को विभंग ज्ञान उत्पन्न होता है उस समय बाह्याभ्यंतर पुद्गल ग्रहण कर अथवा बिना ग्रहण किये भिन्न या एकरूप, या बहुरूप स्पर्शकर-यावत विकुर्वणा करते देवता को ही देखता है तब ऐसा

देखे पा० वाह्य अ० आभ्यंतर पो० पुद्गल प० परिणमाकर अ० अपरिणमाकर पु० पृथक् ना० नानारूप फु० स्पर्शकर मा० यावत् वि० विकुर्वणाकर चि० रहा हुवा त० उसको ए० ऐसा म० होवे अ० है म० मुझे अ० उत्कृष्ट ना० ज्ञान दर्शन स० उत्पन्न हुवा रू० रूपीजीव म० है ए० कितनेक स० श्रमण मा० माहण ए० ऐसा आ० करते हैं अ० अरूपीजीव मि० मिथ्या व० वे मा० करते हैं अ० अब स० सातवां वि० विभंग ज्ञान अ० जिसप्रकार त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण को वि० विभंग ज्ञान स० उत्पन्न होवे से० उस वि० विभंग ज्ञान से स० उत्पन्न हुवा पा० देखे सु० सूक्ष्म वा० वायु काय फु०

यं मम अइसेसे णाणंसणे समुप्पन्ने रूवीजीवे, संतेगइया समणावा माहणवा एव माहंसु अरूवीजीवे जेते एवमाहंसु मिच्छंते, एवमाहंसु छट्ठे विभंगणाणे । अहावरे सत्तमे विभंगणाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा विभंगणाणे समुप्पज्जइ सेणं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ सुहुमेणं वाउकाएणं फुडं पोग्गलकायं एयंतं

विचार होता है कि मुझे अतिशयी ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुवा है कि जीव रूपी है परंतु कितनेक श्रमणादि साधु माहण जो करते हैं कि जीव अरूपी है सो मिथ्या है यह छठा विभंग ज्ञान ७ अब सातवा विभंग ज्ञान का स्वरूप कहते हैं जिस समय तथारूप श्रमण माहण को विभंग ज्ञान उत्पन्न होवे उस समय सूक्ष्म वायु काय से स्पर्शते, कंपते, चलते, स्थिर होते, स्पंदते, संघट्टना करते,

स्पर्शती फो० पुद्गल काया को ए० कंपती वे० विशेष कंपती च० चलती खु० लोभपाती फं० स्फुरती
घ० संघट्टती उ० प्रेरती तं० उसभाव को प० परिणमती त० उसको भ० होवे अ० है म० मुझे ना०
उत्कृष्ट णा० ज्ञान दर्शन स० उत्पन्न हुआ स० सर्व जी० जीव सं० हैं ए० कितनेक
स० श्रमण मा० माहण ए० ऐसा मा० कहते हैं जी० जीव अ० अजीव जे० जो ते० वे ए० ऐसा भा०
कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे ए० ऐसा मा० कहते हैं उ० उसको इ० यह च० चार जी० जीवनिकाय
णो० नहीं स० सम्यक् उ० जानी हुई भ० हैं तं० यह भ० जैसे पु० पृथ्वी काय आ० पानी वा० वायु

वेयंतं चलंतं खुब्भंतं फंदंतं घट्टंतं उदीरेंतं तंभावं परिणमंतं, तस्सणमेवं भवइ,
अत्थिणं मम अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने सव्वमिणंजीवा संतेगइया समणावा मा
हणावा एवमाहिंसु जीवाचेव अजीवाचेव जेते एवमाहिंसु मिच्छंते एवमाहिंसु तस्स-
णमिमे चत्तारि जीवनिकाया णोसंमम्मुवगया भवंति तं॰ पुढविकाइया, जाव वाउ-

प्रेरते, अनेक भावों से परिणमते पुद्गल देखे. ऐसा देखकर ऐसा विचार होवे कि मुझे संपूर्ण ज्ञान
दर्शन उत्पन्न हुआ है और इससे जान सकता हूं कि यह सब चलनेवाली पुद्गल जाती ही जीव है, परंतु कित
नेक श्रमण माहण ऐसा कहते हैं कि वे जीव भी है और अजीव भी है सो मिथ्या है (उनको पृथ्वीकाय
अपकाय, तेउकाय, और वायुकाय इन चारोंजीवनिकाय को नहीं चलने की अपेक्षासे जीव नहीं जाने

काय इ० इन च० चार जी० जीवनिकाय से मि० मिथ्यादंड में प० प्रवर्तता है स० सातवा वि० विभंग ज्ञान ॥ २ ॥ स० सात प्रकार की जो० योनिसंग्रह अं० अंडज पो० पोतज ज० जरायुज र० रसज सं० संस्वेदज सं० संमूर्छिम उ० उद्भिज अं० अंडज की स० सातगति स० सातआगति अं० अंडज अं० अंडज में उ० उपजता अं० अंडज में से पो० पोतज में से जा० यावत् उ० उद्भिज में से उ० उत्पन्न होवे से० यह अं० अंडज अं० अंडज को वि० छोडता अं० अंडजपने पो० पोतजपने जा० यावत् उ० उद्भिजपने ग० जावे पो० पोतजकी स० सातगति स० सात आगति ए० ऐसे स० सात को ग० गति

काइया, इच्चेएहिं च्छहिं जीवनिकाएहिं मिच्छादंडं पवत्तेइ सत्तमे विभंगणाणे ॥ २ ॥ सत्तविहे जोणिसंगहे प० तं० अंडजा, पोतजा, जराउजा, रसया, ससेयया, संमुच्छिमा, उब्भिया ॥ अंडगा सत्तगइया सत्तागइया प० तं० अंडगे अंडगेसु उववज्जमाणे अंडएहिंतोवा पोयएहिंतोवा जाव उब्भिएहिंतोवा उववज्जेज्जा सच्चेवणंसे अंडए अंडगत्तं विप्पजहमाणे अंडयत्ताएवा पोययत्ताएवाजाव उब्भियत्ताएवा गच्छेज्जा) पोयया सत्तगइया

हैं उस से उन की हिंसा करे) यह सातवा विभंग ज्ञान ॥ २ ॥ सात प्रकार का योनिसंग्रह-जीव के उत्पत्ति स्थान) कहे हैं १ अण्डज, २ पोतज, ३ जरायुज ४ रसज, ५ संस्वेदज, ६ संमूर्छिम और ७ उद्भिज अण्डे में उत्पन्न होनेवाले जीवों अण्डज यावत् उद्भिज इन सात में से आते हैं और इन सातों में जाते हैं जैसे अण्डज की सात गति सात आगति कही वैसेही पोतज यावत् उद्भिज की सात गति

आ० आगावे मा० करना जा० यावत् उ० उद्भिजपने ॥ २ ॥ आ० आचार्य उ० उपाध्याय के म०
गण में स० सात सं० संग्रहस्थान आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गण में आ० आज्ञा धा० धारणा
स० सम्यक् प० प्रयुंजना भ० होवे ज० जैसे पं० पांचवें ठाणे में आ० आचार्य उ० उपाध्याय
क ग० गणमें आ० पूछकर चा० चलने वाला होवे नो० नहीं अ० वे बिना पूछकर चा० चलने वाला भ० होवे
आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गणमें अ० अनुत्पन्न उ० उपकरण स० सम्यक् उ० प्राप्त करना
भ० होवे आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गणमें उ० उत्पन्न उ० उपकरण को स० सम्यक्

सत्तागाइया एवमेव, सत्तण्हवि गहरागाई भाणियव्वा, जाव उब्भियत्ति ॥ २ ॥ आयरियउवज्झायस्सणं गणंसि सत्तसंगहट्ठाणा प० तं० आयरियउवज्झाए गणंसि आणंवा धारणंवा सम्मं पउंजित्ता भवइ, एवं जहा पंचट्ठाणे जाव आयरियउवज्झाए गणंसि आपुच्छियचारियावि भवइ, णो अपुच्छियचारीयावि भवइ, आयरियउवज्झाएणं गणंसि अणुप्पन्नाइं उवकरणाइं सम्मं उप्पाइत्ता भवइ, आयरियउवज्झाएण गणंसि

और सात आगावे जानना ॥ १ ॥ आचार्य उपाध्याय के गच्छ में सात संग्रह स्थान कहे हैं १ आचार्य
उपाध्यायके गच्छमें आज्ञा पूर्वक सूत्र अर्थको सम्यक् प्रकारसे धारे सो साधु संग्रहरूप है, इसतरह पांचवा
ठाणामें जैसा अधिकार कहा है वैसा आचार्य उपाध्यायकी आज्ञा अनुसार चले, यहां तकका सब अधिकार

सा० रखे गो० गोपवे भ० होवे ॥ ४ ॥ आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गणमें स० सात अ० असंग्रह स्थान प० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गणमें आ० आज्ञा धा० धारणा नो० नहीं स० सम्यक् प० प्रयुंजना भ० होवे ए० ऐसे जा० यावत् उ० उपकरण नो० नहीं स० सम्यक् सा० रखे गो० गोपवे भ० होवे ॥ ५ ॥ स० सप्त पिं० पिंडेषणा ॥ ६ ॥ स० सप्त पा० पानी की एषणा ॥ ७ ॥ स० सप्त ओ०

पुव्वुप्पन्नाइं उवकरणाइं सम्मं सारक्खित्ता संगोवित्ता भवइ ॥ ४ ॥ आयरियउवज्झायस्सणं गणंसि सत्तअसंगहट्ठाणा प० तं० आयरियउवज्झाएणं गणंसि आणंवा धारणंवा नोसम्मं पउंजित्ता भवइ, एवं जाव उवगरणाणं नोसम्मं सारक्खित्ता संगोवेत्ता भवइ ॥ ५ ॥ सत्तपिंडेसणाओ प० ॥ ६ ॥ सत्तपाणेसणाओ पण्णत्ताओ ॥ ७ ॥

मानना विशेष में ६ आचार्य उपाध्यायके गच्छमें वस्त्र पात्रादि उपकरण न होवे तो उसे प्राप्त करनेको स पय होवे, ७ आचार्य उपाध्यायके गच्छमें जो वस्त्र पात्रादि होवे उस सम्यक् प्रकारसे रखे खराब होने देवे नहीं ॥४॥ आचार्य उपाध्यायके गच्छमें सात असंग्रह स्थान कहे हैं। आचार्य उपाध्यायके गच्छमें आज्ञा धारना सम्यक् प्रकारसे प्रयुंजे नहीं यावत् प्राप्त वस्त्र पात्रादि उपकरण की रक्षा करे नहीं और खराब करे ॥ ५ ॥ सात प्रकारकी पिण्डेषणा (आहार ग्रहण करनेका अभिग्रह) ॥ ६ ॥ सातप्रकारकी पानी ग्रहण करने रूप अ

अवग्रह प्रतिमा ॥ ८ ॥ स० सप्त स० सप्तैकक ॥ ९ ॥ स० सात अ० बडे अध्ययन ॥ १० ॥ स० सात स० सप्तमिका भि० भिक्षुप्रतिमा ए० गुनपचास रा० अहोरात्रि से ए० एक छ छन्नु भि० भिक्षाद्रत अ० यथासूत्र जा० यावत् आ० आराधिक भ होवे ॥ ११ ॥ अ० अधोलोक में स० सात पु० पृथ्वी स०

सत्तओगाह पडिमाओ पण्णत्ताओ ॥ ८ ॥ सत्तसत्तिक्कया प० ॥ ९ ॥ सत्तमहज्झय णा प० ॥ १० ॥ सत्त सत्तमियाणं भिक्खुपडिमा एगूणपन्नयाए राइंदि हिं एगेगय छण्णउएणं भिक्खासएण अहासुत्त जाव आराहियावि भवइ ॥ ११ ॥ अहेलागेण

विज्ञानी पानिपना करी ॥ ७ ॥ सात प्रकारकी अवग्रह प्रतिमा (उपाश्रय ग्रहण करने की प्रतिज्ञा)॥ ८ ॥ सप्त सप्तैकक कहे १ स्थान सप्तैकक २ नैपेधिकी सप्तैकक ३ उच्चारप्रश्रवण सप्तैकक ४ शब्द सप्तैकक ५ रूप सप्तैकक ६ परक्रिया सप्तैकक और ७ अन्यान्य क्रिया सप्तैकक ॥९॥ द्वितीय सूयगडांग सूत्र के प्रथम श्रुत स्कंध की अपेक्षासे बड द्वितीय श्रुत स्कंध के सात महा अध्ययन कहे हैं १ पुंडरीक २ क्रिया, ३ आहार परिज्ञा ४ प्रत्याख्यान परिज्ञा ५ माया परिज्ञा ६ आर्द्रकुमार और ७ उदक पेढाल पुत्र ॥ १० ॥ सात सप्तमिका साधु प्रतिज्ञा [अभिग्रह रूप] कही उसकी ४९ अहोरात्रि होती हैं और १९६ दात आहार की और १९६ दात पानी की होती हैं. ॥ ११ ॥ अधोलोक में सात पृथ्वी, सात घनोदधि सात घनवात, सात

साम घनोदधि स० सात घ० घनवात स० सात त० तनुवात स० सात उ० उवासांतरा ए० इन स० सात उ० आंतरे में स० सात त० तनुवात प० प्रतिष्ठित स० सात त० तनुवात में स० सात घ० घनवात प० प्रतिष्ठित स० सात घ० घनवात में स० सात घ० घनोदधि प० प्रतिष्ठित स० सात घ० घनोदधि में पिं० पिंडग पि० पृथुल स० सठान से सं० संस्थित स० सात पृथ्वी प० प्रथम जा० यावत् स० सातवी स० सात पृथ्वी के स० सात णा० नाम घ० घम्मा व० वंशा से० सेला अं० अंजना रि० रिष्टा म० मघा

सत्तपुढवीओ पण्णत्ताओ, सत्तघणोदहीओ पण्णत्ताओ, सत्तघणवायाओ प० सत्ततणुवाया प०, सत्तउवासंतरा प०, । एएसुणं सत्तसु उवासंतरेसु सत्त तणुवाया पइट्ठिया, एएसु णं सत्तसु तणुवाएसु सत्तघणवाया पइट्ठिया, सत्तसु घणवाएसु सत्त घणोदही पइट्ठिया, एएसुणं सत्तसु घणोदहीसु पिंडलगपिहुलसठाणसंठियाओ सत्तपुढवीओ पण्णत्ताओ तं० पढमा जाव सत्तमा । एयासिणं सत्तण्हं पुढवीणं सत्त णामधेज्जा प० तं० घम्मा वंसा सेला, अंजणा, रिट्ठा, मघा, माघवई । एयासिणं सत्त

तनुवात, सात उवासांतरा [पृथ्वी का अंतर] कहे हैं इन आंतरे में सात तनुवात रहे हैं उन तनुवात में सात घनवात रहे हैं, सात घनवात में सात घनोदधि, इन घनोदधि में पिंडग पृथुल संस्थान वाली सात पृथ्वी रही हैं जिनके नाम १ घम्मा, २ वंशा, ३ सेला ४ अंजना ५ रिष्टा ६ मघा और ७ माघवती इन

भा० भागवती स० सात पु० पृथ्वी के स० सात गो० गोत्र र० रत्नप्रभा स० शर्करप्रभा वा० वालुकप्रभा पं० पंकप्रभा धू० धूमप्रभा त० तमा त० तमतमा ॥ १२ ॥ स० सात प्रकार का वा० बादर वायुकाय पा० पूर्वका प० पश्चिम का दा० दक्षिण का उ० उत्तर का ऊ० ऊर्ध्ववायु अ० अधो वायु वि० विदिशा का ॥ १३ ॥ स० सात सं संस्थान दी० दीर्घ र लघु व० वर्तुल तं त्रंस च० चतुरंस पि० परोला प परिमंडल ॥ १४ ॥ स० सात भ० भयस्थान इ० यह लोक प० परलोक आ०

ऐ पुढवीण सत्तगोत्ता प०तं० रयणप्पभा, सक्करप्पभा, वालुयप्पभा, पंकप्पभा, धूमप्पभा तमा, तमतमा ॥ १२ ॥ सत्तविहा बायर आउकाइया प० तं० पाईणवाए, पडीणवाए, दाहिणवाए, उदीणवाए, उड्ढवाए, अहेवाए, विदिसिवाए॥ १३ ॥ सत्तसठाणा प० तं० दीहे, रहस्से, वट्टे, तंसे, चउरसे पिहुले, परिमंडले ॥ १४ ॥ सत्त भयट्ठाणा प०तं० इहलोगभए, परलोगभए, आदाणभए, अकम्हाभए, वेयणाभए, मरणभए असिलोग-

सात पृथ्वी के सात गोत्र कहे हैं १ रत्नप्रभा २ शर्कर ३ वालुक प्रभा ४ पंकप्रभा ५ धूमप्रभा ६ तमा और ७ तमतमा प्रभा ॥ १२ ॥ बादर वायु काया के सात भेद कहे हैं पूर्व का, पश्चिम का दक्षिण का उत्तर का, ऊर्ध्व का अधो का और विदिशा का ॥ १३ ॥ सात संस्थान कहे हैं १ दीर्घ, २ ह्रस्व ३ वर्तुलाकार ४ त्रीकोन ५ चतुष्कोन ६ परोला ७ [illegible]

भादान अ० अकस्मात् वे० वेदना म० मरण अ० अपयश ॥ १८ ॥ स० सात ठा० स्थान से छ० छद्मस्थ जा० जानना पा० प्राणातिपात करना मु० मृषा व० बोलता अ० अदत्त आ० लेना स० शब्द फ० स्पर्श र० रस रू० रूप गं० गन्ध आ० स्वादलेना पू० पूजा स० सत्कार अ० वांछता सा० सावद्य को प० प्ररूपता प० सेवता णो० नहीं ज० यथा भा० बोलता त० तथा का० करता ॥ १९ ॥ सात स्थान

भए ॥ १८॥ सत्तहिं ठाणेहिं छउमत्थं जाणेज्जा, तं० पाणेअइवाएत्ता भवइ, मुसवदि त्ता भवइ, अदिन्नमाइत्ता भवइ, सद्दफरिसरसरूवगंधिआसदेत्ता भवइ, पूयासक्कारमणु बूहेत्ता भवइ, इमसावज्जंति पण्णवेत्ता पडिसेवेत्ता भवइ, णोजहावादी तहाकारीयावि भ वइ ॥ १९ ॥ सत्तहिं ठाणेहिं केवली जाणेज्जा तं० णो पाणेअइवाएत्ताभवइ, जाव ज

भयके स्थानक कहे हैं १ इस लोक का भय (सो मनुष्य को मनुष्य का भय) २ परलोक भय सो मनुष्य का तिर्यंचादि का भय ३ आदान भय सो हरने का भय ४ अकस्मात् भय सो अनजानते भय आजावे ५ वेदना रोगादिक का भय ६ मरण और ७ अपयश का भय ॥ १८ ॥ सात कारन से छद्मस्थ जाना जाता है १ प्राणातिपात करने से २ मृषावाद बोलने से ३ अदत्तादान लेने से ४ शब्द रूप गंध व रसादिक का आस्वादन करनेसे ५ पूजा सत्कार इच्छने से ६ यह सावद्य काम है ऐसा उपदेश देकर उस का सेवन करनेसे और ७ और जैसा कहे वैसा नहीं करने से ॥ १९ ॥ सात कारन से केवली जान

स क० केवली मा० जानना णो० नहीं पा० प्राणातिपात करता मा० पापत् ज० यथा को० कोसवा त० तथारूप का० करता ॥ १७ ॥ स० सात मू मूलगोत्र का० काश्यप गो० गौतम व० वत्स को० कुत्स को० कौशिक मं० मंडप व० वासिष्ठ म० मो का० काश्यप से० वह स० सात प्रकार का ते० तेकाश्यप त० तेसांडिल्य ते० तेगोल ते तेवाल से० तेमुंज से० तेपर्वत से० तेवरिसकृष्ण जे० जो गो० गौतम स० वह स० सप्तविध त तेगौतम त० तगर्ग त० भारद्वाज ते० तेअंगिरस ते० तेशर्कराभ ते० तेभास्कराभ से०

हा वईसहाकारियाग्नि भवइ ॥ १७ ॥ सत्तमूलगोत्ता प० तं० कासवा, गोयमा, वत्था कोत्था, कोसिया, मंडवा, वासिट्ठा ॥ जे कासवा ते सत्तविहा प० तं० तेकासवा, तेसंडिल्ला, तेगोला, तेवाला, तेमुंजतिणो, तेपव्वतिणो, तेवरिसकण्हा ॥ जे गोयमा ते सत्तविहा प० तं० तेगोयमा, तेगग्गा, तेभारद्दा, तेअंगिरसा, तेसक्करामा, तेमक्खरामा, तेउदत्तामा ॥ जे वत्था ते सत्तविहा प० तं० तेवत्था, तेअग्गिया, तेमि

सकता है प्राणातिपात नहीं करनेसे पापत् जैसा कोई वैसा करने से ॥ १७ ॥ सात मूल गोत्र कहे हैं १ काश्यप, २ गौतम ३ वत्स ४ कुत्स, ५ कौशिक ६ मंडप और ७ वासिष्ठ उस में से काश्यप गोत्र सात प्रकार के कहे हैं १ काश्यप, २ सांडिल्य ३ गोल ४ वाल ५ मुंज ६ पर्वत और ७ वरिसकृष्ण गौतम गोत्रके सात भेद १ गौतम, २ गर्ग ३ भारद्वाज ४ अंगीरस ५ शर्कराभ ६ भास्कराभ और ७ उदत्ताभ

तेमच्छाभ ते० जो व० वस्स ते० वह स० सत्तविध ते० तेवत्स ते० तेभंगिय ते० तेमिचिय ते० तेसामलीण ते० तेसेलवय ते० तेभस्थिसेन ते० तेवापुरुष्म ते० जो को० कुत्स ते० वह स० सत्तविध ते० तेकुत्स ते० नमोद्गलायन ते० तेपिंगतप्प ते० तेकोडिन्न ते० तेमंडलीक ते० तेहारित ते० तेसाममजी ते० जो को० कौशिक ते० वह स० सत्तविध ते० तेकौशिक ते० तेकात्यायन ते० तेसालंकायन ते० तेगोलिकायन ते० तेपरिकंकायन ते० तेअगिया ते० तेलोहित्य ते० जो मं० मंडप स० सत्तविध ते० तेमंडप ते० तेआ

च्चिए, ते सामलिणो, तेसेलयया, तेअट्ठसेणा, तेवायकण्हा ॥ जे कात्या तेसत्तविहा प० तं० तेकोत्था, तेमोग्गलायणा, तेपिंगायणा, तेकाडीणा, तेमंडलिणो तेहारिया, तेसोमया ॥ जे कोसिया तेसत्तविहा प० त० तेकोसिया, तेकच्चायणा, तेसालंकाय- तेगोलिकायणा, तेपारिकंकायणा, तेअगिच्चा, तेलोहिच्चा ॥ जे मंडवा तेसत्तविहा तं० तेमंडवा, तेआरिट्ठा, तेसंमुत्ता, तेतेरा, तेएलावच्चा, तेकंडेल्ला, तेक्खायणा ॥

त्समोत्र के सातभेद १ वत्स, २ भंगिय, ३ मिचिय ४ सामलीण ५ सेलवय ६ अस्थिसेन और ७ कुत्स गोत्र के सात भेद १ कुत्स २ मौद्गलायन ३ पिंगतप ४ कोडिन्न ५ मंडलीक और ७ साममजी कौशिक गोत्र के सात भेद १ कौशिक २ कात्यायन ३ सालंकायन ४ण ५ परिकंकायन ६ अगिया और ७ लोहित्य. मंडप गोत्र के सात भेद १ मंडप, २ आरिए

रिष्ट वं० तमंमुत त० तमन्ना त तएसपत्य ते० तेकंतेल्ल ते० तेसायण जे० जो मा० मासिष्ठ स० ससविध त० तेवासिष्ठ त० तेठंगायण ते० तेजारुक्ष ता ते० तेवग्यावचस ते० तेकाडिम ते० तेसभि ते तेपारासर

जे वासिट्ठा तेसत्तविहा प० तं० तेवासिट्ठा, तेठजायणा, तेजारुकण्हा, तेवग्घा-वच्चा, तेकोडिन्ना, तेसत्ती, तेपारासरा ॥ १८ ॥ सत्तमूलणया प० तं०

१ संमुत ४ भेला ५ एसपत्य ६ केवेल्ल और ७ सायण वासिष्ट गोत्र के सात भेद १ वासिष्ट २ तेजायण ३ जारुकृष्ण ४ वग्घावचस ५ कोडिन्न ६ सत्ती ७ पारासर ॥ १८ ॥ मूल सात नय हैं १ निगमेषु सार्थशारत्र कुशला भवो वा नैगमः अथवा नैकेगमाः पथानो यस्य स नैकगम अर्थात् जिनके अनेक मार्ग (विकल्प) होवे, अनेक गमसे वस्तु को माने और वस्तु में एकांशगुण होने से ही वस्तु मानता है वैसेही सपूर्ण गुण होनसे भी वस्तु को वस्तु मानता है २ संग्रह भेदा न्सगृह्णन्ते वा भेदा नगृह्यन्ते येन स संग्रहःभिस २ मतों का जो संग्रह कर सकता है अथात् किसी वस्तु का नाम लेनेसे सब वस्तु का संग्रह करे ३ व्यवहार नय जो विशेष में देखने में आवे; उसकी मुख्यतासे उसी गुणमय उस वस्तु को माने सो व्यवहार नय ४ ऋजुसूत्र ऋजु-सरल सूत्रबोध जो वस्तु का अर्थग्रहण सरलता स होवे सो ऋजुसूत्र नय ५ शब्दनय सो जिस से वस्तु को बोलाने में आवे और उस नामसे ही अन्य समझे और उसी के अनेक नाम होनेपर एक ही अर्थ करे सो शब्द नय ६ समभिरूढ नय जो ७ पर्याय

॥ १८ ॥ स० सात मू० मूलनय ने० नैगम सं० संग्रह व० व्यवहार उ० ऋजुसूत्र स० शब्द स० समभिरूढ ए० एवंभूत ॥ १९ ॥ स० सप्त स० स्वर प० षड्ज रि० ऋषभ ग० गांधार म० मध्यम पं० पंचम धे०

नेगम, संगह, ववहारे, उज्जुसुए, सद्दे, समभिरूढे, एवंभूते ॥ १९ ॥

भिन्न २ अर्थ में होवे उस २ पर्याय को उस ही अर्थ में ग्रहण करे और ७ एवंभूतनय जिस प्रकार पदार्थ होवे उसी प्रकार के सब गुण सपक्ष पादि पर पदार्थ होवे, एक गुणकी भी हीनता न होवे, और जिस क्रिया के योग्य होवे उसी क्रिया में प्रवर्तता हुआ होवे तो वस्तु को वस्तु माने ये सातों नय एक एक से अधिक विषय वाली हैं संग्रह नय वाला सामान्य ग्रहण करता है और नैगमनयवाला सामान्य विशेष दोनों ग्रहण करता है व्यवहार नयवाला एक आकृति युक्त वस्तु ग्रहण करता है और संग्रह नय वाला आकृति उत्पन्न होने की सत्ता को भी ग्रहण करता है व्यवहार नयवाला मृत्तिका से घट बना हुआ है उसे घट कहता है, और संग्रह नय वाला मृत्तिका के पिण्डसे घट बन रहा है उसे भी घट कहता है ऋजुसूत्र नय वाला भूत भविष्य छोडकर वर्तमान अवस्था ही मानता है; जब व्यवहार नय वाला तीनों काल का मानता है शब्दनयवाला लिंग वचन में भेद नहीं मानता है और ऋजुसूत्रनयवाला लिंग वचनादि में भेद मानता है शब्द नय अर्थवाचक पर्याय को ही ग्रहण करता है; और ऋजुसूत्र नय एक पर्याय को ग्रहण करता है, एवंभूत नय प्रति समय क्रिया करने के भाव का ग्रहण करे; और समभिरूढ क्रिया को ग्रहण करे. विशेष खुलासा अनुयोगद्वार सूत्र में जानना ॥ १९ ॥ सात स्वर कहे हैं १ षड्ज २ रिषभ

धैवत ने० निषाद् स० स्वर स० सात वि० करे प्र० इन स० सात स० स्वर के स० सात स० स्वरस्थान स० षड्म अ० अग्र जि० जिव्हा के ਚ० हृदय में रि० रिसमस्वर कं० कंठाग्र मे ग० गांधार म० मध्य में जि० जिव्हा के म० मध्यम णा० नासिका में पं० पंचम ष्र० कहा दं० दंतोष्ठ में धे० धैवत मु० मूर्द्धा में णे० निषाद् स० स्वर स्थान वि० करे स० सात स्वर जी० जीवानिश्रि। स० षड्ज र० बोलता है म० मयूर कु० मुरगा रि० रिषभ स्वर हं० हंस ण० बोलता है ग० गांधार म० मध्यम को ग० बकरा

सत्तसरा प० त० (गाथा) सज्ज रिसभगंधारे। मज्झिमे पंचमे सरे॥ धेवते चेव णेसादे। सरासत्त वियाहिया ॥ १ ॥ (सूत्र)—एएसिण सत्तण्हं सराण सत्तसरट्ठाणा प०त० (गाथा)—सज्जं तु अग्गजिब्भाए। उरेणारिसभस्सरं॥ कण्ठुग्गएण गंधारं। मज्झजिब्भाए मज्झिमं ॥१॥ णासाए पंचमं बूया। दंतोट्ठेणय धेवयं॥ मुद्धाणेणयणेसायं। सरट्ठाणा वियाहिया ॥ २ ॥ (सूत्र) सत्तसरा जीव निस्सिया प० तं० (गाथा) सज्जंरवइमयूरो।

३ गांधार ४ मध्यम ५ पंचम ६ धैवतस्वर और ७ निषाद इन सातों स्वर के सात स्वर स्थान कहे हैं षड्म का स्थान जिव्हा का अग्रभाग २ रिषभ का स्थान हृदय ३ गांधारका स्थान कंठाग्र ४ मध्यम का स्थान जिव्हा का मध्यभाग ५ पंचम स्वर का स्थान नासिका ६ धैवत का स्थान दांत व ओष्ठ और ७ कपाल से बोलना सो निषाद् स्वर अब सात स्वर जीव निश्रित कहे हैं अर्थात्

कु० कुसुम की सं० उत्पत्ति का० रक्त में को० कोकिल पं० पंचमस्वर को छ० छठा सा० सारस कों० क्रौंच णे० निषाद स० सातवा को ग० गम स० सप्तस्वर अ अजीवनिश्रित स० षड्ज र० वाले मु० मादल गो गोमुखी रि० रिषभस्वर स० शंख ण० बोलता है गं० गांधार म० मध्यम को झ० झालर च० चार च० पगसे प० रही हुई गो० गोहिया पं० पंचमस्वर को आ० ढोलका धे० धैवत म० महाभरी स० महतमा को ए० इन स० सात स० स्वर के स० सात लक्षण स० षड्ज से ल० प्राप्त

कुक्कुडो रिसभं सरं॥हंसो णदइ गंधारं। मज्झिमं तु गवेलगा॥१॥ अहकुसुमसंभवे काले। कोइला पंचमं सरं॥ छटुं च सारसा कोंचा। णेसायं सत्तमं गओ ॥ २ ॥ (सूत्र) सत्तसरा अजीवनिस्सिया प० तं०(गाथा)सज्जं रवइ मुइंगो।गोमुही रिसभसरं॥संखो णदइ गंधारं ॥ मज्झिमं पुण झल्लरी॥१॥चउचलणपइट्ठाणा। गोहिया पंचमं सरं ॥ आडंबरोय धेवयय। महाभेरीय सत्तमं ॥ २ ॥ (सूत्र) एएसिणं सत्तण्हं सराणं सत्तलक्खणा

जानवरों की बोली मे सातों स्वरों की पहिचान कराते हैं १ षड्ज स्वर मयूर बोलता है २ कुर्कुट रिषभ स्वर बोलता है ३ हंस गांधारस्वर उच्चारताहै ४ मध्यमस्वर बकरा बोलता है ५ पंचम स्वर कोकिला करतीहै ६ धैवत स्वर सारस बोलता है और ७हस्ती निषाद स्वरसे बोलता है जैसे जीव निश्रित स्वर कहे वैसेही अजीव निश्रित स्वर कहते हैं १ षड्ज स्वर मादलका होताहै २ रिषभस्वर गो

होवे वि० लक्ष्मी क० कदापि न० नहीं वि० विनसे गा० गाय मि० मित्र पु० पुत्र णा० नारीका व० वल्लभ रि० रिषभ से ए० ऐश्वर्य से० सेनापति ध० धनपति व० वस्त्र गं० गंध अ० अलंकार इ० स्त्री स० शयन गं गांधारसे गी० गीतयुक्त व० वाघवृत्ति क० कलाभिलाषुका क० कवि प० महाप्रज्ञ जे० मा अ० मन्य स० शास्त्रपारगामि म० मध्यमस्वरवाला भ० होताहे सु० सुखसेजीनेवाला खा० खाता है पि० पीताहे दे० देताहे म० मध्यम स० स्वराश्रित पं० पांचवास्वरवाला भ० होताहे पु० पृथ्वीपति सू०

१० तं० (गाथा) सज्जेण लभइ वित्तिं । कयचन विणस्सइ॥ गाओ मित्ताय पुत्ताय । णारीणंचवल्लहो ॥ १ ॥ रिसभेणउ एसज्जं । सेणावच्चं धणाणिय॥ वत्थगंधमलंकार। इत्थीओ सयणाणिय ॥ २ ॥ गंधारेगीयजुत्तिण्णा। वज्जवित्तिकलाहिया॥ भवति कविणो पन्ना। जे अन्नसत्थपारगा ॥ ३ ॥ मज्झिमसरसंपन्ना। भवतिसुहजीविणो ॥खायति पियतिदेति। मज्झिमं सरमस्सिओ ॥ ४ ॥ पञ्चमसरसंपन्ना । भवति पुढवीवई ॥ सूरासंगह-

मुखीका होताहे ३ गांधारस्वर धंसका होता है ४ मध्यमस्वर झालरका ५ पंचमस्वर दुर्दरीका ६ धैवत स्वर गालका और ७ निषादस्वर महाभेरीका होताहे सातस्वरके सात लक्षण कहेहे १ षड्ज स्वर वालेको लक्ष्मी पुत्र भी मित्र गाय वगैरह वस्तुओंकी प्राप्ति होती है और कीसी प्रकार का विनाश नहीं होता है वैसेही स्त्री को वल्लभ होता है २. रिषभ स्वरवाला राज्यका सेनापति होवे धन, वस्त्र, गंध अलंकार, स्त्री,

१ यह एक जातिका प्राणिम होता है

शूर स० संग्रह क० करनेवाला अ० अनेक ग० गण ना० नायक धे० धैवत स० स्वरसंपन्न भ० होवे क० कलहप्रिय सा० हिंसक प० शिकारी सो० शूकर म० मच्छ ब० बांधने वाला चं० चांडाल मु मौष्टिकमल्ल जे० जो अ० अन्य पा० पापकर्मी गो० गोघातक चो० चोर णि० निषाद स० स्वराश्रित ए० इन स० सात स० स्वर क त० तीन गा० ग्राम स० षड्जग्राम म० मध्यमग्राम गं० गांधारग्राम स०

कसारो। अणेगा गणणायगा ॥ ५ ॥ धेवयसरसंपन्ना। भवंतिकलहप्पिया॥ साउणिया-वगुरिया। सोयरियामच्छबंधाय ॥ ६ ॥ चंडालमुट्ठियासेया। जे अन्नेपावकम्मिणो। गोघायगा य जे चोरा। णेसायं सरमस्सिता॥ ७ ॥ (सूत्र) एएसिणं सत्तण्हं सराणं तयो गामा प० तं० सज्जगामे, मज्झिमगामे, गंधारगामे,। सज्जगामस्सणं सत्तमुच्छ-

धेय्या भासन वगैरह पावे ३ गांधारवाला कवीश्वर बुद्धिवाला व धनुर्विद्यादि शास्त्र का पारगामी होवे ४ मध्यम स्वर वाला सुख से आजीविका करे खावे पीवे देवे वगैरह करे ५ पंचम स्वर वाला पुरुष पृथ्वीपति होवे अथवा अनेक समुदाय का नायक होवे ६ धैवत स्वरवाला कलहप्रिय होवे जीव हिंसा करने वाला होवे और ७ निषाद स्वरवाला पुरुष चांडाल मौष्टिकमल्ल तथा अन्य जो पापकारी कामों होवे उसको करने वाला होवे इन सातों स्वर के तीन ग्राम कहे हैं १ षड्ज स्वरग्राम २ मध्यम स्वर ग्राम ३ और गांधार ग्राम. षड्ज ग्राम की सात मूर्च्छना (अन्य स्वर को वश्यक करना सो) १ मंगी

पड्जग्राम की स० सात मु० मूर्च्छना मं० मगी को० कोरवी ह० हरीत र० रजनी सी० सीरकांता सा० सारसी सु० शुद्धसज्जा म० मध्यमग्राम के स० सात मु० मूर्च्छना उ० उत्तरमंदा र० रजनी उ० उत्तरा उ० उत्तरसमा अ० अश्वक्रांता सो० सौवीरा अ० अभिरूपवती ग० गांधारग्राम की स० सात मु० मूर्च्छना नं०नंदीता खु०खुद्रिम पू०पूरीमा सु०शुद्धगांधारा उ०उत्तरगांधारा सु०सुष्टुतर आयमा सा०श्र छ०छठी णि० निश्चय मा० य। ।० जान। अ० अथ उ० उत्तराकोडी स० सातवी मु० मूर्च्छना स० सात स० स्वर

णाओ पण्णत्ताओ तं० (गाथा) मंगीकोरव्वीया हरीय। रयणीय सीरकंताय ॥ छ-ट्ठिय सारसीणाम। सुद्धसज्जायसत्तमा ॥ १ ॥ (सूत्र) मज्झिम गामस्सण सत्त-मुच्छणाओ प० तं० (गाथा) उत्तरमंदा रयणी। उत्तरा उत्तरासमा ॥ अस्सोकंताय सोवीरा। अभीरूवइसत्तमा ॥ १ ॥ (सूत्र) गंधारगामस्सण सत्तमुच्छणाओ प० तं०(गाथा) णंदीय खुड्डिमा पूरिमा। चउत्थीय सुद्धगंधारा ॥ उत्तरगंधारावियं। पंचमिया हवइ

२ कोरवी ३ हरीत ४ रजनी ५ सीरकांता ६ सारसी ७ शुद्धसज्जा मध्यम ग्रामकी सात मूर्च्छना कही १ उत्तर मंदा, २ रजनी ३ उत्तरा ४ उत्तर समा ५ अश्वकान्ता ६ सौवीरा और ७ अभिरूपवती गांधार ग्राम की सात मूर्च्छना कही १ नंदिता २ खुद्रिम ३ पूरिमा ४ शुद्ध गांधारा ५ उत्तर गांधारा ६ सुष्टुतर आयमा और ७ उत्तरा कोडी सात स्वर कहांसे उत्पन्न होते हैं? गाने की कोनसी

क० कहां से स० उत्पन्न होता है ग० गानेकी का० कौनसी भ० है जो० योनि क० कितने स० समय उ० उश्वास क० कितने गे० गाने के आ० आकार स० सात स० स्वर णा० नाभि से भ० होते हैं गी० गाना रु० रोना जो० योनि पा० पद् स० सम उ० उश्वास ति० तीन गी० गाने के आ० आकार आ० प्रथम मि० मृदु आ० आरंभ में स० ओर से म० मध्य में अ० छेहु ति० इसका ति० तीन गे०

मुच्छाओ ॥१॥ सुठुत्तरमायामा। साछट्टी णियमसाउनायव्वा ॥ अहउत्तरायकोडी। मायसा सत्तमीमुच्छा ॥२॥ सत्तसरा कओ संभवंति। गेयस्स का भवइ जोणी ॥ कइसमया उस्सासा। कइवा गेयस्स आगारा ॥ १ ॥ सत्तसरा णाभीओ भवंति। गीनचरुन्नजाणीयं ॥ पादसमाउस्सासा। तिन्निय गेयस्स आगारा ॥ २ ॥ आइमिउआरमता, समुव्वहताय

योनि है? कितना काल लगता है? गीत के कितने आकार हैं? उत्तर सातों स्वर नाभि मण्डल से उत्पन्न होते हैं गीतकी और रुदन की एक ही योनी है; क्योंकि दोनों की जाति एक है श्लोक के पदका उच्चारण करते जितना श्वासोश्वास लगे उतना उसका काल है गीत के तीन आकार छ दोष आठ गुण भार वृत्तपद्य के तीन प्रकार कहे हैं उन्हे जानकर जो गीत गाता है वह ही शिक्षित कहा जा सकता है तीन आकार का स्वरूप कहते हैं प्रारंभ में मृदु, मध्य में बडी गीत ध्वनि और अंत में क्षय पाती हुइ इसकी दाने छ दोष कहते हैं १ डरता हुवा गावे २ शीघ्रगावे ३ धनैःगावे ४ विना ताल से गावे ५ काकस्वर से

गाने का भा० आकार छ० छदोष अ० अष्टगुण ति० तीन वि० वृष दो० दो भ० कहा जो० जो णा० जाने सो० सो गा गावे पु० अभ्यासिता हुवा रं रगमध्य में भी० डरता दु० शीघ्रता मे र० लघुता से गा० गाता मा० साचवे नहीं ता० ताल का का० काकस्वर अ० नाक में हो० है गे० गायन का छ० छदोष पु० पूर्ण र रक्त अ० अलंकृत व० व्यक्त त० तथा अ० अविस्वर म मधुर सु० सुकुमार अ० आठगुण हो० है गे० गान का उ० उर कं० कंठ सि० शिर प० प्रशस्त गि० गाना म० मृदुता से भा०

मज्झगारंमि, अवसाणेतज्झिर्वितो, तिन्नियगेयस्स आगारा ॥ ३ ॥ छद्दोसे अट्ठगुणे, तिन्नियविचाइं दोयभणियाओ, जोणाहिइ सो गाहिइ, सुसिक्खिओ रगमज्झमि ॥ ४ ॥ भीत धुत रहस्सं। गायंतोमायगाहिउचाल॥ काकस्सरमणुणास च। होंति गेयस्स छद्दोसा ॥५॥ पुन्न रत्त चअलंकिय। ववत्त तहाय अविघुट्ठं ॥ मधुर समसुकुमालं ॥ अट्ठगुणा

गावे, ८ नाक से गावे आठ गुण १ पूर्णकला सहित गावे २ राग में रक्त बन कर गावे ३ अन्य स्वर विशेष से अलंकृत करे ४ स्पष्ट गाव ५ स्वराब स्वर से गावे नहीं ६ मधुर स्वर से गावे ७ ताल, वंश, स्वर स मिलता हुवा गावे और ८ ललित मनोहर रीतिसे गावे यह गाने के आठ गुण कहे उरकंठ व मस्तक से शुद्ध गाना वैसही बोलना सहित, पदं बद्ध, गेय पद सहित, ताल समान पदका उच्चारण करना, और सात स्वर के सम अक्षरों सहित गाना सो ही गीत, कहाता है दोष रहित, अर्थयुक्त,

पाठत्प प० पदबद्ध स० समताल प० मस्तुत्क्षेप स० सातस्वर क सी० सीहर गे० गीत नि० निर्दोष सा० मर्थयुक्त हे० हेतुयुक्त अ० अलंकृत उ० उपसंहारयुक्त सो० उपचारयुक्त मि० सम म० मधुर स० समवृत्त अ०अर्धसम स० सर्वत्र वि०विषम ति०तीन वि०वृत्त प० पद च० चौथा नो० नहीं स०मात्र होवे स०संस्कृत पा० प्राकृत दु० दोप्रकार के म० कहना स० स्वर मण्डल में गि० गाते प० प्रशस्त मा० कहा के० कौनसी गा० गाती है म० मधुर के० कौनसी गा० गाती है स० स्वर रु० रूक्ष के० कौनसी गा० गाती

होंति गेयस्स ॥ ६ ॥ उरकंठसिरपसत्थं च । गिज्जए मउ आरिभियपदबद्धं ॥ समताल पडुक्खेत्र । सत्तसर सीहरगेय ॥ ७ ॥ निद्दोसं सारवंतंच । हेउजुत्तमलंकिय ॥ उवणीयं सोवयारंच, मियंमहुरमेवय॥ ८ ॥ सममद्धसमचेव। सव्वत्थविसमंचजं, ॥ तिन्निवित्तप यायाइं, चउत्थंनोवलब्भइ ॥ ९ ॥ सक्कया पागयाचेव, दुविहाभणिउ आहिया, सर मंडलंमि गिज्जते । पसत्थाइसि भासिया ॥ १० ॥ केसी गायइ महुरं । केसी गायइ

हेतुयुक्त, काव्य के अलंकार युक्त, उपसंहार युक्त, उपचार सहित, अनिष्टुर पदवाक्य, परस्पर में प्रमाण युक्त व मधुर शब्दार्थ वाला ही गीत कहलाता है सब सरीखे अक्षर सो समवृत्त, पहिला तीसरा पदसम और दूसरा चौथा पद बराबर सो अर्धसमवृत्त, और एक भी पद बराबर नहीं सो विषम पद संस्कृत व प्राकृत इन दोनों प्रकार के श्लोकों में गाना स्वर मंडल में प्रशस्त गिना गया है अब गायन करती

है च० चतुर के० कौनसी वि० विलम्ब से दु० जल्दी के० कौनसी वि० बेस्वर पु० फीर के० कौनसी सा० श्यामा गा० गाती है म० मधुर का० काली गा० गाती है स्व० स्वर रु० रूक्ष गो० गोरी गा० गाती है च० चतुर का० काणी वि० विलम्ब से दु० जल्दी अं० अंधी वि० बेस्वर पि० पिंगला त० तंत्रिसरिसा ता० तालसरिसा छ०छपसरिसा ग० गाथा सरिसा नी०निःश्वास ऊ० उश्वास सरिसा सं० संचार समान स० स्वर स० सात स्वर त० तीन गा० ग्राम मू० मूर्च्छना ए० एकवीस ता० तान ए० गुनपचास सं० समा

स्वरं च रुक्खंच, केसी गायइ चउरं। केसीविलंब दुतं केसी॥११॥विस्सर पुण केरिसी। सामा गायइ महुरं। कालीगायइ स्वरंच रुक्खंच गोरीगायइ चउरं। काणविलंबं दुतं अंधा॥१२॥ विस्सरं पुण पिंगला, तंति समताल्समं, पादसमं लयसमं गहसमंच, नीससिऊसासियसमं, संचारसमा सरासत्त ॥ १२ ॥ सत्तसरा तओगामा, मुच्छणाएगविंसती, ताणा एकूण-

स्त्रियों की पहिचान बताते हैं कैसी स्त्री मधुर गाती है? कैसी स्त्री स्वर व रूक्ष गाती है? कैसी स्त्री चातुर्यता से गाती है? कैसी स्त्री विलंब से गावे? कैसी स्त्री शीघ्रतासे गावे? कैसी स्त्री खराब स्वरसे गावे? श्यामा सोलह वर्ष की स्त्री मधुर गाती है, काली स्त्री रूक्ष गाती है, गोरी स्त्री चतुरतासे गाती है, एक नेत्रसे काणी स्त्री विलम्ब से गाती है, अन्धी स्त्री शीघ्र गाती है, और पिंगला कपिला स्त्री खराब स्वर से गाती है (गायन विधि) वीणा के शब्द समान गावे, ताल समान, पद समान, लय समान, गाथा समान, निश्वास उश्वास समान, संचार समान, और स्वरांतर समान सात स्वर, तीन

में स०जाती है ग० गगा रो० रोहिता ह० हरिसलीला सी० सीता ण० नरकान्ता सु सुवर्णकुला र० रक्ता ॥ २४ ॥ स० सात म० महानदियाँ प० पश्चिम मुखसे ल० लवण समुद्र में म० जाता है सिं० सिंधु रो० रोहितांसा ह० हरीकान्ता सी० सीतोदा णा० नारीकान्ता रु० रूप्यकूला र० रक्तावती ॥२५॥ धा धात की खण्ड के पु० पूर्वार्ध में स सातक्षेत्र भ० भरत जा० यावत् म० महाविदेह धा० धात की खण्ड पु पूर्वार्ध में स० सात वा० वर्षधर पर्वत चु० चुल्लहिमवंत जा० यावत मं० मरु धा० धात की खण्ड

इंबि दीवे सत्तमहानदीओ पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्द समप्पेंति तं० गंगा, रोहिया, हरीसलीला, सीता, णरकंता, सुवन्नकूला, रत्ता ॥२४॥ जंबूद्दीवेदीवे सत्त महानदीओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति—सिंधु रोहियसा, हरिकंता, सीतोदा, णारिकंता, रुप्पकूला रत्तवई ॥ २५ ॥ धायइसंडदीव पुरच्छिमद्धेण सत्तवासा प० त० भरह, जाव महाविदेहे ॥ धायइसंड दीवपुरच्छिमेण सत्त वासहरपव्वया प०

जम्बूद्वीप में सातबड़ी नदियाँ पूर्व के लवण समुद्र में मीलती है गंगा, रोहिता, हरिसलिला, सीता नरकांता, सुवर्णकूला, और रक्ता ॥ २४ ॥ जम्बूद्वीप में सात बड़ी नदियाँ पश्चिम दिशा के लवण समुद्र में मीलती है सिंधु, रोहितांसा, हरिकान्ता, सीतोदा, नारीकान्ता, रूप्यकूला, और रक्तवती ॥ २५ ॥ धातकी खंड

के पु० पूर्वार्ध में स० सात महानदियों पु० पूर्वमुख से का० कालोदधि समुद्र में स० जाती हैं गं० गंगा मा यावत र० रक्ता का भात की सह के पु० पूर्वार्ध में स० सात महानदियों प० पश्चिममुख से ल० लवण समुद्र में स जाती हैं सि० सिंधु मा० यावत् र० रक्तवती धा० धात की खंड के प० पश्चिमार्ध में० सातक्षेत्र ए० ऐसी च विशेष पु० पूर्वमुख से ल० लवण समुद्र में प० पश्चिममुख से का० कालोदधि में ॥ १३ ॥ पु० पुष्करार्धद्वीप के पु पूर्वार्ध में स० सातक्षेत्र त० तैसेही च० विशेष पु० पूर्वमुख से पु० पुष्करोदधि स० समुद्र में स० जाती हैं प० पश्चिममुख से का० कालोदधि समुद्र में स० जाती हैं प०

तं० चुल्लहिमवंते जाव मंदरे, ॥ धायइ खंडदीवपुरत्थिमद्धेण सत्तमहानदीओ पुरत्थाभिमुहीओ कालोदसमुद्द समप्पेंति त० गंगा जाव रत्ता ॥ धायइखंडदीव पुरत्थिमद्धेण सत्तमहानदीओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति त० सिंधू जाव रत्तवई खंडदीव पच्चत्थिमद्धेण सत्तवासा एवं चेव, णवरं पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमप्पेंति पच्चत्थाभिमुहीओ कालोद सेसंतंचेव ॥ २९ ॥ पुक्खरवरदीवड्ढ पुर-

में और पश्चिमार्ध में सात क्षेत्र, सात वर्षधर पर्वत, पूर्वपश्चिम के कालोदधि समुद्र में प के लवण में मीलने वाली सात २ नदियों जम्बूद्वीप जैसे कही हैं ॥ २९ ॥ पुष्कर के पूर्व में व पश्चिम में सात क्षेत्र सात वर्षधर पर्वत और पूर्वका पुष्करोदधि व पश्चि कालोदधि में सात नदियों तथा पश्चिम के पुष्करोदधि व पूर्व क कालोदधि में

एमे प० पश्चिमार्थ में ण० निकल पु० पूर्वमुख ते क० कालोदधि स० समुद्र में प० पश्चिम मुख से पु० पुष्करोदधि स० समुद्र में स० जाती हैं स० सप्तसेन वा० वर्षधर पर्वत ण० नदियों भा० कहना ॥ २७ ॥ जं० जंबूद्वीप के भा० भरतक्षेत्र में ती० अतीत ऊ० उत्सर्पिणी में स० सात कु० कुलकर हो० हुवे ये मि० मित्रदाम सु० सुदाम सु० सुपार्श्व स० स्वयंप्रभ वि० विमलघोष सु० सुघोष म० महाघोष ॥ २८ ॥ इ० इस भा० अवसर्पिणी में स० सात कु० कुलकर हो० हुवे प० प्रथम वि० विमल वाहन च० चक्षुष्मा ज०

त्थिमद्धेणं सत्तवासा तहेव, णवरं पुरत्थाभिमुहीओ पुक्खरोदं समुदं समप्पेंति, पच्चत्था भिमुहीओ कालोदं समुदं समप्पेंति सेसं तचेव एवं पच्चत्थिमद्धेवि णवर पुरत्था-भिमुहीआ कालोदं समुद्द समप्पेंति पच्चत्थाभिमुहीओ पुक्खरोदं समुदं समप्पेंति सव्वत्थवा सा, वासहरपव्वया, णईओय भाणियव्वाणि जंबूद्दीवे दीवे भारहेवासे तीयाए उस्स-प्पिणीए सत्त कुलकरा होत्था तंजहा मित्तदामे सुदामेय। सुपासेय सयंपभे। विमलघोसे सुघोसे य। महाघोसेय सत्तमे ॥ २८ ॥ जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पि-णीए सत्तकुलगरा होत्था तं० पढमित्थविमलवाहण। चक्खुमजसमं चउत्थ

पासने वाली सात नदियों कही हैं ॥ २७ ॥ जम्बूद्वीपमें गत उत्सर्पिणीमें सात कुलकर हुवे १ मित्रदाम, २ सुदाम ३ सुपार्श्व, ४ स्वयंप्रभ ५ विमलघोष, ६ सुघोष, ७ महाघोष ॥२८॥ जम्बूद्वीप में वर्तमान अवसर्पिणी में सात कुलकर हुए. १ विमल वाहन, २ चक्षुष्मा ३ यशस्वी ४ अभिचंद्र, ५ प्रसेनजित ६ मरुदेव ७ नाभी

जसम च० चौथा अ० अभिचद्र प० प्रसेनपति म० मरुदेव ना० नाभी ए० इन स० सात कु० कुलकर को स० सात भा० भार्या हो० थी च० चन्द्रयशा च० चंद्रकान्ता सु० सुरूपा प० प्रतिरूपा च० चक्षुकांता सि० श्रीकांता म० मरुदेवा कु० कुलकर की इ० स्त्री के णा० नाम ॥ २९ ॥ ज० जंबूद्वीप में भा० भरत क्षेत्र में आ० आगामीक उ० उत्सर्पिणी में स सात कु० कुलकर भ० होंगे मि० मित्रवाहन सु० सुभूम सु० सुप्रभ स० स्वयंप्रभ द० दत्त सु० सुहूम सु० सुबन्धु ॥ ३० ॥ वि० विमल वाहन कु० कुलकर को स०

मभिचदे ॥ तत्तो पसेणवईपुण । मरुदेवे चेव नाभीय ॥ १ ॥ एएसिणं सत्ताण्हं कुल

कराणं सत्त भारिया होत्था त० चंदजसा चंदकंता । सुरूवपडिरूवचक्खुकंताय ॥ सिरिकं

ता मरुदेवी । कुलकर इत्थीण णामाइं ॥ २ ॥ २९ ॥ जंबूदीवे दीवे भारहे वासे आगमिस्साए

उस्सप्पिणीए सत्तकुलकरा भविस्सति ज० मित्तवाहण सुभोमेयसुप्पभेय सयपभे

दत्ते सुहुमे सुबंधूय । आगमिस्सेणहोक्खइ ॥ ३० ॥ विमल वाहणेण कुलकरे

इन सात कुलकरों की सात स्त्रीयों कहीं चंद्रयशा १ चंद्रकान्ता २ सुरूपा ३ प्रतिरूपा ४ चक्षुकान्ता ५ श्री कान्ता और ७ मरुदेवा ॥ २९ ॥ जम्बूद्वीप में आगामीक उत्सर्पिणी में सात कुलकर होंगे १ मित्र वाहन २ सुभूम, ३ सुप्रभ ४ स्वयंप्रभ ५ दत्त ६ सुहूम और ७ सुबंधु ॥ ३० ॥ विमल वाहन कुलकर

सात मकार के रु० वृक्ष उ० उपभाग में इ० शीघ्र आ० आये म० मत्तंग भि० मृगांग तु० तृटितांग चि० चित्रांग चि० चित्ररस म० मणियांग अ० अनीयक ॥ ३१ ॥ म सातमकार की दं० दंडनीति ह० हकार म० मकार धि० धिक्कार प० परिमाषा मं० मंडलबन्ध चा० मारना छ० अंगछेदन ॥ ३२ ॥ ए० एकेक र० राजा चा चातुरंत च० चक्रवर्ती को स० सात ए० एकेन्द्रिय र० रत्न च० चक्ररत्न छ० छत्ररत्न च० चमररत्न दं० दंडरत्न अ० खड्गरत्न म० मणिरत्न का काकणीरत्न ॥ ३३ ॥ ए० एकेक र० राजा चा०

सत्तविहा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छिंसु तं० मत्तंगाय भिंगा तुडियंगा। चित्तगा चित्त होंति चित्तरसा ॥ मणियंगाय अणिअणा । सत्तमगा कप्परुक्खाय ॥ ३१ ॥ सत्तविहा दंड णीई प० तं० हक्कारे मक्कारे धिक्कारे परिमासे मंडलिबंधे चारए छविच्छेदे ॥ ३२ ॥ एगमेगस्सणं रन्नो चाउरंत चक्कवट्टिस्स सत्तएगेंदियरयणा प० तं० चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे दंडरयणे असिरयणे मणिरयणे काकणिरयणे ॥ ३३ ॥ एगमे-

को सात मकार के कल्प वृक्ष मागने में आवेथे १ मतंग २ मृगांग ३ त्रुटितांग ४ चित्रांग ५ चित्ररस ६ मणियांग और ७ अनियक ॥ ३१ ॥ सात मकार की दंड नीति कही १ हकार २ मकार ३ धिक्कार ४ परिमाषा ५ नरबंध ६ हदीमें घाव और ७ अंगछेदन ॥ ३२ ॥ एक २ चक्रवर्ती को सात २ एकेन्द्रिय रत्न कहे हैं १ चक्ररत्न २ छत्ररत्न ३ चमररत्न ४ दंडरत्न ५ खड्गरत्न ६ मणिरत्न और ७

चातुरंत च० चक्रवर्ती को स० सात पं० पचेन्द्रियरत्न से० सेनापति गा० गाथापति व वार्द्धिक पु० पुरोहित इ० स्त्रीरत्न आ० अश्व ह० हस्ति ॥ ३४ ॥ सात कारन से ओ० प्रकर्ष दु० दुष्काल जा० जाने अ० अकाल में व० वर्षे का० काल में ण० नहीं व० वर्षे अ० असाधु को पु० पूजे मा० साधु को ण० नहीं पु० पूजे गु० गुरुसे ज० लोक मि० मिथ्या प० प्रतिपन्न म० मन दुःख व वचन दुःख ॥ ३५ ॥ स० सात कारन से ओ० प्रकर्ष सु० सुषम जा० जानना अ० अकाल में ण० नहीं व० वर्षे

गस्सण रयो चाउरंत चक्कवट्टिस्स सत्तपंचेंदिय रयणा प० त० सेणावइरयणे गाहावइ रयणे वड्डइरयणे पुरोहियरयणे इत्थिरयणे आसरयणे हत्थिरयणे ॥३४॥ सत्तहिं ठाणेहिं ओगाढ दुस्सम जाणेज्जा त० अकाले वरिसइ, कालेण वरिसइ, असाधू पुज्जंति, साधू ण पुज्जति, गुरूहिं जणो मिच्छ पडिवन्नो, मणोदुहया, वइदुहया ॥ ३५ ॥ सत्तहिं ठाणेहि ओगाढं सुसमं जाणज्जा, त० अकाले ण वरिसइ, काले वरिसइ, असाधू ण पु

कांगणीरत्न ॥३३॥ एक चक्रवर्ती को सात पंचेन्द्रियरत्न कहे १ सेनापति २ गाथापति ३ वार्द्धिक ४ पुरोहित ५ स्त्रीरत्न ६ अश्वरत्न और ७ गजरत्न ॥३४॥ सात कारनसे बहुत दुस्सम काल मानना १ अकालमें वर्षा होवे २ वर्षा समय में वर्षा न होवे ३ असाधु की पूजा होवे ४ साधु की पूजा न होवे ५ गुरुकी साथ दुष्टतासे चले ६ मनका दुःख होवे, और ७ वचन का दुःख होवे ॥३५॥ सात कारनसे बहुत अच्छा सुषमकाल मानना १ अकालमें वर्षे नहीं २ कालमें व॰

का० काल में प० पर्ये अ० असाधु को ण० नहीं पु० पूजे सा० साधु को पु० पूजे गु० गुरुसे ज० लोक म० सम्यक् प प्रतिपन्न म० मनसुख व० वचनसुख ॥ १६ ॥ स० सात प्रकार के सं० संसारी जीव ने० नारकी ति० तिर्यंच ति० तिर्यंचणी म० मनुष्य म० मनुष्यणी दे० देवता दे० देवी ॥ १७ ॥ स० सात प्रकार का आ० आयुष्यभेद अ० अध्यवसाय से णि० निमित्त से आ० आहार से वे० वेदना से प० पराघात से फा० स्पर्श से आ० श्वास से स० सात कारन से भि० भेदावे आ०, आयुष्य ॥ १८ ॥ स०

जंति, साधू पुज्जति, गुरूहिं जणो समपडिवन्नो, मणोसुहया, वइसुहया ॥ २६ ॥ सत्त विहा संसारसमावन्नगा जीवा प० तं० नेरइया, तिरिक्खजोणिया, तिरिक्खजोणीओ, मणुस्सा, मणुस्सीओ, देवा, देवीओ ॥ २७ ॥ सत्तविहे आउभेदे प० तं० (गाथा) अज्झवसाण निमित्ते। आहारे वेयणा पराघाए ॥ फासे आणापाणू। सत्तविधं भिज्जए आओ

१ असाधुकी पूजा न होवे ४ साधुकी पूजा होवे ५ गुरुकी साथ अच्छी तरहसे चले सेवाभक्ति करे ६ मनकासुखी और वचनका सुखी ॥१६॥ संसारी जीवके सात भेद १ नारकी २ तिर्यंच ३ तीर्यंचणी ४ मनुष्य ५ मनुष्यणी ६ देव और ७ देवी ॥१७॥ सात प्रकारसे आयुष्यका भेद (नाश) होवाहै १ भयानक अध्यवसाय से २ दण्डशस्त्रादि निमित्त से ३ बहुत आहारकरनेसे ४ शूलादि वेदनासे ५ पराघात देखकर ६ सर्पादिक के डंकसे और ७ श्वासके रोगसे ॥ १८ ॥ सब जीवके सात भेद पृथ्वी, अप्, तेउ, वायु, वनस्पति, त्रसकाय, और

सात प्रकार के स० सब जीव पु० पृथ्वीकाय आ० अप् ते० तेजस् वा० वायु व० वनस्पति त० त्रसकाय अ० अकाय ॥ ३९ ॥ अ० अथवा क० कृष्णलेशी जा० यावत् सु० शुक्ललेशी अ० अलेशी ॥ ४० ॥ ब० ब्रह्मदत्त रा० राजा चा० चातुरंत च० चक्रवर्ती स० सात ध० धनुष्य उ० ऊंचे उ० ऊंचपने स० सात वा० सोवष उ० उत्कृष्ट आ० आयुष्य पा० पालकर का० काल के अवसर में का० काल करके अ० अधो स० सातवी पु० पृथ्वी में अ० अप्रतिष्ठान न० नरक में ने० नारकीपने उ० उत्पन्न हुवे ॥ ४१ ॥ म० मल्लीनाथ अ० अरिहंत अ० पोते स० सातमा मु० मुंड हुवे अ० अगार से अ०

॥ १ ॥ ३८ ॥ सत्तविहा सव्वजीवा प० तं० पुढविकाइया, आउ–तेउ–वाउ–वण स्सइ–तसकाइया, अकाइया ॥ ३९ ॥ अहवा सत्तविहा सव्वजीवा प० तं० कण्ह- लेसा जाव सुक्कलेसा अलेसा ॥ ४० ॥ बंभदत्तेणं राया चाउरंत चक्कवट्टी–सत्तधणूइं उड्ढं उच्चत्तेण, सत्तयवाससयाइं परमाउ पालइत्ता कालमासे कालंकिच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए अप्पइट्ठाणे नरए नेरइयत्ताए उववन्ने ॥ ४१ ॥ मल्लीणंअरहा अप्प-

अकाय ॥ ३९ ॥ और भी सब जीव के सात भेद १ कृष्णलेशी २ नीललेशी ३ कापुतलेशी ४ तेजुलेशी ५ पद्मलेशी ६ शुक्ललेशी और ७ अलेशी ॥ ४० ॥ ब्रह्मदत्त चक्रवर्तीकी सात धनुष्य की अवगाहना थी, और सातसो वर्षका आयुष्य पालकर काल के अवसर में काल कर सातवीं नरक के अप्रतिष्ठान नरकावास में नारकीपने उत्पन्न हुवे ॥ ४१ ॥ श्री मल्लिनाथ भगवन्त स्वतःसातवा (छ अन्य राजाओं और

अनगार को प० प्रव्रजित हुवे म० मल्लीविदेह रा० राजवर कन्या प० मतिबुद्धि इ० इक्ष्वाकुराजा च० चंद्रच्छाय अं० अंगदेशका राजा रु० रुपी कु० कुणालाधिपति सं० संख का० काशीका राजा अ० अदीनशत्रु कु० कुरुदेशका राजा जि० जितशत्रु प० पंचालकाराजा ॥ ४२ ॥ स० सात प्रकार का दं० दर्शन म० सम्यक् मि० मिथ्या दर्शन स० सममिथ्या दर्शन च० चक्षुदर्शन अ० अचक्षु दर्शन ओ० अवधि दर्शन के० केवल दर्शन ॥ ४३ ॥ छ० छद्मस्थ वी० वीतराग मो० मोहनीय व० वर्जकर स० सात क०

सत्तमे मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए तं० (गाथा) मल्ली विदेहराय-वरकन्नगा, पडिबुद्धी इक्खागराया, चंदच्छाए अंगराया, रुप्पीकुणालाहिवई संखेकासीराया, अदीणसत्तुकुरुराया, जियसत्तू पंचालराया, ॥ ४२ ॥ सत्तविहे दंसणे प० तं० सम्मदंसणे, मिच्छदंसणे, सम्ममिच्छादंसणे, चक्खुदंसणे अचक्खुदंसणे, ओहिदंसणे, केवलदंसणे ॥ ४३ ॥ छउमत्थवीयरागेणं मोहणिज्जवज्जाओ सत्तकम्म

सातवा सत्व) मुंडनकर दीक्षित हुवे उन सातों के नाम १ श्री मल्ली विदेहराजवर की कन्या २ मति बुद्धि इक्ष्वाकुराजा ३ चंद्रच्छाय अंगदेशका राजा ४ रुपी कुणाला का राजा ५ संख काशी देशका राजा ६ अदीनशत्रु कुरु देशका राजा ७ जितशत्रु पांचाल देशका राजा ॥ ४२ ॥ दर्शन के सात भेद कहे हैं १ सम्यक् दर्शन २ मिथ्यादर्शन ३ सममिथ्यादर्शन ४ चक्षु दर्शन ५ अचक्षुदर्शन ६ अवधिदर्शन और ७ केवल

कम प्रकृति वे० वेदते हैं ना० ज्ञानावरणीय द० दर्शनावरणीय वे० वेदनीय आ० आयुष्य ना० नाम गो० गोत्र अं० अंतराय ॥ ४४ ॥ स० सात ठा० स्थान से छ० छद्मस्थ स० सर्वभाव को न० नजाने न० नदेखे ध० धर्मास्तिकाय अ० अधर्मास्तिकाय आ०आकाशास्तिकाय जी०जीव अ० अशरीरी प०परमाणु पुद्गल स० शब्द गं० गंध ॥ ४५ ॥ ए० इन को उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दं० दर्शन आ० यावत् जा० जाने पा० देखे ध० धर्मास्तिकाय जा० यावत् गं० गंध ॥ ४६ ॥ स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर

पयडीओ वेएइ तं० नाणावरणिज्जं, दंसणावरणिज्जं, वेयणीयं, आउय, नामं, गोय, मंतराइय ॥४४॥ सत्तट्ठाणाइ छउमत्थे सव्वभावेण नजाणइ नपासइ त०धम्मत्थिकाय, अहम्मत्थिकायं, आगासत्थिकाय, जीवअसरीरं, परमाणुपुग्गल, सद्दं गंधं ॥ ४५ ॥ एयाणिच्चेव उप्पन्ननाणे जाव जाणइ पासइ इं० धम्मत्थिकाय जाव गंधं ॥ ४६ ॥

वचन ॥ ४३ ॥ छद्मस्थ वीतराग को सात कर्म प्रकृति होती है १ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय ३ वेदनीय ४ आयुष्य, ५ नाम ६ गोत्र और ७ अंतराय ॥ ४४ ॥ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय, ३ आकाशास्तिकाय ४ अशरीरी जीव ५ परमाणु पुद्गल ६ शब्द और ७ गंध इन सातों को छद्मस्थ सब भावसे नहीं जान व देख सकते हैं ॥ ४५ ॥ परंतु केवली इन सातों पदार्थों को सब भाव से जान व देख सकते हैं ॥ ४६ ॥ वज्रऋषभ नाराच संघयन और समचतुस्र संस्थान वाले श्रमण भगवंत महावीर

व० वज्रऋषभ नाराच सं० संघयण स० समचौरस संठान सं० संस्थित स० सात ह० हाथ उ० ऊंचे उ० ऊंचपने हो० थे ॥ ४७ ॥ स० सात वि विकथा इ० स्त्रीकथा भ० भक्तकथा दे० देशकथा रा० राजकथा मि० मृदुकारुणीक द० दर्शन भेदनेवाली च० चारित्र भेदनेवाली ॥ ४८ ॥ आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गच्छमें स० सात अ उत्कृष्ट अ० आचार्य उ० उपाध्याय के अ० अंदर उ० उपाश्रय के पा० पांवको नि पकडकर प पुंजे प० प्रमार्जे ना० उल्लंघनकरे नहीं ए० ऐसा ज जैसा पं० पांचवा ठाणा में जा० यावत् बा० बाहिर उ० उपाश्रय के ए० एकरात्रि दु० दोरात्रि व० रहवा न० उल्लंघनकरे नहीं उ०

समण भगवं महावीरे वइरोसभनारायसंघयणे, समचउरंस संठाणसंठिए सत्तरय णीओ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ४७ ॥ सत्तविकहाओ प० तं० इत्थिकहा, भत्तकहा, देसकहा, रायकहा, मिउकालुणिया, दसणभेयणी, चरित्तभेयणी, ॥ ४८ ॥ आयरिय उवज्झायस्सणं गणंसि सत्तअइसेसा प० त० अयरिय उवज्झाए अंतोउवस्सगस्स

सात हाथ के ऊंचे थे ॥ ४७ ॥ सात विकथा १ स्त्री कथा २ भक्त कथा ३ देश कथा ४ राजे कथा ५ मृदूकारुणी स्त्री पुत्रादिक के वियोगकी कथा६ समकीत भेदक की कथा और ७ चारित्र भेदकी कीकथा ॥४८॥ आचार्य उपाध्याय के गच्छ में सात अतिशेप कहे हैं: आचार्य उपाध्याय बाहिर से आवे उस समय उस के पांव ले कर रजोहरण से पूंजे यावत् उन की आज्ञा से उपाश्रय बाहिर एक रात्रि या दोरात्रि

उपकरण भ० भक्त पा० पानी ॥ ४९ ॥ स० सात प्रकार का सं संयम पु० पृथ्वीकाय संयम
आ० यावत् त० त्रसकाय अ० अजीवकाय ॥ ५० ॥ स० सात प्रकार का असंयम पु० पृथ्वी
काय का यावत् त० त्रसकाय अ० अजीवकाय असंयम ॥ ५१ ॥ स० सात प्रकार का आ० आरंभ
पु० पृथ्वीकाय आ० आरंभ जा० यावत् अ० अजीवकाय आरंभ ए० ऐसे अ० अनारंभ के ए० ऐसे सा

पाए निगिज्झिय २ पप्फोडेमाणेवा पमज्जेमाणेवा नाइक्कमइ एवं जहा पच्चट्ठाणे जाव बाहिं
उवस्सगस्स एगरायंवा दुरायंवा वसमाणे नाइक्कमइ,उवगरणाइसेसे भत्तपाणाइसेसे॥४९॥
सत्तविहे संयमे प० तं० पुढविकाइयसंयमे जाव तसकाइयसंयमे, अजीवकायसंयमे
॥ ५० ॥ सत्तविहे असंयमे प० त० पुढविकाइय असंयमे, जाव तसकाइयअसंजमे
अजीवकायअसंयमे ॥ ५१ ॥ सत्तविहे आरंभे पण्णत्ते त० पुढविकाइयआरंभे

रहते आज्ञा अतिक्रमे नहीं यह अधिकार पांचवे ठाणे जैसे कहना और ६ गुरु के उपकरण धोते अर्थात्
शुद्ध करते ७ इच्छित भात पानी ला देवे ॥ ४९ ॥ पृथ्वी काय, अप् काय, तेऊ काय, वायु काय,
वनस्पति काय, त्रसकाय और अजीव काय इन सातों भेद से संयम कहा है ॥ ५० ॥ और इन सातों को
दुःख देने व अयत्ना करने से सात प्रकार का असंयम कहा है ॥ ५१ ॥ पृथ्वी कायादि सात प्रकार

सारंभ के प ऐसे अ० असारम के ए० ऐसे स० समारम के ए ऐसे अ० असमारम के जा० यावत् अ० अजीवकाय अ० असमारंभ ॥ ५२ ॥ अ० अथ भं० भगवन् अ० अलसी कु० कुसुम को० कोद्रव के कं० कांग रा राल ग० गवार को० धान्य विशेष स० सण स० सरिसव मू० मूल बी० बीज ए० इन प० धान्य को को० कोठे में जा० यावत् पि० ढांके के० कितना का० काल यो० योनि स० रहे ज० जघन्य अं० अंतर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट स० सातवर्ष ते उसपीछे जो० योनि प० म्लान होती है जा० यावत् जो० योनि वु० विच्छेद प० प्ररूपी ॥ ५१ ॥ बा बादर अप्काय उ०

जाव अजीवकाय आरंभे ॥ एवमणारंभेवि, एवसारभेवि, एवमसारभेवि, एवसमारंभे वि एवअसमारमेवि, जाव अजीवकाय असमारंभेवि ॥ ५२ ॥ अहमते अयसि कुसुभ कोद्दव कगु राल गवरा कोद्दसगगा सण सरिसव मूलग बीयाण, एएसिणं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं जाव पिहियाण केवइयं कालं जोणी सचिट्ठइ? जहन्नेण भंतो मुहुत्त मुक्कोसेणं सत्तसंवच्छराइं, तेणपरं जोणी पमिलायइ जाव जोणीवुच्छेए प०

का आरंभ, अणारंभ, सारंभ, असारंभ, समारंभ, असमारंभ जानना ॥ ८२ ॥ अहो भगवन्! अलसी, कुसुम, कोद्रव, कांग, राल, गवार सण, सरिसव, और मूलक के बीज को कोठे में डालकर ढंपकिये बाद तो कितने काल तक योनि रहती है? जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सात वर्ष तक योनि रहती है

॥ ५४ ॥ त० तीसरी पा० बालु प्रभा पु० पृथ्वी उ० उत्कृष्ट
की ठि० स्थिति ॥ ५५ ॥ च चौथी पं० पंकप्रभा पु० पृथ्वी में
सागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ५६ ॥ स० शक्र दे० देवेन्द्र दे०
को स० सात अ० अग्रमहिषी ॥ ५७ ॥ इ० इशान दे० देवेन्द्र दे०

इयाणं उक्कोसेण सत्तवाससहस्साइ ठिई प० ॥ ५४ ॥
ढवीए उक्कोसेणं नेरइयाण सत्तसागरोवमाइ ठिई प०
प्रभाए पुढवीए जहन्नेण नेरइयाण सत्तसागरोवमाइ ठिई
देविंदस्स देवरन्नो वरुणस्स महारन्नो सत्तग्गमहिसीओ
णस्सणं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सत्तग्ग

। बादर अपकाय की उत्कृष्ट सात हजार वर्ष की स्थिति कही॥५४॥
की उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम की कही ॥५५॥ चौथी पंक
स्थिति सात सागरोपम की कही ॥५६॥ शक्रेन्द्र के वरुण महाराजा को सात
नेन्द्र देवक सोम महाराजा को सात अग्र महिषियों कही ॥ ५८ ॥

देवराजा के सो० सोम म महाराजा को स० सात ... ॥ ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा क ज यम म महाराजा को म० सात अग्रमहिषी ॥ ५९ ॥ ई० ईशान दे० दे० देवेन्द्र द० देवराजा की आ० आभ्यंतर प० परिषदा क दे० देवता की स० सात प० पल्योपम ठि० स्थिति ॥ ६० ॥ स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की आ० आभ्यंतर प० परिषदा के दे० देवता की स० सात प पल्योपम की ठि० स्थिति ॥ ६१ ॥ स० शक्र दे० देवेन्द्र दे देवराजा की अ अग्रमहिषी द० देवीकी स० सात प० पल्योपम की ठि० स्थिति ॥ ६२ ॥ सो० सौधर्म कल्प में प० परिग्रही द०

महिसीओ प० ॥ ५८ ॥ ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो सत्तग्ग महिसीओ पण्णत्ताओ, जे ५९ ॥ ईसाणस्सण देविंदस्स देवरण्णो अब्भिंतर परिसाए देवाणं सत्तपलिओवमा ठिई प० ॥ ६० ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो अब्भिंतर परिसाए देवाणं सत्तपलिओवमाइं ठिई प० ॥ ६१ ॥ सक्कस्सण देविंदस्स देवरण्णो अग्गमहिसीणं देवीणं सत्तपलिओवमाईठिइ प० ॥ ६२ ॥ सोहम्मेकप्पे परिग्गहियाण

ईशानेन्द्र देवके यम महाराज को सात अग्र महिषियों कही ॥ ५९ ॥ ईशानेन्द्र देवकी आभ्यन्तर परिषदा के देवों की सात पल्योपम की स्थिति कही ॥ ६० ॥ शक्रेन्द्र देवेन्द्रकी आभ्यंतर परिषदा के देवोंकी सात पल्योपम की स्थिति कही ॥ ६१ ॥ शक्रेन्द्र देवकी अग्र महिषियों की सात पल्योपम की स्थिति कही॥६२॥

महाराजा को म० सात अग्रमहिषी ॥ ५९ ॥ ई० ईशान दे
आभ्यंतर प० परिषदा के दे० देवता की स० सात प० पल्योपम ठि०
न्द्र दे० देवराजा की आ० आभ्यंतर प० परिषदा के दे० देवता की
स्थिति ॥ ६१ ॥ स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की अ अग्रमहिषी
की ठि० स्थिति ॥ ६२ ॥ सो० सौधर्म कल्प में प० परिग्रही द०

लोएकप्पे जहन्नेण दत्ता। ईसाणस्सण देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो। सत्तग्ग
कप्पेसु विमाणा सत्तजे ५९ ॥ ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरण्णो अब्भिंतर परिसाए
भवधारणिज्ज सरीरगा ठिई प० ॥ ६० ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो अब्भिंतर
जोइसियाण । सोहम्मीलिओवमाइं ठिई प० ॥ ६१ ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो
उक्कोसचेण प० ॥ अच्चपलिओवमाइठिइ प० ॥ ६२ ॥ सोहम्मेकप्पे परिग्गहियाण

की सात अग्र महिषियों कहीं ॥ ५० ॥ ईशानेन्द्र देवकी आभ्यन्तर परिषदा
स्थिति कही ॥ ३० ॥ शक्रेन्द्र देवेन्द्रकी आभ्यंतर परिषदा के देवोंकी सात
॥ शक्रेन्द्र देवकी अग्र महिषियों की सात पल्योपम की स्थिति कही॥६२॥

सी० क्षीरवर घ० घृतवर खो० क्षोदवर ॥७१॥ नं० नंदीश्वरद्वीपके अ० अंदर स० सातसमुद्र ल० लवणस मुद्र का० कालोदधि पु पुष्करोदधि व० वरुणोदधि खी० क्षीरोदधि घ० घृतोदधि खो० इक्षोदधि ॥ ७२ स० सात से० श्रेणि उ० ऋजु आ० सरल ए० एकबाजुसे वं० टेढी दु० दोनोंबाजुसे वं० टेढी ए० एकबाजुसे खु० अंकुशाकार द दोनोंबाजुसे खु० अंकुशाकार च० चक्रवाल अ० अर्धचक्रवाल ॥ ७३ ॥ च० चमरको अ० असुरेन्द्र अ० असुरकुमारराजाके स० सात अ० अनिकके आधिपति पा पादात्यनीक

जम्बुद्दीवे, धायइखंड, पुक्खरवरे, वारुणिवरे, खीरवरे, घयवरे, खोयवरे ॥ ७१ ॥ नंदीसरवरस्संण दीवस्स अतो सत्तसमुद्दा प० त० लवणे, कालोए, पुक्खरोदे, वरुणोद, खीरोदे, घओदे खोए ॥ ७२ ॥ सत्तसेढीओ प० त० उज्जुआयया, एग-ओवका, दुहओवका एगओखुहा, दुहओखुहा, चक्कवाला, अद्धचक्कवाला ॥७३॥ चमरस्सण असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सत्तअणिया सत्तअणियाहिवई प० तं० पायत्ताणिए, पीढा-

भंतर द्वीप कहे हैं जम्बूद्वीप, धातकी खंड, पुष्कर वर, वारुणि वर, क्षीर वर, घृत वर, क्षोद वर ॥७१॥ नंदीश्वर द्वीप में सात समुद्र कहे लवण समुद्र, कालोदधि, पुष्करोदधि, वरुणोदधि, क्षीरोदधि, घृतोदधि इक्षोदधि, ॥ ७२ ॥ सात श्रेणी कही १ ऋजु-सरल लंबी श्रेणी २ एक तरफ टेढी ३ दो तरफ टेढी ४ एक बाजु अंकुशाकार ५ दो बाजु अंकुशाकार ६ चक्राकार और ७ अर्ध चक्राकार ॥ ७३ ॥ चमर

पी०पीठानीक कु०कुंजरानीक म०महिषानीक र०रथानीक न०नाट्यानीक गं० गंधर्वानीक दु० द्रुम पा० पादा त्यनीकके अधिपति ए०ऐसे ज जैसे प०पांचवेठाणमें जा०यावत कि किन्नर र०रथाधिपति रि०रिष्ट न०नाट्यानीक अधिपति गी०गीतरती गं०गंधर्वानीकमाधिपति ब०बलिको म०वैरोचनेन्द्र व०वैरोचनराजाके स०सात अ०अनिक स०सात अ०अनीकाधिपति पा०पादात्यनीक जा०यावत् गं०गंधर्वानीक म०महाद्रुम पा पादात्यनीक अधिपति जा० यावत् किं० किंपुरुष र रथानीक का आधिपति म०महारिष्ट ण०नाट्यानीकका अधिपति गी०गीतयश

णिए कुंजराणिए,महिसाणिए रहाणिए नट्टाणिए,गधव्वाणिए। दुमे पायत्ताणियाहिवई, एवं जहा पंचट्ठाणे जाव किन्नरे रहाणियाहिवई, रिट्ठे नट्टाणियाहिवइ, गीयरई गंधव्वाणियाहिवई ॥ बलिस्सण वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सत्तअणिया सत्तआणियाहिवई प० त पायत्ताणियं जाव गंधव्वाणिय ॥ महद्दुमे पायत्ताणियाहिवई, जाव किंपुरिसे रहाणियाहिवइ, महारिट्ठे णट्टाणियाहिवइ, गीयजसे गंधव्वाणियाहिवई ॥

नामक असुरेन्द्र के असुर कुमार राजा को सात अनिक व सात उन के अधिपति कहे हैं १ पादात्यनिक २ पीठानिक, ३ कुंजरानिक ४ महिषानिक ५ रथानिक ६ नाट्यानिक और ७ गंधर्वानिक द्रुम पादात्यनिक का अधिपति २ सादामी पीठानिक का अधिपति ३ वकुंथु कुंजरानिक का अधिपति ४ लोहित महिषानिक का अधिपति, ५ किन्नर रथानिक का अधिपति, ६ रिष्ट नाट्यानिकका स्वामी और ७ गीतरति,

ग० गंधर्वानीक अधिपति ध० धरणको ना० नागेन्द्र ना० नागकुमारराजाके स० सात अ० अनीक स० सात अ० अनीकाधिपति पा० पादात्यनीक जा० यावत् ग० गंधर्वानीक रु० रुद्रसेन पा० पादातानीकके अधिपति जा० यावत् आ० आनंद र० रथानीकके अधिपति न० नंद न० नाट्याधिपति ते० तेतलि गं० गंधर्वाधिपति भू० भूतानेन्द्र को स० सात अ० अनीक स० सात अ० अनीकाधिपति पा० पादातनीक जा० यावत् गं० गंधर्वानीक द० दक्ष पा० पादातनीकके अधिपति जा० यावत् न० नंदुत्तर र० रथानीकका अधिपति र० रती न० नाट्यानीक

धरणस्सणं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो सत्तअणिया सत्तअणियाहिवइ प० तं० पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए ॥ रुद्दसेणे पायत्ताणियाहिवइ जाव आणंदे रहाणि-याहिवई, नंदणे नट्टाणियाहिवई, तेतले गंधव्वाणियाहिवई ॥ भूयाणंदस्स सत्त आणिया सत्त आणेयाहिवइ प० त पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए । दक्खे पायत्ता णियाहिवई, जाव णंदुत्तरे रहाणियाहिवई, रई नट्टाणियाहिवई, माणसे गंधव्वाणिया

गंधर्वानिकका स्वामी बलि नामक वैरोचनेन्द्रको सात अनिक व सात उनके अधिपति कहे महाद्रुम यावत् किंपुरुष और महारिष्ट तथा गीतयश धरण नामक नागकुमार के नागराजा को सात अनिक व सात उनके अधिपति कहे हैं पादात्यनिक यावत् गंधर्वानिक अधिपति रुद्र यावत् आनंद, नंद नाट्यानिकका स्वामी और तेतलि गंधर्वानिकका स्वामी । भूतानेन्द्र को सात अनिक व सात उनके अधिपति पादातनीक

अधिपति मा० मानस गं० गंधर्वानीक अधिपति ए० ऐसे जा० यावत् घो० घोष म० महाघोष ने० जानना स०शक्र दे० देवेन्द्र द० देवराजा को स०सात अ० अनीक स० सात अ० अनीकाधिपति पा० पादातनीक जा० यावत् गं० गंधर्वानीक ह० हरिणगमेषी पा० पादात्यनीक अधिपति जा० यावत् मा० माढर र० रथानीक अधिपति से० श्वेत न० नाट्यानीक अधिपति तु० तुंबरु ग० गंधर्वानीक अधिपति ई० ईशान द०देवेन्द्र दे देवराजाको स०सात अ०अनीक स०सात अ०अनीकाधिपति पा०पादात्यानिक जा०यावत् ग० गंधर्वानीक ल० लघुपराक्रम पा० पादात्यनीकाधिपति जा० यावत् म०महाश्वेत न० नाट्यानीकाधिपति णा०

हिवई ॥ ए॥ जाव घोसमहाघोसाणं नेयव्वं सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो सत्त आणि या सत्त आणियाहिवई प० तं० पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए । हरिणेगमेसी पायत्ताणियाहिवई, जाव माढर रहाणियाहिवई सेए नट्टाणियाहिवई तुंबरु गंधव्वा णियाहिवई ॥ ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरण्णो सत्त आणिया सत्त आणियाहिवई प०तं० पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए । लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवई, जाव महासेए नट्टाणिया

यावत् गंधर्वानिक इस यावत् नंदाघर रति और मानस । ऐसे घोष महाघोष का जानना शक्रेन्द्र देव के सात अनिक व सात उनके अधिपति कहे हैं पादात्यानिक यावत् गंधर्वानिक उनके अधिपति हरिणगमेषी यावत् माढर, श्वेत, व तुंबरु ईशानदेवेन्द्र के सात अनिक व सात उनके अधिपति रा ना लघुपराक्रम यावत् महाश्वेत

[illegible] स्थानीकाधिपति स० शप ज० जहा प० पाचय ठा० ठान म ए० ऐसे अ० अच्युतन्द्र न० जानना ॥ ७४—७५ ॥ च० चमर क म० असुरेन्द्र अ० असुरकुमार राजा के दु० द्रुम पा० पादा त्यनीक के आधिपति को स सातकच्छ प० प्रथमकच्छ जा० यावत् स० सातमीकच्छ प० प्रथमकच्छ में च० चौसठ दे० देव म० सहस्र जा० जितने प० प्रथमकच्छ में त उनसे त्रि० द्विगुने दु० दूसरी कच्छ में त० उनसे त्रि० द्विगुने त० तीसरी कच्छ में ए० ऐसे जा० यावत् जा० जितने छ० छठीकच्छ में त्रि०

हिवई, णारए गत्तछत्ताणियाहिवई ॥ सेस जहा पचट्ठाणे एव जाव अच्चुयस्सेति नेयव्व ॥ ७४–७५ ॥ चमरस्सण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो दुमस्स पायत्ताणीया हिवइस्स सत्तकच्छाओ प०त० पढमाकच्छा जाव सत्तमाकच्छा॥चमरस्सण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो दुमस्स पायत्ताणियाहिवइस्स पढमाए कच्छाए चउसट्ठि देवसहस्सा पण्णत्ता । जावइया पढमा कच्छा तव्विगुणा दुच्चाकच्छा, तव्विगुणा तच्चाकच्छा,

त्यानिक के आधिपति और रत गंधर्वानीक के अधिपति ऐसे पांच स्थानकमें कहा है वैसे ही अनिक व उनके अधिपति अच्युत तक कहना ॥ ७४–७५ ॥ चमर असुरेन्द्र के द्रुमनामक पादात्यनीक के स्वामीको सात कच्छ (समूह विभाग समुदाय) को उस में से प्रथम समुदाय में ६४,००० देव रहे हुवे हैं इस से दूसरी कच्छ में दुगुने देवताओ हैं (एक लक्ष अठाइस हजार) और दूसरी कच्छ में से तीसरी कच्छ

द्विगुणा स० सातमीकच्छ में ए० ऐसे च० चलिको न विशेष म० महाद्रुम को स० साठ दे० देवता स्त्र
हस्र ध० धरण को न० विशेष अ० अठारस दे० देवता स० सहस्त्र ज० जैसे धरण को ए० ऐसे आ
गावत् म० महाघोष का न० विशेष पा० पादात्यनीकाधिपति अ० अन्य ते० वे पु० पूर्व भ० कहा ॥७६॥
स शक्रेन्द्र दे० देवराजा को ह० हरिणगमेषी को स सातकच्छ प प्रथमकच्छ ए० ऐसे ज० जैसे

एव जाव जावइया छट्ठाकच्छा, तब्विगुणा सत्तमाकच्छा। एव बलिस्सवि नवर मह
द्दुम सट्ठि देवसाहस्सिआ ससं तचेव। धरणस्स एवचेव णवर अट्ठावीसं देवसह
स्सा, सेसंतंचेव। जहाधरणस्स एव जाव महाघोसस्स, नवर पायत्ताणियाहिवई,
अन्नेते पुव्वभणिया ॥ ७१ ॥ सक्कस्सण देविंदस्स देवरण्णो हरिणेगमेसिस्स सत्तक
च्छाओ पण्णत्ताओ त० पढमाकच्छा एव जहा चमरस्स तहा जाव अच्चुयस्स

में दुगुने देवताओं ऐसेही छठी कच्छ में से सातवी कच्छ में दुगुने देवताओं कहे हैं ऐसेही बलेन्द्र व
धरणेन्द्र तक जानना परंतु बलेन्द्र के पादात्यानिक का अधिपति महाद्रुम की पहिली कच्छ में साठ हजार
देवताओं व धरणेन्द्र की कच्छ में अठाइस हजार देवताओं और आगे दुगुने २ कहना और धरणेन्द्र जैसे
भवनवासी इन्द्र के अनीक के स्वामी का समुदाय भिन्न २ मानना ॥ ७२ ॥ शक्रेन्द्र देवता का हरिणगमेषी
नामक पादात्यनिक के अधिपति को सात समुदाय कहे यह सब अधिकार अच्युतेन्द्र तक पहिले जैसे

च० चमर को जा० यावत् अ० अच्युत को ना० मानना पा० पादातनीकाधिपति पु० पहिले भ० कहा व देवपरिमाण स शक्र को च० चौरासी दे० देवता स० सहस्र ई० ईशान को अ० अस्सी दे० देव स० सहस्र दे० देवता इ० इस गा० गाथा से अ० मानना च० चौरासी अ० अस्सी बा० बहत्तर स० सित्तर स० साठ प० पचास च० चालीस ती० तीस वी० वीस द० दस सहस्र जा० यावत् अ० अच्युत को ल० लघुपराक्रम को द० दश दे० देवता स० सहस्र जा० जितना छ० छठीकच्छ में त्रि० द्विगुन स० सातवी

णाणत्त पायत्ताणियाहिवईणं ते पुव्वभणिया देवपरिमाण मिम-सक्कस्स चउरासीइ देवसहस्सा ईसाणस्स असीइदेव सहस्साइ देवा इमाए गाहाए अणुगमव्वा-चउरासीइ असीइ, बावत्तरि सत्तरीय सट्ठीय पन्ना चचालीसा । तीसा वीसा दस सहस्सा । जाव अच्चुयस्स लहुपरक्कमस्स देवसहस्सा जावइया छट्ठा कच्छा, तात्रिगुणा सत्तमा कच्छा ॥ ७७ ॥

अर्थ— देवता का प्रमाण इस तरह है शक्रेन्द्र को चौरासी हजार, ईशानेन्द्र को अस्सी हजार, सनत्कुमारेन्द्र का बहत्तर हजार, माहेन्द्र को सित्तर हजार, ब्रह्मदेव लोक को साठ हजार, लंतक को पचास हजार, महाशुक्रेन्द्र का चालिस हजार, सहस्रारेन्द्र को तीस हजार, प्राणतेन्द्र के वीस हजार, और अच्युतेन्द्र को दस हजार. आगेकी समुदायों में इस से द्विगुन २ कहना यावत् सातवी समुदाय में छठी से द्विगुने कहना ॥ ७७ ॥ सात प्रकार का वचन विकल्प कहा है १ थोडा बोलना सो आलाप २ कुत्सित

कच्छ ॥ ७७ ॥ स० सात प्रकार का व० वचन विकल्प आ० आलाप अ० अनालाप उ० उल्लाप अ० अनुल्लाप सं० संलाप प० प्रलाप वि० विप्रलाप ॥ ७८ ॥ स० सात प्रकार का वि० विनय ना० ज्ञान द० दर्शन चा० चारित्र म० मन व० वचन का० काय लो० लोकोपचार विनय ॥ ७९ ॥ प० प्रशस्त म० मन विनय स० सात प्रकार का अ० पापरहित अ० सावद्यरहित अ० क्रियारहित नि० क्लेशरहित अ०

सत्तविहे वयण विकप्पे प० त० आलावे, अणालावे, उल्लावे, अणुल्लावे, संलावे, पलावे, विप्पलावे ॥ ७८ ॥ सत्तविहे विणए प० तं० नाणविणए, दंसणविणए, चरित्तविणए, मणविणए, वइविणए, कायविणए, लोगोवयारविणए ॥ ७९ ॥ पसत्थ मणविणए सत्तविहे प० त० अपावए, असावज्जे, अकिरिए, निरुवक्केसे, अणण्हकरे,

भाषना सो अनालाप ३ मर्यादा उल्लंघकर बोलना सो उल्लाप ४ मर्यादा रहित खराब बोलनासो अनुल्लाप ५ परस्पर बोलना सो संलाप ६ निरर्थक बोलना सो प्रलाप और ७ विरुद्ध बोलना सो विप्रलाप ॥७८॥ सात प्रकार का विनय कहा: ज्ञान विनय, दर्शन विनय, चारित्र विनय, मन विनय, वचन विनय, काय विनय और लोकोपचार विनय ॥ ७९ ॥ प्रशस्त मन का विनय सात प्रकार का १ पाप रहित विचार २ सावद्य की चिन्तवना करे नहीं ३ क्रिया रहित ४ क्लेश रहित ५ आश्रव रहित ६ किसी जीव को दुःख न देवे और

अ॰ मूलकी शंकारहित ॥ ८० ॥ अ॰ अप्रशस्त म॰ मन विनय
म क्रियासहित स॰ क्लेशसहित म॰ आश्रव सहित छ॰
१॰ प्रशस्त व वचन वि॰य म॰ सात प्रकार का अ॰ पापरहित
ररहित ॥८२॥ अ अप्रशस्त व वचन विनय स॰ सात प्रकार
प्रकारसहित ॥८३॥ प॰प्रशस्त का॰ काया विनय स॰ सातप्रकार
८० ॥ अपसत्थ मण विणए सत्तविहे प॰ त॰
ने, अण्हकरे, छविकरे, भूयाभिसंकमणे ॥ ८१ ॥
० अपावए असावज्जे, जाव अभूयाभिसंकमणे
विह प॰ त॰ पावए जाव भूयाभिसंकमण ॥८३॥
० ॥ अप्रशस्त मनका वि॰य सात प्रकार का १ पाप सहित,
त ६ आश्रव सहित ७ जीवों को शंका उत्पन्न करे ॥ ८१ ॥
प्रम वचन, २ असावद्य वचन यावत् प्राणी भूत जीव को
शस्त वचन का विनय सात प्रकार का अशुभ वचन यावत्
८३ ॥ प्रशस्त कायाका विनय सात प्रकार का १ यत्ना

का मा० यत्ना से ग माना ठा० रहना नि० बैठना तु० सोना उ० उल्लंघन करना प भयु० ---
करना स० सर्व इ० इन्द्रिय जो० योग प मयुंजना ॥ ८४ ॥ अ० अप्रशस्त का० काया विनय स०
सात प्रकार का अ० यत्नारहित ग० जाना जा० यावत् अ० यत्नारहित स० सर्व इ० इन्द्रिय जो० जोग
प० प्रयुंजना ॥ ८५ ॥ लो० लोकोपचार वि विनय स० सात प्रकारका अ० आचार्य समीप अ० बैठना
प० दूसरे को अ० अनुसरना क० कार्य करिये क० किया हुआ का प० पीछा करना अ० दुःखी को

पसत्थ कायविणए सत्तविहे प० तं० आउत्तगमण, आउत्तठाण, आउत्तनिसीयण,
आउत्ततुयट्टण, आउत्तउल्लंघण, आउत्तपल्लंघण, सव्विंदिय जोगजुंजणया ॥ ८४ ॥
अपसत्थ कायविणए सत्तविहे प० त० अणाउत्तगमण जाव अणाउत्तं सव्विंदिय
जोगजुंजणया ॥ ८५ ॥ लोगोवयारविणए सत्तविहे प० त० अब्भासवत्तियं, परच्छं-
दाणुवत्तियं कज्जहेउं, कयपडिकइया, अत्तगवेसणया, देसकालण्णया, सव्वत्थेसुयप

पूर्वक चलना २ यत्ना पूर्वक खडे रहना ३ यत्ना पूर्वक बैठना ४ यत्ना पूर्वक सोना ५ यत्ना पूर्वक उल्लंघना
६ यत्ना पूर्वक पुनः उल्लंघना और ७ यत्ना से सब इन्द्रियों के योगों को प्रयुंजना ॥ ८४ ॥ अप्रशस्त
कायाके विनय का सात भेद अयत्ना से चलना यावत् अयत्ना से सब इन्द्रियों के योगों को प्रयुंजना
॥ ८५ ॥ लोकोपचार विनय के सात भेद १ आचार्यादिक के समीप बैठना २ अन्य के कथनानु

ग० गवेषणा करना दे० देशकाल को जानना स० सर्व अर्थ में अ० अनुकूल होना ॥ ८६ ॥ स० सात स० समुद्घात वे० वेदनीय क० कषाय मा० मारणांतिक वे० वैक्रेय ते० तेजस आ० आहारक के० केवली ॥ ८७ ॥ स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर के ति० तीर्थ में स०सात प० प्रवचन नि० निन्हव प० बहुत जी० जीवप्रदेश अ० अव्यक्त सा० सामुच्छेदिक दो० दोक्रिया ते० त्रैराशिक अ० बन्धनरहित ए० इन स०सात प० प्रवचन नि० निन्हव क० सा० सात ध० धर्माचार्य ज० जमाली ती० तिष्यगुप्त आ० आषाढाचार्य आ०

विलोमया॥८६॥ सत्तसमुग्घाया प० त० वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए वेउव्विय समुग्घाए, तेजससमुग्घाए, अहारकसमुग्घाए, केवलिसमुग्घाए, ॥मणुस्साणं सत्तसमुग्घाया प० एवंचेव ॥ ८७ ॥ समणस्सणं भगवओ महावीरस्स तित्थंसि सत्तपवयण निन्हया प० तं० १ बहुरया, २ जीवपएसिया, ३ अव्वत्तिया, ४ सामुच्छेइया, ५ दोकिरिया, ६ तेरासिया, ७ अबद्धिया एएसिणं सत्तण्हं पवयण निण्हगाण सत्तधम्माय

सार चलना ३ कार्य के लिये विनय करना ४ किया हुवा उपकार का फीर प्रत्युपकार करना ५ दुःखीजीवों पर उपकार करना ६ देशकाल जानना और ७ सब प्रकार के विषय में अनुकूलता रखना ॥ ८६ ॥ सात समुद्घात क० १ वेदनीय समुद्घात २ ...

आसमित्र गं० गंग छ० पडुलूक गो० गोष्टामाहिल प० इन स० सात प० प्रवचनकोन निन्हव का उत्पत्ति
उ० उत्पत्ति नगर सा० श्रावस्ती उ० ऋषभपूर से० श्वेताम्बिका मि० मिथिला उ० उल्लुकातीर पु०

रिया होत्था जमाली, तीसगुत्ते, आसाढे, आसमित्ते, गंगे, छल्लुए, गोट्ठामाहिले ॥

एएसिणं सत्तण्ह पवयण निण्हगाण सराउप्पाचिनगरे होत्था-त० सावत्थी, उसभ

पुर, सयाविया, मिहलउ, उल्लुगातीरं, पुरिमंतर, दसपुर, निण्हगउप्पाचि नगराइ

५ तेजस समुद्घात ६ आहारक समुद्घात और ७ केवली समुद्घात ये सातों समुद्घात मनुष्य को होती हैं ॥ ८७ ॥ श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी के तीर्थमें सात निन्हव हुवे १ श्रावस्ती नगरी में जमाली हुवे उनोंने बहुर मत स्थापा इन का मत यह था कि "करे माणे अकरे" कार्य पूर्ण हुवे पीछेही कार्य हुवा कहना और भगवान् फरमाते हैं कि "करेमाणे करे" कार्यका आरंभ हुवा वहां से ही कार्य कहना तिष्यगुप्तन रिषभपुर में आत्मप्रवाद पूर्व की स्वाध्याय करते पढनेमें आया कि आत्माके एक प्रदेश को जीव कहना, दो, तीन, चार, संख्यात, यावत् असंख्यात को जीव कहना परंतु भगवान का यही उपदेश है कि सब प्रदेश पूर्ण होवे जब ही जीव कहना इस से उन को ऐसी श्रद्धा हुई कि जीव का अंतिम प्रदेश यह ही जीव है ३ अषाढाचार्य-इन का मत यह है कि जो वस्तु है सो संपूर्ण जानने में नहीं आती है यह आचार्य श्वेतांबिका नगरी में अकस्मात् आयुष्य पूर्णकर देखता हुए और

पुरिमताल द० दशपुर ॥ ८७ ॥ सा० सातावेदनीय क० कर्म का स० सातप्रकारका अ० अनुभाग म० मनोज्ञ स० शब्द, रू० रूप अ० यावत् स्पर्श म० मनसुख व० वचनसुख ॥ ८८ ॥ अ० असा

॥ ८७ ॥ सायावेयणि ज्जस्स णं कम्मस्स सत्तविहे अणुभावे प० तं० मणुन्नासद्दा, मणुन्नारूवा, जाव मणुन्नाफासा, मणोसुहया, वइसुहया, ॥ ८८ ॥ असायावेयणिज्ज-

अपनी समुदाय में साधुओं को अव्यक्त जानकर पुनः अपने शरीर में आये और शिष्यों को पढाये, फीर सब मेद भक्षकर देवलोक में चलेगये उन से उन का नाम अव्यक्तसिद्ध हुवा गांगय मिथिला नगरी में हुवे क्षण क्षयध्वंसके स्थापक अर्थात् आत्मा व वस्तु का क्षण २ में परिवर्तन होता है आस मित्रने उल्लकातीर में एक समय में दोक्रिया की जाती है ऐसा मत स्थापन किया जैसे नदी उतरते पाँव में शीत और उपर सूर्य का आताप से उष्णता लगती है षडुलूकजीने पुरिमताल नगर में त्रिराशिक मतकी स्थापना की जीवराशि अजीवराशि और नोजीव नोअजीवराशि और सातवा गोष्ठामाहिलने दशपुर में ऐसा स्थापनाकिया कि जीव को कर्मबंध नहीं होता है मात्र सर्प त्वचा जैसे जीव कर्म को स्पर्श कर उस का फल वेदता है ये सातों जिन प्रवचन के उत्थापक होने से निन्हव कहलाये हैं ॥ ८७ ॥ साता वेदनीय कर्म का सात प्रकार से अनुभव होता है १ मनोज्ञ शब्द २ मनोज्ञ रूप ३ मनोज्ञ गंध, ४ मनोज्ञ रस ५ मनोज्ञ स्पर्श ६ मनका सुख ७ वचन का

वावेदनीय कर्म स० सात मकार का अ० अमनोज्ञ शब्द मा० यावत् व० वचन दुःख ॥ ८९ ॥ म० मघानक्षत्रके स० सातवारे ॥ ९० ॥ अ० अभिजितादि स० सातनक्षत्र पु० पूर्वद्वारवाले अ० अभिजीत स० श्रवण ध० धनिष्ठा स० शतभिषा पु० पूर्वभाद्रपद उ० उत्तराभद्रपद रे० रेवती अ० अश्विनीआदि दा० दक्षिणद्वारके अ० अश्विनी भ० भरणी कृ० कृत्तिका रो० रोहिणी मि० मृगसर अ० आर्द्रा पु० पुनर्वसु पु० पुष्यादि स० सातनक्षत्र अ० पश्चिमद्वारक पु० पुष्य अ० अश्लेषा म० मघा पु० पूर्वाफाल्गुणी फ०

स्स कम्मस्स सत्तविहे अणुभावे प० तं० अमणुण्णासद्दा जाव वइदुहया ॥ ८९ ॥ महानक्खत्ते सत्ततारे प०, ॥ ९० ॥ अभिईयाइया सत्तनक्खत्ता पुव्वदारिया प० तं० अभिई, सवणो, धनिट्ठा, सयभिसया पुव्वाभद्दवया, उत्तरामद्दवया, रेवई ॥ अस्सिणिआइया सत्तनक्खत्ता दाहिणदारिया प० त० अस्सिणी, भरिणी, कत्तिया, रोहिणी, मिगासिर, अद्दा, पुणव्वसू, ॥ पुस्साइयाण सत्तनक्खत्ता अवरदारिया प० त० पुस्सो,

दुःख ॥ ८८ ॥ असाता वेदनीय कर्म का सात प्रकार से अनुभव होता है अमनोज्ञ यावत् वचन का दुःख ॥ ८९ ॥ मघा नक्षत्र के सात तारे कहे हैं ॥ ९० ॥ अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, और रेवती इन सात नक्षत्रों के सात तार कहे हैं अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगसर, आर्द्रा और पुनर्वसु इन सात नक्षत्र दक्षिण द्वारवाले कहे हैं पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी

उत्तराफाल्गुनी ह० हस्त चि० चित्रा सा० स्वाति॥८ स० सातनक्षत्र उ० उत्तरद्वारके सा० स्वाति वि० विशाखा अ० अनुराधा जि० ज्येष्ठा मु० मूल पु० पूर्वाषाढा उ० उत्तराषाढा ॥ ९१ ॥ ज जम्बू द्वीप के सो० सोमनस व० वक्खार पर्वत में स० सातकूट सि० सिद्ध सो० सोमनस म० मंगलावती दे देवकुरु वि० विमल कं० कांचन वि० विशिष्ट ॥ ९२ ॥ जं० जम्बूद्वीप में गं० गंधमादन व० वक्खार पर्वत

आसिलेसा, मघा, पुव्वाफग्गुणी, उत्तराफग्गुणी, हत्थो, चित्ता ॥ साइयाण सत्तनक्खत्ता उत्तरदारिया प० त० साइ, विसाहा, अणुराहा, जिट्ठा, मुलो, पुव्वाआसाढा उत्तरा आसाढा ॥९१॥ जम्बुदीवे दीवे सोमणसे वक्खारपव्वए सत्तकूडा प० त० (गाथा) सिद्धेसोमण सेया, बोधव्वे मगलावइ कूडे, देवकुरु विमलकंचण, विसिट्ठकूडेयबोधव्वे ॥ १ ॥ ॥ ९२ ॥ जम्बुदीवे दीवे गंधमायणे वक्खार पव्वए सत्तकूडा प० तं० (गाथा)

उत्तराफाल्गुनी; हस्त चित्रा, ये सात नक्षत्र पश्चिम द्वारवाले कहे हैं स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, और उत्तराषाढा ये सात नक्षत्रों उत्तर द्वारवाले कहे हैं ॥ ९१ ॥ जम्बूद्वीप में सोमनस वक्षस्कार पर्वत पे सात कूट कहे हैं १ सिद्ध, २ सोमनस ३ मंगलावती कूट ४ देवकुरु ५ विमल ६ कांचन ७ विशिष्ट ॥ ९२ ॥ जम्बूद्वीप में गंधमादन वक्षस्कार पर्वत पे सात कूट कहे हैं १ सिद्ध २ गंध

में स० सावकूट सि० सिद्द ग० गधमादन गं० गंधिलावती उ० उत्तरकुरु फ० स्फाटिक लो० लोहित अं० आनन्द ॥१३॥ बे बेइन्द्रिय के जा० जातिकुल को०कोडी जो योनि प० प्रमुख स० सातहजार ॥ १४ ॥ जी० जीवने स० सात स्थान नि० निवर्तित पु० पुद्गल पा० पापकर्मपने चि० इकठेकिये चि० इकठे करते है चि० इकठे करेंगे ने० नारकी निवर्तित जा० यावत् दे० देवनिवर्तित ए० ऐसे चि० चिन जा० यावत् नि० निर्जरा ॥ १५ ॥ स० सात प्रदेशी ख स्कन्ध अ० अनत प० प्ररूप ॥१६॥ स०सात प० प्रदेशअव

सिद्धेय गंधमायणे, गोधव्वे गधिलावई कूडे, उत्तरकुरुफलिहे लोहियक्खे आणदणे चेव (१) ॥ १३ ॥ बेंदियाण सत्तजाइकुलकोडिजोणीपमुहसत्तसहस्सा प० ॥ १४ ॥ जीवाण सत्तट्ठाणनिव्वत्तिए पुग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसुवा, चिणतिवा, चिणिस्सतिवा, त० नेरइय निव्वत्तिए जाव देवानिव्वत्तिए, एवचिण जाव निज्जरा चेव ॥ १५ ॥ सत्त पएसिया खंधा अणता प० ॥ १६ ॥ सत्तपएसोगाढापुग्गला

मादन ३ गंधिलावती ४ उत्तरकुरु ५ स्फटिक ६ लोहित और ७ आनंदन कूट ॥ १३ ॥ बेइन्द्रिय की सात जाति कुलकोडी योनि प्रमुख सात हजार की कही ॥ १४ ॥ जीवने सात स्थान निवर्तित पुद्गल पाप कर्मपने संचित कियें, संचित करते हैं, और संचित करेंगे नरक निवर्तित यावत् देव निवर्तित यों चिन,

गाथा पु० पुद्गल ना० यावत स० सात गु० गुणरूक्ष पु० पुद्गल अ० अनंत प० प्ररूपे ॥ १७ ॥ *

जाव सत्तगुणलुक्खा पुग्गला अणता पण्णत्ता ॥ १७ ॥इति सत्तम ठाणं सम्मत्तं ॥ ७ ॥ * * * *

उपचिन यावत् निर्जरा का जानना ॥ १५ ॥ सात प्रदेशी स्कंध अनंत कहे॥१६॥ सात प्रदेश की अवगाहना करनेवाले पुद्गल अनंत कहे हैं यावत् सात गुणरूक्ष पुद्गल अनंत कहे हैं॥१७॥ यह सातवा स्थानक समाप्त हुवा

॥ अष्टमं स्थानम् ॥

अ० आठ ठा० स्थान सं० युक्त अ० अनगार अ० योग्य है ए० एकल विहार प० प्रतिमा उ० अंगी कार कर वि विचरने को स० श्रद्धावन्त स०सत्यवन्तपुरुष मे०मेधावी ब०बहुश्रुत स० शक्तिवन्त अ०अल्पाधिकरणी धि० धैर्यवन्त वी वीर्ययुक्त ॥ १ ॥ अ० आठ प्रकार का जो० योनिसंग्रह अं० अण्डज पो० पोतज जा० यावत् उ० उद्भिज उ० औपपातिक अ० अण्डज अ० आठगति अ० आठ आगति अं० अंडज अ० अण्डज में उ० उत्पन्नहो अं० अंडज में से पो० पोतज में से जा० यावत् उ० उपपात में से उ०

अट्ठहिं ठाणेहिं सपन्ने अणगारे अरिहइ एगल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताण विहरित्तए तं० सड्ढीपुरिसजाए, सच्चेपुरिसजाए, मेहावीपुरिसजाए, बहुस्सुएपुरिसजाए, सत्तिमं अप्पाहिगरणे धिइमं वीरियसपन्ने ॥ १ ॥ अट्ठविहे जोणिसंगहे प० तं० अंडया, पोयया, जाव उब्भिया, उववाइया ॥ अंडया अट्ठगइया अट्ठागइया प० तं० अंडए अंडएसु उववज्जमाणे अंडएहिंतोवा पोयएहिंतोवा जाव उववाइएहिंतोवा उववज्जि-

आठ गुण संपन्न अणगार एकल विहारी बनने की प्रतिमा अंगीकार कर सकता है १ श्रद्धावंत पुरुष २ सत्यवादी ३ बुद्धिवंत ४ बहुश्रुत ५ शक्तिवंत ६ अल्पाधिकरणी (क्रोध रहित) और ८ वीर्यवन्त ॥ २ ॥ आठ प्रकार का योनिसंग्रह अंडज, पोतज यावत् उद्भिज और औपपातिक (देव नारकी) अण्डज,

उत्पन्न होवे अं० अंडज अ० अंडज को वि० समता अ० अंडजपने पो० पोतजपने जा० यावत् उ० उप पातपने उ० उत्पन्न होनेको ग० जाने ए० ऐसे पो० पोत ज० जरायुज से० दूसरे की ग० गति आ० आगति ण० नहीं है॥२॥ जी० जीवने अ० आठकर्म प्रकृति चि० इकठी की चि० इकठी करते हैं चि० इकठी करेंगे ना० ज्ञाना वरणीय द० दर्शनावरणीय वे० वेदनीय मो० मोहनीय आ० आयुष्य ना० नाम गो० गोत्र अं० अंतराय ने नारकीने अ० आठकर्म प० प्रकृति चि० इकठी की चि० इकठी करते हैं चि० इकठी करेंगे ए०

ज्जा, से चेवण मंडए अंडगत्तं विप्पजहमाणे अंडगत्ताएवा, पोयगत्ताएवा, जाव उववाइ यत्ताए॥ गच्छेज्जा ॥ एवं पोययावि, जराउयगवि, सेसाणं गइरागई नत्थि ॥ २ ॥ जीवाणं अट्ठकम्मपयडीओ चिणसुवा, चिणंतिवा, चिणिस्संतिवा तं० नाणावरणिज्जं, दरिसणावरणिज्जं, वेयणिज्ज, मोहणिज्ज, आउय, नाम, गोय, अंतराइयं ॥ नेरइयाणं अट्ठकम्मपयडीओ चिणसुवा, चिणंतिवा, चिणिस्संतिवा, तं० नाणावरणिज्ज, दरिस-णावरणिज्ज, वेयणिज्जं, मोहणिज्ज, आउय, नाम, गोय, अंतराइय ॥ एवं निरंतर जाव

पोतज, और जरायुज इन तीनों की आठ की गति और आठ की आगति कही अण्डज यावत् उपपात दूसरे की गति आगति नहीं है ॥ २ ॥ जीवने आठकर्म की प्रकृति गतकाल में संचित की, वर्तमान में कर रहे हैं और भविष्य में करेंगे १ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय ५ आ

एस मा यावत् व० वमानिक का जी जीव को अ० आठकर्म प्रकृति उ० विशेष इकठी की ए ऐसे चि० चिण उ० उपचिण बं० बंध उ० उदीर वे० वेद नि० निर्जरा च० चौवीस द० दंडक भा० कहना ॥ १ ॥ अ० आठ ठा० स्थान से मा० मायी मा० माया करके णो० नहीं आ० आलोवे प० प्रतिक्रमे प० प्रतिकर्मे क० कीया क० करताहूं क० करूंगा अ० अपकीर्ति मे मेरी सि० होवे अ० अवण मे० मेरा

वेमाणियाण जीवाणं अट्ठकम्मपयडीओ उवचिणिंसुवा, एवंचिणउवचिणबंधउदीर वेय तहनिज्जराचेव ॥ एए चउवीसा दंडगा भाणियव्वा, ॥ २ ॥ अट्ठहिं ठाणेहिं माई मायंकट्टु नो आलोइज्जा नो पडिक्कमेज्जा जाव नो पडिवज्जेज्जा त० करिंसुयाहं, करे मिवाहं, करिस्सामिवाह, अकित्तीवा मे सिया, अवण्णेवा मे सिया, अवण्णएवा मे सिया,

युष्य ६ नाम ७ गोत्र और ८ अंतराय यों ही नीरंतर २४ ही दंडक के जीवों को जानना ऐसे ही वे जीवों आठ कर्म की प्रकृति को उपचिने, बांधे यावत् निजरे ॥ ३ ॥ आठ कारन से मायावी माया कर के उस की आलोयना, प्रतिक्रमण यावत तप अंगीकार नहीं कर सकता है १ मैंने अपराध किया अब अपराध करके कैसे आलोचना करनी? २ मैं पाप कर रहा हूं सो विना निवृति आलोचना कैसे करनी? ३ भविष्य में ऐसा करूंगा तो कैसे आलोचना करूं ४ मेरी अपकीर्ति होवे ५ मेरा अवर्णवाद होवे ६ मेरा सत्कार सन्मान न होवे ७ मेरी कीर्ति का नाश होवे ८ मेरा यश का जो विस्तार हो रहा है सो क्षीण

सि० होवे भ० अवर्णवाद मे० मेरा सि० होवे कि कीर्ति मे० मेरी प० नाशहोगी ज० यश मे० मेरा प० नाशहोगा ॥ ४ ॥ अ० आठ ठा० स्थान से मा० मायी मा० मायाकर के आ० आलोवे जा० यावत् प० प्रतिपर्मे मा० मायी की अ० इसलोक में ग० निंदा भ० होती है उ० उपपात में ग निंदा भ० होवे आ० आत्माकी ग निन्दा भ० होवे मा० मायी मा० माया करके नो० नहीं आ० आलोवे जा० यावत् णो०

किच्ची वा मे परिहायइस्सइ, जसेवामे परिहायइस्सइ, अट्ठहिं ठाणेहिं माईमायकट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा तं० माइस्सण अस्सिलोगे गरहिए भवइ, उववाएगरहिए भवइ, आयाईगरहियाभवइ, एगामवि । माई मायकट्टु नो आलोइज्जा जाव नो पडिवज्जेज्जा नत्थि तस्स आराहणा एगामवि । माइमायकट्टु आलोएज्जा जाव पडिव

होजाय आठ कारन स मायावी पुरुष माया कर के उस की आलोचना यावत् तप अंगीकार करता है. १ मायावी पुरुष की इस लोक में निंदा होती है २ मायावी पुरुष मरकर जहां उत्पन्न होवे वहांपरभी उस की निंदा होती है ३ एक ही माया का स्थान सेवनेवाला यदि आलोचना न करे यावत् तप अंगीकार करे नहीं तो वह आराधक नहीं होता है ४ एक भी माया का स्थान को सेवन करके उस की आलोचना यावत् तप अंगीकार करेतो वह आराधक होता है ५ बहुत माया के स्थानक सेवकर उस की आलोचना करे नहींतो वह आराधक नहीं होता है ६ बहुत मायाके स्थान का सेवन कर उस की आलो

नहीं प॰ प्रतिवर्जे न॰ नहीं है उ॰ उसको आ॰ आराधना मा॰ मायी मा॰ मायाकरके आ॰ आलोवे प॰ प्रतिवर्जे अ॰ है उ॰ उसको आ॰ आराधना ब॰ बहुत मा॰ मायी मा॰ मायाकरके नो॰ नहीं आ॰ आलोवे जा॰ यावत् नो॰ नहीं प॰ प्रतिवर्जे न॰ नहीं है उ॰ उसको आ॰ आराधना ब॰ बहुत मा॰ मायी मा॰ माया करके आ॰ आलोवे जा॰ यावत् अ॰ है त॰ उसको आ॰ आराधना आ॰ आचार्य उ॰ उपाध्याय को अ॰ अतिशय ना॰ ज्ञान दं॰ दर्शन स॰ उत्पन्न होवे म॰ मुझे आ॰ आलोवे मा॰ मायी मा॰ मायाकरके से॰

ज्जेज्जा, अत्थि तस्स आराहणा बहुओवि । माई मायकट्टु नो आलोएज्जा जाव नो पडिवज्जेज्जा नत्थि तस्स आराहणा बहुओवि । माई मायं कट्टु आलोएज्जा जाव अत्थि तस्स आराहणा । आयरियउवज्झायस्स वा मे अइसेसे नाणदंसणे समुप्पज्जेज्जा सेय मम आलोएज्जा। माइण एसे माइण माय कट्टु से जहानामए आयागरेइवा, तंवागरेइवा, तउआगरेइवा, सीसागरेइवा, रुप्पागरेइवा, सुवण्णागरेइवा, तिलागणीइवा,

यावत् तप अंगीकार करे सो आराधक होवे ७ आचार्य उपाध्याय को मेरे से विशेष ज्ञान दर्शन है इस लिये वे देखेंगे कि यह मायावी है ऐसा जानकर उस की आलोचना करे जैसे की लोहेको तपानेवाला, तांबेको गालनेवाला, वरुवेको गालनेवाला, सीसेको गालनेवाला, चांदीको गालनेवाला, व सुवर्णको गालनेवाला तिलके काष्टकी अग्नि, तुसकी अग्नि भूसकी मूसकी अग्नि, नलपोला सराकार की अग्नि मदिराके आटेको पेस करे उसके भाजन की

रह ज० जैसे आ० आहको पमेनवाला त० तांबा को तपानेवाला त० तरुवेको तपानेवाला सी० सीमाको तपानेवाला रू० रूपको तपानेवाला सु० सुवर्ण को तपानेवाला ति० तिलकी अग्नि तु० तुसकी अग्नि भु० भुसकी अग्नि न० नलपोला सत्रा कारकी द० पत्तेकी सु० मदीरा नि० मठी म० मांडकी लि० मठी गो० हंडी की लि० मठी कु० कुम्भ कार की वा० मठी क० कवेलू की वा० मठी इ० ईन्की वा मठी जं० ऊस की सु० सुड लो० लुहार स० मठी त० तपावे स० जाज्वल्यमान सरिसे कि० किंशुक पुष्पसमान उ० चिनगारियों स० सहस्र

तुसागणीइवा, भुसागणीइवा, नलागणीइवा, दलागणीइवा, सुडियालिछाणिवा, भडियालिछाणिवा, गोलियालिछाणिवा, कुंभारावाएइवा, कवेलुयावाएइवा, इट्टावाएइवा, जतथाडचुल्लइवा, लोहारंवरीसाणिवा, तत्ताणिसमजोइभूयाणि, किंसुयफुल्लसमाणाणि, उक्कासहस्साइ विणिमुयमाणाइ २ जालासहस्साइ पमुचमाणाइ २ इगालसहस्साइ पविकिरमाणाइ २, अतो २ झियायंति, एवामेव मायी मायकट्टु अतो २ झियाइ । जइ

भग्नि, मदिराकारकी भट्टीहंडी की अग्नि, कुमारके निभाड़े की अग्नि, कवेलू पके की मठी की अग्नि, ईंटके निभाड़े की अग्नि, इक्षुरस का गुड बनाते मठी समगावे उस की अग्नि, और लोहार की मठी की अग्नि यह सब प्रकार की अग्नि को तपा कर जाज्वल्यमान करे उस की ज्याति केसुडा के फुल सरिसी करे, उस के पिंड में से हजारों, कण उछलते होवे और वे कणों विखरते २ अन्दर अगन को दीप्त करते होवे

रि० छोडते जा ज्वाला सहस्र प० विसरते इ० अग्नि सहस्र प० फेंकते अं० अंदर झि० सिझे ए० एसे मा० मायी मा० माया करके अं० अंदर झि० सिझावे म० मावे अ० अन्य के० कोई प करते हैं मा० मायावी जा० मानता है अ० मैं भ० शंका करता हूं मा० मायी मा० माया करके अ० नहीं आलोचना प० प्रतिक्रमता का० काल के अवसर में का० काल करके अ० अन्यतर दे० देवलोक में दे० देवतापने उ० उत्पन्न भ० होवे नो० नहीं म० महर्द्धिक नो० नहीं दू० दूरजानेवाला ना० नहीं चि०

त्रियण अन्ने केइ वदति तंपियण माई जाणइ अहमेसे अभिसंकिज्जामि २, माईण मायं कट्टु अणालोइय पडिक्कंते कालमासे कालंकिच्चा अण्णतरेसु देवलोगेसु देव त्ताए उववत्तारो भवंति मं० नोमहड्डिएसु, जाव नो दूरंगइएसु, नो चिरट्ठिईएसु सेण तत्थ देवेभवइ नो महड्डिए जाव णो चिरंट्ठिईए जावियसे तत्थ बाहिरब्भतरिया परिसा भवति सावियणं नो आढाइ नो परियाणइ नो महारिहेण आसणेणं उवनिमंतेइ

वैसेही मायावी पुरुष विचार कर के पश्चाताप रूप अग्निसे भस्मसे और कोई दुसरा कहे तो मायावि माने कि यह मनुष्य पाप करानेवाला है इस लिये सदैव शंका करता हुवा रहे और भी मायी माया की आलोचना किये विना काल कर के अन्य व्यंतरादिक देव में उत्पन्न होवे वहांभी उस को विशेष ऋद्धि मीले नहीं और सौधर्मादि देवलोक में उत्पन्न हो सके नहीं वैसेही ज्यादा स्थितिभी होवे नहीं

सबीस्थितिवाला दे॰ देव भ॰ होवे नो॰ नहीं म॰ महर्द्धिक मा॰ यावत् नो॰ नहीं चि॰ अबीस्थितिवाला त॰ तहां बा॰ बाह्य अ॰ आभ्यंतर प॰ परिषदा भ॰ है सा॰ वह नो॰ नहीं आ॰ आदर देवे नो॰ नहीं प॰ आया जाने नो॰ नहीं म॰ बडेकेयोग्य आसन उ॰ निमंत्रणकरे भा॰ भाषा भा॰ बोलतेको च॰ चार पं॰ पांच देव अ॰ विना आज्ञा अ॰ ऊठे मा मत ब॰बहुत भा॰ बोलो त॰ तहां से दे॰ देवलोक से आ॰ आयुष्य क्षयसे भ॰ भवक्षयसे ठि॰ स्थितिक्षय से अ॰ पीछे च॰ चवकर मा॰ मनुष्यभवमें जा॰

भासपियसे भासमाणस्स जाव चत्तारि पंचदेवा अणुण्णाचेव अब्भुट्ठिति, माबहु देवे भासओ, । सेणतओ देवलोगाओ आउक्खएण, भवक्खएणं, ठिइक्खएणं, अणंतर चयं चइत्ताण इहेव माणुस्सएभवे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति त॰ अंतकुलाणिवा, पंतकुलाणिवा, तुच्छकुलाणिवा, दरिद्दकुलाणिवा, किविणकुलाणिवा, भिक्खागकुलाणिवा, तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाइसेण तत्थ पुमेभवइ, दुरूवे, दुवन्ने, दुगं

वहां बाहिर की व अंदरकी जो परिषदा है उन के देवताओं उस का आदर सन्मान करे नहीं, अन्य महर्द्धिक देव समान उस को निमंत्रणभी करे नहीं, और कदाचित् वह बोले तो अन्य चार पांच देवताओं उठकर कहे कि अरे देवता बहुत बकवाद मत कर, मौन रह और वहां से आयुष्य पूर्ण होने से चवकर मनुष्य लोक में [illegible] प्रांत कुल, चांडाल कुल, तुच्छकुल, दरिद्र कुल, भिक्षाचरका कुल, कृपण

आति कु० कुलमें म• होवे अ० अठकुलमें पं० प्रांतकुल में तु० तुच्छकुलमें द० दरिद्रकुलमें कि० कृपणकुल में भि० भिक्षुककुलमें त• तथा प्रकार के कुलमें पु० मनुष्यपने प० उत्पन्न होवे त तहां पु० मनुष्य म० होवे दु० कुरूप दु०खराब वर्ण दु• दुर्गंध दु० खराबस्पर्श अ० अनिष्ट अ०अकांत अ० अप्रिय अ०अमनाम ही हीनस्वर दी० दीनस्वर अ• अनिष्टस्वर अ० अकांत स्वर अ० अप्रिय स्वर अ० अमनोज्ञ स्वर

धे,दुरसे,दुफासे, अणिट्ठे, अकंते, अप्पिए, अमणुन्ने, अमणामे, हीणस्सरे, दीणस्सरे अणि ट्ठस्सरे,अकंतस्सरे,अप्पियस्सरे,अमणोन्नस्सरे,अमणामस्सरे अणाएज्जवयणपच्चायाए जाविय से तत्थ बाहिरब्भतरिया परिसा भवइ साविय णो आढाइ णोपरियाणाइ, णोमहरिहेणं आस णेणं उवनिमतेइ, भासप्पियसे भासमाणस्स जाव मचारि पच्चजपा अवुत्ताचेव

का कुल, और भी इस प्रकार के अन्य कुल में उत्पन्न होवे वहां भी वह पुरुष खराब रूप, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श वाला होवे, अनिष्ट, अकांत, अप्रिय, अमनोज्ञ, मन पसंद न होवे वैसा, हीन स्वर वाला, अनिष्ट स्वर वाला, अकांत स्वर वाला, अप्रीतिकारी स्वर वाला, अमनोज्ञ स्वर वाला, अमनाम स्वर वाला, अनादे यवचन वाला होवे उसकी बाह्य व आभ्यंतर परिषदावाले स्त्री, मित्र, पुत्रादि वर्ग भी उसका आदर करे नहीं यावत् महान पुरुष को योग्य आमंत्रण करे नहीं और बोले तो दूसरा कहे कि अरे हीनपुन्य वाला बहुत मत बोल, चूप रहे इस तरह अपमान करे ऐसी बहुत विटम्बना मायावी पुरुष को होती है अब

अ० अमनामस्वर अ० अनादेय वचन प० उत्पन्न होवे त० वहां वा० पाव अ० आभ्यंतर प० परिषदा भ० होवे सा० वत में नो० आ० आदरपावे णो नहीं प० आया जाने नो० नहीं भ० भरेको योग्य आ० आसन उ० निमन्त्रण करे मा० माया मा० बोलते को च० चार पं० पांच मनुष्य अ० विनाकहे अ चढकर मा० मत व बहुत अ० भायपुत्र मा० बोले मा० मायी मा० माया करके आ० आलोचकर प०

अब्भुट्ठिति, मावहु अज्जउत्तो भासआ २ ॥ माईण मायंकटु आलोइय पडिक्कंते का लेकिच्चा अण्णतरएसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति, तंजहा महिड्ढिएसु जाव चिरट्ठिइएसु, सेणं तत्थदेवे भवइ महिड्ढिए जाव चिराट्ठईए हारविराइयवच्छे, कडकतुडियथंभियभुए, अगय कुंडल मट्ठगंडयल कण्ण पीठ धारी, विचित्तहत्थाभरणे,

मायावी पुरुष माया की आलोचना यावत् तप अंगीकार कर काल के अवसर में काल करने से सौधर्म देवलोकमें महर्द्धिक यावत् चिरस्थितिवाले देवपने उत्पन्न होवे उनके वक्ष स्थल हारोंसे विराजित रहते हैं उनकी भुजाओं कंकणोसे सुशोभित दीखती हैं, उनके कानोंमें कुंडल रहते हैं, हस्तमें विविध प्रकारके आ भरण हैं, उनका विचित्रप्रकारके वस्त्र रहते हैं, विविधप्रकारकीमाला तथा मुकुट होते हैं कल्याणकारी वस्त्र पहिने हुवे रहते हैं, कल्याणकारी गंध, माल्य, कुसुम, फूल विलेपनके धरनेवाले होते हैं, देदीप्यमान

मातं हमकर का० कालकर अ० अभ्यातर दे० देवलोक में दे० देवतापने उ० उत्पन्न म० होवे म० महर्द्धिक जा० यावत् चि० सभी स्थिति माला में त० वहां दे० देव भ० होव म महर्द्धिक जा० यावत् नि० सभी स्थिति माला हा० हारसे वि शोभित ए० वक्ष क० कटक तु० त्रुटित थं० रहा हुवा मु० हस्त अ० अंगद कु कुंडल म० घमात गं० गलस्थान क० कर्णपीठ वि० विचित्र ह० हस्ताभरण वि० विचित्र ए० वस्त्राभरण वि० विचित्र मा० मुकुट क० कल्याण प० प्रवर गं० गंध म० माला अ० अनुलेपन ध० धारन करने वाला भा० देदीप्यमान बों० शरीर प० लंबी व० वन माला ध० धारनकरने वाला दि० दिव्य वण दि० दिव्य गंध दि दिव्य रस दि० दिव्य स्पर्श दि० दिव्य संघयन दि० दिव्य संठान

विचित्तवत्थाभरणे विचित्तमालामउलीकल्लाणगपवरगंधमल्लाणुलेवणधरे, भासुरबोंदीपलंबवणमालधरे, दिव्वेणवण्णेण, दिव्वेण गंधणं दिव्वेणरसणं, दिव्वेणफासेणं, दिव्वेण संघाएणं दिव्वेण संठाणेणं, दिव्वाएइड्ढीए दिव्वाएजुत्तीए दिव्वाएपभाए, दिव्वाएछायाए, दिव्वाएअच्चीए दिव्वेणतेएणं, दिव्वाएलेसाए, दसदिसाओ उज्जोएमाणे पभासेमाणे, महयाहयणट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगाइं भुंजमा

शरीर जिसनी लम्बी वनमाला जिनको रहती है और भी वे दीव्यवर्णवाले, दीव्यगंधवाले, दीव्यरसवाले, दीव्यस्पर्शवाले दीव्यसंघयन, संस्थान, ऋद्धि, द्युति, प्रभा, कान्ति, अर्ची, तेज व लेश्यावालेहैं दशों दि

दि० दिव्य ऋद्धि दि० दिव्य द्युति दि० दिव्य प्रभा दि० दिव्य कान्ति दि० दिव्य अर्चि दि० दिव्य तेज दि० दिव्य लेश्या द० दशदिशा में उ० उद्योत करने वाला प० प्रभा करने वाला म० बडा आहत न० नाटक गी० गीत वा० वादिंत्र तं० तंत्री त० तल ता० ताल, तु० त्रुटित घ० घन मु० मादल प० पडवी प० पटह र० स्वर से दि० दिव्य भोग भुं भोगता वि० विचरता है स० तहाँ बा० बाह्य अ० आभ्यंतर प० परिषदा भ० होवे सा० उस में आ० आदरपाने प० आया माने प० बडे को योग्य आ० आसन पे उ० निमंत्रण करे भा० भाषा भा० बोलता जा० यावत् च० चार पं० पांच देव अ०

णे विहरइ । जावियसे तत्थ बाहिरब्भतरिया परिसा भवइ, सावियणं आढाइ परियाणइ महरिहेण आसणेण उपनिमंतेइ भासपियसे भासमाणस्स जाव चचारि पचदेवा अवुत्ता चेवअब्भुट्ठेति बहुदेवे भासओ २,। सेण तओ देवलोयाओ आउक्खएणं भवक्खएण, ठिइक्खएणं जाव चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति, आढाइ जाव बहुजणस्स अपरिभूयाइ तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाइ,

दिशे उद्योत करते हुवे आहत, नाटक, गीत, वादित्र, तंत्री, वीणा तल, ताल, त्रुटित, घन, मादल, पडवी, पटह वगैरह शब्दोंसे दीव्यभोग भोगते हुवे विचरते हैं वहां जो बाह्याभ्यंतर परिषदा रही हुइ है उनके स्वामी उनको आदर सत्कार करते हैं और बोलता होवेतो करतेभी हैं अहो भोगव्यमन

पिनाकरे अ० उठ व० बहुत दे० देव भा० बोलो त० तहां से आ० आयुष्यक्षय से जा० यावत् च० चवकर मा० मनुष्य भव में इ० यहां कु० कुल म० है आ० आदरपावे जा० यावत् ब० बहुत लो० लोक से अ० अपरिभूत त० तथा प्रकार का कु० कुल में पु० पुरुष पने प० उत्पन्न त० तहां पु० पुरुष भ० होय सु०सुरूप सु०सुवर्ण सु० सुगंध सु०सुरस सु०सुस्पर्श इ०इष्ट कं०कांत जा०यावत् म० मनयोग्य अ० अहीन स्वर जा० यावत् म० मणाम स्वर आ० आदेय वचन प० उत्पन्न त० तहां बा० बाह्य अ० आभ्यन्तर प० परिषदा भ० होवे सा० उस में आ० आदरपावे जा०यावत् ब०बहुत अ० आर्य भा० बोले ॥ ८ ॥ अ०

सेणं तत्थ पुमे भवइ, सुरूवे, सुवन्ने, सुगंधे, सुरसे, सुफासे, इट्ठे, कंते, जाव मणामे, अहीणस्सरे, जाव मणामस्सरे आदेज्जवयण पच्चायाए, जावियसे तत्थ बाहि-रब्भतरिया परिसा भवइ सावि य आढाइ जाव बहु अज्जउत्ते भासओ २ ॥ ४ ॥

देवता और भी बोलो वहां आयुष्यका क्षय हुये पीछे [वहांसे चवकर मनुष्य में बहुत लोकासे अपरिभूत कुलमें उत्पन्न होवारे वहां पुरुषपने अच्छा वर्ण, गंध, रस, स्पर्शवाला इष्ट कान्त यावत् मनगमता, अदीन स्वरवाला यावत् आदेयवचनवाला होता है उनके पुत्र मित्रादिभी उनको यथायोग्य सत्कार सन्मान

संवर का० कायसंवर अ० आठ प्रकार का अ असंवर सो० श्रोतेन्द्रिय जा० यावत् का० काय असंवर ॥ ५ ॥ अ० आठस्पर्श क० कर्कश मा० मृदु गु० गुरु ल० लघु सी० शीत उ० ऊष्ण नि० स्निग्ध लु० रुक्ष ॥ ६ ॥ अ० आठ प्रकार की लो० लोकस्थिति आ० आकाश प्रतिष्ठित वा० वायु वा० वायु प० प्रतिष्ठित उ० उदधि ए० ऐसे जा० यावत् छ० छठाठाणा में जा० यावत् जी० जीव क० कर्म प० प्रतिष्ठित

अट्ठविहे संवरे प० तं० सोइंदियसंवरे, जाव फासिंदियसंवरे, मणसंवरे, वयसंवरे, काय-संवरे ॥ अट्ठविहे असंवरे प० तं० सोइंदिय असंवरे जाव कायअसंवरे ॥ ५ ॥ अट्ठफासा प० तं० कक्खडे, माउए, गुरुए, लहुए, सीए, उसिणे, निद्धे, लुक्खे, ॥ ६ ॥ अट्ठविहा लोगट्ठिई प० त० आगासपइट्ठिए वाए, वायपइट्ठिए उदही, एवं जाव छट्ठा

है १ श्रोतेन्द्रिय संवर यावत् स्पर्शेन्द्रिय संवर, मनसंवर, वचनसंवर और कायाका संवर, उन आठों का निग्रह नहीं करने से आठ प्रकार असंवर होता है ॥ ५ ॥ आठ स्पर्श १ कर्कश २ मृदु ३ गुरु ४ लघु ५ शीत ६ ऊष्ण ७ स्निग्ध और ८ रुक्ष ॥ ६ ॥ आठ प्रकार की लोकस्थिति आकाश प्रतिष्ठित उदधि यावत् कर्म प्रतिष्ठित जीव, जीव संग्रहीत अजीव और कर्म संग्रहीत जीव शेष छठे

म० अजीव जी जीव स० सग्रहीत जी० जीव क० कर्म स० संग्रहीत अ आठ प्रकार की ग० गण सपदा आ० आचार संपदा सु० श्रुतसपदा स० शरीर संपदा व० वचन सपदा वा० वांचना संपदा म० मतिसंपदा प० प्रयोग सपदा स० संग्रह प० प्रतिज्ञा अ० आठवीं ॥ ७ ॥ ए० एक २ म० महानिधि अ० आठ चक्रवाल प प्रतिष्ठान अ० आठ २ जो० योजन उ० ऊंचे उ ऊंचपने ॥ ८ ॥ अ० आठ स० समिति ई० ईर्यासमिति भा० भाषा समिति ए० एषणा समिति आ० आदान भडपात्र निक्षेपन उ० उच्चार

णे जाव जीवा कम्मपइट्ठिया अजीवाजीवसंगहिया, जीवा कम्मसंगहिया, ॥ अट्ठविहा गणिसपया प०तं० आयार संपया सुयसपया, सरीरसपया, वयणसपया वायणासंपया, मइसंपया पओगसपया, संगहपरिण्णाणाम अट्ठमा ॥ ७ ॥ एगमेगणं महानिही अट्ठचक्कवाल पइट्ठाणे अट्ठ अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ ८ ॥ अट्ठसमिईओ प० ईरिया समिई, भासासमिई, एसणा समिई, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणा

ठाणे जैस कहना आठ प्रकार से आचार्य की सपदा कही १ आचार सपदा २ श्रुतसपदा, ३ शरीर सपदा, ४ वचन सपदा, ५ वांचना संपदा ६ मतिसंपदा ७ प्रयोग संपदा, और ८ संग्रह प्रतिज्ञा (वस्त्रपात्रादि अंगीकार करनेकी) ॥ ७ ॥ चक्रवर्ती के एक २ निधान आठ २ चक्रप्रतिष्ठित हैं और व आठ योजन के ऊंचे हैं (नव २ योजन के चौडे और बारह २ योजन के लम्बे हैं) ॥ ८ आठ समिति कहीं १ ईर्यासमिति २ भाषासमिति ३ एषणासमिति ४ आदान भडपात्र निक्षेपन समिति ५ [illegible]

नवर का० कायभवर अ आठ प्रकार का अ असंवर सो० श्रोतेन्द्रिय पा० पात्र का० काय असवर पा पासवण खे० खेलजल सिं० सिंघाण प० परिठावणिया म० मन व० वचन का० काया सामा० रि॥ अ० आ० स्व। से सं युक्त अ० अनगार अ० युक्त है आ० आलोचना प० देनेको आ० आचारवंत आ० आधारवंत व० व्यवहारवंत उ० लज्जा रहित प० शुद्ध करावे अ० दूसरे को कहने नहीं णि० निर्वाह करसा अ० दूसरे को फल बतलावे ॥ १० ॥ अ० आठस्थान से सं० सपन्न अ० अनगार अ० योग्य है अ० आत्मदोष

समिई, उच्चार पासवण खेलजल्ल सिंघाण पारिट्ठावणियासमिई, मणसमिई, वयसमिई, कायसमिई॥९॥ अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरहइ आलोयणा पडिच्छिराए तं॰ आयारव, आहारवं, ववहारवं, उव्वीलए, पकुव्वए, अपरिस्सावी, णिज्जवए अवायदंसी, ॥१०॥अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरहइ अत्तदोसं आलोएत्तए त॰ जाइसपन्ने,

समिति, ६ मनसमिति ७ वचन समिति और ८ काया समिति ॥९॥ आठ गुणसपन्न अणगार आलोयणा देने योग्य होता है १ आचारवंत २ अतिचार कहे सो धारकर रखे ३ आगमश्रुतादि व्यवहारवंत ४ आलोयणालेनेवाले को लज्जा रहित करके सब भेद श्रवण करे ५ शुद्धकरावे ६ आलोचना दोष अन्य को कहे नहीं ७ शिष्य निर्वाह करसके वैसी विधि बतावे ८ यदि आलोचना नहीं करेतो उसका दुष्फल उनको बताकर आलोचना करने का उत्साही बनावे ॥ १० ॥ आठ गुणसंपन्न अणगार स्वतः के दोष की आलो

आ० आलोचने योग्य जा० जातिसपन्न कु० कुलसपन्न वि० विनय सपन्न ना० ज्ञानसंपन्न द० दर्शन सपन्न च० चारित्रसंपन्न खं० क्षमावन्त द० दमवन्त ॥ ११ ॥ अ० आठ प्रकार का पा० प्रायश्चित आ० आलोचना प० प्रतिक्रमन त० तमय वि० विवेक वि० कायोत्सर्ग त० तप छे० छेद मू० मूल ॥ १२ ॥ अ० आठ म० मदस्थान जा० जातिमद कु० कुलमद ब० बलमद रू० रूपमद त० तपमद सु० श्रुतमद ला० लाभमद ई० ऐश्वर्यमद ॥ १३ ॥ अ० आठ अ० अक्रियावादी ए० एकवादी अ० अनेकवादी मि० मितवादी नि० निमि-

अट्ठविहे विणयसपन्ने नाणसपन्ने, दंसणसंपन्ने, चरित्तसंपन्ने खते, दते ॥ ११ ॥ अट्ठविहे पायच्छित्ते प० त० आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे, विवेगारिहे, विउस्सग्गारिहे तवारिहे, छेयारिहे, मूलारिहे ॥ १२ ॥ अट्ठमयट्ठाणे प० तं० जाइमदे, कुलमदे, बलमदे, रूवमदे, तवमदे, सुयमदे लाभमदे, ईसरियमदे ॥ १३ ॥ अट्ठ

चना करने को योग्य होता है १ जातिसपन्न २ कुलसपन्न ३ विनय सपन्न ४ ज्ञानसंपन्न ५ दर्शन सपन्न ६ चारित्र सपन्न ७ क्षमावन्त और ८ दमितेन्द्रिय ॥ ११ ॥ प्रायश्चित के आठभेद कहे हैं १ आलोचना योग्य २ प्रतिक्रमण योग्य ३ दोनों योग्य ४ विवेक योग्य ५ कायोत्सर्ग योग्य ६ तपयोग्य ७ पर्याय (दीक्षा) छेद योग्य और ८ मूलछेद योग्य अर्थात् पुनः दीक्षादेवे ॥ १२ ॥ आठ मदस्थानक कहे हैं १ जातिमद २ कुलमद, ३ बलमद, ४ रूपमद, ५ तपमद ६ सूत्रमद ७ लाभमद ८ ऐश्वर्यमद ॥ १३ ॥ आठ अक्रियावादी १

तवादी सा० सातावादी स० समुच्छेदवादी णि० नियतवादी ण० नहीं है प० परलोकवादी ॥ १४ ॥ अ० आठ प्रकार का म० महानिमित्त भो० भूमि उ० उत्पात सु० स्वप्न अं० आकाश अं० अंग स० स्वर ल० लक्षण वं० व्यंजन ॥ १५ ॥ अ० आठ प्रकार की व० वचन विभक्ति नि० निर्देश उ० उपदेश क० करण सं० संप्रदान अ० अपादान सा० स्वामि का० वचन स० सन्निधान आ० आमन्त्रण त० तहाँ

आकिरियावादी प० तं० एकावादी, अणेकावादी, मितवादी, निमित्तवादी, सायवादी, समुच्छेदवादी, णिययवादी णसतिपरलोगवादी ॥ १४ ॥ अट्ठविहे महानिमित्ते प० तं० भोमे, उप्पाए, सुविणए अंतलिक्खे अंगे, सरे, लक्खणे, वंजणे ॥ १५ ॥ अट्ठविहा वयण विभत्ती प०तं० (गाथा) निद्देसे पढमा होइ, बिइया उवदेसणे, त

एकही आत्मा भिन्न २ घट में व्यापक है, २ अनेकवादी सो आत्मा बहुत है ३ मितवादी सो जीव को अंगुष्ट प्रमाण माने ४ निमित्तवादी सो जगत् को बनाने में ईश्वर भूत है ५ सातावादी सो सुखभोगवने से सुखमोक्ष ६ समुच्छेदवादी सो क्षण २ में वस्तु का नाश है ७ नियतवादी सो लोक एकान्त नित्य है ऐसामाने और ८ परलोक पुण्य पाप कुच्छभी नहीं हैं ऐसामाने ॥ १४ ॥ आठ प्रकार का महानिमित्त कहा है १ भूमिकपादि फल शास्त्र २ रुधिर वृष्ट्यादि ३ शुभाशुभ स्वप्न शास्त्र ४ आकाश नगरादि शास्त्र ५ अंगस्फुरण शास्त्र ६ स्वरशास्त्र ७ शरीर लक्षण और ८ व्यंजन मसतिलकादि ॥ १५ ॥ कर्तृत्व कर्मादि

प० प्रथमा नि० विभक्ति निर्देश अ० में प० पोलता है बि० द्वितीया उ० उपदेश में भ० सील कु० कर प० षचन त० तृतीय क० करण क० किया णी० लिया क० किया ते० उसने प० षचन इ० सेइ में प० नमस्कार सा० स्वाहा ह० होती है च० चतुर्थी प० संमदानमें अ० दूर कर गे० ग्रहण कर

इयाकरणमि कया, चउत्थी सपयावणे ॥ १ ॥ पचमीय अवायाणे,छट्ठीसस्सामिवायणे, सत्त मी सन्निहाणत्थे, अट्ठमी आमतणेभवे ॥ २ ॥ तत्थ पढमा विभत्ती, निद्देसेसो इमो अहवत्ती, बिइयाउणउवएसे, भणकुणवइम वतवत्ती ॥ ३ ॥ तइया करणमिकया, णीयत्त कयंच तेणवमएवा, हंदिणमो साहाए, हवइ चउत्थी पयाणमि ॥ ४ ॥ अवणे गेण्हसु

लक्षण से जो विभाग किया जाता है उसे विभक्ति कहते हैं उसके आठभेद कहे हैं १ प्रथमा विभक्ति का निर्देश अर्थ में प्रयोग किया जाता है " जैसे यह पुरुष है, या यह पुरुष जाता है " २ द्वितीया उपदेश अर्थमें जैसे ' कुरुग्रामं याति, " " घट ददाति, " कुरुग्रामको जाताहै या घट देता है ३ करण अर्थमें तृतीया का प्रयोग किया जाता है 'निहतः शरेण रामेण रावणः' रावण को रामने बाणसे मारा ४ संप्रदान अर्थमें चतुर्थी साधुभ्यो दानं ददाति साधु को दान देते हैं श्री जिनायनमः ५ अपादान अर्थ में पंचमी ग्रामात् आगतः ग्राम से आया ६ स्वामीत्वमें षष्ठी राज्ञः पुत्रः राजाका पुत्र ७ सन्निधान में सप्तमी "कूपे पतित" कूवे में

ना को अ० आठ अ० अग्रमहिषी क० कृष्णा क० कृष्णराजी रा० रामा रा० रामरक्षिता व० वसु व० वसुगुप्ता व० वसुमित्रा व० वसुंधरा ॥ २० ॥ स० शक्र देवेन्द्र दे० देवराजा के सो साम महाराजा को अ० आठ अ० अग्रमहिषी ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजाके वे० वैश्रमण म० महाराजा को अ० आठ अ० अग्रमहिषी ॥ २१ २२ ॥ अ० आठ म० महाग्रह चं० चंद्र सू० सूर्य शु० शुक्र बु० बुध ब० बृहस्पति अं० मंगल स० शनैश्चर के० केतु ॥ २३ ॥ अ० आठ प्रकार की त तृणवनस्पति काय मू

इसाणस्सणं देविंदस्स देवरण्णो अट्ठ अग्गमाहिसीओ पण्णत्ताओ तं० कण्हा, कण्हराई, रामा, रामरक्खिया, वसू, वसुगुत्ता, वसुमित्ता, वसुधरा ॥ २० ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ । इसाणस्सणं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो अट्ठ अग्गमाहिसीओ पण्णत्ताओ ॥ २१-२२ ॥ अट्ठ महग्गहा प० तं० चंदे, सूरे, सुक्के, बुहे, बहस्सइ अंगारए, सणिच्चरे, केऊ ॥ २३ ॥ अट्ठविहा तणवणस्सइ काइया प० तं० मूले कंदे, खंधे,

कृष्ण राजी ३ रामा ४ राम रक्षिता ५ वसु ६ वसुगुप्ता ७ वसुमित्रा और ८ वसुंधरा ॥ २० ॥ शक्रेन्द्र देवका सोम महाराजा और ईशानेन्द्र देव का वैश्रमण महाराजा को आठ अग्रमहिषीयों कहीं ॥ २१ २२ ॥ आठ महाग्रह कहे हैं चन्द्र सूर्य, शुक्र, बुध, बृहस्पति, मंगल, शनैश्चर और केतु ॥ २३ ॥ आठ प्रकार की

मूल क० कंद खं०स्कन्ध त०त्वचा सा०शाखा प०प्रवाल प०पत्र पु०पुष्प ॥२४॥ च०चौरेन्द्रिय जी० जीवका अ०असमारंभकरनेवाले को अ०आठ प्रकार का सं०संयम क० करता है च०चक्षु के सो० सुख से अ० दूर करे नहीं च० चक्षु से दु० दुःख का सं० संयोग होवे नहीं ए० ऐसे जा० यावत् फा० स्पर्शके सो० सुख से अ०दूरकरे नहीं फा० स्पर्श के दु० दुःख का सं०संयोग होवे नहीं ॥२ ॥ च०चौरेन्द्रिय जीवका स० समारंभ करत को अ० आठ प्रकार का अ० असंयम क० करता है च० चक्षुको सो० सुख से व० दूरकरे च० चक्षु के दु० दुःख का सं० संयोग भ० होवे ए० ऐसे जा० यावत् फा० स्पर्शके सो० सुख से ॥ २६ ॥ अ०

तया, साले पवाल पत्ते, पुप्फे ॥ २४ ॥ चउरिंदियाणं जीवा असमारभमाणस्स अट्ठविहे संजमे कज्जइ त० चक्खुमाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ, चक्खुमएण दुक्खेण असंजोएत्ता भवइ एवं जाव फासामाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ फासामएण दुक्खेण असंजोएत्ता भवइ ॥ २५ ॥ चउरिंदियाण जीवा समारभमाणस्स अट्ठविहे असंजमे कज्जइ त० चक्खुमाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवइ, चक्खुमएण दुक्खेणं संजोएत्ता भवइ, एवं जाव फासामाओ सोक्खाओ ॥ २६ ॥ अट्ठ सुहुमा प०

तृण वनस्पति काय कही मूल, कंद, स्कंध, त्वचा, शाखा, प्रवाल, पत्र, और पुष्प ॥ २४ ॥ चतुरेन्द्रिय जीव का असमारंभ करनेवाले को आठ प्रकार का संयम होता है चक्षु के सुख से पृथक् होवे नहीं यावत् स्पर्श के दुःख का संयोग होवे नहीं ॥ २५ ॥ चतुरेन्द्रियका आरंभ करनेवाले को आठ प्रकारका असंयम

आठ सु० सूक्ष्म पा० प्राण प० पनक बी० बीज ह० हरित पु० पुष्प अ० अंडग ले० कीटिका सि० स्नेह ॥ २७ ॥ भ० भरत राजा चा० चातुरंत च० चक्रवर्ती अ० आठ पु० पुरुषजुग अ० अनुक्रम से सि० सिद्ध हुवे जा० यावत् स० सर्व दु० दुःख से प० मुक्त हुवे आ० आदित्ययश म० महायश अ० अतिबल म० महाबल ते० तेजवीर्य कि० कीर्तिवीर्य दं० दंडवीर्य ज० जलवीर्य ॥ २८ ॥ पा० पार्श्वनाथ अ० अरि-

त० पाणसुहुमे, पणगसुहुमे, बीयसुहुमे, हरियसुहुमे, पुप्फसुहुमे, अंडगसुहुमे, लेणसुहुमे सिणेहसुहुमे ॥२७॥ भरहस्सणं रण्णो चाउरंत चक्कवट्टिस्स अट्ठपुरिसजुगाइं अणुबद्धं सिद्धाइं जाव सव्वदुक्खप्पहीणाइं तं० आइच्चजसे, महाजसे अइबले, महाबले, तेयवीरिए,कित्तवीरिए,दंडवीरिए जलवीरिए ॥२८॥ पासस्सणं अरहओ पुरिसादाणियस्स

होता है चक्षुरिन्द्रियका सुख से पृथक् होवे यावत् स्पर्शेन्द्रिय के दुःख का संयोग होवे ॥ २६ ॥ आठ सूक्ष्म कहे हैं १ प्राण, २ पनक (नीलफूलन) ३ बीज ४ हरितकाय ५ उंबर के पुष्प ६ अंड ७ कीटिका और ८ स्नेह सो हिम धूंअर प्रमुख सूक्ष्म ॥ २७ ॥ भरत चक्रवर्ती के आठ पुरुषयुग अनुक्रम से सिद्ध हुवे यावत् सब दुःख से मुक्त हुवे १ आदित्य यश २ महायश ३ अतिबल ४ महाबल ५ तेज वीर्य ६ कीर्ति वीर्य ७ दंड वीर्य और ८ जल वीर्य ॥ २८ ॥ पुरुषादाणी श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर को आठ गण (गच्छ)

१ एक की पाटपर दूसरा और दूसरे पीछे तीसरा इसे युगवाहन कहते हैं वैसे आठ पुरुष हुवे

हुव पु०पुरुषादानी अ०आठगण अ०आठगणधर हो०हुवे सु०शुभ अ०आर्यघोष व० वशिष्ठ बं० ब्रह्मचारी सो० सोम सि० श्रीधर वी० वीर्य भ० भद्रयश ॥ २९ ॥ अ० आठ प्रकारका दं० दर्शन स० सम्यक दर्शन मि०मिथ्या दर्शन स०समभिथ्या दर्शन च०चक्षुदर्शन जा०यावत के०केवल दर्शन सु०स्वप्नदर्शन ॥३०॥ अ० आठ प्रकार की अ० कालकी उपमा प० पल्योपम सा० सागरोपम ओ० उत्सर्पिणी उ० अवसर्पिणी पो० पुद्गल परावर्तन ती० अतीतकाल अ० अनागतकाल स० सर्वकाल ॥ ३१ ॥ अ० अरिहंत अ० अरिष्टनेमी

अट्ठगणा अट्ठगणहरा होत्था त० सुभे, अज्जघोसे, वसिट्ठे, बंभचारी, सोमे, सिरिधरे, वीरिए, भद्दजसे॥२९॥अट्ठविहे दंसणे प० त० सम्मदंसणे, मिच्छदंसणे, सम्मामिच्छदंसणे, चक्खुदंसणे, जाव केवलदंसणे सुविणदंसणे ॥३०॥अट्ठविहे अद्धोवमिए प० तं० पलिओवमे, सागरोवमे, ओस्सप्पिणीए, उस्सप्पिणीए, पोग्गलपरियट्टे, तीतद्धा, अणागयद्धा, सव्वद्धा, ॥ ३१ ॥ अरहओणं अरिट्ठनेमिस्स जाव अट्ठमाओ परिसजुगाओ जु

और आठ गणधर हुवे उन गणधरों के नाम १ शुभ, २ आर्य घोष ३ वशिष्ठ ४ ब्रह्मचारी ५ सोम ६ श्रीधर ७ वीर्य और ८ भद्रयश ॥२९॥ दर्शन के आठ भेद कहे हैं १ सम्यक् दर्शन २ मिथ्या दर्शन ३ समभिथ्या दर्शन ४ चक्षुदर्शन ५ अचक्षु दर्शन, ६ अवधि दर्शन ७ केवल दर्शन और ८ स्वप्न दर्शन ॥ ३० ॥ आठ प्रकारसे कालकी उपमा कही है १ पल्योपम २ सागरोपम ३ उत्सर्पिणी ४ अवसर्पिणी ५ पुद्गलपरावर्तन

आ०यावत् अ०आठ पु०पुरुषयुग ज०युगांतकरभूमि दु० दोवर्षकी प० दीक्षा से धं अत अ० कीया ॥३२॥ स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ने अ० आठराजाको मु० मुंड कर अ०अगार से अ० अनगार को प०प्रव्रजितकिये वी०वीरंगक वी०वीरयश स०संजत णि०नयक रा०राजर्षि से०श्वेत सि शिव उ०उदायन सं० शंख का० काशीका ॥ ३३ ॥ अ आठ प्रकारका आ० आहार म० मनोज्ञ अ० अशन पा० पानी खा०

गतगरभूमी दुवास परियाए अतमकासी ॥ ३२ ॥ समणेणं भगवया महावीरेण अट्ठरायाणो मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वाविया तं (गाथा) वीरंगय वीरजसे । संजयए णिज्जएय रायरिसी ॥ सेय सिव उदायणे । तहसंखे कासिवद्धणए (१) ॥ ३३ ॥ अट्ठविहे आहारे प० त० मणुण्णे—असणे, पाणे, खाइमे, साइमे, अम

६ अतीतकाल, ७ अनागत काल और ८ सब काल ॥ ३१ ॥ अरिष्टनेमी मोक्षपधारे पीछे उनकी आठ पाट तक मुक्त होना रहा और श्री अरिष्टनेमी को केवल ज्ञान हुवे पीछे दोवर्ष से मोक्षजाना शरूहुवा श्रमण भगवन्त महावीरने आठ राजा को मुंडकर दीक्षाग्रहण कराइ १ वीरंगक २ वीरयश ३ संजत ४ प्रदेशी राजा का गोत्रीय नेयक राजर्षि ५ श्वेत ६ शिव ७ उदायन ८ और काशी देशका राजा शंख ॥ ३२ ॥ आठ प्रकार का आहार मनोज्ञ अशन, पान, खादिम, स्वादिम और अमनोज्ञ अशन, पान, खादिम, प

स्वादिम सा० स्वादिम अ० अमनोज्ञ अ० अशन पा० पानी खा० खादिम सा० स्वादिम ॥ ३८ ॥
उ० उपर स० सनत्कुमार मा० माहेन्द्र कल्पके हे० नीचे बं० ब्रह्मदेवलोकके रि० रिष्ठ वि० विमान प०
पाथडा अ० अखाडक स० समचौरस संठाणसे सं० रहा हुवा अ० आठ क० कृष्ण राजी पु० पूर्वमें दो०
दोकृष्णराजी दा० दक्षिणमें दो० दोकृष्णराजी प० पश्चिममें दो० दोकृष्णराजी उ० उत्तरमें दो० दोकृ
ष्णराजी पु० पूर्वकी अ० आभ्यंतर क० कृष्णराजी दा० दक्षिणकी बा० बाहिरकी क० कृष्णराजी

पुण्णे—असणे, पाणे खाइमे, साइम ॥ ३४ ॥ उप्पिं सणकुमार माहिंदाणं कप्पाण
हेट्ठिं बंभलोए कप्पे रिट्ठविमाणपत्थडे एत्थणं अक्खाडगसमचउरससठाणसंठिया
ओ अट्ठकण्हराईओ पण्णत्ताओ त० पुरच्छिमेण दोकण्हराईओ, दाहिणेणं दोकण्ह
राईओ, पच्चत्थिमेणं दोकण्हराईओ, उत्तरेण दोकण्हराईओ ॥ पुरच्छिमा अब्भतरा
कण्हराई दाहिणं बाहिर कण्हराई पुट्ठा । दाहिणा अब्भतराकण्हराइ, पच्चत्थिमं

स्वादिम ॥ ३५ ॥ सनत्कुमार व माहेन्द्र देवलोक की उपर और ब्रह्मदेवलोक की नीचे रिष्ट नामक विमान
के पाथडे में मेक्षण अखाडे के आकारवाली समचतुस्र संस्थान से संस्थित आठ कृष्णराजी कही पूर्वदिशा में
दोकृष्णराजी, दक्षिणदिशामें दो, पश्चिम में दो और उत्तर में दो पूर्वदिशा की आभ्यंतर में दो कृष्णराजी
दक्षिण की बाहिर की कृष्णराजी को स्पर्शकर रही है, दक्षिण की आभ्यतर कृष्णराजी पश्चिम की बाहिर

का पु० पूरसीहुइहै दा० दक्षिणकी अ० आभ्यंतर क० कृष्णराजी प० पश्चिमकी बा० बाहिर की क० कृष्णराजी को पु० स्पर्शकर रहीहुइ है प० पश्चिमकी अ० आभ्यन्तर क कृष्णराजी उ० उत्तरकी बा० बाहिरकी क० कृष्णराजी को उ० उत्तरकी अ० आभ्यन्तर क० कृष्णराजी पु० पूर्वकी बा बाहिरकी क कृष्णराजी को पू० पूर्व पश्चिमकी बा० बाहिर की दो० दोकृष्णराजी छ० छअंशकी उ० उत्तरदक्षिणकी बा० बाहिरकी दो० दोकृष्णराजी तं त्र्यंस स० सब की अ० आभ्यन्तर क० कृष्णराजी च० चौरस

बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा । पच्चत्थिमा अब्भंतरा कण्हराइं उत्तरा बाहिर कण्हराइ पुट्ठा । उत्तरा अब्भतरा कण्हराइं ,रच्छिम बाहिरं कण्हराइ पुट्ठा ॥ पुरच्छिमपच्चत्थिमिल्लाओ बाहिराओ दोकण्हराईओ छलंसाओ । उत्तरदाहिणाओ बाहिराओ दोकण्हराईओ तंसाओ सव्वाओविण अब्भंतरकण्हराईओ चउरंसाओ । एयासिणं अट्ठण्ह कण्हराईण अट्ठ नामधेज्जा प० त० कण्हराईतिवा, मेहराईतिवा, मघातिवा, माघवईतिवा, वातफलिहे-

की कृष्णराजी को स्पर्शकर रही है, पश्चिम की आभ्यंतर कृष्णराजी उत्तर की बाहिर की कृष्णराजी को स्पर्शकर रही है उत्तर की आभ्यंतर कृष्णराजी पूर्वकी बाहिर की कृष्णराजी को स्पर्शकर रही है पूर्व पश्चिमकी बाहिर की दो कृष्णराजी छ अंशकी है, उत्तर दक्षिणकी बाहिरकी दो कृष्णराजी त्र्यंश है, और सब अंदरकी कृष्णराजी चौरस है उनके नाम १ कृष्णराजी, २ मेघराजी, ३ मघा ४ माघवती ५ वात

ए० इन म० आठ क० कृष्णराजिके अ० आठनाम क० कृष्णराजी मे० मेघराजी म० मघा मा० माघवती वा० वातफालिहा वा० वातफालिक्षोभा द० देवफालिहा दे० देवफालिक्षोभा ए० इन अ० आठ क० कृष्ण राजी के म० आठ उ० आंतरेमें अ० आठ लोकान्तिक वि० विमान अ० अर्चि म० अर्चिमाली व० वैरोचन प मभंकर चं० चंद्राभ सु० सुराभ सु० सुप्रतिष्ठाभ अ० अग्निआभ ए० इन म० आठ लो० लोकान्तिक वि० विमान में अ० आठ प्रकार के लो० लोकान्तिक दे० देव सा० सारस्वत आ० आदित्य व० वन्हि व० वरुण ग० गर्दतोय तु० तुसित म० अव्याबाध अ० अग्निच्च ए० इन अ० आठ प्रकार के

तिवा, वातफलिखोभेतिवा, देवफलिहेतिवा, देवफलिखोभेतिवा, । एयासिण अट्ठण्ह कण्हराईण अट्ठसु उवासतरेसु अट्ठलोगतिय विमाणा प० त० अच्ची, अच्चिमाली, वइरायणे, पभकर, चंदाभे, सुराभे, सुपइट्ठाभे, अग्गिच्चाभे । एएसिण अट्ठसु लोगतिय विमाणेसु अट्ठविहा लोगतिया देवा प० त० (गाथा) सारस्सय माइच्चा, वण्ही व रुणाय गद्दतोयाय तुसिया अव्वाबाहा, अग्गिच्चाचेवबोधव्वा (१) एएसिण अट्ठवि

फलिहा ६ वातफलिक्षोभा ७ देवफलिहा और ८ देवफलिक्षोभा इन आठ कृष्णराजी के आठ आंतरे में आठ लोकान्तिक देव के आठ लोकान्तिक विमान कहे हैं १ अर्चि, २ अर्चिमाली ३ वैरोचन ४ प्रभंकर ५ चंद्राभ ६ सुराभ ७ सुप्रतिष्ठाभ और ८ अग्निआभ इन आठ लोकान्तिक विमान में आठ लोकान्तिक देव कहे

का पु० फरमीहुई द्दा० दक्षिणकी अ०आभ्यंतर क०कृष्णराजी प०पश्चिमकी बा०बाहिर की कं०कृष्णराजी।

लो० लोकान्तिक दे० देवकी ज० जघन्य उ० आठ सा सागरोपमकी ठि० स्थिति ॥ ३८ ॥ अ० आठ ध धर्मास्तिकाय का म० मध्यम प० प्रदेश अ० आठ अ० अधर्मास्तिकाय के म० मध्यम प० प्रदेश अ० आठ आ० आकाशास्तिकायके म० मध्यम प्रदेश अ० आठ जी० जीव के म० मध्यम प्रदेश ॥ ३६ ॥ अ० अरिहंत म महापद्म अ आठराजा को मुं० मुंड क० कर अ० अगारसे अ० अनगार को प० प्रव्रज्यादेंगे प० पद्म प० पद्मगुल्म न० नलीन न० नलीनगुल्म प० पद्मरथ ध० धनुरथ क० कनकरथ भ०

हाण लोगंतियाणं देवाणं अजहण्णमणुक्कोसेणं अट्ठसागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥३५॥
अट्ठधम्मत्थिकायमज्झप्पएसा, प० अट्ठअहम्मत्थिकायमज्झप्पएसा प० ॥ अट्ठ
आगासत्थिकायमज्झप्पएसा प० एवंचेव अट्ठजीवमज्झप्पएसा पण्णत्ता ॥ ३६ ॥
अरहाणं महापउमे अट्ठरायाणो मुंडाभवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वावेइति

हैं १ सारस्वत २ आदित्य ३ वन्ही ४ वरुण ५ गर्दतोय ६ तुसित ७ अव्याबाध और आग्नेय इन आठों लोकान्तिक देवता को जघन्य उत्कृष्ट आठ सागरोपमकी स्थिति कही ॥ ३५ ॥ आठ धर्मास्ति कायाके मध्यप्रदेश, आठ अधर्मास्ति कायाके मध्यप्रदेश, आठ आकाशास्ति कायाके मध्यप्रदेश वैसेही जीव के आठमध्यप्रदेश ॥ ३६ ॥ आगामिक उत्सर्पिणीमें होने वाले प्रथम तीर्थंकर श्री महापद्मस्वामी आठ राजाओंको मुंडकर गृहवास से मुक्तकर प्रव्रजितकरेंगे उनके नाम १ पद्म २ पद्मगुल्म ३ नलिन ४ नलिनगुल्म

म०
मरत ॥ १७ ॥ क० कृष्ण वा० वासुदेवकी अ० आठ अ० अग्रमहिषी ...
पास मु० मुंड होकर अ० अगारसे अ० अनगारको प० प्रव्रजितहुइ सि० सिद्धहुइ जा० यावत् स० सर्व दुःखसे प०
मुक्तहुइ प० पद्मावती गो० गौरी ग० गंधारी ल० लक्ष्मणा सु० सुसीमा जं० जंबूवती स० सत्यभामा रु०
रूपिणी अ० अग्रमहिषी ॥ १८ ॥ वी० वीर्यपूर्व की अ० आठ व० वस्तु अ० आठ चू० चूलिका वत्थु
॥ १९ ॥ अ० आठ गति नि० नरकगति ति० तिर्यञ्च जा० यावत् सि० सिद्धिगति गु० गुरुगति प०

ते० पउम, पउमगुम्मे, नलिने, नलिनगुम्मे, पउमद्धये, धणुद्धये, कणगरहे, भरहे
॥ २७ ॥ कण्हस्सणं वासुदेवस्स अट्ठअग्गमहिसीओ, अरहओणं अरिट्ठनेमिस्स अं
तिये मुंडाभवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्ता सिद्धाओ जाव सव्वदुक्खप्पहीणा
ओ तं० (गाथा) पउमावईयगोरी । गंधारी लक्खणा सुसीमाय ॥ जंबूवई सच्चभमा,
रुप्पिणी अग्गमहिसीओ ॥ १ ॥ २८ ॥ वीरियपुव्वस्सणं अट्ठवत्थू अट्ठचूलिया
वत्थू प० ॥ २९ ॥ अट्ठगईओ प० तं० निरियगई, तिरियगई, जाव सिद्धिगई, गुरु

५ पद्मरथ ६ धनुरथ ७ कनकरथ ८ भरत ॥ १७ ॥ कृष्ण वासुदेवकी आठ पट्टराणियों श्री अरिष्ट नेमीकी
पास मुंडनकर प्रव्रजितबनी और अंतमें सब दुःख से मुक्तबनकर मोक्षमें गइ १ पद्मावती, २ गौरी ३ गंधा
री ४ लक्ष्मणा ५ सुसीमा ६ जंबूवती ७ सत्यभामा और ८ रुपिणी ॥ १८ ॥ वीर्यपूर्वकी आठ वस्तु और

मपोदनगति प० भागभारगति ॥४०॥ गं० गंगा सिं० सिंधु र० रक्ता र० रक्तवती दे० देवी के दी० द्वीप अ० आठ जो० योजन आ० लंबा वि पहोले ॥४१॥ उ० उल्कामुख मे०मेघमुख वि०विद्युन्मुख वि० विद्युदन्त दी० द्वीप के दी० द्वीप अ० आठ जो० योजन स० सत आ लम्बे वि० पहोले ॥ ४२ ॥ का० कालोदधि स० समुद्र अ० आठ जो० योजन स० शतसहस्र प० चक्रवाल वि० पहोल ॥ ४३ ॥ अ० आभ्यंतर पु०

गई, पणोल्लणगई, पब्भारगइ, ॥ ४० ॥ गंगासिंधुरत्तारत्तवईं देवीणं दीवा अट्ठट्ठ-जोयणाइं आयाम विक्खंभेणं प० ॥ ४१ ॥ उक्कामुह, मेहमुह विज्जुमुह, विज्जुदंत दीवाणंदीवा अट्ठट्ठ जोयणसयाइं आयाम विक्खंभेण पण्णत्ता ॥ ४२ ॥ कालोदेणं समुद्दे अट्ठ जोयण सयसहस्साइं चक्कवाल विक्खंभेणं प० ॥ ४३ ॥ अब्भंतर

आठ वस्तु पुच्छिका की कही ॥ ३९ ॥ आठगति कही १ नरकगति, २ तिर्यंचगति, ३ मनुष्यगति, ४ देवगति, ५ सिद्धिगति ६ गुरुगति सो परमाणु कीगति ७ मणोदनगति प्रेरणासे चले ८ भागभारगति सो भारसे अधोगति होवे ॥ ४० ॥ गंगा, सिंधु, रक्ता और रक्तवती देवियोंके द्वीप आठ २ योजनके लम्बे चौडे कहे हैं ॥ ४१ ॥ उल्कामुख, मेघमुख, विद्युन्मुख और विद्युदंत द्वीप आठ २ सो योजनके लम्बे व चौडे कहे हैं ॥ ४२ ॥ कालोदधिसमुद्र आठ लक्ष योजन का चक्रवाल चौडा है ॥४३॥ अंदरका अर्धपुष्करवरद्वीप और

पुष्करार्ध अ० आठ जो० योजन स० सहस्र च० चक्रवाल वि० पहोला प० ऐसा बा० बाहिरका पु० पुष्करार्ध ॥ ४४॥ ए० एकेक र० राजा चा० चातुरंत च० चक्रवर्ती को० अ० आठ सो० सुवर्णका का० कागणीरत्न छ० छतल दु० बारा पांसली अ० आठ क० कर्णिक अ० अधिकरण सं० संस्थित ॥ ४५ ॥ मा० मागध जो० योजन अ० आठ ध० धनुष्य स० सहस्र नि० कहा ॥ ४६ ॥ जं० जंबू सु० सुदर्शन अ० आठ जो० योजन उ० ऊंचा उ ऊंचपने ब० बहुमध्यभाग में अ० आठ जो० योजन वि० पहोला सा० झाझेरा अ०

पुक्खरद्धं अट्ठ जोयण सय सहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते ॥ एवं बाहिर पुक्खरद्धेवि ॥ ४४ ॥ एगमेगस्सणं रन्नो चाउरंत चक्कवट्टिस्स अट्ठ सोवन्निए काकिणिरयणे छत्तले दुवालसंसिए, अट्ठकण्णिए अधिकरणिएसट्ठिए पण्णत्ते॥ ४५॥ मागधस्सणं जोयणस्स अट्ठ धणुसहस्साइं निधत्ते प० ॥ ४६॥ जबूणंसुदंसणा अट्ठ जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं, बहुमज्झदेसभागे अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं, साइरेगाइं अट्ठ जोयणाइं

बाहिरका अर्धपुष्करद्वीप आठ २ लक्षयोजनके चक्रवाल चौडे कहे हैं ॥ ४४ ॥ प्रत्येक चक्रवर्ती को आठ सुवर्ण की जाति का कागणी रत्न कहा है जिसको छतले, बारहांसे, आठ खूने कहे हैं और एरनके आकारवाला रहा हुवा है॥ ४५॥मगधदेशका योजन आठ सहस्र धनुष्य प्रमाणका कहा॥ ४६॥जम्बू सुदर्शन वृक्ष आठ योजनका ऊंचा कहा है, उसके मध्यभाग में आठ योजन की चौडाइ कही है और सबमीलकर आठ योजन

माठ मो०योजन स० सर्वानुरो ॥ ५७ ॥ कू० कूटसाम्लीवृक्ष अ० आठ ओ० योजन ॥ ५८ ॥ ति० तिमिस्रा
गुफा अ० आठ योजन उ० ऊंची उ० ऊंचपणे ॥ ५९ ॥ खं० खंड प्रपातगुफा अ० आठ योजन उ० ऊंची
उ० ऊंचपणे ॥ ६० ॥ जं० जम्बुद्वीपके मं० मेरुकी पु० पूर्व में सी० सीता म० महानदी के उ० दोनों
बाजु अ० आठ वक्खार पर्वत चि० चित्रकूट प० पद्मकूट न० नलीनकूट ए० एकसेल ति० त्रिकूट वे०
वैश्रमण अं० अंजन मा० मातंजन ॥ ६१ ॥ जं० जंबुद्वीपके मं०मेरुकी पश्चिम में सी० सीतोदा म० महानदी

सव्वेसिणं प० ॥ ४७ ॥ कूडसामलीणं अट्ठ जोयणाइं पुव्वेव ॥ ४८ ॥ तिमिस
गुहाणं अट्ठ जोयणाइं उड्डं उच्चत्तेण ॥ ४९ ॥ खंडप्पवायगुहाणं अट्ठजोयणाइं उड्डं
उच्चत्तेण, पुव्वेव ॥ ५० ॥ जंबुमंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीयाए महानईए
उभयतडे अट्ठ वक्खार पव्वया प० तं० चित्तकूडे, पम्हकूडे, नलिणकूडे, एगसेले,
तिकूडे, वेसमणकूडे, अंजणे मायंजणे ॥ ५१ ॥ जंबुमंदरपच्चत्थिमेणं सीओयाए

से भीतर कहा है ॥ ८७ ॥ इसी तरह कूट सामली वृक्ष का भी जानना ॥ ८८ ॥ तिमिस्रा नामकगुफा
आठ योजन की ऊंची कही है ॥८९॥ और प्रपात गुफा आठ योजन की ऊंची कही है ॥ ९० ॥ जम्बुद्वीप
के मेरु की पूर्वदिशा में सीता महानदी के दोनों किनारे आठ वक्खार पर्वत कहे हैं १ चित्रकूट, २
पद्मकूट, ३ नलीनकूट, ४ एकसेल ५ त्रिकूट ६ वैश्रमण कूट, ७ अंजन और ८ मातंजन ॥ ९१ ॥ जम्बू

के उ० दोनों बाजु म० आठ व० वक्खार प० पर्वत अं० अंकावती प० पद्मावती आ० आशीर्विष सु० सुखावह चं० चंद्रपर्वत सू० सूरपर्वत ना० नागपर्वत दे० देवपर्वत ॥ ५२ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी पु० पूर्व में सी० सीता म० महानदी की उ० उत्तर में अ० आठ च० चक्रवर्ती वि० विजय क० कच्छ सु० सुकच्छ म० महाकच्छ क० कच्छगावती आ० आवर्त जा० यावत् पु० पुष्कलावती ॥ ५३ ॥ जं० जंबूद्वीपके मेरुकी पु० पूर्व में सी० सीता म० महानदी की दा० दक्षिण में अ० आठ च० चक्रवर्ती विजय व० वच्छ

महाणईए उभयकूले अट्ठ वक्खार पव्वया प० तं० अंकावई, पम्हावई, आसीविसे, सुहावहे, चंदपव्वए, सूरपव्वए, नागपव्वए, देवपव्वए, ॥ ५१ ॥ जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं अट्ठ चक्कवट्टिविजया प० तं० कच्छे, सुकच्छे, महाकच्छे, कच्छगावई आवत्ते, जाव पुक्खलावई ॥ ५२ ॥ जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए दाहिणेणं अट्ठ चक्कवट्टिविजया प० तं० वच्छे सुवच्छे जाव मंग

मेरुकी पश्चिम दिशामें सीतोदा महानदी के दोनों किनारेपर आठ वक्षस्कार पर्वत कहे हैं १ अंकावती २ पद्मावती ३ आशीर्विष ४ सुखावह ५ चंद्रपर्वत ६ सूरपर्वत ७ नागपर्वत और ८ देवपर्वत ॥ ५२ ॥ जम्बू मंदर की पूर्व में सीता महानदी से उत्तर में आठ चक्रवर्ती विजय कहे हैं १ कच्छ २ सुकच्छ ३ महाकच्छ ४ कच्छगावती ५ आवर्त-यावत् पुष्कलावती ॥ ५३ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु की पूर्व में सीता से

माठ जो०योजन स० सर्वमाजुसे ॥ ४७ ॥ कू० कूट सामली वृक्ष अ० आठ जो० योजन ॥ ४८ ॥ ति० तिमिसा गुफा अ० आठ योजन उ० ऊंची उ० ऊंचपने ॥ ४९ ॥ खं० खंड प्रपातगुफा अ० आठ योजन उ० ऊंची उ० ऊंचपने ॥ ५० ॥ ज० जम्बूद्वीपके मे० मेरुकी पु० पूर्व में सी० सीता म० महानदी के उ० दोनों बाजु अ० आठ वक्खार पर्वत चि० चित्रकुट प० पद्मकूट न० नलीनकूट ए० एकशैल ति० त्रिकूट वे० वैश्रमण अं० अंजन मा० मातंजन ॥ ५१ ॥ ज० जम्बूद्वीपके मे०मेरुकी पश्चिम में सी० सीतोदा म० महानदी

सव्वगेण प० ॥ ४७ ॥ कूडसामलीणं अट्ठ जोयणाइं एवंचेव ॥ ४८ ॥ तिमिस गुहाणं अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण ॥ ४९ ॥ खंडप्पवायगुहाण अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण, एवंचेव ॥ ५० ॥ जंबूमंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेण सीयाए महानईए उभयतटे अट्ठ वक्खार पव्वया प० तं० चित्तकूडे पम्हकूडे, नलिणकूडे, एगसेले, तिकूडे, वेसमणकूडे, अंजणे मायंजणे ॥ ५१ ॥ जंबूमंदरपच्चत्थिमेण सीओयाए

से अधिक कहा है ॥ ४७ ॥ इसी तरह कूट सामली वृक्ष का भी जानना ॥ ४८ ॥ तिमिसा नामकगुफा आठ योजन की ऊंची कही है ॥४९॥ खंड प्रपात गुफा आठ योजन की ऊंची कही है ॥ ५० ॥ जम्बूद्वीप की पूर्वदिशा में सीता महानदी के दोनों किनारेपे आठ वक्षस्कार पर्वत कहे हैं १ चित्रकूट, २ [illegible] ३ नलीनकूट, ४ एकशैल ५ त्रिकूट ६ वैश्रमण कूट, ७ अंजन और ८ मातंजन ॥ ५१ ॥ जम्बू

रा० राज्यधानी सु० सुषामा कु० कुंडला जा० यावत् र० रत्नसंचया ॥ ५८ ॥ जं० जम्बूद्वीप के मे० मेरु की प पश्चिम में सी० सीतोदा म० महानदी की दा० दक्षिण में अ० आठ रा० राज्यधानी आ० आसपुरा जा० यावत् वी० विगतशोका ॥ ५९ ॥ जं० जम्बूद्वीप के मेरुकी प० पश्चिम में सी सीतोदा म० महानदी की उ० उत्तर में अ० आठ रा० राज्यधानी वि० विजया वे० वैजयन्ती जा० यावत् अ० अयोध्या ॥६०॥ जं० जंबूद्वीप के मे० मेरुकी पु० पूर्व में सी० सीता म० महानदी की उ० उत्तर में उ० उत्कृष्ट पद में अ० आठ अ०

आए महाणईए दाहिणेणं अट्ठ रायहाणीओ प० तं० सुसीमा, कुंडलाचेव, जाव रय णसंचया ॥ ५८ ॥ जम्बूमंदर पच्चत्थिमेणं सीओआए महाणईए दाहिणेणं अट्ठ रायमहा णीओ प० आसपुरा जाव वीयसोगा ॥ ५९ ॥ जबूमंदर पच्चत्थिमेणं सीओआए महाणईए उत्तरेण अट्ठरायहाणीओ प० तं० विजया वेजयंती जाव अउज्झा ॥६०॥ जंबूमंदर पुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए उत्तरेण उक्कोसपदे अट्ठ अरिहंता, अट्ठचक्कव

पुंडरीकिनी ॥ ५७ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु की पूर्व में सीता महानदी से दक्षिण में आठ राज्यधानियों कहीं सुसीमा, कुंडला, यावत् रत्नसंचया ॥ ५८ ॥ जम्बू मंदर की पश्चिम में सीतोदा महानदी से दक्षिण में आठ राज्यधानियों कहीं आसपुरा यावत् विगतशोका ॥ ५९ ॥ जम्बू मंदर से पश्चिम में सीतोदा महानदी से उत्तर में आठ राज्यधानियों कहीं विजया वैजयन्ती यावत् अयोध्या ॥ ६० ॥ जम्बूद्वीप के पूर्व में

सु० सुवच्छ जा० यावत् मं० मंगलावती ॥५४॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी प० पश्चिम में सी० सीतोदा म० महानदी की दा० दक्षिण में अ० आठ च० चक्रवर्ती विजय प० पद्मा यावत् स० सलिलावती ॥ ५५ ॥ जं० जंबूद्वीप के मेरुकी प० पश्चिम में सी० सीतोदा म महानदी की उ० उत्तर में अ० आठ च० चक्रवर्ती विजय व० वप्र सु० सुवप्र जा० यावत् गं० गंधिलावती ॥ ५६ ॥ जं० जंबूद्वीपके मेरुकी पु० पूर्व में सी सीता म० महानदी की उ० उत्तर में अ० आठ रा० राज्यधानी खे० क्षेमा खे० क्षेमपुरा जा० यावत् पु० पुंडरीकिणी ॥५७॥ जं० जंबूद्वीप के मेरुकी पु० पूर्व में सी० सीता म० महानदी की दा० दक्षिण में अ० आठ

लावई ॥ ५४ ॥ जम्बूमंदर पच्चात्थिमेण सीओयाए महानईए दाहिणेण अट्ठ चक्कवट्टि विजया प० तं० पम्हे जाव सलिलावई ॥ ५५ ॥ जंबूमंदर पच्चात्थिमेण सीओयाए महानईए उत्तरेणं अट्ठ चक्कवट्टि विजया प० तं० वप्पे, सुवप्पे, जाव गंधिलावई, ॥ ५६ ॥ जम्बूमंदर पुरच्छिमेणं सीयाए महानईए उत्तरेण अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ तं० खेमा खेमपुरा चेव, जावपुंडरीगिणी ॥५७॥ जम्बूमंदर पुरच्छिमेणं सी

दक्षिण में आठ चक्रवर्ती विजय कहे हैं वच्छ, सुवच्छ यावत् मंगलावती ॥ ५४ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु की पश्चिम में सीतोदा महानदी से दक्षिण में आठ विजय १ पद्म यावत् सलिलावती ॥ ५५ ॥ जम्बू मंदर की पश्चिम में सीतोदा महानदी की उत्तर में आठ चक्रवर्ती विजय कहे हैं वप्र, सुवप्र यावत् गंधिलावती ॥५६॥ जम्बूद्वीप के मेरु की पूर्व में सीता महानदी से उत्तर में आठ राज्यधानियों कहीं क्षेमा क्षेमपुरा यावत्

आठ प० नट्टमाल देवता म आठ गं० गंगा सि० सिंधु नं० नदी गं० गंगाकूट सि० सिंधुकूट उ० ऋषभकूट व
आठ उ ऋषभकूट देवता ॥ ६५ ॥ सी० सीता म० महानदी की दा० दक्षिण में अ० आठ दी० दीर्घ वैताढ्य ए० ऐसे जा० यावत् अ० आठ उ० ऋषभकूट देव न० विशेष ए० यहां र रक्ता र० रक्तवती वा उस के कू० कूट ॥ ६६ ॥ जं० जंबूद्वीप की मं० मेरुकी प० पश्चिम में सी० सीतोदा

देवा, अट्ठगंगाओ, अट्ठसिंधूओ, अट्ठ गंगाकुंडा, अट्ठ सिंधुकुंडा, अट्ठ उसमकूडा, प० । अट्ठ उसमकूडादेवा प० ॥ ६५ ॥ जंबूमंदर पुरच्छिमेणं सीयाए महाणइए दाहिणेणं अट्ठ दीहवेयड्ढा एवं चेव जाव अट्ठ उसमकूडादेवा प० । नवरमेत्थ रत्ता रत्तवईओ तासिंचेवकूडा ॥ ६६ ॥ जंबूमंदर पच्चत्थिमेण सीओयाए महाणईए दाहिणेणं अट्ठ दीहवेयड्ढा जाव अट्ठनट्टमालगादेवा, अट्ठगंगाकुंडा, अट्ठसिंधुकूडा,

मंदर की पूर्व में सीता महानदी से उत्तर में आठ दीर्घ वैताढ्य, आठ तिमिस्रगुफा, आठ खंडप्रपातगुफा, आठकृतमालदेवता आठ नट्टमालदेवता, आठ गंगा आठसिंधुनदी, आठगंगाकूट, आठसिंधुकूट, आठ ऋषभ कूट व आठ ऋषभकूट देव कहे हैं ॥ ६५ ॥ ऐसेही जम्बू मंदर से पूर्व में सीता महानदी की दक्षिण में जम्बू मंदर की पश्चिम में सीतोदा महानदी से दक्षिण व उत्तर में आठ दीर्घवैताढ्य यावत् आठ ऋषभकूट

अरिहंत च० चक्रवर्ती ब० बलदेव वा० वासुदेव उ० उत्पन्न हुवे उ० उत्पन्न होते हैं उ० उत्पन्नहोंगे ॥६१॥
मी० मीता महानदी की दा० दक्षिण मे उ० उत्कृष्ट ए० ऐसे ॥ ६२ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी प०
पश्चिम में सीतोदा म० महानदी की दा० दक्षिण में उ० उत्कृष्ट ए० ऐसे ॥ ६३ ॥ ए० ऐसे उ० उत्तर
में ॥ ६४ ॥ जं जंबूद्वीप के पु० पूर्व में सी० सीता महानदी की उ० उत्तर में अ० आठ दी० दीर्घ वे०
वैताढ्य अ० आठ ति० तिमिसगुफा अ० आठ खं० खंड प्रपातगुफा अ० आठ क० कृतमाल देवता अ०

टी, अट्ठबलदेवा, अट्ठवासुदेवा, उप्पज्जिसुवा, उप्पज्जंतिवा, उप्पज्जिस्संतिवा ॥ ६१ ॥
जंबूमंदर पुरच्छिमेण सीआए महाणईए दाहिणेणं उक्कोसपए एवंचेव ॥ ६२ ॥ ज
बूमंदर पच्चत्थिमेण सीओआए महाणईए दाहिणेणं उक्कोसपए एवंचेव ॥ ५३ ॥ एवं
उत्तरेणवि ॥ ६४ ॥ जंबूमंदर पुरच्छिमेणं सीआए महाणईए उत्तरेण अट्ठदीहवेयड्ढा
अट्ठ तिमिसगुहाओ, अट्ठ खंडगप्पवायगुहाओ, अट्ठ कयमालगादेवा अट्ठ णट्टमालगा

सीता महानदी से उत्तर में उत्कृष्ट आठ अरिहंत, आठ चक्रवर्ती, आठ बलदेव और आठ वासुदेव, उत्पन्न
हुवे, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होवेंगे ॥ ६१ ॥ ऐसेही आठ अरिहंत, आठ चक्रवर्ती, आठ बलदेव और
आठ वासुदेव जम्बूद्वीप के मेरु की पूर्व में सीता महानदी से दक्षिण में जम्बू मंदर की पश्चिम में सीतोदा
महानदी से दक्षिण तथा उत्तर में उत्पन्न हुवे उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होवेंगे ॥ ६२-६४ ॥ जम्बू

प० ऐसे पु० पुष्करार्ध द्वीपकी प० पश्चिमार्द्धमें म० महापद्मवृक्षसे जा यावत् मं० मेरुकी चूलिका ॥ ७१ ॥ जं० जंबूद्वीपमें म० मेरुपर्वतप भ० भद्रशालवनमें अ० आठ दि० दिशा में ह० हस्तिकूट प० पद्मोत्तर नी० नीलवंत सु० सुहस्ति अं० अंजनगिरि कु० कुमुद प० पलास व वतंस रो० रोहिणगिरि ॥ ७२ ॥ जं० जंबूद्वीपकी ज० जगति अ० आठ यो० योजन उ० ऊंची उ० ऊंचपने ब० बहु म० मध्यभागमें अ० आठ यो० योजन वि० चौडी ॥ ७३ ॥ जं० जंबूद्वीपमें मं० मेरुकी दा दक्षिणमें म० महाहिम

ओ जाव मंदर चूलियत्ति ॥ ७१ ॥ जंबूदीवे दीवे मदरे पव्वए भद्दसालवणे अट्ठ दिसा हत्थिकूडा प० तं० (गाथा) पउमुत्तरे नीलवंते, सुहत्थी अंजनगिरी, कुमु देय, पलासेय, वडिंस रोहणगिरी (१) ॥ ७२ ॥ जंबूदीवस्सण दीवस्स जगई अट्ठ जोयणाई उड्ढं उच्चत्तेणं बहुमज्झदेस भाए अट्ठ जोयणाई विक्खंभेणं प० ॥ ७३ ॥ जंबुदीवेदीवे मंदर पव्वयस्स दाहिणेण महाहिमवंते वासहर पव्वए अट्ठकू

वैसे कहना ॥ ७१ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत के भद्रशालवन की आठों दिशाओं में आठ हस्तिकूट कहे हैं १ पद्मोत्तर, नीलवंत, सुहस्ति, अजनगिरि, कुमुद, पलास, वतंस, और रोहिणगिरि, ॥ ७२ ॥ जम्बूद्वीप की जगती (कोट) आठ योजन की ऊंची कही और उसका मध्यभाग आठ योजन चौडा कहा ॥ ७३ ॥ जम्बू मंदर की दक्षिण में महाहिमवंत वर्षधर पर्वतपर आठकूट कहे हैं १ सिद्ध, २ महाहिमवंत

वेत। वा० वर्षधर प० पर्वत अ० आठकूट सि० सिद्ध म० महाहिमवत हि० हिमवंत रो० रोहित ह० हरिकूट ह० हरिकान्ता ह० हरिवर्ष वे० वेलम्बक ॥ ७४ ॥ जं० जंबुद्वीपके म० मेरुकी उ० उत्तरमें रु० रुपी वा० वर्षधर प० पर्वतपे अ० आठकूट सि० सिद्ध रु० रुप्पी र० रम्यक न० नरकांता बु० बुद्धि रु० रुप्प हे० हिरनवय म० मणिकांचन ॥ ७५ ॥ ज० जंबूके म० मेरु की पु० पूर्व में रु० रुचकवर प० पर्वतपे अ० आठकूट रि० रिष्ठ त० तपनीय कं० कांचन र० रजत दि० दिशास्वस्तिक प० प्रलंब अ० अंजन

डा प० त० (गाथा) सिद्धमहाहिमवंते, हिमवंते रोहियाय हिरिकूडे हरिकंता ह रिवासे वेरुलिए चेव कूडाओ (१) ॥ ७४ ॥ जंबूमंदर उत्तरेणं, रुप्पिम्मित्रासहर पव्वए अट्ठ कूडा प० तं० (गाथा) सिद्धे रुप्पी रम्मग, नरकंता बुद्धि रुप्प कूडेय, हेरण्णवए मणिकंचणेयरुप्पिम्मि कूडाय (१) ॥ ७५ ॥ जम्बूमंदर पुरच्छिमेणं रु यगवरे पव्वए अट्ठकूडा प० तं० (गाथा) रिट्ठ तवणिज्ज कंचण, रययदिसा सो

॥ ७४ ॥ जम्बू मेरु की उत्तर में रुपी वर्षधर पर्वतपर आठकूट कहे हैं १ सिद्ध २ रुक्मि, ३ रम्यक ४ नरकान्ता ५ बुद्धि ६ रुप्यकूट ७ हिरनवय और ८ मणिकांचन ॥ ७५ ॥ जम्बूमेरु की पूर्व में रुचक पर्वत में आठ कूट कहे हैं १ रिष्ट २ तपनीय ३ कांचन ४ रजत ५ दिशास्वस्तिक ६ प्रलंब ७ अंजन और ८ अंजनपुलक उसपे महर्द्धिक म ३ हेमवंत ४ रोहित ५ हरिकूट ६ हरिकान्ता ७ हरिवर्ष और ८ वेरुलिय

ए० ऐसे पु० पुष्करार्ध द्वीपकी प० पश्चिमार्द्धमें म० महापद्मवृक्षसे जा० यावत् म० मेरुका चूलका ॥ ७१ ॥ जं० जंबूद्वीपमें म० मेरुपर्वतप म० भद्रशालवनमें अ० आठ दि० दिशा में ह० हस्तिकूट प० पद्मोत्तर नी० नीलवंत सु० सुहस्ति अं० अंजनगिरि कु० कुमुद प० पलास व० वतंस रो० रोहिणगिरि ॥ ७२ ॥ जं० जंबूद्वीपकी ज० जगति अ० आठ जो० योजन उ० ऊंची उ० ऊंचपने ब० बहुत म० मध्यभागमें अ० आठ जो योजन वि० चौडी ॥ ७३ ॥ जं० जंबूद्वीपमें मं० मेरुकी दा० दक्षिणमें म० महाहिम

ओ जाव मंदर चूलियत्ति ॥ ७१ ॥ जंबूदीवे दीवे मंदरे पव्वए भद्दसालवणे अट्ठ दिसा हत्थिकूडा प० तं० (गाथा) पउमुत्तरे नीलवंते, सुहत्थी अंजनगिरी, कुमुदेय, पलासेय, वर्डिस रोहणगिरी (१) ॥ ७२ ॥ जंबूदीवस्सणं दीवस्स जगई अट्ठ जोयणाइं उड्ढुं उच्चत्तेणं बहुमज्झदेस भाए अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं प० ॥ ७३ ॥ जंबूदीवेदीवे मंदर पव्वयस्स दाहिणेण महाहिमवंते वासहर पव्वए अट्ठकू

जैसे कहना ॥ ७१ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत के भद्रशालवन की आठों दिशाओं में आठ हस्तिकूट कहे हैं १ पद्मोत्तर, नीलवंत, सुहस्ति, अंजनगिरि, कुमुद, पलास, वतंस, और रोहिणगिरि, ॥ ७२ ॥ जम्बूद्वीप की जगती (कोट) आठ योजन की ऊंची कही और उसका मध्यभाग आठ योजन चौडा कहा ॥ ७३ ॥ जम्बू मंदर की दक्षिण में महाहिमवंत वर्षधर पर्वतपर आठकूट कहे हैं १ सिद्ध, २ महाहिमवंत

वंत ना० वर्षधर प० पवतपे अ० आठकूट क्षि० सिद्ध म० महाहिमवत हि० हिमवंत रो० रोहित ह० हरिकूट ह० हरिकान्ता ह० हरिवर्ष वे० वेरुलिक ॥ ७४ ॥ जं० जंबुद्वीपके म मेरुकी उ० उत्तरमें रु० रुपी वा० वर्षधर प० पवतपे अ० आठकूट सि० सिद्ध रु० रुप्पी र० रम्यक न० नरकांता सु० सुवि ह० रुप्प ह० परनवप म० मणिकांचन ॥ ७५ ॥ ज० जंबूके म० मेरु की पु० पूर्व में रु० रुचकवर प० पर्वतपे अ० आठकूट रि० रिष्ठ त० तपनीय कं० कांचन र० रजत दि० दिशास्वस्तिक प० प्रलंब अ० अजन

डा प० तं० (गाथा) सिद्धमहाहिमवन्ते, हिमवंते रोहियाय हिरिकूडे हरिकंता ह रिवासे, वेरुलिए चेव कूडाओ (१) ॥ ७४ ॥ जंबूमंदर उत्तरेणं, रुप्पिम्मिवासहर पव्वए अट्ठ कूडा प० तं० (गाथा) सिद्धे रुप्पी रम्मग, नरकंता सुद्धि रुप्प कूडेय, हेरण्णवए मणिकचणेयरुप्पिम्मि कूडाय (१) ॥ ७५ ॥ जम्बूमंदर पुरच्छिमेण रु यगवरे पव्वए अट्ठकूडा प० तं० (गाथा) रिट्ठ तवणिज्ज कंचण, रययदिसा सो

१ हेमवंत ४ रोहित ५ हरिकूट ६ हरिकान्ता ७ हरिवर्ष और ८ वेरुलिय ॥ ७४ ॥ जम्बू मेरु की उत्तर में रुपी वर्षधर पर्वतपर आठकूट कहे हैं १ सिद्ध २ रुपी ३ रम्यक ४ नरकान्ता ५ सुवि ६ रुप्पकूट ७ परनवय और ८ मणिकांचन ॥ ७५ ॥ जम्बूमेरु की पूर्व में रुचक पर्वत में आठ कूट कहे हैं १ रिष्ट २ तपनीय ३ कांचन ४ रजत ५ दिशास्वस्तिक ६ प्रलंब ७ अंजन और ८ अंजनपुलक उनमें महर्धिक म

अं० अंजनपुलक ब० वहां अ० आठ दि० दिशाकुमारी म० महा म० महर्द्धिक जा० यावत् प० पल्योपमकी ठि० स्थितिवाली प० रहतीहै नं० नंदोत्तरा नं० नंदा आ० आनंदा न० नंदिवर्द्धना वि० विजया वे० वैजयन्ती ज० जयन्ती अ० अपराजीता ॥ ७८ ॥ ज० जम्बूद्वीपकेमे० मेरुकी दा० दक्षिणमें रु० रुचकवर पर्वतपे अ० आठ कू० कूट क० कनक कं० कंचन प० पद्म न० नलीन स० शशी दि० दिवाकर वे० वैश्रमण वे० वेरुलिय त० वहां अ० आठ दि० दिशाकुमारि म० बडी म० महर्द्धिक जा० यावत् प०

पच्छिए पलंबेय, अंजणे अंजण पुलए, रुयगस्स पुरच्छिमेकूडा (१) तत्थणं अट्ठ दिसा कुमारि महत्तरियाओ महिड्डियाओ जाव पलिओवमट्ठिईयाओ परिवसति तं० (गाथा) णंदुत्तराय णंदाय, आणंदा णंदिवद्धणा विजया वेजयंतीय, जयंती अपरा जिया, (१) ॥ ७९ ॥ जंबूमंदर दाहिणेणं रुयगवरे पव्वए अट्ठ कूडा प० तं० (गाथा) कणए कंचणपउमे, नालिणे ससि दिवाकरे चेव वेसमणे वेरुलिए, रुयगस्सय दाहिणे कूडा॥१॥तत्थणं अट्ठ दिसाकुमारि महत्तरियाओ महिड्डियाओजाव पलिओ

पल्योपम की स्थिति वाली आठ दिशा कुमारी रहती हैं जिके नाम १ नंदोत्तरा २ नंदा ३ आनंदा ४ नंदीवर्द्धना ५ विजया ६ वैजयंती ७ जयंती और ८ अपराजिता॥ ७९ ॥ जम्बूके मेरुकी दक्षिणमें रुचकवर पर्वत पर आठ कूट कहे १ कनक, २ कांचन ३, पद्म ४ नलिन ५ शशी ६ दिवाकर ७ वैश्रमण और ८ वेरुलिय

पल्योपम की स्थि० स्थितिवाली प० रहती हैं स० समाहारा सु० सुमतिका सु० सुप्रबुद्धा स० यशोधरा ल० लक्ष्मीवती से० शेषवती चि० चित्रगुप्ता व० वसुंधरा ॥ ७७ ॥ जं० जंबूद्वीप के मे० मेरुकी प० पश्चिम में रु० रुचक पर्वत में अ० आठ कूट सो० स्वस्तिक अ० अमोघ हि० हिमवंत मं० मंदर रु० रुचक रु० रुचकोत्तम चं० चंद्र न सु र्दान त त्थ अ० आठ दि० दिशाकुमारी म० बडी म० महर्द्धिक जा० यावत् प० पल्योपमकी ठि० स्थितिवाली प० रहती हैं इ० इलादेवी सु० सुरादेवी पु पृथ्वी प० पद्मावती ए०

वमट्ठिइ याओ परिवसंति तं० (गाथा) समाहारा सुप्पइण्णा, सुप्पबुद्धा जसोहरा, लच्छिवइ सेसवइ चित्तगुत्ता वसुंधरा (१) ॥ ७७ ॥ जंबूमंदर पच्चच्छिमेण, रुयगवरे पव्वए अट्ठकूडा प०तं० सोच्छिएय अमोहेय, हिमवंतमंदरेतहा, रुयगे रुयगुत्तम चंदे, अट्ठमए सुदंसणे (१) तत्थणं अट्ठ दिसाकुमारि महत्तरियाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसंति तं० (गाथा) इलादेवी सुरादेवी, पुढवी

महद्धिक आठ दिशा कुमारियों महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाली रहती हैं १ समाहारा २ सुमतिका ३ सुप्रबुद्धा ४ यशोधरा ५ लक्ष्मीवती ६ शेषवती ७ चित्रगुप्ता और ८ वसुंधरा ॥ ७७ ॥ जम्बूद्वीपके मेरुकी पश्चिमके रुचकवर द्वीप पर आठ कूट कहे हैं १ स्वस्तिक २ अमोघ ३ हिमवंत ४ मंदर ५ रुचक ६ रुचकोत्तम ७ चंद्र ८ सुदर्शन. यहां महर्द्धिक यावत् पल्योपमकी स्थिति वाली आठ दिशा कुमारी रहती हैं १ इलादेवी

एक नाशा न० नवमिका सी० सीता भ० भद्रा ॥ ७८ ॥ जं० जंबूद्वीप के मे० मेरुकी उ० उत्तर में रु रुचक पर्वतपे अ० आठ कूट र० रत्न र० रत्नोच्चय स सर्व रत्न र रत्न संचय वि० विजय वे वैज यन्त ज० जयन्त अ अपराजित त० तहां अ आठ दिशाकुमारी म० बडी म० महर्द्धिक जा० यावत् प० पल्योपम की ठि० स्थितिवाली प० रहती हैं अ० अलंबुसा मि० मिस केशी पु० पुंडरीकिणी वा० वारुणी आ० आसा स० सर्वगा सि श्री हि० ह्री ॥ ७९ ॥ अ० आठ अ० अधोलोक में व० रहनेवाली दि०

पउमावई, एगनासा णवमिया, सीया भद्दाय अट्ठमा (१) ॥ ७८ ॥ जम्बूमंदर उत्तर रुयगवरे पव्वए अट्ठकूडा प० तं० (गाथा) रयणे रयणुच्चए सव्वरयणे रयणसंचएचेव, विजए वेजयंतेय, जयंत अपराजिए (१) तत्थणं अट्ठदिसाकुमारि महत्तरियाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठिईयाओ परिवसंति तं० (गाथा) अलंबुसामिस्सकेसी, पुंडरीगीयवारुणी, आसायसव्वगाचेव, सिरीहिरीचेव उत्तराओ (१)

२ सुप्रबुद्धी ३ पृथ्वी ४ पद्मावती ५ एकनाशा ६ नवमिका ७ सीता और ८ भद्रा ॥ ७८ ॥ जम्बूमंदर से उत्तर का रुचकवर पर्वतपर आठकूट कहे हैं १ रत्न २ रत्नोच्चय, ३ सर्व रत्न ४ रत्नसंचय ५ विजय ६ वैजयन्त ७ जयंत और ८ अपराजित यहांपर महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाली आठदिशा कुमारियों रहती हैं १ अलंबुसा २ मिश्रकेशी ३ पुंडरीकिणी ४ वारुणी ५ आसा ६ सर्वगा ७ श्री और ८ ह्री

दिशाकुमारी म० बडी म० महर्द्धिक भो० भोगकरा भो० भोगवती सु० सुभोगा भो० भोगमालिनी सु० सुवच्छा व० वत्समित्रा वा० वारिषेणा व० बलाहका ॥ ८० ॥ अ आठ उ ऊर्ध्व व० रहनवाली मे० मेघंकरा मे० मेघवती सु० सुमेघा मे० मेघमालिनी तो० तोयधारा वि० विचित्रा पु० पुष्पमाला अ० आनि दिता ॥ ८१ ॥ अ० आठ क० देवलोक में ति० तिर्यंच मि० मिश्र उ० उत्पन्न होनेवाले सो० सौधर्म जा०

॥ ७९ ॥ अट्ठ अहोलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ प० तं० (गाथा) भोगकरा भोगवती, सुभोगा भोगमालिणी, सुवच्छावच्छमित्ताय, वारिसेणाबलाहगा (१) ॥ ८० ॥ अट्ठ उड्ढलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ तं० (गाथा) मेहंकरा मेहवई, सुमेघा मेघमालिनी तोयधाराविचित्ताय, पुप्फमाला अणि दिया (१) ॥ ८१ ॥ अट्ठकप्पा तिरियमिस्सोववन्नगा प० त० सोहम्मे, जाव

॥ ७९ अधोलोक में रहने वाली आठ बडी दिशाकुमारी कहीं १ भोगकरा २ भोगवती ३ सुभोगा ४ भोग मालिनी ५ सुवच्छा ६ वत्समित्रा ७ वारिषेणा और ८ बलाहका ॥ ८० ॥ ऊर्ध्वलोक में रहन वाली आठबडी दिशाकुमारियों कहीं १ मेघंकरा २ मेघवती ३ सुमेघा ४ मेघमालिनी ५ तोयधारा ६ वि चित्रा ७ पुष्पमाला और ८ अनिंदिता ॥ ८१ ॥ [illegible] होती हैं सौधर्म,

... आठकल्पम अ० आठइन्द्र स० शक्र जा० यावत् स० सह
र ॥ ८२ ॥ ए० इन अ० आठ इं० इन्द्रके अ० आठ प० परियान वि० विमान पा० पालक पु
ष्पक सो० सोमनस सि० श्रीवत्स नं० नंदियावर्त का० कामकम पी० प्रीतिमन वि० विमल ॥ ८४ ॥
॥ आठ अ० आठमिया भि० भिक्षुप्रतिमा च० चौसठ रा० अहोरात्रि दो० दो अ० अठयासी भि०
पम अ० यथासूत्र जा० यावत् अ० पालनकिया भ० होवे ॥ ८५ ॥ अ० आठ प्रकारका सं० संसारी

सहस्सारे ॥ ८२ ॥ एएसुणं अट्ठसुकप्पेसु अट्ठ इंदा प० तं० सक्के जाव सहस्सारे ॥८३ ॥एएसिं अट्ठण्हं इंदाणं अट्ठ परियाणिया विमाणा प० तं० पालए पुप्फए, सोमणसे, सिरिवच्छे, णंदियावत्ते, कामकमे, पीइमणे, विमले ॥ ८४ ॥ अट्ठट्ठमियाणं भिक्खुपडिमाण चउसट्ठीएहिं राइंदिएहिं दोहियअट्ठासीएहिंभिक्खासएहिं अहासुत्ता, जाव अणुपालियावि भवइ ॥ ८५ ॥ अट्ठविहा संसार समावन्नगा जीवा प० तं० प-

शान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, लंतक, महाशुक्र और सहस्रार ॥ ८२ ॥ इन आठों देवलोक में आठ इन्द्र
कहे हैं शक्रेन्द्र यावत् सहस्रारेन्द्र ॥ ८३ ॥ इन आठों इन्द्रोंके आठ परियान विमान कहे हैं १ पालक
२ पुष्पक ३ सोमनस ४ श्रीवत्स ५ नंदियावर्त ६ कामकम ७ प्रीतिमन और ८ विमल ॥ ८४ ॥ आठ

जी० और द० प्रथमसमयके न० नारकी जा० यावत् अ० अप्रथमसमयके दे० देव ॥ ८६ ॥ अ० आठ प्रकार का स० सर्व जीव ने० नारकी ति० तिर्यंच ति० तिर्यंचणी म० मनुष्य म० मनुष्यणी दे० देव दे० देवी सि सिद्ध अ० अथवा आ० मतिज्ञानी जा० यावत् के० केवलज्ञानी म० मतिअज्ञानी सु० श्रुत

ढमसमय नेरइया एवं जाव अपढमसमयदेवा ॥ ८६ ॥ अट्ठविहा सव्वजीवा प० तं० नेरइया तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणीओ, मणुस्सा, मणुस्सीओय, देवा, देवीओय सिद्धा। अहवा अट्ठविहा सव्वजीवा प० तं० आभिणिबोहियनाणी, जाव

आठमिमा भिक्षु प्रतिमा कही इसमें चौसठ अहोरात्रि व्यतीत होती है और दोसोअठयासी भीक्षा होवी है वसे जैसे शास्त्र में कही है वैसे काया से स्पर्शकरे यावत् पाले ॥ ८८ ॥ संसारी जीव के आठ भेद प्रथम समय के नारकी यावत् अप्रथम समय के देव ॥८९॥ सब जीवके आठ भेद १ नारकी २ तिर्यंच, ३ तिर्यंचणी ४ मनुष्य ५ मनुष्यणी ६ देव ७ देवी और ८ सिद्ध और भी सब जीव के आठ भेद मतिज्ञानी यावत्

---

१ पहिले आठदिन तक एक दाति आहार की और एक दाति पानी की, दूसरे आठदिन में दो दाति आहार की और दो दाति पानी की यावत् आठवे आठदिन में आठदाति आहार की और आठदाति पानी की लेना इससे आठदिन की १६ दाति आहारकी और १६ दातिपानी की होती है सब मीलकर २८८ दाति आहार की और २८८ दातिपानी की होवी है इसमें ६४ अहोरात्रि लगती है.

तराग संयम ॥ ८८ ॥ अ० आठ पु० पृथ्वी र० रत्नप्रभा जा० यावत् अ० अधो स० सातवी ई० ईसीप
भारा ॥८९॥ ई० ईसीपभारा पृथ्वी ब० बहुत मध्यमाग अ० आठ योजनका खि० क्षेत्र अ० आठ योजन बा० बाह
पने॥९०॥ई० ईसीपभारा पु० पृथ्वी के अ० आठ णा० नाम ई० ईसी ई० ईसीपभारा त० तनु त० तनुतनु सि० सिद्धि
सि० सिद्धालय मु० मुक्ति मु० मुक्तालय ॥९१॥ अ० आठ ठा० स्थान से स० सम्यक प्रकारसे सं० यत्ना
ज० प्रयत्न करना प० पराक्रम फोरना अ० नहीं सुना ध० धर्म को स० सम्यक सु० सुनने को अ० उठना सु०

॥ ८८ ॥ अट्ठ पुढवीओ प० त० रयणप्पमा जाव अहे सत्तमा ईसिप्पब्भारा
॥ ८९ ॥ इसिप्पब्भाराएण पुढवीए बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणेक्खित्ते अट्ठ जो
यणाई बाहल्लेण प० ॥९०॥ ईसिप्पब्भाराएण पुढवीए अट्ठ नामधेज्जा प० त० इसीइवा
इसिप्पब्भाराइवा, तणुइवा, तणुतणुइवा, सिद्धीइवा, सिद्धालएइवा मुत्तीइवा, मुत्तालएइवा,
॥ ९१ ॥ अट्ठहिं ठाणेहिं सम्म संघडियव्वं, जइयव्वं, परक्कमियव्वं, आस्सिंचणं अट्ठे

क्षीण कषाय वीतराग संयम ॥ ८८ ॥ आठ प्रकार की पृथ्वी कही रत्नप्रभा यावत् तमतमा पृथ्वी और
इषत्प्राग्भार पृथ्वी ॥ ८९ ॥ ईषत्प्राग्भार पृथ्वी का बीचका आठ योजन का क्षेत्र आठ योजन जाड
पन में है ॥ ९० ॥ ईषत्प्राग्भार पृथ्वी के आठ नाम कहे हैं १ ईषत् २ ईषत्प्राग् भार ३ तनु ४ तनुतनु ५
सिद्धि ६ सिद्धालय ७ मुक्ति और ८ मुक्तालय ॥ ९१ ॥ आठ कार्योंमें पराक्रम करना उद्यम करना, व

सुना हुवा ध० धर्म को ओ० ग्रहणकरने को ओ० धारने को अ० उठना त० तप क० कर्म सं० संयम मे अ० नहीं करने को अ० उठना पो० पूर्वके क० कर्म का त० तप से वि० दूरकरने को वि० विशुद्ध करने को अ० उठना अ० अनाश्रित प० परिजन को सं० ग्रहणकरने को अ० उठना से० शिष्य आ० आचार गो० गोचर ग० ग्रहणकरने को अ० उठना गि० ग्लानीकी अ० अग्लान पने वे० वैयावृत्य क० करने को अ० उठना सा० साधर्मी अ० अधिकरण उ० उत्पन्न अ० अनिश्रित उ० उपश्रित म०

नेतमा एव भवइ, असुयाणं धम्माण सम्मंसुणणयाए अब्भुट्ठेयव्वं, सुयाणं धम्माणं ओगिण्हयाए ओवहारणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, नवाणं कम्माणं संजमेणं अकरणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, पोराणाणं कम्माणं तवसा विगिंचणयाए विसोहणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, असंगिहीय परिजणस्स संगिण्हयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, सेहं आयारगोयरं गहणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, गिलाणस्स आगिलाए वेयावच्चं करणयाए अब्भुट्ठेयव्व भवइ, साहम्मियाणं अहिगरणंसि उप्पन्नंसि तत्थ आणिस्सिआवस्सिए अपक्खग्गाही मज्झत्थ भावभूए

किंचिन्मात्र प्रमाद नहीं करना कहा है १ नहीं सुना हुवा धर्म सुनने को उद्यम करना २ सुना हुवा धर्म को ग्रहण करने केलिये उद्यमवंत बनना ३ संयम से नये कर्म को रोकने केलिये उद्यमवन्त बनना ४ तपश्चर्या से पुराने कर्मों क्षय करने केलिये उद्यमी होना ५ शिष्यादि अनाश्रित परिवार को ग्रहण करने को उद्यमी

पणरोहित म० मध्यस्थ होकर क० कोई सा० साधर्मी अ० अवाअराहित भ० संग्रहारहित अ० कोपरहित उ० शमाने को भ उठना ॥ १२ ॥ म० महाशुक्र स० सहस्रार क० देवलोक में वि० विमान अ० आठ जो० योजन स० सब उ० ऊंच उ० ऊंचपने ॥ १३ ॥ अ० अरिहंत अ० अरिष्टनेमि को अ० आठसो वा० वादी स० देव सहित म० मनुष्य अ० असुर प० परिषदा में अ० अपराजित उ० उत्कृष्ट वा० वादीसंपदा हो थी ॥ १४ ॥ अ० आठ सा० समय की के० केवली समुद्घात प० प्रथम समय में दं० दंड करे बी०

कहण्णु साहम्मिया अप्पसद्दा, अप्पझंझा, अप्पतुमंतुमा, उवसामणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ ॥ १२ ॥ महासुक्क सहस्सारेसुणं कप्पेसु विमाणा अट्ठ जोयणसयाइं, उड्ढंउच्च-त्तेण प० ॥ १३ ॥ अरहओणं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठसया वाईणं सदेवमणुयासुराए परि-साए वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपयाहोत्था, ॥ १४ ॥ अट्ठसामइए केवलि

वनना ६ नवदीक्षित को आचार गोचर ग्रहण कराने को उद्यमवंत होना ७ ग्लानी की अग्लानपने वैयावृत्य करने का उद्यमी होना ८ स्वधर्मी में रागद्वेष उत्पन्न होवे तो वहां शिष्यादिक की अपेक्षा रहित मध्यस्थ भावपना से उन को क्लेश रहित बनाने को उद्यमी होना ॥ १२ ॥ महाशुक्र और सहस्रार आठ सो योजन के ऊंचे कहे हैं ॥ १३ ॥ मनुष्य देव व असुरों की परिषदा में भी अपराजित आठ सो वादी की संपदा श्री अरिष्ट नेमिनाथ को थी ॥ १४ ॥ आठ समय की केवली समुद्घात कही १ प्रथम समय में

सुना हुवा ध० धर्म का ओ० ग्रहणकरने को ओ० धारने को अ० उठना त० तप क० कर्म सं० संयम से अ० नहीं करने को अ० उठना पो० पूर्वके क० कर्म का त० तप से वि० दूरकरने को वि० विशुद्ध करने को अ० उठना अ० अनाश्रित प० परिजन को सं० ग्रहणकरने को अ० उठना से० शिष्य आ० आचार गो० गोचर ग० ग्रहणकरने को अ० उठना गि० ग्लानीकी अ० अग्लान पने वे० वैयावृत्य क० करने को अ० उठना सा० साधर्मी अ० अधिकरण उ० उत्पन्न अ० अनिश्रित उ० उपाश्रित अ०

नोत्तमा भ्वं भवइ,असुयाणं धम्माणं सम्मसुणणयाए अब्भुट्ठेयव्वं,सुयाण धम्माणं ओगिण्हयाए ओवहारणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, तवाणं कम्माणं संजमेणं अकरणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, पोराणाणं कम्माणं तवसा विगिंचणयाए विसोहणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, असंगिहीय परिजणस्स संगिण्हयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, सेहं आयारगोयरं गहणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, गिलाणस्स अगिलाए वेयावच्चं करणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, साहम्मियाणं अहिगरणंमि उप्पन्नंसि तत्थ अणिस्सिआवस्सिए अपक्खग्गाही मज्झत्थ भावभूए

किंचिन्मात्र प्रमाद नहीं करना कहा है १ नहीं सुना हुवा धर्म सुनने को उद्यम करना २ सुना हुवा धर्म को ग्रहण करने स्थिर उपयोग बनना ३ संयम से नये कर्म को रोकने केलिये उद्यमवन्त बनना ४ तपश्चर्या राने कर्मों क्षय करने केलिये उद्यमी होना ५ शिष्यादि अनाश्रित परिवार को ग्रहण करने को उद्यमी

वाणव्यंतर देव पि० पिशाच भू० भूत ज० यक्ष र० राक्षस-कि० किन्नर किं० किंपुरुष म० महोरग गं० गांधर्व ॥ १७ ॥ ए० इन अ० आठ वा० वाणव्यंतर के अ० आठ चे० चैत्यवृक्ष क० कदंबवृक्ष च० धजवृक्ष तु० तुलसी कं० कंडक अ० अशोक च० चंपक ना० नागवृक्ष तिं० तिंदुक ॥ १८ ॥ इ०

प० तं० पिसाया, भूया, जक्खा, रक्खसा, किण्णरा, किंपुरिसा, महोरगा, गंधव्वा, ॥ १७ ॥ एएसिणं अट्ठण्हं वाणमंतराणं देवाणं अट्ठ चेइयरुक्खा प० तं० (गाथा) कलंबोउ पिसायाणं, वडो जक्खाण चेइयं, तुलसी भूयाणभवे, रक्खसाणंच कंडओ ॥ असोगो किण्णराणंच, किंपुरिसाणंच चंपओ, नागरुक्खो महोरगाण, गंधव्वाणंतु तिंदुओ (२) ॥ १८ ॥ इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभा,

कारी मति में आनेवाले यावत् युध में मदिक ऐसे आठसो पुरुषों की संपदा थी ॥ १६ ॥ आठ वाण व्यंतर देव कहे हैं १ पिशाच २ भूत ३ यक्ष ४ राक्षस ५ किन्नर ६ किंपुरुष ७ महोरग और ८ गांधर्व ॥ १७ ॥ इन आठों व्यंतर देवताओं को आठ चैत्यवृक्ष कहे हैं १ पिशाच को कदंब वृक्ष २ यक्ष को वट वृक्ष ३ भूत को तुलसी ४ कंडक वृक्ष राक्षस को ५ किन्नर को अशोक ६ किंपुरुष को चंपकवृक्ष ७ महोरग को नागवृक्ष और ८ तिंदुक वृक्ष गांधर्व को ॥ १८ ॥ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत सम रमणिक भूमि

इम र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वीकी ब० बहुत र० रमणिक भू० भूमिभागसे अ० आठ सो० योजनशत उ० ऊंचे अ० अंतर रहित सू० सूर्यविमान चा० चलता है ॥ ९९ ॥ अ० आठ न० नक्षत्र के चं० चंद्रमासाथ प० प्रमर्द जो० योग जो० योजता है क० कृत्तिका रो० रोहिणी पु० पुनर्वसु म० मघा चि० चित्रा वि० विशाखा अ० अनुराधा जि० ज्येष्ठा ॥ १०० ॥ जं० जंबूद्वीप के दा० द्वार अ० आठ योजन उ० ऊंचे उं० ऊंचपने ॥ १०१ ॥ स० सर्व दी० द्वीप स० समुद्र के दा० द्वार अ० आठ जो० योजन उ० ऊंचे ऊंचपने

गाओ अट्ठ जोयणसए उड्ढं अबाहाए सूरविमाणं चारं चरइ ॥ ९९ ॥ अट्ठ नक्खत्ता णं चंदेणसद्धिं पमद्द जोगं जोएइ तं० कत्तिया, रोहिणी, पुणव्वसू, महा, चित्ता, विसाहा, अणुराहा, जिट्ठा, ॥ १०० ॥ जंबूद्दीवस्सणं दीवस्स दारा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ १०१ ॥ सव्वेसिंपिणं दीवसमुद्दाणं दारा अट्ठजोयणाइ उड्ढं उच्चत्तेणं पं० ॥ १०२ ॥ पुरिस वेयणिज्जस्सणं कम्मस्स जहण्णेण अट्ठ संवच्छराइं

भाग से अबाधापने आठसो योजन ऊंचे सूर्य चलता है॥९९॥आठनक्षत्र चंद्रमा की साथ स्पर्शकर योग जोडते हैं १ कृत्तिका २ रोहिणी ३ पुनर्वसु ४ मघा ५ चित्रा ६ विशाखा ७ अनुराधा और ८ ज्येष्ठा ॥ १०० ॥ जम्बूद्वीप के द्वार आठ योजन के ऊंचे कहे हैं ॥ १०१ ॥ सब द्वीपों के द्वार आठ योजन के ऊंचे कहे

॥ १०२ ॥ पुं० पुरुष वे० वेदनीय कर्मकी ज० जघन्य अ० आठवर्ष की बं० बंध स्थिति ॥ १०३ ॥ ज० यशकीर्ति ना० नामकर्म की ज० जघन्य अ० आठ मुहूर्त की ॥१०४॥ उ० ऊंचगोत्र की ए० ऐसे ॥१०५॥ ते० तेइन्द्रिय की अ० आठ जा० जाति कुलकोटी जो० योनिप्रमुख स० शतसहस्र ॥ १०६ ॥ जी० जीव को अ० आठ स्थान नि० निर्वर्तित पु० पुद्गल पा० पाप कर्म पने चि० इकठेकिये चि० इकठे करते हैं चि० इकठेकरेंगे प० प्रथमसमय ने० नारकी नि० निर्वर्तित जा० यावत् अ० अप्रथम समयदेव नि० निर्वर्ति

बंधठिई प० ॥ १०३ ॥ जसोकित्तिनामएण कम्मस्स जहन्नेण अट्ठमुहुत्ताई बंधठिई प० ॥ १०४ ॥ उच्चागोयस्सणं कम्मस्स एवं चेव ॥ १०५ ॥ तेइंदियाणं अट्ठजाइकुलकोडि जोणि पमुहसयसहस्सा प० ॥ १०६ ॥ जीवाणमट्ठट्ठाण निव्वत्तिए पोग्गले पाव कम्मत्ताए चिणिंसुवा, चिणंतिवा, चिणिस्संतिवा, पढमसमय नेरइय निव्वत्तिए जाव अपढम समय देवानिव्वत्तिए । एवं चिण उवचिण जाव

है ॥ १०२ ॥ पुरुष वेदनीय कर्म की जघन्य आठ वर्ष की बंध स्थिति कही ॥ १०३ ॥ यशकीर्ति नाम कर्मकी जघन्य आठ मुहूर्त की बंध स्थिति कही ॥ १०४ ॥ उच्चगोत्र कर्म की भी वैसे ही जानना ॥१०५॥ तेइन्द्रिय की कुलकोडी आठ लक्ष की कही ॥ १०६ ॥ जीवने आठ समय निर्वर्तित पुद्गल पाप कर्मपने संचित किये, करते हैं और करेंगे, प्रथम समय नारकी निर्वर्तित यावत् अप्रथम समय देव

त प० वेसे त्रिप थ० उपशिप जा० पावत् नि० निर्जरा ॥ १०७ ॥ भ० आठ प्रदेशी सं० स्कन्ध भ० अनंत ॥ १०८ ॥ भ० आठ प्रदेश अवगाहा पो० पुद्गल भ० अनंत ॥ १०९ ॥ जा० यावत् अ० आठ गुण छु० रुक्ष पो० पुद्गल भ० अनंत प० प्ररूपे ॥ ११० ॥ × ✿

णिज्जराचेव ॥ १०७ ॥ अट्ठपएसियाखंधा अणंता प० ॥ १०८ ॥ अट्ठप्पएसोगाढा-पोग्गला अणंता प० ॥ १०९ ॥ जाव अट्ठगुण लुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥ ११० ॥ इति अट्ठमं ठाणं सम्मत्तं * * * *

निर्जीव प्रदेशी चिण, उपचिण यावत् निर्जरा तक जानना ॥ १०७ ॥ आठ प्रदेशी स्कंध अनंत कहे हैं ॥ १०८ ॥ आठ प्रदेश अवगाहा पुद्गल अनंत कहे हैं ॥ १०९ ॥ यावत् आठगुण रुक्ष पुद्गल अनंत कहे हैं ॥ ११० ॥ यह आठवा स्थानक समाप्त हुवा ✿ ✿ ✿ ✿

॥ नवम स्थानकम् ॥

नवहिं ट्ठाणेहिं समणे निग्गंथ संभोइय विसंभोइयं करमाणे नाइक्कमइ तं० आयरिय पडि णीय, उवज्झाय पडिणीयं, थेरपडिणीय, कुल गण-संघ-नाण-दंसण-चरित्त-पडिणीयं, ॥ १ ॥ नव बंभचेरा प० तं० सत्थपरिन्ना, लोगविजओ य, जाव उवहाणसुय महा परिन्ना । नवबंभचेरगुत्तीओ प० तं० विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवइ, नो

भ० नव ठा० कारन से स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ स० संभोगिक को वि० विसंभोगिक क० करते ना० उल्लंघन करे नहीं आ० आचार्य के प्रत्यनीक को उ० उपाध्याय के प्रत्यनीक को थे० स्थविर के कु० कुल के ग० गणके स० संघ के ना० ज्ञान के द० दर्शन के च० चारित्र के प्रत्यनीक को ॥ १ ॥ न० नव ब० ब्रह्मचर्य के अध्ययन स० शस्त्र परिज्ञा लो० लोकविजय जा० यावत् उ० उपधान श्रुत म० महा

नव कारण से साधु निर्ग्रंथ अपने संभोगिक साधु को विसंभोगिक करते आज्ञा अतिक्रमे नहीं १ आचार्य का प्रत्यनीक को २ उपाध्यायका प्रत्यनीक को ३ स्थविरका प्रत्यनीक को ४ कुल ५ गण ६ संघ ७ ज्ञान ८ दर्शन और ९ चारित्रका प्रत्यनीक को ॥ १ ॥ आचारांग सूत्रका ब्रह्मचर्य नामक श्रुतस्कंधके नव अध्ययन कहे हैं १ शस्त्र परिज्ञा २ लोकविजय यावत् उपधानश्रुत और ९ महा परिज्ञा

स प० ऐसे चिण छ० उपचिण जा० यावत् नि० निर्जरा ॥ १०७ ॥ अ० आठ प्रदेशी खं० स्कन्ध अ० अनंत ॥ १०८ ॥ अ० आठ प्रदेश अवगाहा पो० पुद्गल अ० अनंत ॥ १०९ ॥ जा० यावत् अ० आठ गुण लु० रुक्ष पो० पुद्गल अ० अनंत प० प्ररूपे ॥ ११० ॥ × *

णिज्जरा चेव ॥ १०७ ॥ अट्ठपएसिया खंधा अणंता प० ॥ १०८ ॥ अट्ठप्पएसोगाढा पोग्गला अणंता प० ॥ १०९ ॥ जाव अट्ठगुण लुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥ ११० ॥ इति अट्ठमं ठाणं सम्मत्तं * * * *

निर्जरित एसेही चिण, उपचिण यावत् निर्जरा तक जानना ॥ १०७ ॥ आठ प्रदेशी स्कंध अनंत कहे हैं ॥ १०८ ॥ आठ प्रदेश अवगाहा पुद्गल अनंत कहे हैं ॥ १०९ ॥ यावत् आठगुण रुक्ष पुद्गल अनंत कहे हैं ॥ ११० ॥ यह आठवा स्थानक समाप्त हुआ * * * *

सा० साता सु० सुख प० प्रतिबद्ध भ० होवे ॥ २ ॥ न० नव बं० ब्रह्मचर्य की अ० अगुप्ति नो० नहीं वि० विविक्त स० शयन आ० आसन से० सेवनेवाला इ० स्त्री साथ प० पशुसाथ प० नपुंसक साथ इ० स्त्रीकथा क० करनेवाला इ० स्त्री के ठा० स्थान से० सेवनेवाला इ० स्त्री की इं० इन्द्रिय म० मनोहर जा० यावत् नि० निरखनेवाला प० स्निग्ध रसभोगी पा० पानी भो० भोजन अ० अतिशय आ० आहार करनेवाला पु पूर्वरत पु० पूर्वक्रीडा स्मरण करनेवाला स० शब्दानुपाति सि० यश करनेवाला जा० यावत् सा० साता सु० सुख प० प्रतिबद्ध

सायासुक्ख पडिबद्धे यावि भवइ ॥ २ ॥ नवबंभचेर अगुत्तीओ प० तं० नो विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवइ, इत्थिसंसत्ताइं पसुसंसत्ताइं पंडगसंसत्ताइं, इत्थीणं कहकहेत्ता भवइ, इत्थिठाणाइं सेवित्ता भवइ, इत्थिणं इंदियाइं मणोरमाइं जाव निज्झाइत्ता भवइ, पणीयरसभोई, पाण भोयणस्स अइमाय माहारए सयाभवइ, पुव्वरय पुव्व कीलियं सरित्ता भवइ, सद्दाणुवाई सिलोगाणुवाइ जावसाया सुक्खपडिबद्धेयावि भवइ॥ २॥

रुशाति को भी अनुसरे नहीं ९ सुख में तत्पर बने नहीं ॥ २ ॥ नव प्रकार से ब्रह्मचर्य की अगुप्ति कही १ स्त्री, पशु, नपुंसक वाली वसति में रहे २ सरागपना से स्त्री की कथा करे ३ स्त्री जहां बैठी होवे वहां बैठे ४ स्त्री की इन्द्रियों सराग दृष्टि से देखे ५ स्निग्ध रसादिक का आहार करे ६ भोजन पानी का अतिशय आहार करे ७ पूर्व के कामभोग व पूर्व के विषय सुख को याद करे ८ स्त्री के शब्दों को अनुसरे

प॰ पंचेन्द्रिय पु॰ पृथ्वीकायाकी न॰ नवगति न॰ नव आगति पु॰ पृथ्वीकाय पु॰ पृथ्वी काया में उ॰ उप मता पु॰ पृथ्वी काया में से जा॰ यावत् पंचेन्द्रिय में से उ॰ उत्पन्न होवे पु॰ पृथ्वीकाय पु॰ पृथ्वीकाया को वि॰ समता पु॰ पृथ्वीकायापन आ॰ यावत् पं॰ पंचेन्द्रियपने ए॰ ऐसे आ॰ अप्काय जा॰ यावत् प॰ पंचेन्द्रिय ॥ ६ ॥ न॰ नव प्रकार के स॰ सर्व जीव ए॰ एकेन्द्रिय बे॰ बेइन्द्रिय ते॰ तेइन्द्रिय च॰ चौरेन्द्रिय ने॰ नारकी पं॰ पंचेन्द्रिय तिर्यंच म॰ मनुष्य दे॰ देव सि॰ सिद्ध ॥ ७ ॥ अ॰ अथवा प॰ प्रथम

नव आगइया प॰ तं॰ पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो जाव पंचिं-
दिएहिंतोवा उववज्जेज्जा, सेचेवणं से पुढविकाइए पुढविकाइयत्त विप्पजहयमाणे पुढ-
वि काइयत्ताए जाव पंचिंदियत्ताएवा, एवं आउकाइयावि जाव पंचिंदियत्ति ॥ ६ ॥
नवविहा सव्व जीवा प॰ तं॰ एगिंदिया, बेंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया नेरइया, पंचिंदि
यतिरिक्खजोणिया, मणुया, देवा, सिद्धा ॥ ७ ॥ अहवा नवविहा सव्व जीवा प॰ तं॰

पृथ्वीकायकी नवकी गति और नवकी आगति कही पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वीकाया में यावत् पंचेन्द्रियमें उत्पन्न होता है और उनहींमेंसे आता है ऐसेही अप्काय, तेउ, वाउ, वनस्पति, यावत् पंचेन्द्रिय तक मानना ॥ ६ ॥ सब जीवोंके नव भेद कहे हैं एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय, नारकी, तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य, देव व सिद्ध ॥ ७ ॥ और भी सब जीवोंके नव भेद प्रथम समयके नारकी, अप्रथम

समय के नारकी अ० अप्रथम समय के नारकी जा० यावत् अ० अप्रथमसमय के देव सि० सिद्ध ॥८॥ न० नव प्रकार की स० सर्व जीव की ओ० अवगाहना पु० पृथ्वीकाय आ० अप् जा० यावत् व० वनस्पति की बे० बेइन्द्रिय ते० तेइन्द्रिय च० चौरेन्द्रिय प० पचेन्द्रिय ॥ ९ ॥ जी० जीव को न० नवस्थान से स० संसार में भ० भ्रमणकीया भ० भ्रमण करते हैं भ० भ्रमण करेंगे ए० एकेन्द्रियपने जा० यावत् पं० पंचेन्द्रियपने ॥१०॥

पढम समय नेरइया अपढम समय नेरइया जावअपढम समय देवा, सिद्धा ॥८॥नवविहा सव्व जीवोगाहणा प० तं० पुढविकाय ओगाहणा, आउ जाव वणस्सइकाइय ओगाहणा, बेइंदियोगाहणा, तेइंदियोगाहणा, चउरिंदियोगाहणा, पंचेंदियोगाहणा, ॥ ९ ॥ जीवा ण नवहिं ठाणेहिं ससारं वत्तिसुवा २ तं० पुढविकाइयत्ताए जाव पंचिंदियकाइयत्ताए ॥ १० ॥ नवहिं ठाणेहिं रोगुप्पत्तीसिया तं० अच्चासणयाए, अहियासणयाए, अइ-

समयके नारकी यावत् अप्रथम समयके देव व सिद्ध ॥ ८ ॥ नव प्रकारकी सब जीवों की अवगाहना पृथ्वीकायाकी अवगाहना २ अप् ३ तेउ, ४ वायु ५ वनस्पति ६ द्वीन्द्रिय की अवगाहना ७ त्रीन्द्रिय की अवगाहना ८ चतुरेन्द्रियकी अवगाहना और ९ पंचेन्द्रियकी अवगाहना ॥ ९ ॥ नवस्थान रूप संसारमें जीवने परिभ्रमणकिया, करते हैं और करेंगे; पृथ्वीकायपने यावत् पंचकायपने॥१०॥ नव कारणसे रोगकी

न० मलस्थानसे रो० रोगोत्पत्ति सि० होवे अ० अति आहारसे अ० अहित आहार से ...
अ० अतिजगने से उ० वडीनीत नि० रोकने से पा० लघुनीत नि० रोकनेसे अ० मार्गमें ग० चलनेसे
भो० भोजन प० प्रतिकूल इं० इन्द्रियार्थ के को० विपाकसे ॥११॥ न० नवप्रकार का दं० दर्शनावरणीय कर्म
नि० निद्रा नि० निद्रानिद्रा प० प्रचला प० प्रचलाप्रचला थी० स्त्यानगृद्धि च० चक्षुदर्शनावरण अ० अचक्षुदर्शनावरण
ओ० अवधि दर्शनावरण के० केवल दर्शनावरण ॥१२॥ अ० अभिजित् न० नक्षत्र स० साधिक न० नवमुहूर्त

निद्दाए, अइजागरिएणं, उच्चारनिरोहेणं, पासवणनिरोहेणं, अद्धाणगमणेणं, भोयण प-
डिकूलयाए, इंदियत्थ कोवणयाए ॥ ११ ॥ नवविहे दंसणावरणे कम्मे प० तं०,
निद्दा, निद्दानिद्दा, पयला, पयलापयला, थीणगिद्धी, चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंस-
णावरणे, ओहिदंसणावरणे, केवलदंसणावरणे, ॥ १२ ॥ अभिईणं नक्खत्ते

उत्पत्ति होती है १ अति आहार करनेसे २ अहित भोजन करनेसे ३ अति निद्रा करनेसे ४ बहुत जगनेसे
५ वडीनीत रोकनेसे ६ प्रस्रवण (लघुनीत) रोकनेसे ७ बहुत मार्ग चलनेसे ८ प्रतिकूल भोजन करनेसे ९
इन्द्रियके विषयमें अत्यंत मग्न रहनेसे ॥ ११ ॥ दर्शनावरणीय कर्मके नव भेद निद्रा, निद्रानिद्रा, प्रचला,
प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, चक्षुदर्शनावरणीय, अचक्षुदर्शनावरणीय अवधिदर्शनावरणीय और केवलदर्शन

त च० चंद्रसाथ जो० योग जो० योजता है ॥ १३ ॥ अ० आभिजितादि न० नवनक्षत्र चं० चंद्रको उ० उत्तरसे जो० योग जो० योजते हैं अ० अभिजित् स० श्रवण ध० धनिष्ठा जा० यावत् भ० भरणी ॥ १४ ॥ इ० इस र० रत्नप्रभा पृथ्वी के ब० बहुत र० रमणिक भू० भूमिभाग से न० नव जो० योजनशत उ० ऊंचे अ० बाधारहित उ० ऊपर ता० तारारूप च० चलता है ॥ १५ ॥ जं० जंबूद्वीप में न० नवयोजन का म० मच्छ

सहरेगे नवमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोग जोएइ ॥ १३ ॥ अभिई आइयाणं नव नक्खत्ता चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएइ, तं० अभिई, सवणो, धणिट्ठा, जाव भरणी, ॥१४॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नवजोयणसए उड्ढं अबाहाए उवरिल्ले तारारूवे चारंचरति ॥ १५ ॥ जंबूद्दीवेणदीवे नवजोयणिया

नावरणीय ॥ १२ ॥ अभिजित नक्षत्र नवमुहूर्त अधिक तक चंद्रमाकी साथ योग करता है ॥ १३ ॥ अभिजितसे लगाकर भरणी तक के नव नक्षत्र चंद्रकी उत्तर में योग करते हैं ॥ १४ ॥ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत रमणिक भूमिसे बाधा रहित नवसो योजन ऊंचे तारारूप (शनैश्चर) चलता है ॥ १५ ॥ लवण समुद्र के नाले की पास भरतक्षेत्रकी खाड़ी है इसमें नव योजन के मत्स्य आते, आते हैं और जाते हैं (यद्यपि लवण समुद्र में ५०० योजन के शरीरवाले मत्स्य होते हैं परंतु वे यहां

पि० पिता भ० होंग न० मा व० बल्देव की मा० माता भ० होंगे ए० एसे ज० जैसे स० समवायाग में नि० निरविशेष भा० पारत् म० महाभीमसेन सु० सुग्रीव अ० छेल्ला ए० ए तेषातु कि० कीर्तिवन्त पु० पुरुष वा० वासुदेव से स० सर्व च० चक्रयोधी ह० हणो हैं स० स्वचक्रसे ॥ १८ ॥ ए० एकेक म० महानिधि न० नव२ योजन वि० चौडा ए० एकेक र० राजा चा० चातुरंत च० चक्रवर्ती को न० नव म० महानिधि मे नैसर्प पं० पंडुक पि० पिंगल स सर्वरत्न म० महापद्म का० काल म० महा काल मा०

समवाए निरवसेस जाव महाभीमसेणे सुग्गीवेय अपच्छिमे एएखलुपडिसत्तू कित्ती पुरिसाण वासुदेवाण सव्वेविचक्कजोही हम्मीहंती सचक्केहिं ॥ १ ॥ १८ ॥ एगमेगेण महानिही नवनव जोयणाई विक्खभेणं प० एगमेगस्सण रण्णो चाउरंत चक्कवट्टिस्स नवमहानिहीओ पण्णत्ताओ त० नेसप्पपंडुए पिंगलेय, सव्वरयणे, महापउमे, कालेय

देव वासुदेव के पिता होवेंगे इनका सब अधिकार समवायांग में महाभीमसेन सुग्रीव वगैरह अपने शत्रु प्रतिवासुदेवको अपने चक्रसे हणे वगैरह जानना ॥ १८ ॥ एक २ निधान नव २ योजनका चौडा कहा एक २ चक्रवर्तीको ऐसा नव २ महानिधान कहे हैं १ नैसर्प २ पंडुक ३ पिंगल ४ सर्वरत्न ५ महापद्म ६ काल ७ महाकाल ८ माणवक और ९ शंख. नैसर्प निधानमें ग्राम, आगर, पाटन, द्रोणमुख, मंडप, कंट

मानवक म० महानिधि सं० शंख ने० नैसर्प में गा० ग्राम आ० आगर न० नगर प० पाटण दो० द्रोणमुख म० मडंब खं० खेटक गि० घर ग० गणित बी० बीज को मा० मान उ० उन्मान प० प्रमाण धा० धान्य बी० बीज की उ० उत्पत्ति पं० पंडुक में म० कहना स० सर्व आ० आभरण विधि पु० पुरुष की मा० माता म० स्त्री की मा० अश्व ह० हस्तिकी पिं० पिंगलनिधि र रत्न स० सर्वरत्न च० चौदा प० प्रधान च० चक्रवर्ती को उ० उत्पन्न होवे ए० एकेन्द्रिय पं० पंचेन्द्रिय व० वस्त्र उ० उत्पत्ति नि० निष्पत्ति स० सर्व

महाकाले, माणवग महानिही संखे, (१) नेसप्पम्मि निवेसा, गामागरनगर पट्टणा णच, दोहमुह मडंबाण संधाराण गिहाणच (२) गणियस्सय बीयाण, माणुम्माणस्स जंपमा णंच, धण्णस्सय बीयाणं, उप्पत्ती पंडुए भणिया (३) सव्वा आभरणविही, पुरिसाण जायहोइ महिलाण, आसाणयहत्थीणय पिंगलगणिहिम्मि सा भणिया (४) रयणाइ सव्वरयणे, चउदसपवराई चक्कवट्टिस्स, उप्पज्जन्तिय एगिंदियाइं पंचिंदियाइंच

क निवेश का समावेश होता है पंडुक निधान में गणितका मानउन्मान, बीजका प्रमाण व चौविस प्रकारके धान्य की उत्पत्ति कही है. सब प्रकारके आभरण की भांति स्त्रीपुरुषके अश्व व गजके लक्षण पिंगल नामक तीसरे निधानमें है चक्रवर्ती के सात एकेन्द्रिय व सात पंचेन्द्रिय रत्न तथा अन्य सब जातिके रत्न सर्वरत्न नामक निधान में है. सब प्रकारके वस्त्र व धान्यकी उत्पत्ति वैसेही वस्त्र रंगने व

तरह की रं० रंगने की धा० धोने की स सर्व ए० यह म० महापद्म का० काल में का० काल का ज्ञान भ० भावी पु पुरातन ती० तीन का० काल में सि० शिल्प म० शतकर्म नवि० तीन प० प्रजालोक में हि० हितकर्ता लो० लोहे की उ० उत्पत्ति हो० होवे म० महाकाल आ० आगर रु० रूपेकी सु० सुवर्ण की म० मणि मोती प प्रवाल जो० योधे की उ० उत्पत्ति आ० आवरण प० प्रहरण स० सर्व जु० युद्ध नी०

(५) वत्थाणय उप्पत्ती, निप्पत्तीचेव सव्वभत्तीणं रगाणय धोवाणय, सव्वा एसा महापउमे (६) काले कालण्णाणं, भव्वपुराणंच तीसुवासेसु, सिप्पसयंकम्माणं, तिन्निपयायहियकराइं (७) लोहस्सय उप्पत्ती, होइ महाकाल आगराणंच, रुप्पस्स सुवण्णस्सय, मणिमुत्ति सिलप्पवालाणं (८) जोहाणय उप्पत्ती आवरणाणच पहरणाणंच सव्वाय जुद्धणीई माणवएदंडनीईय (९) णट्टविहिणाडयविही, कव्वस्स चउव्विहस्स

धोने की विधि महापद्म निधान में है कालका शुभाशुभ ज्ञान, पुराणी वस्तु भावी वस्तु, व वर्तमान वस्तु तीनों कालविषय, शिल्पज्ञान, शतकर्म, कृष्यादिव्यापारादि यह सब प्रजा को हित करनेवाले हैं, वगैरह कालनिधान में है लोहकी उत्पत्ति सुवर्ण, चांदि, मोती, प्रवाल, वगैरह की उत्पत्ति महाकाल नामक निधान में है सुभट की उत्पत्ति, आवरण व सनाह (बख्तर) वगैरह की उत्पत्ति माणवक निधान में रही हुइ है इसे दंडनीति भी कहते हैं और पांच महानिधान में नाटक की विधि, नृत्यकरने की विधि, धर्म, अर्थ व काम कहे हैं वैसे ही त्रुटित वादित्र वगैरह यहां रहे हुवे हैं इन सबों निधानों की संदूकों आठ

नीति मा० मानवक दे० देवनीवि ण० नाट्यनिधि णा० नाटकनिधि क० काव्य की च० चार मकार की उ० उत्पत्ति सं० शंख म० महानिधि में तु० त्रुटितांग स० सर्व प० पद्म भ० आठ प० प्रतिष्ठित म० आठ उ० ऊंचे न० नव वि० चौड़ा बा० बारह दी० दीर्घ मे० मंजुस सं० संस्थित जा० जान्हवी के मु० मुख वे० वैडूर्य के म० मणि क० कपाट क० कनकमय वि० विविध र० रत्न से प० प्रतिपूर्ण स० चंद्र सू० सूर्य च० चक्र ल० लक्षण अ० अनुसम जु० युग समान धा० धारधास प० पल्योपम प० पल्योपम ठि० स्थितिवाले नि निधि सि० सरखे नामवाले ते० उन में दे० देवता जे० जिसमें आ० आवास अ०

उप्पत्ती, संखेमहानिहिम्मि, तुडियंगाणच सव्वेसिं ॥ १० ॥ चक्कट्ठपइट्ठाणा अठुस्से हाय नवयविक्खंभ, बारसदीहामंजु, ससंठिया जाण्हवीइमुहे ॥ ११ ॥ वेरुलिय मणि-कवाडा, कणगमया विविहरयणपडिपुण्णा, ससिसूरचक्कलक्खण, अणुसमजुगबाहुव यणाय ॥ १२ ॥ पलिओवमट्ठिईया, निहिसरिणामाय तेसुखलुदेवा, जेसिं तेआवासा,

चक्रवाली हैं, आठ योजन की चौड़ी हैं, बारह योजन की लम्बी हैं और गंगानदी के मुख के आकार वाली हैं अर्थात् गंगानदी जैसे समुद्र में मिलती है वैसे रही हुई हैं उन पेटियों को वैडूर्य रत्न के कपाट हैं, सुवर्ण रत्नमय हैं, विविध प्रकार के रत्नों से परिपूर्ण हैं, चंद्र, सूर्य व चक्र के लक्षणवाली हैं उन की भागे बराबर भोसरे जैसे सम्मे धारसास हैं उन निधान के नामवाले व पल्योपमकी स्थितिवाले

मजेय आ० आधिपत्य प पर न० नव नि० निधि प० प्रभूत ध० धन र० रत्न सं० संचय स० समृद्धि म० भो स० सम्यक् व० भाव हैं स० सर्व च० चक्रवर्ती का ॥ १२ ॥ न० नव वि० विगय खी० दुध द० दहि न० नवनीत घ० घृत ति० तैल गु० गुड म० मधु म० मद्य मं० मांस ॥ २० ॥ न० नव स्रोत प० परिस्राव बों० शरीर दो० दोश्रोत दो० दोनेत्र दो० दोनासिका मु० मुख पा० उपस्था पा० पायु॥२१॥

अकेयाआहिवचा ॥ १३ ॥ एए ते नवनिहिओ, पभूयधणरयणसंचयसमिद्धा, जेवसमुव गच्छंती सव्वेसिं चक्कवट्टीणं ॥ १४ ॥ ॥ १९ ॥ नवविगईओ पण्णत्ताओ तं• खीरं, दहिं, णवणीयं, सप्पि तिल्लं, गुलो, महु, मज्जं, मसं ॥ २० ॥ नवसोय परिस्सवा बोंदी प० तं० दोसोत्ता, दोणित्ता, दोघाणा, मुहं, पोसए, पाउ ॥ २१ ॥

उन के अधिपति देवों वहां ही रहते हैं उन के निवास अक्रेय है परंतु क्रय नहीं हैं वे नव निधि बहुत धन व रत्नों से परिपूर्ण हैं और चक्रवर्ती के पुण्यसे सम्यक् प्रकार से उन को ही काम में आते हैं॥१९॥ नव विगय कहीं १ दुध, २ दधि ३ नवनीत ४ घृत ५ तैल ६ गुड ७ मधु ८ मद्य और ९ मांस ॥ २० ॥ उदारिक शरीर में नव छिद्रों स्रवते कहे हैं दोकान, दोचक्षु दोनाक, मुख, उपस्थ-पायु-लघुनीत करने का स्थान और नववां बडीनीत करने का स्थान ॥ २१ ॥ नव प्रकार के पुण्य कहे हैं १ अन्नपुण्य,

न० नव प्रकार का पु० पुण्य अ० अन्नपुण्य पा० पानपुण्य व० वस्त्र पुण्य ले० शय्या स० शयन म० मन व० वचन का० काय न नमस्कार ॥ २२ ॥ न० नव पा० पाप का आ० आयतन पा० प्राणातिपात जा० यावत् प० परिग्रह को० क्रोध मा० मान मा० माया लो० लोभ ॥ २३ ॥ न० नव प्रकार का पा० पापश्रुत का प० प्रसंग उ० उत्पात ने० नैमित्तिक मं० मंत्र आ० आइक्ख ति० चिकित्सा क० कला शास्त्र

नवविहेपुण्णे प० तं० अण्णपुण्णे,पाणपुण्णे,वत्थपुण्णे,लेणपुण्णे, सयणपुण्णे, मणपुण्णे, वयपुण्णे, कायपुण्णे, नमोक्कारपुण्णे ॥२२॥ नव पावस्साययणा प० तं० पाणाइवाए, जाव परिग्गहे कोहे, माणे, माया, लोहे ॥ २३ ॥ नवविहे पावसुयपसंगे प० तं० उप्पाए निमित्तिए, मंते आइक्खए तिगिच्छिए, कलावरण अन्नाणे, मिच्छापावयण

२ पाणपुण्य ३ वस्त्रपुण्य ४ लेणपुण्य, ५ शयन पुण्य ६ मनपुण्य ७ वचनपुण्य ८ कायपुण्य और ९ नमस्कारपुण्य ॥ २२ ॥ नव पाप के स्थानक कहे हैं प्राणातिपात यावत् परिग्रह, क्रोध, मान, माया व लोभ ॥ २३ ॥ नव प्रकार का पापश्रुत का प्रसंगकहा १ उत्पात रुधिरवृष्टिप्रमुख २ नैमित्तिक ३ मंत्रशास्त्र ४ आइक्ख जिस में मातंगनी विद्या होवे ५ वैद्यक जिस में औषधोपचार होवे ६ कला शास्त्र जिस में पुरुष की ७२ कला व स्त्री की ६४ कला होवे ७ आवरण सो वस्तु बनाने का ८ अज्ञान शास्त्र सो भरत

मा० मायरण अ० अज्ञान मि० मिथ्या प्रवचन ॥ २४ ॥ न० नव नि० निपुण व० वस्तु स० संख्या में नि निमित्त का काथिक पा० पौराणिक पा० पारिहस्तिक प० परिपंडित वा० वादी भू० भूमिकंप ति० चिकित्सा में ॥ २५ ॥ स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को न० नवगण हो थे गो० गोदासगण उ० उत्तरबलिस्सगण उ० उद्देहगण चा० चारणगण उ० उद्ववाधिकगण वि० विश्वावादीगण क० कामर्द्धिकगण मा० मानवगण को कोडिकगण ॥ २६ ॥ स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ

तिय (१) ॥ २४ ॥ नवनिउणियावत्थु प० सं० संखाणे निमित्ते काईए, पोराणे पारिहत्थिए, परिपंडिए य वाईय, भूइकम्मे तिगिच्छिए ॥ २५ ॥ समणस्स भगवओ महावीरस्स नवगणाहोत्था तं० गोदासगणे, उत्तरबलियस्सयगणे, उद्देहगणे, चारणगणे, उडुवाइयगणे, विस्सवाइगण, कामिड्डियगणे, माणवगणे, कोडियगणे,

वगैरह भरना ९ मिथ्या प्रवचन सो सांख्यादि दर्शन शास्त्र ॥ २५ ॥ नव निपुण पुरुष कहे हैं १ गणित में निपुण २ निमित्तादिक में निपुण ३ कायिक नाडी परीक्षादि में निपुण ४ पौराणिक वृद्धावस्थावाला अथवा पुराण जानने वाला निपुण ५ प्रकृतिसे ही दक्ष अर्थात् समय का जान ६ प्रकृष्ट पंडित या बहुश्रुत जानने वाला होवे ७ वादी सो मंत्रवादी धनुर्वादि वगैरह ८ भूतिकर्म में निपुण और ९ चिकित्सा कर्म में निपुण ॥ २६ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को नवगण हुवे १ गोदासगण २ उत्तरबलिय

का न० नवकोटि प० परिशुद्ध भि० भिक्षा न० नहीं ह० हण न० नहीं हणाव ह० हणते को अ० अच्छा जाने नहीं न० नहीं पकावे न० नहीं पकवावे प० पकाते को न० नहीं अ० अच्छा माने न० नहीं कि० मामलेवे नहीं, न० नहीं मोलखरावे कि०मोलखेवे को न नहीं अ०अच्छा माने ॥२७॥ ई०ईशान इ० इन्द्र दे० देवराजा के व० वरुण म० महाराजा को न० नव अ० अग्रमहिषी ॥ २८ ॥ ई० ईशान दे०

॥ २६ ॥ समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं णिग्गथाण नवकोडिपरिसुद्धे भि

क्खे प० तं० ण हणइ ण हणावेइ, हणंतं नानुजाणइ नपयइ, नपयावेइ, पयंत

णाणुजाणइ नकिणइ नकिणावेइ, किणंत नाणुजाणइ ॥ २७ ॥ ईसाणस्सण

देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो नव अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ॥ २८ ॥

गण ३ उद्दगण ४ चारणगण ५ ऊध्ववार्तिकगण ६ विश्ववादीगण ७ कामार्धिक गण ८ माणवगण और ९ कोटिक गण ॥ २६ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी न श्रमण निर्ग्रंथों को नवकोटी शुद्धभिक्षा कही है १ आहारादिक के लिये स्वतः हण नहीं २ अन्य से हणावे नहीं और ३ हणते को अच्छा जाने नहीं ४ किसी वस्तु को अग्निपर स्वतः पकावे नहीं ५ अन्य की पास पकवावे नहीं और ६ पकाते को अच्छा माने नहीं ७ स्वतः मोलखेवे नहीं ८ अन्य की पास मोल लेवरावे नहीं और ९ मोललेत को अच्छा जाने नहीं ॥ २७ ॥ ईशानेन्द्र के देवराजा वरुण को नव अग्रमहिषियों कहीं ॥ २८ ॥ ईशानेन्द्र

ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरण्णो अग्गमहिसीण नवपलिओवमाइं ठिई प० ॥ २९ ॥ ईसाणे कप्पे उक्कोसेणं देवीणं णवपलिओवमाइंट्ठिई प० ॥ ३० ॥ नव देवनिकाया प० तं० (गाथा) सारस्सय माइच्चा, वण्ही वरुणाय गद्दतोयाय, तुसिता अव्वा-बाहा, अग्गिच्चाचेवरिट्ठाय ॥ १ ॥ ३१ ॥ अव्वाबाहाण देवाणं नवदेवसया प० एव अग्गिच्चावि । एवंरिट्ठावि ॥ ३२ ॥ नव गेविज्जविमाणपत्थडा प० तं० हिट्ठिम

इसेन्द्र दे० देवराजा की अ० अग्रमहिषी की न० नव पल्योपम की ठि० स्थिति ॥ २९ ॥ ई० ईशान देवलोक में दे० देवीकी न० नव प० पल्योपम की ठि० स्थिति ॥ ३० ॥ न० नव दे देवनिकाय सा० सारस्वत आ० आदित्य व० वन्ही व० वरुण ग० गर्द्दतोय तु० तुसित अ० अव्याबाध अ० अग्निच्च रि० रिष्ठ ॥ ३१ ॥ अ अव्याबाध दे० देवता को न० नव दे० दव श० शत प० ऐसे अ० अग्निच्च को रि० रिष्ट को ॥ ३२ ॥ न० नव ग० ग्रैवेयक विमान के प० पाथडे हि० नीचे के हि० नीचे के ग० ग्रैवेयक

देवता की अग्रमहिषियों की स्थिति उत्कृष्ट नव पल्योपम की कही ॥ २९ ॥ ईशान देवलोक में देवियों की उत्कृष्ट स्थिति नव पल्योपम की कही ॥ ३० ॥ नव देव निकाय कहे हैं १ सारस्वत २ आदित्य ३ वन्हि ४ वरुण ५ गर्द्दतोय ६ तुषित ७ अव्याबाध ८ अग्नेय और ९ रिष्ट ॥ ३१ ॥ अव्याबाध, अग्नेय और रिष्ट देवता को नवसो देवताओं हैं ॥ ३२ ॥ नवग्रैवेयक विमान कहे १ नीचे की त्रिक का नीचेका

विमान के प० पाथडे हि० नीचे के म० मध्यम गे० ग्रैवेयक विमान के प० पाथडे हि० नीचे के उ० उपर के विमान के प० पाथडे म० मध्यम के हि० नीचे गे० ग्रैवेयक विमान के प० पाथडे म० मध्यम गे० ग्रैवेयक विमान के प० पाथडे म० मध्यम के उ० उपर के गे० ग्रैवेयक विमान के प० के म० मध्यम गे० ग्रैवेयक विमान के प० पाथडे म० मध्यम के उ० उपर के गे० ग्रैवेयक विमान के प० पाथडे उ० उपर के हि० नीचे के गे० ग्रैवेयक विमान के पा० पाथडे उ० उपर के म० मध्यम गे० ग्रैवेयक विमान के प० पाथडे उ० उपर के उ० उपर के गे० ग्रैवेयक विमान के प० पाथडे ॥२२॥ ए० इन न० नव गे० ग्रैवेयक विमान के न० नवनाम भ० भद्र सु० सुभद्र सु० सुजात सो० सोमनस पि० प्रियदर्शन सु० सुदर्शन अ०

हिट्ठिम गेविज्ज विमाणपत्थडे, हिट्ठिम मज्झिम गेविज्जविमाणपत्थडे, हिट्ठिम उवरिम गेविज्जविमाणपत्थडे, मज्झिमहिट्ठिम गेविज्जविमाणपत्थडे, मज्झिम मज्झिम गेविज्जविमाणपत्थडे, मज्झिम उवरिम गेविज्जविमाणपत्थडे, उवरिमहिट्ठिम गेविज्जविमाणपत्थडे, उवरिम मज्झिम गेविज्जविमाणपत्थडे, उवरिम उवरिम गेविज्जविमाणपत्थडे ॥ २२ ॥ एएसिणं नवण्हं गेविज्जविमाणपत्थडाणं नवनामधेज्जा प० तं० भद्दे सुभद्दे सुजाए, सोमणसे पियदंसणे, सुदंसणे अमोहेय, सुप्पबुद्धे जसोहरे (१)

मध्यका और उपरका, मध्यकी त्रिकका नीचेका, मध्यका और उपरका और उपरकी त्रिकका नीचेका, मध्यका और उपरका ऐसे नव पाथडे हुवे ॥ २२ ॥ इन ग्रैवेयक विमानके नव पाथडे के नव नाम कहे

आमोघ सु० सुप्रबुद्ध य० यशोधर ॥ १४ ॥ न० नव प्रकार का आ० आयुष्य प० परिणाम ग० गति म० गति बंधन ठि० स्थिति ठि० स्थिति बंधन उ० ऊर्ध्वगमन अ० अधोगमन ति० तिर्यक् गमन दी० दीर्घगमन र० ह्रस्वगमन ॥ १५ ॥ न० नव न० नवमिका भि० भिक्षु प्रतिमा ए इकासी रा० रात्रि दिवस च चार पं० पांच भि० भिक्षादात अ० यथासूत्र आ० आराधिक भ० होवे ॥ १६ ॥ न० नव

॥ ३४ ॥ नवविहे आओपरिणामे प० तं० गइपरिणामे गइबंधणपरिणामे, ठिइपरिणामे, ठिइबंधणपरिणामे, उड्ढंगारवपरिणामे अहेगारव परिणामे, तिरियगारव परिणामे, दीहंगारव परिणामे, रहस्सगारव परिणामे, ॥ ३५ ॥ नवनवमियाणं भिक्खुपडिमा एकासीएहिं राइदिएहिं चउहिय पंचुत्तरेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्ता जाव आराहिया-

है १ भद्र २ सुभद्र ३ सुजात ४ सोमनस ५ प्रियदर्शन ६ सुदर्शन ७ आमोघ ८ सुप्रबुद्ध और ९ यशोधर ॥ ३४ ॥ नव प्रकारका आयुष्यका परिणाम कहा है १ गतिस्वभाव २ गति बंधनस्वभाव ३ स्थिति स्वभाव ४ स्थितिबंधनस्वभाव ५ ऊर्ध्वगमनस्वभाव ६ अधोगमनस्वभाव ७ तिर्च्छाजानेका स्वभाव ८ दीर्घ गमन स्वभाव और ९ ह्रस्वगमन स्वभाव ॥ ३५ ॥ नव नवमिक भीक्षुप्रतिमा कही जिसमें इकासी रात्री लगती है चार पारसो पांच भिक्षाकी दाति होती है उसका जैसे सूत्रमें वर्णन किया है वैसे अंगीकार करना ॥ ३६ ॥ नव प्रकारका प्रायश्चित्त आलोचनादि यावत् ... और ९ अनवस्थ पारांचिक

प्रकार का पा० मायाश्रित आ० आलोचना ना० यावत् मू० मूल अ० अनवस्थात्मा ॥ ३७ ॥ जं० जंबूद्वीप के म० मेरुकी दा० दक्षिण में भ० भरतमें दी० दीर्घवैताढ्य पे न० नवकूट सि० सिद्ध भ० भरत खं० खंडक मा० माणिभद्र वे० वैताढ्य पु० पूर्णभद्र ति० तिमिस्रगुफा भ० भरत वे० वैश्रमण ॥ ३८ ॥ नि० निषधवर्षधर प० पर्वत पे न० नवकूट सि० सिद्ध नि० निषध ह० हरिवर्ष वि० विदेह हि० ही धि० धृति सी० सीतोदा अ० अपरविदेह रु० रुचक ॥ ३९ ॥ जं० जम्बूमंदर के णं० नंदनवन में न०

विमवइ ॥ ३६ ॥ नवविहे पायच्छित्ते प० त० आलोयणारिहे, जाव मूलारिहे, अणवट्ठप्पारिहे ॥ ३७ ॥ जंबूमंदर दाहिणेणं भरहे दीहवेयड्ढे नवकूडा प० त० (गाथा) सिद्धे भरहे खंडग माणिभद्दे पुण्ण तिमिसगुहा ॥ भरहे वेसमणेय भरहे कूडाण नामाइं (१) ॥ ३८ ॥ जंबूमंदर दाहिणेणं निसढवासहरे पव्वए नवकूडा प० त० (गाथा) सिद्धे निसढे हरिवस्स विदेहे हिरिधिइय सीओया अवर विदेहरुयगे निसहेकूडाण नामाइं (१) ॥ ३९ ॥ जंबूमंदर पव्वए णंदणवणे

॥ ३७ ॥ जम्बूद्वीपके मेरुकी दक्षिणमें भरतका दीर्घवैताढ्यपे नवकूट कहे हैं १ सिद्ध २ भरत ३ खंडक ४ माणिभद्र ५ वैताढ्य ६ पूर्णभद्र ७ तिमिस्रकूट ८ भरत और ९ वैश्रमणकूट ॥ ३८ ॥ जम्बूमेरु की दक्षिण में निषध पर्वत पर नवकूट कहे हैं १ सिद्ध २ निषध ३ हरिवर्ष ४ विदेह ५ ही ६ धृति ७ सीतोदा

नवकूट न० नंदन म० मदर नि० निषध ह० हेमवय र० रजत रु रुचक सा० सागरचित्र व० वज्र ब० बलकूट ॥ ८ ॥ मा० माल्यवत व० वक्षस्कार प० पर्वतपे न० नवकूट सि० सिद्ध मा० माल्यवंत उ० उत्तर कुरु क कच्छ सा सागर र० रजत सी० सीता पु० पूर्णभद्र ह० हरि जं० जंबूकी कच्छमें दी० दीर्घ वैताढ्यपे न० नवकूट सिद्ध क० कच्छ खं खंडक म० माणिभद्र वे० वैताढ्य पु० पूर्णभद्र ति० तिमिसगुफा क कच्छ वे

नवकूडा प० तं० (गाथा) नंदणे मंदरे चेव, निसढ हेमवय रयत रुयए य, सागर चित्ते वइरे, बलकूडे चेवबोधव्वे (१) ॥ ४० ॥ जंबूद्दीवेदीवे मालवंते वक्खार पव्वए नवकूडा प० तं० (गाथा) सिद्धेय मालवंते, उत्तरकुरु कच्छ सागरे रयए॥सीयाय पुन्न नामे हरिस्सकूडेय बोधव्वे (१) जम्बूकच्छे दीहवेयड्ढे नवकूडा प० तं० सिद्धे कच्छे खंडग, माणीवेयड्ढ पुन्नतिमिसगुहा ॥ कच्छे वेसमणेय,

८ भपर [illegible] और ९ रुचक ॥ ३९ ॥ जम्बूमंदर पर्वत के नंदनवन में नव कूट कहे हैं १ नंदन २ मंदर ३ निषध ४ हेमवय ५ रजत ६ रुचक ७ सागरचित्र ८ वज्र और ९ बलकूट ॥ ४० ॥ जम्बूद्वीप में माल्यवंत वक्षस्कार पर्वत पर नव कूट कहे हैं १ सिद्ध २ माल्यवंत ३ उत्तरकुरु ४ कच्छ ५ सागर ६ रजत ७ सीता ८ पूर्णभद्र और ९ हरिकूट. जम्बूद्वीप के कच्छ विजय में दीर्घवैताढ्यपर नव कूट कहे हैं १ सिद्ध २ कच्छ ३ खंडक ४ माणिभद्र ५ वैताढ्य ६ पूर्णभद्र ७ तिमिस्र गुफा ८ कच्छ और ९

वैश्रमण मु० मुकच्छ में दी० दीर्घ वे० वैताढ्य में न० नवकूट सि० सिद्ध सु० सुकच्छ स० खण्ड मा० माणिभद्र वे० वैताढ्य पु०पूर्णभद्र ति तिमिस्रगुफा सु०मुकच्छ वे० वैश्रमण ॥ ४१ ॥ ए० एसे जा० यावत् पुष्कलावती में दी० दीर्घ वैताढ्य ए० ऐस प वच्छ में दी० दीर्घ वैताढ्य में ए० एसे जा० यावत् मं० मंगलावतीमें दी दीर्घ वैताढ्य ॥ ४२ ॥ ज० जंबूद्वीप में वि० विद्युत्प्रभ ग० वक्षस्कार पर्वतपे न० नवकूट

कच्छ कूडाण नामाइ ॥ १ ॥ जम्बूसुकच्छे दीहवेयड्ढेण नवकूडा प० त० सिद्धे सुकच्छ खंडग। माणीवेयड्ढ पुन्नतिमिसगुहा ॥ सुकच्छे वेसमणय। सुकच्छकूडाण णामाइ (१) ॥ ४१ ॥ एवं जाव पुक्खलावइम्मि दीहवेयड्ढे ॥ एवं वच्छ दीहवेयड्ढे॥ एवं जाव मंगलावइम्मि दीहवेयड्ढे ॥ ४२ ॥ जंबूविज्जुप्पभे वक्खारपव्वए नवकूडा प० त० सिद्धय विज्जुनाम, देवकुरा पम्ह कणगसोवत्थी, सीओदाए सजले हरिकूडे चेव बोधव्वे (१) जम्बुपम्हेदीहवेयड्ढे नवकूडा प० तं० सिद्धे पम्हे खंडग माणी वेयड्ढए ॥ एवं चेव जाव सलिलावइम्मि दीहवेयड्ढे। एवं वप्पे दीहवेयड्ढे एवंजाव गं

वैश्रमण जम्बूद्वीप के सुकच्छ विजय में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नव कूट कहे हैं १ सिद्ध २ सुकच्छ ३ खण्ड ४ माणिभद्र ५ वैताढ्य ६ पूर्णभद्र ७ तिमिस्रगुफा ८ सुकच्छ और ९ वैश्रमण ॥ ४१ ॥ एसे ही पुष्कलावती में दीर्घवैताढ्य, वच्छ का दीर्घ वैताढ्य, यावत् मंगलावती में दीर्घ वैताढ्यपर नव २ कूट जान

पा र्श्वनाथ अ० अरिहंत पु० पुरुषादानी व० वज्र ऋषभ नाराच सं० संघयन स० समचोरस सं० संठान से अ० भणित न० नव र० हाथ उ० ऊंचे उ० ऊंचपने हो० थे ॥ ४७ ॥ स० श्रमण भ० भगवन्त म० —वीर के ति तीर्थ में न० नव जी० जीवन ति तीर्थंकर ना नामगोत्र क० कर्म नि० बांधा से० श्रेणिक सुपार्श्व उ० उदाई पु० पोट्टिल अनगार द० दढायु सं० शंख स० शतक सु० सुलसा श्राविका रे० रेवती ४८ ॥ अ० आर्य कृ० कृष्ण वासुदेव रा० रामबलदेव उ० उदक पेढालपुत्र पु० पोट्टिल स० शतक

समचउरंससंठाणसंठिए नवरयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था ॥ ४७ ॥ समणस्स भगवओ महावीरस्स तित्थंसि नवहिं जीवेहिं तित्थयर नाम गोयकम्मे निव्वित्तिए तं० से णिएण, सुपासेणं, उदाइणा पुट्टलेण, अणगारेणं, दढाउणा, संखेणं सयएण, सुलसाए साविआए, रेवईए, ॥ ४८ ॥ एसण अज्जो कण्हे व सुदेवे, रामेबलदेवे, उदये पेढालपुत्ते,

नाराच संघयण और समचतुरस्र संस्थान वाले श्री पुरुषादानी पार्श्वनाथ अरिहंत के शरीर की नव हाथकी थी ॥ ४७ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के तीर्थ में नव जीवोंने तीर्थंकर कर्म की उपार्जना की १ श्रेणिकराजा २ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के पितृ सुपार्श्व ३ को राजा के पुत्र उदाई ४ पोट्टिल अणगार ५ दढायु ६ शंख ७ शतक ८ सुलसाश्राविका और ९ रेवती ४८ ॥ अब जो आगामिक उत्सर्पिणी में तीर्थंकर बन कर केवलज्ञान प्राप्तकर मोक्ष जावेंगे उन के

गायापति दा० दारुक निर्ग्रंथ स० सत्यकी पि० निर्ग्रंथी पुत्र मा० श्रावका सुद अ० अंबड प० परि ब्राजक अ० आर्या सु० सुपार्श्वा पा० पार्श्वनाथकीचेली आ० आगामिक उ० उत्सर्पिणीमें चा० चार आ० याम ध० धर्म प० प्ररूपकर सि० सिद्धहोंगे जा० यावत् ० अंतकरेंगे ॥ ४२ ॥ अ० आर्य से० श्रेणिक राजा भिं० भिंभसार-का०कालकेअवसरमें का०कालकरके इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वीमें सी० सीमंत न०

उदिले, सयये गाहावई, दारुएनियंठे, सच्चई णियंठीपुत्ते, सावियबुद्धे अम्मडे परि व्वाए, अज्जाविणसुपासा पासावच्चेज्जा आगमेस्साए उसप्पिणीए चाउज्जामं धम्मं प न्नविचा सिज्झिहिंति, जाव अंतकाहिंति ॥ ४१ ॥ एसणं अज्जो सेणिए राया भिंभि सारे कालमासे कालकिच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए सीमंतए नरए चउरासीइ

नाम १ कृष्णवासुदेव २ रामबलदेव ३ उदक पेढाल विद्याधरका पुत्र ४ पाहिल ५ शतक गाथापति ६ दारुक ७ सुभद्रा साध्वीका पुत्र सत्यकी ८ सुलासास भविशाध पाया हुवा अम्बड सन्यासी और ९ श्री पार्श्वनाथ स्वामी की शिष्या सुपार्श्वा ये नव अप्प चार महाव्रत रूप धर्म की प्ररूपणा कर के मोक्ष में जावेंगे यावत् संसारका अंत करेंगे ॥ ४२ ॥ अब आगे उत्सर्पिणी काल में जो प्रथम तीर्थंकर श्री पद्मनाभ स्वामी होवेंगे उनका विस्तार कहते हैं अहो आर्यो! श्रेणिक राजा कि जिसका अपर नाम भिंभसार

उतद्वार नगर में म० आभ्यंतर बा० बाहिर भा० भार प्रमाण सो० सोल कु० कुंभ प्रमाण सोल प० पद्म की व्रषा र० रत्नकी वृषा हा० होवेगी त० तब त० उस दा० पुत्रके अ० मातापिता इ० इग्यारह दिवस वि० व्यतीत हुवे जा० यावत् बा० बारह दि० दिवस में ए० ऐसारूप गो० गौण गु० गुणनिष्पन्न ना० नाम का० करेंगे ज० जब अ० मुझ इ० यह दा० पुत्र जा० उत्पन्न हुवा स समय में स० शतद्वार म० नगर में म आभ्यंतर बा० बाहिर भा० भार प्रमाण कु० कुंभ प्रमाण प० पद्म वृषा र० रत्नवृषा वु० वर्षी त० इसलिय हा० हमारे अ० हमारा इ० इस दा० पुत्रका ना० नाम म० महापद्म त० तब त० उस दा० पुत्रके अ० मातापिता न० नाम का० करेंगे म० महापद्म म० महापद्म पुत्रको म० मातापिता सा० साधिक अ० आठ

दिवसे विइक्कंते जाव बारिसाह दिवसे अयमेयारूवं गोणं गुणनिप्फन्नं नामधिज्जं काहिंति जम्हाणं अम्हं इमंसि दारगंसि जायंसि समाणंसि सयदुवारे नगरे सब्भिंतर बाहिरिए भारग्गसोय कुंभग्गसोय पउमवासेय रयणवासे यवुट्ठे, त होउ ण अम्हं इमस्स दारगस्स नामधिज्जं महापउमे। तएण तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधिज्जं काहिंति महापउम २ त्ति ॥ तएण महापउमं दारगं अम्मापियरो साइरेगट्ठवास जायगं

विपक्ष से उन को अभिषेक करेंगे और राजा बनावेंगे महाहिमवंत मलय मेरु राजा की समान अपना राज्य करते हुवे विचरेंगे उन महापद्म राजा को पूर्णभद्र व माणभद्र नामक दोनों देवता

ना० वर्षा जा० आनकर रा० राज्याभिषेकमे अ०सिंचन करेंगे त०तद। रा० राजा भ० होगा म०महा हि० हिम वन्त म० मलय मे० मरु रा० राजा का व० वर्णन जा० यावत् र० राज्यको प० विस्तार कर्ता वि० रहेगा त० उस म० महापद्म र० राजा को अ० अन्यदा क० कदापि दो० दोदेव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महासुखी से० सेना क० कर्म क० करेंगे पु० पूर्णभद्र मा० माणिभद्र स शतद्वार नगर में ब बहुत रा राजेश्वर त० तलवर मां० माडंबिक को० कौटुम्बिक इ व्यवहारी से० शेठ से० सेनापति स० सार्थवाह प० प्रमुख अ० अन्योन्य स० शब्द करेंगे ए ऐसे व० करेंगे ज० जब दे० देवानुप्रिय म० महापद्म र० राजाका दो० दो देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महासुखी से० सेवाकर्म क० करते हैं पु० पूर्णभद्र मा०

जाणिचा गयाभिसेएणं आभिसिंचिर्हिति । सेण तत्थ राया भविस्सइ। महया हिमवंत मलयमदर रायवन्नओ जाव रज्ज पसासेमाणे विहरिस्सइ ॥ तएणं तस्स महापउमस्स रन्नो अन्नयाकयाइ दो देवा महिड्डिया जाव महेसक्खा सेणाकम्म कार्हिति त० पुन्नभद्देय माणिभद्देय तएणं सयदुवारे बहवे राइसर तलवर माडंबिय, कोडुंबिय, इब्भ, सेट्ठि, सेणावइ, सत्थवाहप्पभिईओ अन्नमन्न सद्दावेहिति, एवं वइस्संति जम्हाणं

सेवा करेंगे जिससे शतद्वार नगर के राज, राजेश्वर, तलवर माडंबीय, शेठ, सेनापति, गाथापति वगैरह परस्पर ऐसा वार्तालाप करेंगे कि अहो देवानुप्रिय ! हमारे महापद्म राजा को महर्द्धिक यावत बहुत सुखके मालिक

नगरमें प० बहुत ई० रामेश्वर त० तलवर जा० यावत् अ० अन्योन्य स० बोलेंगे न० कहेंगे दे० देवानुप्रिय अ० हमार दे० देवसेन राजा को से० श्वेत म० शंखतल वि० विमल स० सरस च० चार दंतवाला ह० हस्तिरत्न स० उत्पन्न हुवा हो० होवा म हमारा दे० देवसेन राजा का त० तीसरा ना० नाम वि० विमलवाहन त० तब दे० देवसेन र० राजा का त० तीसरा ना० नाम भ० होगा वि० विमलवाहन स

चउदंत हत्थिरयणे समुप्पज्जिहिंति । तएण से देवसेणे राया त सेयसंखतलविमल सं-
निकासं चउद्दत हत्थिरयणं दुरूढे समाणे सयदुवार नगर मज्झंमज्झेणं अभिक्खणं २
अइज्जाहि णिज्जाहिय । तएण सयदुवारे नगरे बहवे ईसरतलवर जाव अन्नमन्नं
सद्दाविहिंति एव वइस्साते, जम्हाण देवाणुप्पिया अम्ह देवसेणस्स रण्णो सेतसंख
तलविमल सन्निकासे चउद्दंत हत्थिरयणे समुप्पन्नेय, होउ ण अम्हंदेवाणुप्पिया देवसे-
णस्सरण्णो तच्चेवि नामधिज्जे विमलवाहणे, । तएणं तस्स देवसेणस्स रण्णो तच्चे नाम

प्राप्त हुआ है इसलिये श्री देवसेन राजाका तीसरा नाम विमलवाहन होगा अब विमलवाहन राजा तीस वर्ष पर्यंत गृहस्थ वास में रहेंगे और मातापिता देवलोक गये पीछे बडे पुरुषों की अनुज्ञा लेकर शरदऋतु में स्वयं संबुद्ध बनेंगे अर्थात् मोक्ष मार्ग में प्रवर्तेंगे उस समय लोकान्तिक देव जीताचार अनुसार इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोहर, मनोज्ञ, उदार, कल्याणकारी, निरुपद्रव, धन्यकारी व मंगलकारी वचनों से

क पात्र मु० मुक्त तो० पानी ज० जैसे भा० भावना में जा० यावत् सु० सुहुव हु० हुताशन त० तेजसे ज० उत्पन्न कं० कांस्य स० शंख नी जीव ग० गगन वा० वायु सा० शरद के स सलिल पु० पुष्कर प० पत्र कु० कूर्म वि० विहग ख० खड्ग भा० भारंड कुं० कुंजर व० वृषभ सी० सिंह न० पर्वत सा० सागर भ० मक्षोभ चं० चंद्र सू० सूर्य क० कनक व० वसुंधरा सु० सुहुत हु हुताशन न० नहीं है भ० भगवन्त को क० कहां से प० प्रतिबंध भ० होवे से० वह प० प्रतिबंध च० चार प्रकार का प० प्ररूपा पो० पावस उ० भवग्रह प प्रतीत जं० जो २ दि० दिशा में इ० इच्छते हैं तं उस २ दि० दिशामें अ०

थणा समिए, उच्चार पासवण खेलजल्लसंघयणपरिट्ठावणिया समिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्तिंदिए, गुत्तबंभयारी, अममे, अकिंचणे, छिन्नगंथे, निरूवलेवे, कंसपाइव मुक्कतोए, जहा भावणाए, जाव सुहुयहुयासणे तिवा तेयसाजलंते, कंसे, संखे, जीवे, गगणे, वातेय सारए सलिले, पुक्खरपत्ते, कुंमे, विहग, खग्गेय, भारंडे, कुंजरे, वसहे, सीहे, नगराया

निर्लेपी ८ कूर्म जैसे गुप्तेन्द्रिय ९ पक्षीकी तरह अप्रतिबंधी १० गेंडेके शृंगकी तरह एकाकी ११ भारंड पक्षीकी तरह अप्रमादी १२ हस्तिकी तरह शूर १३ वृषभ जैसे धीर १४ सिंहकी तरह साहसिक १५ मेरु जैसे निश्चल १६ सागर समान अक्षुब्ध १७ चंद्र जैसे शीतल १८ सूर्यकी समान तेजस्वी १९ सुवर्ण की समान

अप्रतिबद्ध सु० शुचिभूत ल० लघुभूत अनुमअन्य सं० संयम से त० तपसे अ० आत्मा को भा० भावता वि विचरेंगे भ० भगवन्त को अ० अनुत्तर ना ज्ञान अ० अनुत्तर द० दर्शन अ० अनुत्तर च० चारित्र वि० विहार से अ० ऋजुता मा० मृदुता ला० लघुता ख० क्षमा मु० मुक्ति गु० गुप्ति स० सत्य स० सयम त० तपगुण सु० सुचारित्र सा० शौच वि० विज्ञान फ० फल प० परिनिर्वाण म० मार्ग में भा० भावते झा० ध्यानान्तर में प० वर्तते को अ० अनन्त अनुत्तर नि० निर्व्याघात ना० यावत् के०

घेव, सागरमक्खोभे, चंदे, सूरे, कणगे, वसुंधराखेव, सुहुयहुयासणे ॥ नात्थिणं तस्स भगवतरस कत्थइ पडिबंधे भवइ, सेयपडिबंधे चउव्विहे प० त० अंडएइवा, पोयएइवा, उग्गहेइवा, पग्गहिएइवा, जंण जंण दिसं इच्छइ तणंतण दिसं अपडिबद्धे सुइभूए, लघुभूए अणुप्पगंथे, संजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरिस्सइ ।तस्सण भगवतस्स

कीट रहित २० पृथ्वीकी तरह समभावी २१ हुताशन की तरह देदीप्यमान अण्डज, पोतज, अवग्रह और प्रग्रहीत इन चार प्रकारके प्रतिबंध में से किसी प्रकारका प्रतिबंध भगवंत को नहीं है जिस दिशामें जानेकी इच्छाकरे उस दिशामें ममत्व रहित बनकर संयम व तपसे आत्मा के भाव में रहे हुवे विचरते हैं इस तरह विहार करते बारह वर्ष व्यतीत होकर तेरहवे वर्षके तेरहवे पक्षके अन्तर में गर्भोपम प्रधानस्थान,

रागबंधन दो० द्वेषबंधन म महापद्म अ० अरिहंत स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को दु० दोप्रकार का ब० बंधन प० प्ररूपेंगे प० रागबंधन दो० द्वेषबंधन अ० आर्य स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को त० तीनदंड म० मनदंड म० महापद्म स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को त० तीन दं० दंड प प्ररूपेंगे म० मनदंड ए० इस अ० अभिलाप मे च० चार कषाय को० क्रोध कषाय प० पांच कामगुण स० शब्द छ० छजीवनिकाय पु पृथ्वी काय जा० यावत् त० त्रसकाय ए० इस अ० अभिलाप से स० सात भ० भयस्थान अ० आठ

से जहा नामए अज्जो मए समणाणं णिग्गंथाणं एगे आरंभट्ठाणे प० एवामेव महापउ मेवि अरहा समणाणं निग्गंथाणं एगं आरंभट्ठाणं पन्नवेहिंति, सेजहानामए अज्जो मए समणाणं णिग्गंथाणं दुविहे बंधणे प० तं० पेज्जबंधणेय, दोसबंधणेय एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं दुविहं बंधणं पन्नवेहिंति तं० पेज्जबंधणंच दोसबंधणं च। सेजहा नामए अज्जोमए समणाणं णिग्गंथाणं तओदंडा प० तं० मणदंडे वयदंडे का

को पांच महाव्रत, पचीस भावना व छजीव निकाय रूप धर्मकी देशना करते हुवे विचरेंगे अहो आर्यो! जैसे मैंने श्रमण निर्ग्रंथ को आरंभका स्थानक कहा वैसे ही श्री महापद्म अरिहंत श्रमण निर्ग्रंथ को कहेंगे जैसे मैंने रागबंधन नामक व द्वेषबंधन नामक दोबंधन कहे वैसे ही पद्मनाभ अरिहंत भी दो प्रकार के बंधन कहेंगे जैसे मैंने मनदंडादि तीन दंड, क्रोधादि चार कषाय, काम के पांच गुण, छजीव निकाय, सात

म० मद्स्थान म० नव ब० ब्रह्मचर्य गुप्ति द० दश प्रकार का स० श्रमण धर्म जा० यावत् ते० तेत्तीस अ० असातना अ० आर्य म० मैंने स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ न० नग्नभाव मु० मुंडभाव अ० स्नान रहित अ० दातन रहित अ० छत्ररहित अ० पाइन रहित भू० भूमि शैय्या फ० पाट शैय्या क० काष्ट शैय्या क० केश लोच ब० ब्रह्मचर्य प० परगृह प्रवेश ल० लब्ध अ० अलब्ध वि० वृत्ति प० प्ररूपी म० महापद्म अ० अरिहंत स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को ण० नग्नभाव जा० यावत् ल० लब्ध अ० अलब्ध नि० वृत्ति प० प्ररूपेंगे म० आय म० मैंने स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ आ० आधाक

यदंड, एवामेव महापउमेवि समणाण निग्गथाणं तओदंडे पण्णवेहिंति तं० मणोदंड ३। सेजहा नामए एएण अभिलावेण चत्तारि कसाया प० तं० कोह कसाए ४। पंचकामगुणा प० तं० सद्दा ५। छज्जीवनिकाया प० तं० पुढविकाइया जाव तसकाइया, एवामेव जाव तस काइया। सेजहा नामए एएण अभिलावेण सत्तभयट्ठाणा प० एवामेव महापउमवि अरहा स मणाण निग्गथाण सत्तभयट्ठाणे पन्नवेहिंति। एव अट्ठमयट्ठाणे, णव बंभचेरगुत्तीओ, दसविहे समणधम्मे एव जाव तेत्तीसमासातणाओत्ति। सेजहानामए अज्जोमए समणाण निग्गथाण नग्गभावे, मुंडभावे, अण्हाणए, अदंतवणे, अच्छत्तए, अणुवाहणए

भयके स्थानक आठ मद्स्थानक, नव ब्रह्मचर्य की गुप्ति; दशप्रकारका यतिधर्म यावत् तेत्तीस असातना कही वैसे ही श्री महापद्म स्वामी कहेंगे और भी श्रमण निग्रन्थको नग्नभाव मुंडभाव, स्नान नहीं करना, छत्र नहीं

कर्मीक उ० उद्देशिक मि० मिश्रजात अ० साधु केलिये पू० पूतिकर्म की० कीया हुवा पा० मांगकर लाया अ० लायाहुवा म० एक कोरेसे अ० सामालाया हुवा कं० अग्निका भक्त पा० दु० दुर्भिक्ष भक्त ग ग्लान भक्त व० वद्दलभक्त पा० भतिथि भक्त मू० मूल भोजन कं० कंद भोजन फ० फल भोजन बी० बीज भोजन ह० हरित भोजन प० मतिपक्षकिया म० महापव म० मरिहत म० श्रमण नि० निर्ग्रंथ आ० आधाकर्मी अ० पावत ह० हरित भोजन प० भतिसेवेंगे अ० आर्य म० मैंने स० श्रमणको प० पांच महाव्रत स० प्रतिक्रमण म०

भूमिसेज्जा, फलगसेज्जा, कट्ठसेज्जा, केसलोए बभचेरवासे परघरप्पवेसे लद्धावलद्ध वित्तीओजाव पण्णत्ताओ एवामेव महापउमेवि अरहा समणाण णिग्गथाण नग्गभावे जाव लद्धावलद्ध वित्तीओ जाव पन्नवेहिंति। से जहा णामए अज्जो मए समणाण निग्गथाणं आहाकम्मिएइवा, उद्देसिएइवा, मीसजाएइवा, अज्झोयरएइवा, पूइए कीए पामिच्चे अच्छिज्जे अणिसट्ठे, अभिहडेइवा, कंतारभत्तेइवा दुब्भिक्खभत्तेइवा, गिलाणभत्तेइवा वद्दलि-यभत्तेइवा, पाहुणगभत्तेइवा, मूलभोयणेइवा, कंदभोयणेइवा, फलभोयणेइवा, बीयभोयणेइवा,

रखना, पगरखी नहीं पहिनना, भूमिशैय्या, केशलोच, ब्रह्मचर्यपालन अन्य के गृह में भिक्षार्थ जाना, माना अमाना आहार की वृत्ति वगैरह जैसे मैंने कहा है वैसे ही महापद्म अरिहंत भी कहेंगे अहो आर्यो श्रमण निर्ग्रंथ को आधाकर्मी, उद्देसिक-साधु आप जान ज्यादा बनाया हुवा, पूतिकर्म वाला, मोलळीया हुवा,

अचेलक धर्म प०भरूपा म०महापद्म अ०भरिहंत म०श्रमण नि०निर्ग्रंथको पं०पंचमहाव्रत सा०यावत् म० अ चेलक धर्म प० मरूपेंगे अ० आर्य प० पांच अनुव्रत । ।। । शिक्षाव्रत दु० बारह प्रकार का सा० श्रावक धर्म प० महापद्म अ० भरिहंत प पांच अनुव्रत प न । श्रावक धर्म प० मरूपेंगे अ० आर्य स० श्रमण को सि० शय्यान्तरपिंड रा राजपिंड । आगपथ पीया म महापद्म अ० भरिहंत सि०

हरियमोयणेइवा पडिसिद्धे, एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गथाण आहाक म्मियवा जाव हरियमोयणंवा पडिसेहिस्सइ । स जहा नामए अज्जो मए समणाणं पंच महव्वइए सपडिक्कमणे अचेलए धम्मे प० एवामेव महापउमेवि अरहा समणाण निग्गं थाण पंचमहव्वइय जाव अचेलगधम्म पन्नविस्सइ ॥ स जहा नामए अज्जोमए पंचाणु व्वइए सत्तसिक्खावइए दुवालसविहे सावगधम्मे प० एवामेव महापउमेवि अरहा पंचाणुव्वइयं जाव सावगधम्मं पण्णविस्सति । सजहानामए अज्जो मए समणाणं सिज्जा

रधीना सीयाहुवा, छीनकर सीयाहुवा, मालिक की रजा बिना लिया हुवा, सन्मुख लाकर दिया हुवा मकान में रहनेका करार किया हुवा, दुर्भिक्ष के लिये किया रोगी के लिये किया, दुष्काल के लिये किया हुवा, साधुने को जिमाने के लिये किया हुवा और ज न -हीं भोगवा हुवा, सचित मूलका भोजन, सचित कंद, सचित फल, बीज, हरितकाय वगैरह जैसे मैंने निषेध किए हैं वैसे ही श्री महापद्म तीर्थंकर

गयान्तरपिंड रा० राजपिंड प० प्रतिषेध करेंगे, अ० आर्य प०पुत्र न०नवगण इ०इग्यारह गणधर म० महापद्म अ० अरिहंत को न० नवगण इ० इग्यारह गणधर भ० होंगे अ० आप अ० में ती० तीसवर्ष अ० अगार में र० रहकर मु० मुण्डहुवा जा० यावत् प० प्रव्रजित हुवा दु० द्वादश संवत्सर ते० तेरह प पक्ष छ० छद्मस्थ प० पर्याय पा पालकर ते० तेरहने प० पक्षमें ऊ० ऊने ती० तीसवर्ष के० केवलीप पर्याय पा०

यरपिंडेइवा, रायपिंडेइवा पडिसिद्धे, एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं सिज्जाय रपिंडइवा रायपिंडेइया पडिसेहिंति । सेजहानामए अज्जोमए नवगणा इक्कारस गण हरा, एवामेव महापउमस्सवि अरहओ नवगणा इक्कारसगणहरा भविस्सति । से जहा नामएअज्जा अहं तीस वासाइं अगारवासमज्झेवसित्ता मुंडेभवित्ता जाव पव्वइए दु- वालस संवच्छराइं तेरसपक्खा छउमत्थ परियाग पाउणित्ता तेरसहिं पक्खेहिं ऊणगाइं तीसंवासाइं केवलिपरियाग पाउणित्ता बायालीस संवच्छराइं सामन्नपरियाग

उक्त बातोंका निषेध करेंगे अहो आर्या ! जैसे मैंने श्रमण निर्ग्रंथ का प्रतिक्रमण सहित पंचमहाव्रत रूप अचेलक धर्म, पांच अणुव्रत, सात शिक्षाव्रत रूप बारह प्रकारका श्रावक धर्म कहा वैसे ही श्री पद्मनाभ तीर्थंकर करेंगे अहो आर्यो ! जैसे मैंने शय्यातरपिंड व राजपिंडका श्रमण निर्ग्रंथो को प्रतिषेध किया वैसे ही श्री महापद्म अरिहंत भी करेंगे जैसे मेरे नव गण और इग्यारह गणधर हैं वैसे ही महापद्म

पालकर चा० चौयालीस स० सवत्सर सा सामान्य पर्याय पा० पालकर चा० बहोत्तर वा० वर्ष स० सर्व आयुष्य पा० पालकर सि० सिद्ध होऊंगा जा० यावत् स० सर्व दुःख का अं० अंतकरूंगा ए० ऐसेही म० महापद्म अ० अरिहंत सी० शील स० मारिसाचार अ० अरिहंत ति० तीर्थंकर म० महावीर का सी० सील स० सरिसाचार हो० होगा अ० अरिहंत म० महापद्म के ॥ ५० ॥ न० नवनक्षत्र चं० चन्द्रकी

पाउणित्ता बावत्तरिवासाई सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिस्सं जाव सव्वदुक्खाणं अंतंकरेस्सं, एवामेव महापउमेवि अरहा तीसंवासाइं अगारवासमज्झेवसित्ता जाव पव्वइहिति, दुवालससवच्छराइं बावत्तरिवासाइं सव्व उयं पालइत्ता सिज्झिहिति जाव सव्वदु-क्खाण मंतंकाहिति (गाथा) जस्सील समायारो अरहा तित्थकरो ॥ महावीरो, तस्सील समायारो, होइउ अरहामहापउमे (१) ॥ ५० ॥ नवनक्खत्ता चंदस्स पच्छंभागा

अरिहंत को नवगच्छ व अग्यारह गणधर होवेंगे अहो आर्यो! जैसे मैं तीस वर्ष पर्यंत गृहस्थावास में रहकर मुंड हुआ यावत् दीक्षा अंगीकार की, बारहवर्ष और तेरह पक्षतक छद्मस्थ पर्याय, तीसवर्षतक केवल पर्याय पालकर बैयालीस वर्षपर्यंत चारित्र की पर्याय पालके, सब मीलकर बहोत्तर वर्षका आयुष्य पालकर सिद्ध होऊंगा यावत् सब दुःखका अंत करुंगा वैसे ही महापद्म तीसवर्ष पर्यंत गृहवास में यावत् दीक्षालेकर बहोत्तर वर्ष में सिद्ध होवेंगे और जो शील आचार महावीर भगवंतका है सोही शील आचार भी महापद्म स्वामी को होगा ॥ ५० ॥ नव नक्षत्र चंद्रमा के पश्चिम भाग में कहे हैं १ अभिजित २

प० पाछिममें अ० अभिजित स० श्रवण ध० धनिष्टा रे० रेवती अ० अश्विनी मि० मृगसर पु० पुष्य ह० हस्त चि० चित्रा ॥ ५१ ॥ आ० आणत पा० प्राणत आ० आरण अ० अच्युत क० देवलोक के वि० विमान न० नवयोजन स० सत उ० ऊंचे उ० ऊंचपने ॥ ५२ ॥ वि० विमलवाहन कु० कुलकर न० नव ध० धनुष्य उ० ऊंचे उ० ऊंचपने हो० थे ॥ ५३ ॥ उ० ऋषभदेव अ० अरिहंत को० कोशली इ० इस उ० अवसर्पिणी में न० नव सा० सागरोपम को० कोडा कोडी वी० व्यतीतहुवे ति० तीर्थ प० प्रवर्ताया

प० तं० अभिई सवण घणिट्ठाय रेवई अस्सिणी मिगासिर पूसो हत्थो चित्ताय तहा पच्छ भागा नव भवति (१) ॥ ५१ ॥ आणय पाणय आरण अच्चुएसु कप्पेसु विमाणा नवजोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ ५२ ॥ विमलवाहणेणं कुलगरे नवधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥५३॥ उसभेणं अरहा कोसलिएणं इमीसे उस्स-प्पिणीए नवहिं सागरोवम कोडाकोडीहिं वीइक्कंताहिं तित्थे पव्वत्तिए ॥ ५४ ॥

श्रवण १ धनिष्टा ४ रेवती ५ अश्विनी ६ मृगसर ७ पुष्य ८ हस्त ९ चित्रा ॥ ५१ ॥ आणत, प्राणत, आरण और अच्युत देवलोक में नवसो योजन के ऊंचे विमान कहे हैं ॥ ५२ ॥ विमलवाहन कुलकर की नवसो धनुष्य की अवगाहना थी ॥ ५३ ॥ इस अवसर्पिणी के नव कोडा कोड सागर व्यतीत हुवे पीछे श्री कोशली ऋषभ देव स्वामीने तीर्थ प्रवर्ताया ॥ ५४ ॥ घनदंत, लष्टदंत गूढदंत शुद्धदंत ये चारों अन्तरद्वीप

॥ ... ॥ ... ... ०० लष्टदंत गू० गूढदंत सु० सुद्धदंत द्वीप न० नव जो० शतयोजन आ० लंबे वि० चौडे ॥ ५५ ॥ सु० शुक्र म० महाग्रहको न० नववीथि ह० हय ग० गज । नाग व वृषभ गो० गो उ० उरग अ० अज मि मृग वे० वैश्वानर ॥ ५६ ॥ न० नव प्रकार का ना० नारुपाय मे० वेदनीय कर्म इ० स्त्रीवेद पु० पुरुषवेद न० नपुंसकवेद हा० हास्य र० रति अ० अरति भ भय सो० शोक दु० दुगंच्छा ॥ ५७ ॥ च० चतुरेन्द्रिय की न० नव कु० कुलकोडी जा० याति प० प्रमुख स०

घणदंत लट्ठदंत गूढदंत सुद्धदंत दीवाणदीवा णवजोयणसयाई आयाम विक्खंभेणं प० ॥५५॥ सुक्कस्सण महग्गहस्स नववीहीओ पण्णत्ताओ तंजहा हयवीही, गयवीही नागवीही, वसभवीही, गोवीही, उरगवीही, अयवीही, मियवीही, वेसाणवीही ॥ ५६ ॥ नवविहे नोकसाय वेयणिज्जेकम्मे प० तं० इत्थीवेए, पुरिसवेए, नपुंसक-वेए, हासे, रई, अरई, भए, सोगे, दुगंछा ॥ ५७ ॥चउरिंदियाण नव जाइकुल

नवसो योजन के लम्बे व चौडे हैं ॥ ५५ ॥ शुक्र नामक महाग्रह की नव विथि कहीं १ अश्वविथि २ गज विथि ३ नागविथि ४ वृषभविथि ५ गोविथि ६ उरगविथि ७ अजविथि ८ मृगविथि और ९ वैश्वानरविथि ॥ ५६ ॥ नो कषाय मोहनीय कर्म के नवभेद कहे हैं १ स्त्रीवेद २ पुरुषवेद ३ नपुंसक वेद ४ हास्य ५

शतसहस्र ॥ ४८ ॥ भु० भुजग प० परिसर्प थ० स्थलचर प० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच याने की न० नवजाति कु० कुलकोडी जो० योनि प० प्रमुख स० शतसहस्र ॥ ५९ ॥ जी० जीवने न० नवस्थान निवर्तित पो० पुद्गल पा० पापकर्म पने चि० इकठेकीये चि० इकठे करता है चि० इकठा करेगा पु० पृथ्वीकाय नि० निवर्तित जा० यावत् पंचेन्द्रिय नि० निवर्तित ए० ऐसे चि० चिण उ० उपचिन जा० यावत् नि० निर्जरा ॥ ६० ॥ न० नवप्रदेशी खं० स्कंध अ० अनंत ॥ ६१ ॥ न० नवप्रदेशी अवगाहा पु० पुद्गल अ०

कोडिजोणि पमुह सयसहस्सा प० ॥ ५८ ॥ भुयग परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं नवजाइ कुलकोडि जोणि पमुह सयसहस्सा प० ॥ ५९ ॥ जीवाणं नवट्ठाण निव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसुवा चिणंतिवा, चिणिस्संतिवा, ॥ पुढविकाइय निव्वत्तिए जाव पंचिंदिय निव्वत्तिए। एवंचिण उवचिण जाव निज्जराचेव ॥ ६० ॥ नवपएसियाखंधा अणंता पण्णत्ता ॥६१॥ नवपएसोगाढा

रति ६ अरति ९ भय ८ शोक ९ दुगंच्छा ॥ ५७ ॥ चतुरेन्द्रिय जाति की नव लाख कुल कोडी कही ॥५८॥ भुजपर सर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की नव लाख कुल कोडी कही ॥ ६० ॥ जीवने नव स्थान निवर्तित पुद्गल पापकर्म पने संचित किये, करते हैं और करेंगे पृथ्वीकाय निवर्तित यावत् त्रसकाय निवर्तित ऐसेही चिन उपचिन यावत् निर्जरातक जानना ॥ ६० ॥ नव प्रदेशी स्कंध अनंत कहे ॥ ६१ ॥ नवप्रदेश अव

भनत ॥ ९० ॥ न० नव गु० गुण लु० रुक्ष पुद्गल अ० अनंते प० प्ररूप ॥ ९१ ॥

पुग्गला अणंता पण्णत्ता ॥ ९२ ॥ नवगुण लुक्खा पुग्गला अनंता पण्णत्ता ॥ ९२ ॥ इइ नवमट्ठाण सम्मत्तं

गाम पुद्गल अभय ॥ ९२ ॥ नवगुणरुक्ष पुद्गलअनंत कहे ॥ ९१ ॥ यह नवमा स्थानक समाप्त हुवा अब आगे दशवा स्थानक कहते हैं

जी० जीव भ० होंगे ए० एक लो० लोकस्थिति न० नहीं प० ऐसा भू० हुवा त० त्रसप्राणी वु० विच्छेद होंगे था० स्थावर प्राणी भ० होंगे था० स्थावरप्राणी वु० विच्छेद होंगे त० त्रसप्राणी भ० होंगे ए० एक लो० लोकस्थिति न० नहीं प० ऐसा भू० हुवा जं० जो लो० लोक अ० अलोक भ० होगा अ० अलोक लो० लोक भ० होगा ए० एक लो० लोकस्थिति न० नहीं प० ऐसा भू० हुवा० जं० जो लो० लोक अ० अलोक में प० प्रवेशकरेगा अ० अलोक लो० लोकमें प० प्रवेशकरेगा ए० एक लो० लोक

णय एय भूयंवा भव्वंवा भविस्सइवा जं जीवा अजीवा भविस्संति, अजीवा जीवा भविस्संति, एय एगा लोगट्ठिई प० । णयएयं भूयंवा भव्वंवा भविस्सइवा जतसा पाणा वुच्छिज्जिस्संति थावरापाणा भविस्संति, थावरापाणा वुच्छिज्जिस्संति तसा पाणा भविस्संति एवं एगा लोगट्ठिइ प० । नय एय भूयं ३ जं लोए अलोगे भविस्सइ, अलोए लोए भविस्सइ एवंएगालोगट्ठिई प० । न एय भूयंवा ३ जं लोए अलोए पविस्सइ अलोएवा

अथवा सब स्थावर का विच्छेद होगा और त्रसरहजायेंगे यह एक लोकस्थिति ६ ऐसा नहीं हुवा है, नहीं होता है और नहीं होगा कि लोकका अलोक बनजाय या अलोक का लोक बन जाय यह एक लोकस्थिति ७ ऐसा नहीं हुवा है नहीं होता है और नहीं होवेगा कि लोक में अलोक आयगा या अलोक

स्थिति जा० जहां १ लो० लोक ता० तहां १ जी० जीव जा० जहां २ जी० जीव ता० तहां १ लो० लोक ए० एक लो० लोकस्थिति जा० जहां २ जीवकी पु० पुद्गलकी ग० गतिपर्याय ता० तहां २ लो० लोक जा० जहां १ लो० लोक ता० तहां १ जी० जीवकी पु० पुद्गलकी ग० गतिपर्याय ए० एक लो० लोकस्थिति स० सर्व लो० लोकके अंतमें अ० अबद्ध पा० पार्श्व पु० स्पृष्ट पु० पुद्गल लु० रुक्षपना क० करते हैं जे० जिससे जी० जीव पु० पुद्गल नो० नहीं स० समर्थ है ब० बाहिर लो० लोकके ग०

लोए पविस्सइ एवं एगा लोगट्ठिई प० ॥ जाव जाव लोए ताव ताव जीवा जाव जाव जीवा ताव ताव लोए एवं एगालोगट्ठिई ॥ जाव जाव जीवाण य पुग्गलाण य गइपरियाए ताव ताव लोए जाव जाव लोए ताव ताव जीवाण य पुग्गलाण य, गइपरियाए एवं एगा लोगट्ठिई ॥ सव्वेसुविणं लोगंतेसु अबद्ध पासपुट्ठा पुग्गला लुक्खत्ताए कज्जंति जेण जीवाय पुग्गलाय नोसंचायंति बाहिया लोगंतागमणत्ताए एवं एगालोगट्ठिई प० ॥ ९ ॥

में लोक जावेगा ८ जब तक लोक है वहांतक जीव है और जहांतक जीव है वहांतक लोक है ९ जहां तक जीव व पुद्गल की गति पर्याय है वहांतक लोक है और जहांतक लोक है वहांतक जीव पुद्गल की गति पर्याय है और १० लोकान्त में अबद्ध पार्श्वस्पृष्ट सब परस्पर स्पर्शाये हुवे पुद्गल रुक्षपना करतेहैं जिससे जीव व पुद्गल लोकसे बाहिर जाने को समर्थ नहीं है यह एक लोक स्थिति कही ॥ १ ॥ दश

तालेको ॥ १ ॥ द० दशप्रकारका स० शब्द नी० नीहारिम पि० पिंड लु० रुक्ष भि० भिन्न ज० जर्जरित दी० दीर्घ र० ह्रस्व पु० पृथक् का० झीणा खि० घुघरी ॥ २ ॥ द० दस इं० इन्द्रियार्थ दे० देशसे ए० एक स० शब्द सु० सुने स० सर्वसे ए० एक स० शब्द सु० सुन दे० देशसे ए० एक रू० रूप पा० देखे स० सर्वसे ए० एक रू० रूप पा० देख गं० गंध र० रस फा० स्पर्श जा० यावत् स० सर्वसे ए० एक फा० स्पर्श प० वेदे द० दश इं० इन्द्रियार्थ प० वर्तमान दे० देशसे ए० एक स० शब्द सुनता

दसविहे सद्दे प० तं० नीहारि पिंडिमे लुक्खे भिन्ने जज्जरिएइय दीहे रहस्से पुहत्तेय, काकणी खिंखणिस्सरे(१)॥२॥दस इंदियत्था तीता प०त० देसेणवि एगेसद्दाइं सुणिंसु, सव्वेणविएगे सद्दाइंसुणिंसु दसेणावि एगे रूवाइं पासिंसु,सव्वेणविएगे एगेरूवाइं पासिंसुएव गंधाइं रसाइं फासाइं जाव सव्वेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदिंसु दसइंदियत्था पडुप्पन्ना प०

प्रकार का शब्द कहा है १ निहारिम सो घंटा शब्द २ पिण्डका शब्द ३ ढक्का भेरी का रुक्ष शब्द ४ भिन्न शब्द ५ झांझर का शब्द ६ दीर्घ शब्द ७ ह्रस्व शब्द ८ पृथक् शब्द सो बहुत वादित्र एक स्थान बजनेपर भिन्न २ शब्द मालूम पडे ९ झीणा मधुर शब्द सो कोकिलाका १ कंकन की घुघरियों का शब्द ॥ २ ॥ इन्द्रियों के दश विषय को सो कहते हैं १ देश में से एक शब्द सुने २ सर्व में से

हैं स० सर्वसे ए० एक स० शब्द सु० सुनता है ए० ऐसे जा० यावत् फा० स्पर्श द० दशइन्द्रियार्थ अ० अनागत दे० देशसे स० शब्द सु० सुनेगा स० सर्वसे ए० एक स० शब्द सु० सुनेगा ए० ऐसे जा० यावत् स० सर्वसे ए० एक फा० स्पर्श प० स्पर्श करेंगे ॥ १ ॥ द० दश ठा० कारनसे अ० अच्छिन्न पु० पुद्गल च० चले आ० आहार करते च० चले प० परिणमते च० चले ओ० उश्वाससेते च० चले प० परिणमाते च० चले नि निश्वाससेते च चले वे० वेदते च० चले नि० निर्जरते च० चले वि०

त० देसेणवि एगे सद्दाइं सुणेंति सव्वेणवि एगे सद्दाइ सुणेंति एवं जाव फासाइं ॥ दस इंदियत्था अणागया प० त० देसेणवि एगे सद्दाइं सुणिस्सइ सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणिस्सइ । एवं जाव सव्वेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदिस्सइ ॥ २ ॥ दसहिं ठाणेहिं अच्छिन्नेपुग्गले चलेज्जा तं० आहारिज्जमाणेवा चलेज्जा, परिणामिज्जमाणेवा चलेज्जा, ओस्ससिज्जमाणेवा चलेज्जा,परियाएज्जमाणेवा चलेज्जा निससिज्जमाणेवा चलेज्जा, वेदिज्जमाणेवा चलज्जा निज्ज

एक शब्द सुने ३ देश में से एक रूप देखे ४ सब में से एक रूप देखे ५ देशमें से एक गंध ग्रहण करे ६ सबमें से एक गंध ग्रहण करे ७ देशमें से एक रसस्वाद लेवे ८ सबमें से एक रस स्वाद लेवे ९ देशसे स्पर्श स्पर्शे और १० सबमें स्पर्श स्पर्शे ऐसे ही दश विषय वर्तमान काल व भविष्य काल आश्रित कहे हैं ॥ १ ॥ दश कारन से अच्छिन्न (शरीर व स्कंध को लगेहुवे) पुद्गल चलित होते हैं १ आहार करते २ परिणमाते ३ उश्वास लेते ४ मैथुन संज्ञासे

वैक्रेयशरीर करते च० चले स० यथाविष्ट च० चले वा० वायुपरिगमते च चले ॥ ८ ॥ द० दशस्थान
भ को० क्रोधउत्पत्ति म० मनोज्ञ स० शब्द जा० यावत् गं० गंध अ० अपहरे अ० अमनोज्ञ स०
शब्द जा० यावत् उ० दीये म० मनोज्ञ मे० मुझे स० शब्द फ० स्पर्श र० रस रू० रूप गं० गंध
भ दूरकरता है अ अमनोज्ञ स० शब्द फ० स्पर्श र० रस रू० रूप गं० गंध उ० देता है म०
मनोज्ञ स० शब्द फ० स्पर्श रू० रूप गं० गंध अ० दूरकरेगा अ अमनोज्ञ स० शब्द जा० यावत्

रिज्जमाणेवा चलेज्जा, विओविज्जमाणेवा चलेज्जा, परियारिज्जमाणेवा चलेज्जा, जक्खाइ
ट्ठेवा चलेज्जा, वातपरिगएवा चलेज्जा, ॥ ४ ॥ दसहिं ठाणेहिं कोहुप्पत्ती सिया तं०
मणुन्नाई मे सद्दाई जाव गंधाई अवहरिंसु, अमणुन्नाइ मे सद्दाइ जाव उवहरिंसु,
मणुन्नाई मे सद्दफरिसरस रूवगंधाइ अवहरइ अमणुन्नाई मे सद्दफरिसरस रूवगंधाइ उवहरइ
मणुन्नाई मे सद्दफरिसरस रूवगंधाई अवहरिस्सइ अमणुन्नाई मे सद्दाई जाव उवहरिस्सइ
मणुन्नाइ मे सद्दाई जाव गंधाइ अवहरिंसु अवहरइ अवहरिस्सइ, अमणुन्नाइ मे सद्दाइ जाव
उवहरिंसु उवहरइ उवहरिस्सइ मणुन्नामणुन्नाइ मे सद्दाइ जाव अवहरिंसु अवहरइ

परगमाते ५ लोक शरीर में वीर्यके पुद्गल निपात सेत चले ७ निर्जरते ८ वैक्रेय शरीर पने परगमाते ९
जिस को यक्षावेष्टित है उस शरीर में पुद्गल चले १० वायु के परगमने से पुद्गल चले ॥ ८ ॥ दश स्थानकमें
क्रोध की उत्पत्ति होती है १ मेरे मनोज्ञ शब्द यावत् गंध इसने ले लीया ऐसा विचार से २ मुझे अमनोज्ञ
शब्द यावत् गंध दिया ऐसा विचार से ३ मनोज्ञ शब्द यावत् गंध यह लेता है ४ अमनोज्ञ शब्द यावत्

गं० गंध उ० हरा म० मनोज्ञ स० शब्द जा० यावत् गं० गंध अ० हराकिया अ० हरकरता है अ० हरकरे गा अ० अमनोज्ञ स० शब्द जा० यावत् उ० दिया उ० देता है उ० देगा म० मनोज्ञ अ० अमनोज्ञ स० शब्द जा० यावत् अ० हराकिया अ० हरकरता है अ० हरकरेगा उ० दिया उ० देता है उ० देगा अ० मैं आ० आचार्य उ० उपाध्याय मे स० सम्यक् व० वर्तताहूं म० मुझे आ० आचार्य उ० उपाध्याय मिथ्या वि० विपरीतपन ॥ ५ ॥ द० दशप्रकारका सं० संयम पु० पृथ्वीकाय आ० अप् ते०

अवहरिस्सइ, उवहरिंसु उवहरइ उवहरिस्सइ ॥ अहंचण आयरिय उवज्झायाणं सम्मवहामि, ममचण आयरियउवज्झाया मिच्छं विपडिवन्ना ॥ ५ ॥ दसविहे सयमे प० तं० पुढविकाय सजमे, आउ—तेउ—वाउ—वणस्सइ—बेइंदिय सजमे तेइंदिय—चउ रिंदियसजमे पंचेंदियसजमे—अजीवकायसंजमे ॥६॥ दसविहे असंजमे प० त० पुढवि

गंध यह देता है ऐसा विचार मे ५ मेरे मनोज्ञ शब्द यावत् गंध मे देवेगा ६ अमनोज्ञ शब्द यावत् गंध देवेगा ७ मनोज्ञ शब्द यावत् गंध हरणाकिया करता है व करेगा ८ अमनोज्ञ शब्द यावत् गंध दिया देता है और देवेगा ९ मनोज्ञ अमनोज्ञ शब्द यावत् गंध का हरन किया, करता है और करेगा, दिया देता है देवेगा १० मैं आचार्य उपाध्याय का सम्यक् प्रकार से विनय करता हूं परंतु वे मेरे से विपरीत रहते हैं ॥ ५ ॥ दश प्रकार का संयम कहा १ पृथ्वी, अप, तेउ, वायु, वनस्पति, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय,

सनम वा० वायु व० वनस्पति बे० बेइन्द्रिय ते० तेइन्द्रिय च० चौरेन्द्रिय प० पंचेन्द्रिय अ० अजीवकाय॥३॥ द० दश प्रकार अ० असंयम पु० पृथ्वीकाय जा० यावत् अ० अजीव ॥ ७ ॥ द० दश प्रकार का सं० संवर सो० श्रोतेन्द्रिय जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रिय म० मन व० वचन का० काया उ० उपकरण सू० सुचीकुशाग्र ॥ ८ ॥ द० दश प्रकार का अ० असंवर सो० श्रोतेन्द्रिय असंवर जा० यावत सू० सुचीकुशाग्र ॥ ९ ॥ द० दश स्थान मे अ० मैं इ० ऐसा थं० मदकरे जा० जातिमद से कु० कुलमद जा० यावत् इ०

काइय असजमे जाव अजीवकाइय असंजमे ॥ ७ ॥ दसविहे संवरे प० त० सोइं दियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे, मण—वइ—काय—उवगरणसंवरे, सूई कुसग्ग संवरे ॥८॥ दसविहे असंवरे प० त० सोइंदिय असंवरे जाव सूईकुसग्ग असंवरे॥९॥ दस

पंचेन्द्रिय, और अजीव काया इन दस की सम्यक् प्रकार से यत्ना करनेसे दस प्रकार का संयम कहा जाता है ॥ ६ ॥ इन दसों की अयत्ना करने से दस प्रकार का असंयम गिना जाता है ॥ ७ ॥ दस प्रकार का संवर कहा है श्रोतेन्द्रिय संवर यावत् स्पर्शेन्द्रिय संवर मन, वचन, काया को संयममें रखे सो संवर और उपकरण सूचीकुशाग्र का यत्ना पूर्वक रखे सो दस प्रकार का संवर ॥ ८ ॥ उक्त श्रोतेन्द्रिय यावत् काया को संयम में न रखे व उपकरण और सूची कुशाग्र को अयत्ना पूर्वक रखे सो दस प्रकार का असंवर ॥ ९ ॥ दस कारन से मनुष्य मैं ही सब से अधिक हूं ऐसा मद करे जाति मद यावत् ऐश्वर्य

गं० गंध द० दूगा म० मनोज्ञ स० शब्द जा० यावत् गं० गंध अ० दूरकिया अ० दूरकरता है अ० दूरकरेगा म अमनोज्ञ स० शब्द जा० यावत् द० दिया द० देता है द० देगा म० मनोज्ञ अ० अमनोज्ञ स शब्द जा० यावत् अ० दूरकिया अ० दूरकरता है अ० दूरकरेगा द० दिया द० देता है द० देगा अ० मैं आ० आचार्य उ० उपाध्याय मे स० सम्यक् व० वर्तता हूं म० मुझे आ० आचार्य उ० उपाध्याय मिथ्या वि० विप्रतिपन्न ॥ ५ ॥ द० दशप्रकारका सं० संयम पु० पृथ्वीकाय आ० अप् ते०

अवहरिस्सइ, उवहरिंसु उवहरइ उवहरिस्सइ ॥ अहंचणं आयरिय उवज्झायाणं सम्मवट्टामि, ममचण आयरियउवज्झाया मिच्छं विपडिवन्ना ॥ ५ ॥ दसविहे संयमे प० तं० पुढविकाय सजमे, आउ—तेउ—वाउ—वणस्सइ—बेइंदिय सजमे तेइंदिय—चउरिंदियसजमे पंचेंदियसजमे—अजीवकायसंजमे ॥६॥ दसविहे असंजमे प० त० पुढवि

गंध यह देता है ऐसा विचार से ६ मेरे मनोज्ञ शब्द यावत् गंध से देवेगा ६ अमनोज्ञ शब्द यावत् गंध देवेगा ७ मनोज्ञ शब्द यावत् गंध हरणकिया करता है व करेगा ८ अमनोज्ञ शब्द यावत् गंध दिया देता है और देवेगा ९ मनोज्ञ अमनोज्ञ शब्द यावत् गंध का हरन किया, करता है और करेगा, दिया देता है देवेगा १० मैं आचार्य उपाध्याय का सम्यक् प्रकार से विनय करता हूं परंतु वे मेरे से विपरीत रहते हैं ॥ ५ ॥ दश प्रकार का संयम कहा १ पृथ्वी अप, तेउ, वायु, वनस्पति, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरेन्द्रिय,

ई० ईया असमिति मा० यावत् उ० वडीनीत पा० लघुनीत से० खेल सिं० सिंघाण पा० पारिठावणिया अ० असमिति ॥ १२ ॥ द० दस प्रकार प० प्रव्रज्या छं० छंद से रो० रोष से प० दारिद्यता से सु० स्वप्न से प० प्रतिज्ञा से मा० पूर्व भवयाद आने से रो० रोग से अ० अनादर से दे० देवघोष स व० पुत्रादिसंबंध से ॥ १३ ॥ द० दस प्रकार का स श्रमण धर्म खं० क्षमा मु० मुक्ति अ० ऋजुता म०मृदुता

प० पाणाइवाए जाव परिग्गहरियाअसमिई जाव उचार पासवण खेल सिंघाणग पारिठावणिया समिइ ॥ १२ ॥ दसविहा पव्वज्जा प० तं० छंदारोसा परिजुण्णा, सुविणा पडिस्सुयाचेव, सारणियारोगिणिया, अणाढिया देवसण्णत्ती ॥ १ ॥ वच्छानुबंधिया ॥ १३ ॥ दसविहे समण धम्मे प० तं० खंती मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे, सच्चे,

असमाधि करी प्राणातिपात यावत् परिग्रह में रमण करना ईर्या असमिति यावत् उचार प्रसवण खेल जल परिस्थापनीय असमिति ॥ १२ ॥ दश प्रकार की दीक्षा करी १ छंद से भवदेव वत् २ रोष से शिवभूति वत् ३ दारिद्रपतासे मावारी वत (कृष्णका पूर्वभव) ४ स्वप्न से पुष्पचूलवत् ५ प्रतिज्ञा से जंबू वत् ६ पूर्वभवका स्मरण होने से श्री मल्लीनाथ जीके षट्मित्रवत् ७ रोग से सनत्कुमारवत् ८ अनादर से नंदीषेण(वसुदेव का पूर्वभव वत्)९ देवता के प्रतिबोध से मेतार्य कुमारवत १० पुत्रादि संबंध से भगु पुरोहितवत् ॥ १३ ॥ दश प्रकार का साधु धर्म कहा है १ क्षमा २ निर्लोभता ३ ऋजुता ४ मृदुता

ला० लघुता म० सत्य सं० संयम त० तप चि० त्याग ब० ब्रह्मचर्य ॥ १४ ॥ द० दश प्रकार की वे० वैयावृत्य आ० आचार्य की उ० उपाध्याय की थे० स्थविर की त० तपस्वी की गि० ग्लानी की से० शिष्य की कु० कुल की ग० गणकी० सं० संघकी सा० स्वधर्मी की ॥ १५ ॥ द० दश प्रकार का जी० जीव परिणाम ग० गति इं० इन्द्रिय क० कषाय ले० लेश्या जो० योग उ० उपयोग ना० ज्ञान दं०

संजमे, तवे, चियाए, बम्भचेरवासे ॥ १४ ॥ दसविहे वेयावच्चे प० त० आयरिय वेयावच्चे, उवज्झाय वेयावच्चे, थेरवेयावच्चे तवस्सि वेयावच्चे, गिलाणवेयावच्चे सेहवेया वच्चे, कुलवेयावच्चे, गणवेयावच्चे, संघवेयावच्चे साहम्मियवेयावच्चे, ॥ १५ ॥ दसविह जीव परिणामे प० त० गइपरिणामे, इंदिय परिणामे, कसायपरिणामे, लस्सापरिणामे जोगपरिणामे, उवओगपरिणामे, नाणपरिणामे, दंसणपरिणामे, चरि-

६ लघुता ६ सत्य ७ संयम ८ तप ९ त्याग और १० ब्रह्मचर्य ॥ १४ ॥ दश प्रकार की वैयावृत्य कही १ आचार्य की वैयावृत्य २ उपाध्याय की ३ स्थविर की ४ तपस्वी की ५ ग्लानि की ६ शिष्य की ७ कुल की ८ गच्छ की ९ संघ की और १० स्वधर्मी की वैयावृत्य ॥ १५ ॥ दश प्रकार का जीव परिणाम १ गति २ इन्द्रिय ३ कषाय ४ लेश्या ५ योग ६ उपयोग ७ ज्ञान ८ दर्शन ९ चारित्र और १०

दृशन ग० घरिम भ० भेद ॥ १६ ॥ द० दश प्रकारका अ अजीव परीणाम बं० बंधन ग० गति ठा० संस्थान भे० भेद व० वर्ण र० रस ग० गंध फा० स्पर्श अ० अगुरुलघु स० शब्द ॥१७॥ द० दश प्रकार की अं० अंतरिक्ष अ० असज्झाय उ उल्कापात दि० दिशादाह ग० गर्जारव वि० विजली नि निघात जू० संध्याकाल ज यक्षचिन्ह धू० धूम्र म० धूंअर र० रजोघाति ॥ १८ ॥ द० दशप्रकारकी आ० उदारिक

च्चपरिणामे, वेदपरिणामे, ॥ १६ ॥ दसविहे अजीवपरिणामे प० तं० बंध-णपरिणामे, गइपरिणामे, ठाणपरिणामे, भेदपरिणाम, वन्नरस परिणामे गंधएफासपरिणामे, अगरुयलहुयसद्दपरिणाम, ॥ १७ ॥ दसविहे अंतलिक्खिए असज्झाइए प० त० उक्कावाए, दिसिदाहे, गज्जिए, विज्जुए, निग्घाए, जूयए, जक्खालित्तए धूमिए, महिया, रज्जुग्घाए ॥ १८ ॥ दसविहे ओरालिए असज्झाइए प० तं०

वेद परिणाम ॥ १६ ॥ दश प्रकार का अजीव परिणाम १ बंधन २ गति ३ संस्थान ४ भेद ५ वर्ण ६ गंध ७ रस ८ स्पर्श ९ अगुरु लघु और १० शब्द ॥ १७ ॥ दश प्रकार से आकाश की अस्वाध्याय कही १ उल्कापात २ दिशिदाहसो दशों दिशि लाल रहे ३ गर्जना ४ विद्युत् ५ निर्घात-कड़ाके ६ संध्याकाल ७ यक्षाग्नि अर्थात आकाश में यक्षों के चिन्ह ८ आकाश में धूम्र ९ धूंअर और १० रजोघाति ॥१८॥ दश

म० असज्झाय अ० अस्थि म० मांस सो० शोणित म० पिष्ठा म० स्मशान च० चंद्रग्रहण सू० सूर्य ग्रहण प० राजमरण रा० राजसंग्राम उ० उपाश्रय की अं० अंदर ओ० उदारिक स० शरीर ॥१९॥ प० पंचेन्द्रिय जी० जीव का अ० असमारंभ द० दशप्रकारका सं०संयम क० करे सो० श्रोतेन्द्रिय के सु० सुख से अ० अलगकरनहीं सो० श्रोतके दु० दुःखसे अ० असंयोग भ० होवे ए० ऐसे० जा० यावत

अट्ठि, मंसे, सोणिए, असुइसामंते, मसाण सामंते चंदोवराए, सूरोवराए, पडणे, रायवुग्गहे, उवस्सयस्स अंतो ओरालिए सरीरे ॥ १९ ॥ पंचिंदियाणं जीवाणं असमारभमाण स्स दसविहे संजमे कज्जइ तं० सोयामयाओ सुक्खाओ अववरोवित्ता भवइ, सोयामएणं दुक्खेण असंजोइत्ता भवइ, एवं जाव फासामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ ॥२०॥

प्रकार की उदारिक शरीर संबंधी अस्वाध्याय कही १ हड्डी २ मांस ३ रुधिर ४ अशुचि समीप में होवे ५ समीप में स्मशान होवे ६ चंद्रग्रहण ७ सूर्यग्रहण ८ राजाकामरण ९ राज्य संग्राम और १० उपाश्रय में जीव रहित उदारिक शरीर ॥ १९ ॥ पंचेन्द्रिय जीवों का समारंभ नहीं करने वाले को दश प्रकार का संयम कहा जाता है १ श्रोतेन्द्रिय के सुख से पृथक् होवे नहीं, श्रोतेन्द्रिय के दुःखका संयोग होवे नहीं यावत् स्पर्शेन्द्रिय के दुःख का संयोग होवे नहीं ॥ २० ॥ ऐसे ही पंचेन्द्रिय का समारंभ करनेवाले को

फा॰ स्पशके दु॰ दुःखसे अ॰ असंयाग म॰ होवे ॥ २० ॥ ए॰ ऐसे अ॰ असंयम भा॰ कहना ॥२१॥ द॰ दश सु॰ सूक्ष्म पा॰ प्राणसूक्ष्म प पनगसूक्ष्म भा॰ यावत् स॰ स्नेहसूक्ष्म ग॰ गणितसूक्ष्म भं॰ भंगसूक्ष्म ॥ २२ ॥ जं॰ जंबूद्वीपके मे॰ मेरुकी दा॰ दक्षिणमें गं॰ गंगा सिं॰ सिंधु म॰ महानदियोंमें द॰ दश म॰ महानदियों स॰ मीलती है ज॰ यमुना स॰ सरयू आ॰ आदी को॰ कोशी म॰ मही स सतद्रु वि॰ वितस्ता वि॰ विभाषा ए॰ ऐरावती चं॰ चंद्रभागा ॥ २३ ॥ जंबूद्वीपके मे॰ मेरुकी उ॰ उत्तरमें

एव असंजमोवि भाणियव्वो ॥ २१ ॥ दससुहुमा प॰ तं॰ पाणसुहुमे, पणगसुहुमे, जाव सिणेहसुहुमे गणियसुहुमे भंगसुहुमे ॥ २२ ॥ जंबूमंदर दाहिणेणं गंगासिंधूओ महाणईओ दसमहानईओ समप्पिंति तं॰ जउणा, सरऊ, आवी, कोसी, मही, सयदू, वितच्छा, विभासा एरावई, चंदभागा॥ २३॥ जंबूमंदर उत्तरेणं रत्तारत्तवईओ महाणईओ दसमहाणई

दश प्रकार का असंयम होता है ॥ २१ ॥ सूक्ष्म के दश भेद कहे हैं प्राण सूक्ष्म पनग सूक्ष्म यावत् स्नेह सूक्ष्म गणित सूक्ष्म और भंगजाल सूक्ष्म ॥ २२ ॥ जम्बूमंदर से दक्षिण में गंगा सिंधु नदियों में दश बडी नदियों मीलती हैं १ यमुना २ सरयू ३ आदी ४ कोशी ५ मही ६ सतद्रू ७ वितस्ता ८ विभाषा ९ ऐरावती १० चंद्र भागा ॥ २३ ॥ जम्बूमंदर की उत्तर में रक्ता और रक्तवती नामक बडी नदियों

१ रक्ता र० रक्तवती म महानदियोंमें द० दशमहानदियों स• मीलती हैं कि० कृष्णा म० महा कृष्णा नी० नीला म• महानीला नी० नीरा म० महानीरा ई इन्द्रा मा० यावत् मं महामागा ॥२४॥ जं जंबूद्वीपमें भ• भरतक्षेत्रमें द०दश रा० राज्यधानी च० चंपा म० मथुरा वा० वाणारसी सा सावत्थी सा० साकेता ह० हस्तिनापुर कं० कंपिलपुर म० मिथिला को० कोसंबी रा राजगृह ॥२५॥ ए० इन द० दश रा० राज्यधानी में द० दश रा० राजा मुं• मुंड हुव जा० यावत् प० प्रव्रजित हुवे भ० भरत स० सगर म० मघवा स०

ओ समप्पेंति त• किण्हा, महाकिण्हा, नीला, महानीला, निरा, महानीरा, इंदा जाव महामागा ॥ २४ ॥ जंबूद्दीवदीवे भरहेवासे दसरायहाणीओ पण्णत्ताओ तं• चंपा महुरा वाणारसीय सावत्थि तह य साएयं, हत्थिणपुर कंपिल्ल, महिला कोसंबि रायगिहं ॥ २५ ॥ एयासुण दससु रायहाणीसु दसरायाणो मुंडाभवित्ता जाव पव्वइया तं• भरहे सगरे, मघवं, सणकुमारे, सती कुथू अरे महापेउमे, हरि-

में दश अन्य बडी नदियों मीलती हैं १ कृष्णा २ महाकृष्णा ३ नीला ४ महानीला ५ नीरा ६ महानीरा ७ इन्द्रा ८ महाइन्द्रा ९ भागा और महामागा ॥ २४ ॥ जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमें दशबडी राज्यधानियों कहीं १ चंपा २ मथुरा ३ वाणारसी ४ सावत्थी ५ साकेता ६ हस्तिनापुर ७ कांपिलपुर ८ मिथिला ९ कासंबी १० राजगृह ॥ २५ ॥ इन दश राज्यधानियोंमें दश राजा मुंडनकर के दीक्षित हुए १ भरत २

सनत्कुमार सं० शान्तिनाथ कुं० कुंथुनाथ अ० अरनाथ म० महापद्म ह० हरिषेण ज० जयनाम ॥ २६ ॥
जं० जंबूद्वीपका मे० मेरुपर्वत द० दशयोजन स० शत उ० ऊंचा घ० धरतीतलपे द० दश जो० योजन
स० सहस्र वि० चौडा उ० उपर द० दश जो० योजन स० शत वि० चौडा द० दश दश जो० योजन
स० सहस्र स० चारोंबाजुसे ॥ २७ ॥ जं० जंबूद्वीप के मे० मेरुपर्वत की ब० बहुत मध्यभाग में इ० इस
र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वीके उ० उपर हे० नीचे खु० छोटे प० प्रतर में अ० आठ प्रदेश का रु० रुचक

सेणे, जयनाम ॥ २६ ॥ जंबूदीवेदीवे मंदरेपव्वए दस जोयण सयाइं उव्वेहेणं धर
णीतले दसजोयण सहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं दसजोयण सयाइं विक्खंभेणं
दसदसाइं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं प० ॥ २७ ॥ जंबूदीवेदीवे मंदरस्सपव्वयस्स
बहुमज्झ देसभाए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु एत्थणं

सगर ३ मघवा ४ सनत्कुमार ५ शान्तिनाथ ६ कुंथुनाथ ७ अरनाथ ८ महापद्म ९ हरिषेण और १० जयनाम
॥ २६ ॥ जम्बूद्वीपमें मेरुपर्वत दश सो (एक हजार) योजन जमीनमें है पृथ्वीतलमें दश हजार योजन का
चौडा, उपर दश हजार योजन चौडा, और सब मीलकर दश दश हजार अर्थात एक लक्ष योजन का
ऊंचा है ॥ २७ ॥ जम्बूदीपके मेरुकी बहुत मध्य भागमें इस रत्नप्रभा पृथ्वीमें उपर नीचे छोटे प्रतरमें आठ
प्रदेशका रुचक कहा है और यहांसे दश दिशाओं नीकली हुई है १ पूर्व २ अग्नि ३ दक्षिण ४ नैऋत्य ५

अ० महा से इ०ये द०दश दिशाओं प०नीकलती हैं पु०पूर्व पु० पूर्व दक्षिण द० दक्षिण दा० दक्षिण पश्चिम प० पश्चिम प० पश्चिम उत्तर उ०उत्तर उ०उत्तर पूर्व ऊ०ऊर्ध्व अ०अधो ए० इनके द०दशनाम इं०इन्द्रा अ० आग्नि ज० यमा ने० नैऋति व० वारुणी वा० वायव्या सो० सोमा ई ईशान वि० विमला त० तमा यो० माननी ॥ २८ ॥ ल० लवणसमुद्र का द० दश जो० योजन स० सहस्र गो० गोतीर्थ वि० विरहित खि० क्षेत्र ॥ २९ ॥ स० लवण समुद्रको द० दश जो योजन स० सहस्र का उ० उदगमाला ॥ ३ ॥ स० सर्व

अट्ठपएसिए रुयगे प० जओण इमाओ दसदिसाओ पवहंति त० पुरच्छिमा, पुरच्छिमदाहिणा, दाहिणा, दाहिणपञ्चत्थिमा, पञ्चत्थिमा, पञ्चत्थिमुत्तरा, उत्तरा ,उत्तरपुरच्छिमा, उड्ढा अहा ॥ एयासिणं दसनामधिज्जा प० तं० इंदा, अग्गीइ जमा, णेरई, वरुणीय, वायव्वा, सोमा, ईसाणाओ, विमलाय, तमाय, बोधव्वा (१) ॥ २८ ॥ लवणस्सण समुद्दस्स दसजोयण सहस्साइं गोतित्थ विरहिए खित्ते पण्णत्ते ॥ २९ ॥ लवणस्सण समुद्दस्स दसजोयण सहस्साइं उदगमाले पण्णत्ते ॥ ३० ॥ सव्वेविणं

पश्चिम६ वायव्य ७ उत्तर ८ ईशान९ ऊर्ध्व और १ अधो इन दशोंदिशाओंके दश नाम कहे हैं १ इन्द्रा २ अग्नि ३ यमा ४ नैऋति ५ वारुणी ६ वायव्या ७ सोमा ८ ईशान ९ विमला और १० तमा ॥ २८ ॥ लवणसमुद्र गोतीर्थरूप भूमि छोडकर दश हजार योजन का ऊंडाकहा ॥ २९ ॥ लवण समुद्रमें दशहजार

प० महा पाताल कलश द० दस जो० योजन स० सहस्र उ० ऊंडे मू० मूल में द० दस जो० योजन स० सहस्र वि० चौडे ब० बहुत म० मध्यदेशभाग में ए० एक प्रदेश से श्रेणी द० दस २ योजन स० सहस्र वि० चौडे उ० उपर मु० मुखमें द० दस जो० योजन स० सहस्र वि० चौडा त० उस पातास कलश की कु० ठिकरी स० सर्व व० वज्ररत्नमय स० सम गाम्भे द० दस जो० योजन स० सत वा० जाडी म० सर्व खु० छोटे पा० पाताल कलश द० दस जो० योजन स० शत उ० ऊंडे मू० मूलमें द० दस

महापायाला दसदसाइ जोयणसहस्साइं उव्वेहेणं प० मूले दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेण प० बहुमज्झदेसभाए एगपएसियाए सेढीए दसदसाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं प० उवरिमुहमूलेवसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं प० । तेसिणं महापायालाणं कुड्डा सव्ववइरामया सव्वत्थसमा दसजोयणसयाइं बाहल्लेणं प० सव्वविखुड्डापायाला दसजोयण सयाइ उव्वेहेणं प० मूलेदसदसाइ जोयणाइ विक्खंभेणं प० बहुमज्झदेसभागे एग

योजन ऊंची कमान कही ॥ ३ ॥ सब पातालकलश दशदश गुने हजार (एक लक्ष) योजन के ऊंडे कहे, मूलमें दश हजार योजन के चौडे कहे, बहुत मध्यमाग में एक प्रदेशकी श्रेणिसे एक २ प्रदेश बढते तथा दश गुने हजार चौडे कहे अर्थात् बीचमें एक लक्ष योजन के चौडे कहे उपर मुखके मूलमें दश हजार योजन के चौडे कहे, उन महापाताल कलशोंकी ठिकरी वज्रमय व सर्वत्र सम कही और दश सो (एक हजार) योजनकी जाडपनमें कही इन चारों बडे कलशकी बीचमें छोटे २ कलशकी नव लाखों लगी हैं

मा० योजन वि चौडा ब० बहुत मध्यदेशभाग में ए० एक प्रदेशकी से० श्रेणीसे द० दश जो० योजन स० शत वि० चौडा उ० उपर मु० मुखमें द० दश २ जो० योजन वि० चौडा ते० उन खु छोटे पा०पाताल कलश की कु० ठिकरी स० सर्व ब० वज्ररत्नमय स०सबबाजु स० सरिखे द दश जो० योजन बा० जाडपने ॥ ३१ ॥ धा० धातकीखंडके म० मेरु द० दश जो० योजन स० शत उ० ऊंडे ध० धरतीतलपे दे० देशऊणे द दशयोजन स० सहस्र वि चौडे उ० उपर द० दशयोजन स० शत वि० चौडे ॥ ३२ ॥

पणसियाए सेढीए दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं प० उवरि मुहमूले दसदसाइंजोयणा इं विक्खंभेणंप० तेसिणं खुड्डा पायालाणं कुड्डासव्ववइरामया सव्वत्थसमा दसजोयणाइं बाहल्लेणं प०॥३१॥धायइ खंडगाणं मंदरा दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं धरणि तले देसूणाइं दसजोयण सहस्साइ विक्खंभेण उवरिं दसजोयण सयाइ विक्खंभेणं प०॥३२॥ पुक्खरवर

ये सब छोटे कलश एक हजार योजनके ऊंडे कहे हैं, मूलमें दश दश गुने अर्थात् सो योजन के चौडे कहे, मध्य में एक हजार योजनके चौडे कहे हैं, और मुखमें सो योजन के चौडे हैं सब वज्ररत्नमय हैं उन की ठिकरी दशयोजन की जाडी है ॥ ३१ ॥ धातकी खंडके मेरु पर्वत एक हजार योजन के ऊंडे पृथ्वी में कहे, देशऊण दश हजार योजन के पृथ्वीतलमें चौडे और उपर एक हजार योजन के चौडे कहे हैं

पु० पुष्करवर अर्धद्वीपके मे० मेरुद ग्स योजन ए ऐसे ॥ ३२ ॥ स० सर्व वृत्तवैताढ्य प० पर्वत द० दस श० योजन म० शत उ० ऊंचे उ उच्चपने द० दसगाउ स० शत उ० ऊंड स० धारोंधारा प० पाला के स० संस्थान से सं० रहेहुवे द० दश योजन स० शत वि० चौडे ॥ ३४ ॥ ज० जंबुद्वीप में द० दसक्षेत्र भ० भरत ए० ऐरवत हे० हेमवय हे० एरनवय ह० हरिवष र० रम्यकवर्ष पु० पूर्वविदेह अ० अपरविदेह दे देवकुरु उ० उत्तरकुरु ॥३५॥ मा० मानुषोत्तर पर्वत मू० मूल में द० दश बा०

दीवड्डगाण मंदरा दसजोयणा एवचेव ॥३३॥ सव्वेविणं वट्टवेयड्ड पव्वया, दसजोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं दसगाउयसयाइं उव्वेहेणं सव्वत्थसमा पल्लग संठाणसंठिया दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं प० ॥ ३४ ॥ जंबूद्दीवेदीवे दस खेत्ता प० तं० भरहे, एरवए, हेमवए, हेरण्णवए, हरिवस्से, रम्मगवस्से, पुव्वविदेहे, अवरविदेहे, देवकुरा,

॥ ३३ ॥ धातकी खंड के मेरु समान पुष्करवरद्वीपके मेरुका जानना ॥ ३३ ॥ सब वृत्तवैताढ्य पर्वत दससो (एकहजार) योजन के ऊंचे दससो (एकहजार) गाऊ के ऊंडे सर्वत्र सरिसे पल्यकासनके संस्थानवाले कहे हैं और दससा योजन के चौडे कहे हैं ॥ ३४ ॥ जम्बूद्वीप में दशक्षेत्र कहे हैं भरत, ऐरवत, हेमवय एरनवय, हरिवर्ष, रम्यकवर्ष, पूर्वविदेह, अपरविदेह, देवकुरु व उत्तर कुरु ॥ ३५ ॥

उत्तरकुरा॥२५॥ माणुसुत्तरेण पव्वए मूले दसबावीसे जोयणसए विक्खंभेणं प०॥२६॥

सव्वेविण अंजणगपव्वया दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं, मूले दसजोयण सहस्साइं विक्खंभेणं

उवरिं दसजोयणसयाइं विक्खंभेणं प० ॥२७॥ सव्वेविणं दधिमुहपव्वया दस जोयण

सयाइं उव्वेहेणं सव्वत्थसमा पल्लग संठाण संठिया दसजोयण सहस्साइं विक्खंभेणं प०।२८।

सव्वेविणं रइकरपव्वया दसजोयण सयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं दसगाउयसयाइं उव्वेहेणं

बावीस सो० योजन म० मूल वि० चौडा ॥२६॥ स० सर्व अं० अंजनगीरि प० पर्वत द० दस योजन स० शत उ० ऊंडे मू० मूल में द० दस सो० योजन स० सहस्र वि० चौडा उ० उपर द० दस सो० योजन स० शत वि० चौडा ॥२७॥ स० सर्व द० दधिमुख पर्वत द० दस योजन शत उ० ऊंडे स० चारों बाजुसे स० सरिखे प० पालाके स० संस्थान से सं० रहे हुवे द० दस योजन स० सहस्र वि० चौडा ॥२८॥ स० सर्व र० रतिकर पर्वत द० दस योजन स०

अढाइद्वीपकी मर्यादा करने वाला मानुषोत्तर पर्वत मूलमें दस बावीस सो (बवीससो) योजनका चौडा है॥२६॥ सब अंजनक पर्वत दसा सो (एक हजार) योजन के ऊंडे हैं मूलमें दसहजार योजन के चौडे हैं उपर दससो योजन के चौडे कहे हैं ॥२७॥ सब दधिमुख पर्वत दससो (एक हजार) योजन के ऊंडे और पाला के संठाणवाले सब सरिखे रहे हैं और दसहजार योजन के चौडे कहे हैं ॥२८॥ सब रतिकर पर्वत दससो योजन के ऊंचे दससो गाऊ के ऊंडे सब सरिखे झालरके संठान वाले और दस हजार

सत उ० ऊंचे उ० ऊंचपने में द० दस गा० गाउ स० सात उ० ऊंडे स० चारों चाम स० सरिख ख० झान रसे हे० रत्नप्रभा द दश जो० योजन स० सहस्र वि चौडा रु० रुचक ५० पर्वत द० दस जो० योजन स० शत उ० ऊंडा मू० मूल में द० दश जो० योजन स० सहस्र वि० चौडा उ० उपर द० दश जो० योजन स० सत वि० चौडा ए० एसे कुं० कुंडलवर ॥१९॥ द० दश मकार का द द्रव्यानुयोग द०

सव्वरयणमा झल्लरिसंठिया, दसजोयण सहस्साइं विक्खंभेण प० रुयगवरेण पव्वए दस जोयण सयाइं उव्वेहणं, मूले दस जोयण सहस्साइं विक्खंभेण, उवरिं दसजोयण सयाइं विक्खंभेणं प० ॥ एवं कुंडलवरेवि ॥२१॥ दसविहे दवियाणुजोगे प० तं०

योजन के चौडे को हैं रुचकार पर्वत दस सो योजन का ऊंचा मूलमें दश हजार योजन का चौडा उपर दशसो योजन का चौडाऊंचा ऐसे ही कुंडलवर का जानना ॥ १९ ॥ दश मकार का द्रव्यानुयोग कहा १ द्रव्यानुयोग सो गुणपर्यायवंत जीव का अनुयोग २ मातृकानुयोग सो ५२ अक्षरका अनुयोग ३ एकार्थानुयोग सो जीव प्राण भूत व सत्व ये एकार्थवाची शब्द हैं ४ करणानुयोग सो काल, स्वभाव नियति, पूर्वकृत व उपयोग ए पांच कारणबिना जीव कुच्छ नहीं कर सकता है ५ अर्पितानर्पितानुयोग सो विशेषित अविशेषित जैसे जीवद्रव्य कहा भीर द्रव्य संसारी-संसार में भी त्रसरूप, त्रस में भी पचेन्द्रिय, भौर पंचेन्द्रियमें भी नररूप सो अनर्पित ६ भाविताभावितानुयोग सो जीवद्रव्य सब संसार के भावसे भावित भी है और अभा

द्रव्यानुयोग भा० मातृकानुयोग ए० एकार्थानुयोग क० करणानुयोग अ० अर्पित अ० अनर्पित भा० भावित अ० अभावित बा० बाह्य अ० अबाह्य सा० शाश्वत अ० अशाश्वत त० तथाज्ञान अ० अतथाज्ञान ॥ ४० ॥ च० चमरके अ० असुरेन्द्र अ० असुरकुमार राजाके ति० तिगिच्छ कूट उ० उत्पात प० पर्वत मू० मूल में द० दश बा० बावीस जो० योजन स० शत वि० चौडा ॥ ४१ ॥ च० चमर के अ० असुरेन्द्र अ० असुरकुमार

दवियाणुजोगे, माउयाणुजोगे, एगट्ठियणुजोगे, करणाणुजोगे, अप्पियाणप्पिए, भाविया भाविए, बाहिराबाहिरे, सासयासासए, तहनाणे, अतहनाणे, ॥ ४० ॥ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो तिगिच्छकूडे उप्पाय पव्वए मूले दसबावीसे जोयण सए विक्खंभेण प० ॥ ४१ ॥ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सोमस्स महारण्णो सोमप्पभे उप्पायपव्वए दसजोयण सयाई उड्ढंउच्चत्तेणं, दसगाउय सयाई

शितभी है ७ भावाभावनुयोग सो आकाशास्ति कायमें विलक्षण धर्म चैतन्यपना सहित सो बाह्य और अमूर्तत्व धर्म होने से अबाह्य ८ शाश्वताशाश्वत जीवद्रव्य अनादिपना से शाश्वत है और पर्याय परत्वनेम अशाश्वत है ९ तथाज्ञान सो यथार्थ जानना और १० अतथाज्ञान सो मिथ्या मानना ॥ ४० ॥ चमर असुरेन्द्र के असुरकुमार राजा का तिगिच्छकूट उत्पात पर्वत मूलमें दश बावीस (बत्तीस) सो योजन का चौडा है ॥ ४१ ॥ चमर असुरेन्द्र असुरकुमार राजाका सोम महाराजा को सोमप्रभ उत्पा

राजा के सो० सोम महाराजा का सो० सोमप्रभ उ० उत्पात पर्वत द० दश भा० योजन स० शत उ० ऊंचे उ० ऊंचपने द० दश गाउ स० सत उ० ऊंचे मू० मूल में द० दश योजन स० सत वि० चौडा॥४२॥ च० चमर के अ० असुरेन्द्र के ज० यम म० महाराजा को ज० यमप्रभ उ० उत्पात पर्वत ए० ऐसे व० वरुणका वे० वैश्रमण को ॥ ४३ ॥ व० बली के व० वैरोचन व० वैरोचन राजा के रु० रुचकेन्द्र उ० उत्पात प० पर्वत मू० मूल में द० दश बा० बावीस जो० योजन सत वि० चौडा ॥ ४४ ॥ ब० बली के व० वैरोचन राजा के सोम का ए० ऐसे ज० जैसे च० चमर के लो० लोकपाल के ब०

उव्वेहेण मूले दसजोयणसयाइं विक्खंभेणं प० ॥ ४२ ॥ चमरस्सणं असुरिंदस्स जमस्स महारण्णो जमप्पभे उप्पायपव्वए एवचेव ॥ एवं वरुणस्सवि ॥ एवं वेसमणस्सवि ॥ ४३ ॥ बलिस्सणं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो रुयगिंदे उप्पायपव्वए मूले दस बावीस जोयणसए विक्खंभेणं प० ॥ ४४ ॥ बलिस्सणं वइरोयणरण्णो

त पर्वत दश सो योजन का ऊंचा दश सो गाउका ऊंचा और मूलमें दश सो योजन का चौडा कहा॥४२॥ चमर असुरेन्द्र का यम महाराजा को जमप्रभ उत्पात पर्वत का भी सोमप्रभ उत्पात पर्वत जैसे कहना और ऐसे ही वरुण व वैश्रमण का भी जानना ॥ ४३ ॥ बलिनामक वैरोचनेन्द्र वैरोचन राजा का रुचकेन्द्र उत्पात पर्वत मूलमें दश बावीश सो योजन का चौडा कहा ॥ ४४ ॥ बलि वैरोचनेन्द्र के सोम

पीठ को ॥ ४५ ॥ ध० धरण के ना० नागकुमारेन्द्र ना० नागकुमार राजा को ध० धरणप्रभ उ० उत्पात प० पर्वत द० दश यो० योजन स० शत उ० ऊंचा उ० ऊंचपने द० दश गा० गाउ स० सत उ० ऊंडा मू० मूल में द० दश योजन स० शत वि० चौडा ध० धरण जा० यावत् ना० नागकुमार राजा को का० कालवाल म० महाराजा को का० कालप्रभ उ० उत्पात पर्वत द० दश योजन स० शत उ० ऊंचा उ० ऊंचपने ए० ऐसे जा० यावत स० संखपाल को भू० भूतानेन्द्र क लो० लोकपाल को से० शेष ज० जैसे

सोमस्स एवं चेव जहा चमरस्स लोगपालाणं तचेव भाणियव्वंवि ॥ ४५ ॥ धरणस्सणं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो धरणप्पभे उप्पाय पव्वए दसजोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेण दसगाउय सयाइं उव्वेहेण, मूले दस जोयण सयाइं विक्खंभेणं । धरण स्सणं जाव नागकुमाररन्नो कालवालस्स महारन्नो कालप्पभे उप्पायपव्वए दस-जोयण सयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं एवंचेव ॥ एवं जाव संखवालस्स । एवं भूयाणंदस्सवि,

लोकपाल का चमरेन्द्र के लोकपाल जैसे कहना ॥ ४५ ॥ धरण नामक नागकुमारेन्द्र के नाग कुमार राजा के धरणप्रभ उत्पात पर्वत दश सो योजन का ऊंचा दशसो गाउ का ऊंडा और मूलमें दश सो योजन का चौडा कहा धरण नामक नागकुमारेन्द्र का नागकुमार राजा का कालवाल महाराजा का कालप्रभ नामक उत्पात पर्वत दश सो योजन का ऊंचा दश सो गाउ का ऊंडा व दश सो योजन का

प० भरण को ए० एसे भा० यावत् थ० स्थनित कुमारके स० लोकपाल सहितको भा० कहना स० सर्व उ० उत्पात पर्वत भा० कहना स० सरिस ना० नामवाले ॥ ४९ ॥ स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा को स० शक्रप्रभ उ उत्पात पर्वत द० दश योजन स० सहस्र उ० ऊंचे उ० ऊंचपने द० दश गाउ स० सहस्र उ० ऊंडे मू० मूल में द० दश योजन स० सहस्र वि० चौडे स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा को म० जैसे स० शक्र का त० तैसे म० सर्व लोकपाल के म० सर्व इ० इन्द्र का जा० यावत् अ० अच्यु

एवं लोगपालाणंवि से जहा धरणस्स एवं जाव थणिय कुमाराणं सलोगपालाणं भाणियव्वं । सव्वेसिं उप्पायपव्वया भाणियव्वा, सरिसनामगा ॥ ४९ ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो सक्कप्पभे उप्पाय पव्वए दसजोयण सहस्साइं उडुंउच्चत्तेणं, दस गाउय सहस्साइं उव्वेहेणं, मूले दस जोयण सहस्साइं विक्खंभेणं प० ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो जहा सक्कस्स तहासव्वेसिं लोगपालाणं सव्वेसिंच इंदाणं जाव

मूलमें चौडा कहा है ऐसे ही लोकपाल तक ऐसे ही भूतानन्द यावत् स्थनित कुमार तक लोक पाल सहित के पर्वत का अधिकार धरणेन्द्र जैसे कहना उन सबके उत्पात पर्वत का नाम उन के नाम जैसे कहना ॥ ४९ ॥ शक्र देवेन्द्र देवराजाका शक्रप्रभ उत्पात पर्वत दश हजार योजन का ऊंचा दश हजार गाउ का ऊंडा व मूल में दश हजार योजन का चौडा कहा है. शक्रेन्द्र समान सब लोगपाल व अच्युतेन्द्रतक

त स० सब में ए० एक सरिखा ॥ ४७ ॥ बा० बादर वनस्पति का० काया की उ० उत्कृष्ट द० दश जो० योजन स० शरीर अवगाहना ॥ ४८ ॥ ज० जलचर पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच की उ० उत्कृष्ट द० दश जो० योजन स० शत स० शरीर अवगाहना उ० उरपर स० सर्प थ० स्थलचर पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच को उ० उत्कृष्ट ए० ऐसे ॥ ४९ ॥ सं० संभवनाथ अ० अरिहंत से अ० अभिनन्दन अ० अरिहंत द० दश सा० सागरोपम को० क्रोडी स० लक्ष वी० व्यतीत हुवे स० उत्पन्न हुवे ॥ ५० ॥ द० दश प्रकार का

अप्फुयत्ति ॥ सव्वेसिं पमाणं इक्कं ॥ ४७ ॥ बायर वणस्सइ काइयाणं उक्कोसेणं दसजोयण सयाइं सरीरोवगाहणा प० ॥ ४८ ॥ जलयरपचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं उक्कोसेण दस जोयण सयाइं सरिरोवगाहणा प० उरपरिसप्प थलयर पचिंदिय तिरिक्खजो-णियाणं उक्कोसेणं एवंचेव ॥ ४९ ॥ संभवाओणं अरहाओ अभिणंदणे अरहा दसहिं सागरो-वम कोडिसयसहस्सेहिं वीइक्कंतेहिं समुप्पण्णे ॥ ५० ॥ दसविहे अणंतए पण्णत्ते

सब इन्द्रके उत्पात पर्वत का आधिसार एक सारिखा मानना ॥ ४७ ॥ बादर वनस्पति काय की शरीर अवगाहना उत्कृष्ट दश हजार योजन की मानना ॥४८॥ जलचर पंचेन्द्रियतिर्यंच की उत्कृष्ट शरीर अवगाहना, एक हजार योजन की मानना व उरपर सर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच की शरीर अवगाहना उत्कृष्ट एक हजार योजन की मानना ॥४९॥ दश लाखक्रोड सागरोपम श्री संभवनाथ अरिहंत से व्यतीत हुवे पीछे श्री अभिनन्दन स्वामी हुवे ॥ ५० ॥ दश प्रकार के अनंत कहे हैं १ नाम अनंत २ स्थापना अनंत ३

अ० अनंत ना० नाम ठ० स्थापना द० द्रव्य ग० गणना प० प्रदेश ए० एक दु० द्विधा दे० देशविस्तार स० सर्वविस्तार सा० शाश्वत ॥ ५१ ॥ उ० उत्पाद पूर्व की द० दशवस्तु ॥ ५२ ॥ अ० अस्ति न० नास्ति प० प्रवाद पूर्व की द० दश चूलिका वस्तु ॥ ५३ ॥ द० दश प्रकार की प० प्रतिसेवना द० दर्प प० प्रमाद अ० अनाभोग आ० आतुर आ० आपदा सं० शंकित स० सहसाकार भ० भय प०

सं० णामाणंतए, ठवणाणंतए दव्वाणंतए गणणाणंतए, पएसाणंतए, एगयोणाणंतए, दुहओणंतए, देसवित्थाराणंतए, सव्ववित्थाराणंतए, सासयाणंतए ॥ ५१ ॥ उप्पायपुव्वस्सणं दसवत्थू प० ॥ ५२ ॥ अत्थिणत्थिप्पवायपुव्वस्सणं दसचूलावत्थू प० ॥ ५३ ॥ दसविहा पडिसेवणा प० (गाथा) दप्पप्पमायाणाभोगे, आउरे

द्रव्य अनंत ४ गणना अनंत ५ प्रदेश अनंत ६ एक अनंत ७ द्विधा अनंत ८ एक आकाश प्रदेश सो देश विस्तार अनंत ९ सब आकाशास्ति काय शाश्वत अनंत सो सब विस्तार अनंत और १० जीवादि षट् द्रव्य शाश्वत हैं सो शाश्वतानंत॥५१॥उत्पाद पूर्वकी दशवस्तु कही ॥५२॥ अस्तिनास्ति उत्पादपूर्व की दश चूलिका वस्तु कही ॥ ५३ ॥ दश प्रकार की प्रतिसेवना कही १ दर्प प्रतिसेवना कामवशामे दोष लगावे २ प्रमाद प्रतिसेवना प्रमादसे दोष लगावे ३ अनाभोग सो विस्मृति में दोष लगावे ४ आतुर सो ग्लान बना हुवा आतुरपने दोष लगावे आपदा सो दुःख आये दोष लगावे ६ शंकित बनकर दोष लगावे ७

महेष वि० विमर्श ॥ ५४ ॥ द० दश आ० आलोचना दोष आ० वर्जकर अ० अनुमान से दि० देखा हुआ बा० बादर सु० सूक्ष्म छ० गुप्त स० शब्द से ब० बहुत जन अ० अव्यक्त त० तत्सेवी ॥ ५८ ॥ द० दश स्थान स० युक्त अ० अनगार अ० योग्य है अ० आत्म दोष आ० आलोचने को जा०

आवईसुपसाकिए सहसागारे मयप्पयोस वीमसा (१) ॥ ५४ ॥ दस आलो-
यणा दोसा प० आकपइत्तु मणुमाणइत्तुजंदिट्ठ बायरच सुहुमंवा, छन्नं सद्दाउलगं
बहुजन अव्वत्ततस्सेवी (१) ॥ ५५ ॥ दसहिं ठाणेहिं सपन्ने अणगारे अरिहइ

सहसात्कार से दोष लगावे ८ नृपादिभय से ९ मद्वेष मात्सर्यतासे दोष लगावे और १० विमर्श से दोष लगावे ॥ ५४ ॥ आलोचना दोष के दशभेद कहे हैं १ प्रथम वैयावृत्यादिक सुश्रामतकर आलोवे २ आप भिक्षादिकका अनुमान कर आलोवे ३ आचार्यने जो दोष देखे होवे उन्हें ही आलोवे ४ बडे २ दोषों की आलोचना करे परंतु छोटे २ दोषों को तुच्छ मान उन की आलोचना करे नहीं ५ छोटे २ दोषों की आलोचना करे और बडे दोषो को छोड देवे ६ गुरु अच्छी तरह से सुन नहीं इस तरह आलोवे ७ बहुत जोर २ से बोलकर आलोचना करे ८ अन्य की साथ अपनी आलोचना करे ९ प्रायश्चित्त के अनजान की पास अपनी आलोचना करे और १० जो दोष गुरुसे हुवा होवे उस की आलोचना आप स्वयं करे ॥ ५५ ॥ दश गुण संपन्न अनगार अपने दोषों की आलोचना करने योग्य होता है जाति

नावि सपन्न कु० कुलसंपन्न ए० ऐसे ज० जैसे अ० आठवे ठाण में सं० समान्तं दं०दांमितेन्द्रिय अ० अमायी अ० अपच्छानुतापी ॥५९॥ द० दश स्थान सं० युक्त अ० अनगार अ० योग्य है आ० आलोचना प० अंगीकारकरने को आ० आचारवंत आ० आधारवंत जा० यावत् अ० परलोक देखने वाला पि० पियधर्मी द० दृढधर्मी ॥ ५७ ॥ द० दश प्रकार का पा० प्रायश्चित्त आ० आलोचना जा० यावत् अ० अनवस्था पा० पारांचिक ॥ ५८ ॥ द० दशप्रकारका मि० मिथ्या

अत्तदोसं आलोइत्तए तं० जाइसपन्ने कुलसंपन्ने, एवं जहा अट्ठट्ठाणे-रसते रसते अमाई अपच्छाणुतावी ॥ ५६ ॥ दसहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहइ आलोयणं पडिच्छित्तए, तं० आयारवं आहारवं, जाव अवायदंसी, पियधम्मे, दढधम्मे ॥ ५७ ॥ दसविहे पायच्छित्ते प० तं० आलोयणारिहे, जाव अणवट्ठप्पारिहे, पारंचियारिहे, ॥ ५८ ॥ दसविहे मिच्छत्ते प० तं० अधम्मे धम्मसन्ना, धम्मे अधम्मसन्ना,

सपन्न कुल संपन्न वगैरह आठवे ठाणे जैसे कहना, और अमायी व पीछे तपे नहीं ॥ ५६ ॥ दशगुण संपन्न अणगार आलोयणा करके प्रायश्चित्त लेने योग्य हो सकता है आचारवंत, धारणावंत यावत् परलोक का कष्ट देखनेवाला प्रियधर्मी, दृढधर्मी ॥ ५७ ॥ दश प्रकार का प्रायश्चित्त कहा है आलोयणारिह यावत् अनवस्थारिह और पारांचिक कितनेक काल तक व्रतसे अलग करके व दोषटाल करके पुनव्रतमें स्थापन करना यह पारांचिक ॥ ५८ ॥ दश प्रकार

उम्मग्गे मग्गसन्ना, मग्गे उम्मग्गसन्ना, अजीवेसु जीवसन्ना, जीवेसु अजीवसन्ना, असाहुसु साहुसन्ना, साहुसु असाहुसन्ना, अमुत्तेसु मुत्तसन्ना, मुत्तेसु अमुत्तसन्ना,॥५९॥ चदप्पभेण अरहा दसपुव्वसतसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव पहीणे ॥६०॥ धम्मेणं अरहा दस वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव पहीणे

रा अ० अधर्म में ध० धर्म स० संज्ञा ध० धर्ममें अ० अधर्मसंज्ञा उ० उन्मार्गमें म० मार्गसंज्ञा म० मार्गमें उ० उन्मार्ग स० संज्ञा अ० अजीवमें जी० जीव स० संज्ञा जी० जीवमें अ० अजीव स संज्ञा अ० असाधु में सा० साधु स० संज्ञा सा० साधुमें अ० असाधु संज्ञा अ अमुक्तमें मु० मुक्तसंज्ञा मु० मुक्तमें अ० अमुक्तसंज्ञा ॥ २९ ॥ चं० चंद्रप्रभ अ० अरिहंत द० दश पूर्व स० लक्ष स० सर्वआयुष्य पा० पालकर सि० सिद्धहुवे जा० यावत् प० मुक्तहुवे ॥ ३० ॥ ध० धर्मनाथ अ० अरिहंत द० दशवर्ष स० लक्ष स०

का मिथ्यात्व कहा है १ अधर्म में धर्मकी संज्ञा २ धर्ममें अधर्मकी संज्ञा ३ उन्मार्गमें मार्ग की संज्ञा ४ मार्गमें उन्मार्ग की संज्ञा ५ अजीवमें जीव की संज्ञा ६ जीवमें अजीव की संज्ञा ७ असाधुमें साधु ८ साधु में असाधु ९ अमुक्तमें मुक्त की संज्ञा और १० मुक्तमें अमुक्तकी संज्ञा ॥ २९ ॥ श्रीचंद्रप्रभ अरि हंत लक्ष श्रीमाकर दश लक्ष पूर्व आयुष्यपालकर सिद्धहुवे, यावत् सब दुःखसे मुक्तहुवे ॥ ३० ॥ श्री

सर्वआयुष्य पा० पालकर सि० सिद्धहुवे जा० यावत् प० मुक्तहुवे ॥ ६१ ॥ न० नमिनाथ अ० अरिहंत द० दशवर्ष स सहस्र स सर्वआयुष्य पा० पालकर सि० सिद्ध जा० यावत् प० मुक्तहुवे ॥ ६२ ॥ पु पुरुषसिंह वा० वासुदेव द० दशवर्ष स० सहस्र स० सर्वआयुष्य पा० पालकर छ० छट्ठी त० तमा पु० पृथ्वी में ने० नारकीपने उ० उत्पन्न हुवे ॥ ६३ ॥ ने० नमिनाथ अ० अरिहंत द० दश ध० धनुष्य उ० ऊंचे उ० ऊंचपने द० दशवर्ष स० शत स० सर्व आयुष्य पा० पालकर सि० सिद्धहुवे जा० यावत् प० मुक्त

॥ ६१ ॥ नमीणं अरहा दस वाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे ॥ ६२ ॥ पुरिससीहेणं वासुदेवे दसवास सहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववन्ने, ॥ ६३ ॥ नेमीणं अरहा दसधणूइं उड्ढं उच्चत्ते-णं, दसवास सयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे ॥ ६४ ॥ कण्हेणं

धर्मनाथ अरिहंत दशलक्ष वर्ष का आयुष्य पालकर सब दुःखसे मुक्तहुवे ॥ ६१ ॥ श्रीनमिनाथ अरिहंत दशहजार वर्षका आयुष्य पालकर सिद्धहुवे यावत् सब दुःखसे मुक्तहुवे ॥ ६२ ॥ पांचवा पुरुषसिंह वासुदेव सब मीलकर दश हजार वर्ष का आयुष्य पालकर छठी तम नामक नरक में नारकीपने उत्पन्न हुवे ॥ ६३ ॥ श्री नेमीनाथ अरिहंतकी उत्कृष्ट दश धनुष्यकी अवगाहना थी और दश सो (एक हजार) वर्ष आयुष्य पालकर सिद्ध हुवे यावत् सब दुःख से मुक्त हुवे ॥ ६४ ॥ श्री कृष्ण वासुदेव के शरीर की अव

रि ॥ ६८ ॥ क० कृष्ण वासुदेव द० दश धनुष्य उ० ऊंचे उ० ऊंचपने द० दशवर्ष स० सौ स० सर्व आ० आयुष्य पा० पालकर त० तीसरी वा० वालुप्रभा पु० पृथ्वी में ने० नारकीपने उ० उत्पन्न हुवे ॥६८॥ द० दश प्रकार के भ० भवनवासी देव अ० असुर कुमार जा० यावत् थ० स्थनित कुमार ॥ ६६ ॥ ए० इन द० दश प्रकार के भ० भवनवासी को द० दश चे० चैत्यवृक्ष अ० अश्वत्थ स० सप्तपर्ण सा० सामली उ० उंबर सि० सिरीस द० दधिपण व० वंजुल प० पलास व० वड क० कनयर ॥ ६७ ॥ द० दशप्रकार

वासुदेवे दसधणूई उड्डुं उच्चत्तेणं, दसवाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववन्ने ॥ ६५ ॥ दसविहा भवणवासी देवा पण्णत्ता तं० असुर कुमारा जाव थणियकुमारा ॥ ६६ ॥ एएसिणं दसविहाणं भवणवासीणं दसचेइय रुक्खा प० तं० अस्सोट्ठ सत्तिवण्णे, सामलि उंबर सिरीस दहिवन्ने ॥ वंजुल पलास वप्पा, यण्णकण्णिया रुक्खेय ॥ १ ॥ ६७ ॥ दसविहे सुक्खे प० तं० आरोग्ग दीहमाउ,

गाहना वत्कृष्ट दश धनुष्य की थी और दश सो (एक हजार) वर्ष का आयुष्य पालकर तीसरी वालुप्रभा नामक नरक में नारकी पने उत्पन्न हुवे ॥६५॥ दश प्रकार के भुवनपति देव कहे हैं १ असुरकुमार २ नागकुमार यावत स्थनित कुमार ॥६६॥ इन दश भुवनपति देवोंको दश प्रकार के चैत्यवृक्ष कहे हैं १ अश्वत्थ २ सप्तपर्ण ३ सामली ४ उंबर ५ सिरीस ६ दधिपर्ण ७ वंजुल ८ पलास ९ वड और १० कनयर ॥६७॥ दश

का सु० सुख आ० आरोग्यता दी० दीर्घायुष्य ध० धनाढ्यता का० काम भो० भोग स० संतोष अ० अ स्ति सु० सुख भोग नि० दीक्षा अ० अनाबाध ॥ ६८ ॥ द० दश प्रकार का उ० उपघात उ० उद्गम उ० उत्पादन ज० जैसे पं० पांच वे ठाणे में जा० यावत् प० परिहरण णा० ज्ञान द० दर्शन च० चारित्र अ० अचियत्त मा० मूर्छा ॥ ६९ ॥ द० दश प्रकार की वि० विशुद्धि उ० उद्गम उ० उत्पादन जा० यावत्

अरोग्गं दीहमाउं अड्ढेजं काम भोग संतोसो अत्थिसुहभोग निक्खममेव तत्तो अणाबाहे ॥१॥ ६८॥ दसविहे उवघाए प० तं० उग्गमोवघाए, उप्पायणोवघाए, जहा पंचमेट्ठाणे जाव परिहरणोवघाए णाणोवघाए, दसणोवघाए, चरित्तोवघाए, अचियत्तोवघाए, सारक्खणोवघाए,॥६९॥दसविहा

प्रकार के सुख कहे हैं १ आरोग्य सो निरोगीपना २ दीर्घ आयुष्य ३ धनिकपना ४ स्वरूपमें सुख होनासो काम ५ गंधरस वगैरह भोग ६ संतोष ७ जिस समय जैसा इच्छे वैसे भोग मीलजाय ८ सुख भोग सो अनिन्दित काम भोग ९ निष्क्रम सो संसार छोडकर नीकलना और १० अनाबाधसो मोक्षसुख ॥ ६८ ॥ दश प्रकारके उपघात कहे हैं १ उद्गम दोष २ उत्पादन यावत् अकल्पनीय उपकरण ग्रहण करना वगैरह दोष पांचवे ठाणे जैसे कहना ६ ज्ञान का उपघात, दर्शन का उपघात, चारित्र का उपघात, विनयादि करे नहीं सो अचियत्तोपघात और शरीरादिकमें मूर्छा करे सो सारक्खणोपघात ॥ ६९ ॥ दश प्रकार की विशुद्धि कही है उद्गम दोष से बचना सो उद्गम विशुद्धि यावत् शरीर में ममत्व नहीं करना सो सार

शा० मूर्छा ॥ ७० ॥ द० दश प्रकार का सं० संक्लेश उ० उपाधि उ० उपाश्रय क० कषाय भ० भक्त पान म० मन व० वचन का० काया ना० ज्ञान दं० दर्शन च० चारित्र ॥ ७१ ॥ द० दश प्रकार का अ० असंक्लेश उ० उपाधि आ० यावत् च० चारित्र ॥ ७२ ॥ द० दश प्रकार का ब० बल सो० श्रोतेन्द्रिय ब० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रिय ना० ज्ञान दं० दर्शन च० चारित्र त० तप वी० वीर्य ॥ ७३ ॥ द० दश

विसोही प० तं० उग्गमविसोही, उप्पायणविसोही, जाव सारक्खणविसोही, ॥ ७० ॥ दसविहे संकिलेसे प० तं० उवहि संकिलेसे, उवस्सय संकिलेसे कसाय संकिलेसे, भत्तपाण संकिलेसे, मण संकिलेसे, वय संकिलेसे काय संकिलेसे णाण संकिलेसे दंसण संकिलेसे चरित्त संकिलेसे ॥ ७१ ॥ दसविहे असंकिलेसे प० तं० उवहि असंकिलेसे जाव चरित्त असंकिलेसे ॥ ७२ ॥ दसविहे बले प० तं० सोइंदिय बले जाव फासिंदियबले, णाणबले, दंसणबले, चरित्तबले, तवबले, वीरियबले

स्तप विशुद्धि ॥ ७० ॥ दश प्रकार का संक्लेश कहा है १ उपाधि उपकरण-संक्लेश २ उपाश्रयसंक्लेश ३ कषाय ४ भक्तपान ५ मन ६ वचन ७ काय ८ ज्ञान का ९ दर्शनका और १० चारित्र का संक्लेश ॥ ७१ ॥ दश प्रकारका असंक्लेश(समाधिके कारण)कहे हैं उपाधि असंक्लेश यावत् चारित्र असंक्लेश॥७२॥दश प्रकारके बल कहे हैं १ श्रोतेन्द्रियका बल यावत् स्पर्शेन्द्रियका बल ज्ञानबल, दर्शनबल, चारित्रबल, तपबल और वीर्यबल

मकार का स० सत्य ज० जनपद स० संमत ठ० स्थापना ना० नाम रू० रूप प० मत्यय व० व्यवहार भा० भाव जो० योग ओ० उपमा ॥ ७४ ॥ द० दश मकार की मो० मृषा को० क्रोध मा० मान मा०

॥७३॥ दसविहे सच्चे प० त० जणवय सम्मयट्ठवणा, नामे रूवे पडुच्च सच्चेय, ववहार भावजोगे, दसमे ओवम्म सच्चेय (१) ॥ ७४ ॥ दसविहे मोसे प० त०

॥ ७३ ॥ दश मकार के सत्य कहे हैं १ जनपदसत्य-जिस देशमें जिस २ अर्थका वाचक जो २ स्वशब्द होवे उस नाम से कहना सो जैसे पानी को कोकण देशमें पिच्च कहते हैं, उस को जल, नीर वगैरह पृथक् २ नामसे बोलाते भी हैं २ संमत सत्य अरविंद सो पंकज ३ स्थापना सत्य सो किसी को किसी नाम से स्थापना जैसे काष्ठ को चित्रित कर स्थापना करना ४ नामसत्य जैसानाम रखने में आया होवे सो कुल वर्धन नाम वाले को कुलवर्धन कहना फीर चाहे कुलवर्धता होवे या नहीं ५ रूप सत्य सो साधु का रूप (वेष) धारण किया परंतु गुण नहीं है तो भी उसे साधु कहना ६ अन्यवस्तु का आश्रय लेकर प्रतीती करना सो प्रतीत्य सत्य जैसे अनामिका से कनिष्ट अंगुली छोटी है या वर्जनी बडी है ७ व्यवहार सत्य पर्वत गलता है गिरि झरता है वगैरह बोलना ८ भाव सत्य निश्चयात्मक ९ योगसत्य सो संबंध से कहलावे जैसे दंड के संबंध से दंडी वगैरह १० औपम्य सत्य जैसे समुद्र जैसा तालाब ॥ ७४ ॥ दश मकार के असत्य (मृषा) कहे १ क्रोधाश्रित २ मानाश्रित ३ मायाश्रित ४ लोभ ५ राग ६ द्वेष ७ हास्य

माया लो० लोभ पि० राग दो द्वेष हा० हास्य भ० भय अ० आख्यात उ० उपघात नि०आश्रित ॥७८॥ द० दश प्रकार का स० सत्यमृषा उ० उत्पन्न नि० विगत उ० उत्पन्न विगत जी० जीव अ० अजीव जी० जीवा जीव अ० अनंत प० परित्त अ० अद्धा अ० अद्धद्धा ॥ ७६ ॥ दि० दृष्टिवाद के द० दशनाम दि० दृष्टिवाद हे० हेतुवाद भू० भूतवाद त० तथ्यवाद स० सम्यक्‌वाद ध० धर्मवाद भा० भाषाविजय पु०

कोहेमाणे माया, लोभे पिज्जे तहेव दोसेय, हास भये अक्खाइय, उवघाए निस्सिए दसमे (१) ॥ ७५ ॥ दसविहे सच्चामोसे प० त० उप्पन्नमीसए, विगय मीसए, उप्पन्नविगय मीसए, जीव मीसए, अजीव मीसए, जीवाजीव मीसए अणंत मीसए, परित्त मीसए अद्धा मीसए, अद्धद्धा मीसए ॥ ७६ ॥ दिट्ठिवायस्सण दस नामधिज्जा प० तं० दिट्ठिवाएइवा, हेतुवाएइवा, भूयवाएइ वा, तच्चावाएइवा, सम्मावाएइवा,

८ भय ९ आख्यात विकथा और १० उपघात आश्रित ॥ ७८ ॥ दश प्रकार के सत्य मृषा कहे, १ उत्पन्न मिश्र इस ग्राम में आज सो बालक का जन्म हुआ ऐसा कहना सो २ विगत मिश्र यहां सो मरगये सो ३ उत्पन्न विगत मिश्र सो का जन्म हुवा और सो मरगये ४ जीव मिश्र ५ अजीव मिश्र ६ जीवाजीव मिश्र ७ अनंत मिश्र ८ परित्त मिश्र ९ अद्धा मिश्र सो काल संबंधी और १० अद्धद्धा मिश्र ॥ ७६ ॥ दृष्टिवाद के दश नाम कहे हैं १ दृष्टिवाद २ हेतुवाद ३ भूतवाद ४ तथ्यवाद ५ सम्यक्त्व वाद ६ धर्मवाद

पूर्वगत अ० अनुयोग गत स० सर्व पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्व सु० सुखावह ॥ ७७ ॥ द० दश प्रकार के स० शस्त्र अ० अग्नि वि० विष लो० लवण सि० स्नेह खा० क्षार अं० अंबट दु० दुष्प्रयुक्त म० मन व० वचन का० काया भा० भाव अ० अविरति ॥ ७८ ॥ द० दश प्रकार का दो० दोष तं० जाति म० मतिभंग प० प्रशस्त प० परिहरन स० सलक्षण का० कारन हे० हेतु सं० संक्रमण

धम्मावाएइवा, भासाविजयेइवा, पुव्वगएइवा, अणुओगएइवा, सव्वपाण भूयजीव सत्तसुहावहेइवा, ॥ ७७ ॥ दसविहे सत्थे प० तं० सत्थ मग्गी विसं लोणं सिणेहो खारमंबिलं दुप्पउत्तो मणोवाया, काओ भावोय अविरई ॥ १ ॥ ७८ ॥ दसविहे दोसे प० त० तज्जायदोसे, मइभंगदोसे, पसत्थारदोसे, परिहरणदोसे, सलक्खणकारण

७ भाषा विजय ८ पूर्वगत ९ अनुयोग गत और १० सब प्राण भूत जीव सत्व सुखावह ॥ ७७ ॥ दश प्रकार के शस्त्र कहे हैं १ अग्नि २ विष ३ लवण ४ स्नेह सो तैल घृतादि ५ क्षार ६ अम्लादि खार ६ कांजी वगैरह खट्टा ७ खराब प्रवर्तीया हुवा मन ८ वचन ९ काया और १० अविरति रूप भाव ॥ ७८ ॥ दश प्रकार के दोष कहे हैं १ तज्जात दोष सो जाति कुलका दोष देना २ मतिभंग सो बुद्धिका नाश होना ३ प्रशास्ता सो मर्यादाकारी सभानायक का दोष ४ परिहरण दोष सो वादी प्रतिवादी को अप्रेम्य वस्तु का सेवन करना ५ स्वलक्षण दोष सो उपयोग लक्षण वाला जीव है परंतु वह यथ

॥ इ० दश प्रकार का वि० विशेष व० वस्तुतत्मात ए० एकार्थिक का० नित्य हि० हितार्थ म० आत्म उ० उपनीत ॥ ८० ॥ द० दश प्रकार

रणे निग्गह वत्थु दोसे ॥ १ ॥ ७९ ॥ दसविहे विसेसे प० तं० दोसेय, दोसेएगट्ठिएइय, कारणेय, पडुप्पन्ने, दोसेनिच्चहियट्ठमे ॥ १ ॥ पीएय, विसेसेनीयते दस ॥ ८० ॥ दसविहे सुद्धावायाणुजोगे प० तं०

दोष ७ हेतु दोष ८ संक्रमण दोष ९ निग्रह दोष और १० वस्तुक्षेप॥७९॥दश प्रकारके विशेष तु दोष सो अन्यकृत धर्मादि सर्वथा दूषित करे २ तज्जात दोष सो जन्म धर्म कर्मादिक ले १ उक्त दोनों प्रकार के दोष उपर्युक्त दश दोषों में कहाये गये हैं शेष आठ दोष का समावेश इस दोष शब्द में होता है. इन दोनों की तरह शेष का भी विशेष अर्थ समझना दोष; अथवा किसी के दोष में दोष नीकाले जैसे यह असत्य माया बहुत कठोर बोला यह दोषाय कार्थी दोष सो बहुत शब्द का एक ही अर्थ करे जैसे मोस, माणी, पानी, बैल वगैरह शब्दका र्थ करे ४ कारण दोष सो जिसकार्यका जो कारण होवे सो नहीं कहते अन्यही बतलावे सो का ५ प्रत्युत्पन्न दोष सो भूत भविष्य को छोडकर वर्तमान को माने ७ सब वस्तु को नित्य माने सो । ८ दीगमह सो विचार व्याख्यानादि में निरर्थक कथा वगैरह कहकर समय व्यतीतकरे ९ आत्म और १ परोपनीत सो पर भाषित दोष ॥ ८० ॥ दश प्रकार से शुद्ध वचनानुयोग कहा है

का सु० शुद्ध वा० वचन अ० अनुयोग में च० चकार मं० मकार पिं० अपिकार से० श्रेयस्कार सा० सायं कार ए० एकत्व पु० पृथक्त्व स० समास स० सक्रामित मि० मिश्र ॥८१॥ द० दश प्रकार का दा० दान अ० अनुकंपा स० संग्रह भ० भय का० कारुणिक ल० लज्जा गा० गर्व अ० अधर्म ध० धर्म का० क्रोधसे क० कीयाहुवा है ॥ ८२ ॥ द० दश प्रकार की ग० गति नि० नरकगति नि० नरक विग्रहगति ति० तिर्यंच

चकारे, मकारे, पिंकारे, सेयंकारे, सायंकारे, एगत्ते, पुहुत्ते, सजूहे, सकामिए, मिस्से, ॥८१॥ दसविहे दाणे प० तं० अणुकंपा सगहे चेव, भयाकालुणिएतिय, लज्जाए गारवेणाय, अधम्मेय पुणसत्तमे ॥ १ ॥ धम्मे अट्ठमवुत्ते, काहिइय कयंतिय ॥ ८२ ॥ दसविहा

१ चकार २ मकार ३ अपिकार ४ श्रेयस्कार ५ सायंकार ६ एकत्व ७ पृथक्त्व ८ समास ९ सक्रामित और १० कालक्रम भेदादि सो मिश्र ॥ ८१ ॥ दश प्रकार के दान कहे हैं १ अनुकंपा दान २ संग्रह दान सो कष्ट आनेपर देवे ३ भयसे देवे ४ शोकमे देवे अर्थात् किसी के मृत्युपीछेदेवे ५ लज्जा से देवे ६ अभिमान से देवे ७ अधर्म दान सो वेश्यादिक को विषय बुद्धि से देवे ८ धर्मदान सो सुपात्र को देना ९ क्रोध से देवे और १० उपकार किये हुवे को देवे ॥ ८२ ॥ दश प्रकार की गति कही १ नरक गति २ नरक विग्रह गति ३ तिर्यंच गति ४ तिर्यंच विग्रहगति ५ मनुष्यगति ६ मनुष्य विग्रहगति ७ देवगति ८

गति वि० तिर्यंच विग्रहगति जा० यावत् सि० सिद्धगति सि० सिद्धविग्रहगति ॥ ८३ ॥ द० दश मुंड सो० श्रोतेन्द्रिय मुंड जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रियमुंड को० क्रोध मुंड जा० यावत लो० लोभमुंड सि० शिरमुंड ॥ ८४ ॥ द० दश प्रकार की स० संख्या प० परिकर्म व० व्यवहार र० रज्जु गणित रा० राशि क० कला स० सवर्ण जा० जाव ताव व० वर्ग घ० घन व० वर्गावर्ग क० कल्प ॥ ८५ ॥ द० दश प्रकार का

गई प० तं० निरयगई, निरयविग्गहगई, तिरियगइ तिरिय विग्गहगइ एवं जाव सिद्धगई, सिद्धविग्गहगई ॥८३॥ दसमुंडा, प० तं० सोइंदियमुंडे, जाव फासिंदियमुंडे, कोहे जाव लोभमुंडे, सिरमुंडे ॥८४॥ दसविहे संखाणे प० तं० परिकम्मं ववहारे, रज्जुरासी कला सवन्नेय, जावं ताव तिवग्गो घणोय तहवग्गवग्गोवि ॥ १ ॥ कप्पोय ॥ ८५ ॥

देव विग्रहगति ९ सिद्धगति और १० सिद्ध विग्रहगति ८३ ॥ दश प्रकार के मुंड कहे हैं श्रोतेन्द्रिय मुंड यावत् स्पर्शेन्द्रिय मुंड, क्रोध मुंड यावत् लोभ मुंड और शिरमुंड ॥ ८४ ॥ दश प्रकार की संख्या कही १ संकलनादि अनेक गणित सो परिकर्म २ व्यवहार गणित ३ रज्जु गणित ४ राशि गणित ५ कलासवर्ण गणित ६ जाव ताव गणित ७ वर्ग ८ घन ९ वर्गावर्ग और १० कल्प सो काष्ठादि छेदन करना सो ॥ ८५ ॥ दश प्रकार के प्रत्याख्यान १ अनागत तप सो गुरु आदि की वैय्यावच्च

प० प्रत्याख्यान अ० अनागत अ० अतिक्रान्त को० कोटि सहित नि० नियमित सा० आगार अ० अना गार प० परिमाणकृत नि० निर्विशेष सं० संकेत अ०[अद्धाकाल प० प्रत्याख्यान द० दस प्रकार के ॥८६॥ द० दस प्रकार की स० समाचारी इ० इच्छा समाचारी मि० मिथ्यादुष्कृत त० तथाकार आ० आवस्सी

दसविहे पच्चक्खाणे प० तं० अणागय मइक्कंतं, कोडीसहिय नियटियचेव सागार मणागारं, परिमाणकडं निरवसेसं ॥ १ ॥ संकेयंचेव अद्धाए पच्चक्खाणं दसविहंतु ॥ १ ॥ ८६ ॥ दसविहा सामायारी प० तं० इच्छा मिच्छा तहक्कारो, आवस्सिया

करने का अवसर अनागत में आवेगा इस लिये आगामी तप वर्तमान में करे २ अतिक्रान्त सो व्याख्यानादि कार्य होनसे फीर तपश्चर्या करे ३ कोटि सहित दो करन तीनयोग या तीन करण तीन योग ४ नियमित निश्चय करे कि यह प्रत्याख्यान पूर्ण हुवे पीछे दूसरा तप करूंगा ५ अनत्था भोग वगैरह आगार सहित तपस्या करे ६ आगार रहित तप करे सो अनागार ७ परिमाण सो दाति प्रमुखका ८ निर्विशेष सो चौविहार तप ९ संकेत सो गठी मुठी सहित और १० अद्धाकाल सो काल की मर्यादा सहित पौरसी आदि॥८६॥ दस प्रकार की समाचारी कही है १ इच्छा समाचारी सो गुर्वादिक की इच्छानुसार कार्य कर २ मिथ्या सो सूक्ष्म अयोग्य आचरण होगया होवे उसका मिथ्या दुष्कृतदेना ३ गुर्वादिक के वचन को तहत्ति करना ४ जाते आवस्सही करना ५ कार्यकर पीछे आतेनिस्सही करना ६ गुरुसे पूछकर कार्य करना

नि निसही भा० आपुच्छना प० प्रतिपुच्छा छ० छंदना नि० निमंत्रणा उ० उपसंपद का० काल ॥ ८७॥ स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर छ० छद्मस्थ का० काल में अं० छेल्ली रा० रात्रि में इ० इस प० महास्वप्न पा० देखकर प० जग प० एक म० महाघोररूप दि० दिप्तवंत ता० तालपिशाच को मु० स्वप्न में प० पराजित प० देखकर प० जग ए० एक म० बडा मु० शुक्ल प० पांखवाला पु० पुरुषकोकिला को मु० स्वप्न में पा०

निसीहिया, आपुच्छणाय पडिपुच्छा, छंदणाय निमंतणा ॥ १ ॥ उवसंपयाय काले सामायारी भवे दसहा ॥ ८७ ॥ समणे भगवं महावीरे छउमत्थ कालियाए अंतिमराइयंसि इमे दस महासुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे तं० एगंचणं महाघोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुमिणे पराइयं पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगंचणं महंसुक्किलपक्खगं पुंसको

स्वाध्यायादि की वारंवार पृच्छा करना ८ गुरुके अभिप्राय अनुसार चलना ९ लाये हुवे आहारादिक की निमंत्रणा करना और १० मैं आपकाही हूं ऐसा कहना ॥ ८७ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी छद्मस्थ अवस्था की अंतिम रात्रिमें दश स्वप्न देखकर जागृत हुवे १ एक महाघोर दिप्तरूप का धारक ताड जैसा ऊंचा ताल पिशाच को पराजित कीया देखकर जागृत हुवे २ एक बडा श्वेत पांखवाला पुंस्को

* श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी ने छद्मस्थ अवस्था की अन्तिम रात्रि में गोदुहासन से ध्यान करते १ मुहूर्त मात्र की निद्रा में शुभ स्वप्न देखे.

देखकर प० जगे ए० एक म० बडा चि० चित्र विचित्र प० पांखका पु० पुरुष कोकिलको सु० स्वप्न मे
पा० देखकर प० जग ए० एक म० बडी दा० दोमाला स० सब र० रत्नमय सु० स्वप्न में पा० देखकर
प० प्र म० बडा मे० श्वेत गो० गौवर्ग पा० देखकर प० जगे ए० एक म० बडा प० पद्मसरोवर स० चारों बाजु
कु० कुसुमवाला पा० देखकर प० जगे ए० एक म० बडासागर उ० लहरी स० हजारों भु० भुजासे ति०
तीरे सु० स्वप्न में पा० देखकर प० जगे ए० एक म० बडा दि० सूर्य ते० तेजसे ज० जाज्वल्यमान सु०

पुंसकोइलगं इल्लगं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगचणं महाचित्तविचित्तपक्खगं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगचणं महंदामदुगं सव्वरयणामय सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगचणंमहं सेयं गोवग्गं पासित्ताण पडिबुद्धे, एगचणं महं पउमसरं सव्वओ समंता कुसुमियं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगचणं महं सागर उम्मीवीई सहस्सकलियं भुयाहिं तिन्न सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगचणं महं दिणकरं तेयसा जलं

किल स्वप्न में देखकर जागृत हुवे २ एक बडा विविध प्रकार की पांखवाला पुंस्कोकिल स्वप्न में देखकर जागृत हुवे ३ रत्नमय दो पुष्प की मालाओं देखकर जागृत हुवे ४ श्वेतगायों का वर्ग देखकर जागृत हुवे ५ चारों दिशि में कुसुमों से आच्छादित एक बडा पद्मसरोवर देखकर जागृत हुवे ७ हजारों भुजा महालहरियोंवाला एक बडा समुद्र भुजा से तीरा हुवा स्वप्न में देखा ८ तेजसे जाज्वल्यमान एक बडा सूर्य

स्वप्न में पा० देखकर प० जगे ए० एक म० बडा इ० पीला वे० वेडूर्य्य प० वर्णवाला नि० स्वतः के अ० आंतरडेसे वे० या माणुषोत्तर प० पर्वत स० सर्वबाजु से आ० वींटा हुवा प० घेराहुवा सु० स्वप्न में पा० देखकर प० जगे ए० एक म० बडा मं० मेरु पर्वत की मं० मेरु चूलिका उ० उपर सी० सिंहासन पे ग० गये म० आत्मा को सु० स्वप्न में पा० देखकर प० जगे ज० जो स० श्रमण भ० भगवन् म० महावीरने ए० एक म० बडा घो० घोररूप दि० दिप्तवंत ता० ताल पिशाच को सु० स्वप्न में प० पराजित

तं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगंचणं महं हरिवेरुलिय वण्णाभेण नियएणं अंतेणं माणुसुत्तरं पव्वयं सव्वओ समंता आवेढिय परिवेढियं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगंचणं महं मंदरे पव्वए मंदर चूलियाए उवरिं सीहासणवरगयं अप्पाणं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे जण्णं समणे भगवं महावीरे एगंमहं घोररूवं दित्तधर तालपिसाय सुमिणे पराजिय पासित्ताणं पडिबुद्धे, तण्णं समणेणं भगवया महावीरेणं मोहणिज्जे कम्मे मू

स्वप्नमें में देखकर जागृत हुवे ० पीला वैडूर्य रत्न समान अपने आंतरडेसे मानुषोत्तर पर्वत को चारों दिशा में लपेटा हुवा स्वप्न में देखा और १० मेरु पर्वत की चूलिकापर रहाहुवा सिंहासन पर स्वप्नमें स्वतः को रहेहुवे देख कर जागृत हुवे अब दश स्वप्न का फल बतलाते हैं १ जो श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी स्वप्न में तालपिशाच का पराजित किया हुवा देखकर जागृत हुवे इस लिये श्री श्रमण भगवंत

किया पा० दसकर प० जगे त० तमसे स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीरने मो० मोहनीय क० कर्म मू० मूलसे ओ० सयकीया स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ए० एक सु० शुक्ल प० पांखवाला जा० यावत प० जगे स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर सु० शुक्लध्यान सहित वि० विचरते हैं स० श्रमण भ० भगवान् प० महावीर ए० एक म० बडा चि० चित्रविचित्र प० पांखवाला जा० यावत् प० जगे स० श्रमण भ० भगवान म० महावीर स० स्वसमय प० परसमय वि० विविध दु० द्वादशांगी आ० कहे प प्ररूपे प०

लओ ओग्घाइए। जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सुक्किल्ल पक्खगं जाव प डिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे सुक्कझाणोवगए विहरइ, । जण्णं समणे भगवं महावीरे एगंमहं चित्तविचित्तपक्खगं जाव पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे स समय परसमयं चित्तविचित्तं, दुवालसंग गणिपिडगं आघवेइ पन्नवेइ परूवेइ दंसेइ निदंसेइ उवदंसेइ तं• आयारं जाव दिट्ठिवायं । जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं

महावीर स्वामीने मोहनीय कर्मरूप पिशाच का मूल से नाश किया २ श्री श्रमण भगवंत महावीरने एक बडा उज्वल पांखोंवाला पुंस्कोकिल स्वप्नमें देखा इस से भगवंत शुक्लध्यान से विचरे ३ श्री श्रमण भगवंत ने विविध प्रकार की पांखोंवाला एक पुंस्कोकिल पक्षी देखा जिस से श्री श्रमण भगवंत स्वसमय परसमय की विविध प्रकार के अर्थवाली आचारांग यावत् दृष्टिवादरूप द्वादशांगी कही, प्ररूपी बतलाइ, निर्देशकी

मरूप दे० बनलाए नि० विशप समझाते उ उपदेश देते आ० आचारांग जा० यावत् दि० दृष्टिवाद स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ए० एक म० बडी दा० दोशाला म० सर्व रत्नमय आ० यावत् प० जग म० श्रमण भ० भगवान् म० महावीरने दु० दोप्रकार का प० धर्म प० मरूपा आ० आगार धर्म अ० अनगार धर्म म० श्रमण भ० भगवान् म० महावीरने ए० एक म० बडा से० श्वेत गो० गौवर्ग मु० माला में जा० यावत् प० जगे म० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को चा० चतुर्विध सं० संघ

दामदुगं सव्वरयणामयं जाव पडिबुद्धे तण्णं समणे भगवं महावीरे दुविह धम्म पण्णवेइ तं आगारधम्मं च, अणगारधम्मं च, । जन्नं समणे भगवं महावीरे एगं महं सेयं गोवग्गं सुविणे जाव पडिबुद्धे तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स चाउरबाइण्णे संघ तं० समणा समणीओ सावगा सावियाओ । जन्नं समणे भगवं महावीरे एगं महापउमसरं जाव पडिबुद्धे तण्णं समणेणं भगवया महावीरेणं चउव्विहे

व उपदेशी ४ श्री श्रमण भगवंतने रत्नमय दो पुष्पकी मालाओं देखी जिस से श्रमण भगवंतने आगार धर्म व अणगार धर्म ऐसा दो प्रकारका धर्म कहा ५ जब श्री श्रमण भगवंतने स्वप्न में श्वेत गायोंका वर्ग देखा उस से श्री श्रमण भगवंतने चतुर्विध संघ की स्थापना की (साधु साध्वी श्रावक और श्राविका) ६ जब श्री श्रमण भगवंतने कुसुमों से आच्छादित एक पद्म सरोवर देखा उस से श्रमण भगवंतने भुवनपति,

स॰ साधु स॰ साध्वी सा॰ श्रावक सा॰ श्राविका स॰ श्रमण भ॰ भगवान् म॰ महावीर ए॰ एक म॰ बडा पद्मसरोवर जा॰ यावत् प॰ जगे स॰ श्रमण भ॰ भगवान् म॰ महावीरने च॰ चार प्रकारके दे॰ देव प॰ प्रत्ये भ॰ भवनवासी वा॰ वाणव्यंतर जो॰ ज्योतिषी वे॰ वैमानिक स॰ श्रमण भ॰ भगवान् म॰ महावीर म॰ बडा उ॰ लहरोंवाला स॰ हजारों जा॰ यावत् प॰ जगे स॰ श्रमण भ॰ भगवान् म॰ महावीर अ॰ अनादि अ॰ अनंत दी॰ दीर्घकाल चा॰ चातुरंत सं॰ संसार ति॰ तीरे स॰ श्रमण भ॰ भगवान् म॰ महावीर ए॰ एक म॰ बडा दि॰ दिनकर जा॰ यावत् प॰ जगे स॰ श्रमण भ॰ भगवान् म॰ महावीर

देवे पडिबुद्धे त॰ भवणवासी, वाणमंतरे, जोइसिए, वेमाणिए, जण्णं समणे भगवं महावीरे महं उम्मीवीइ सहस्सकलियं जाव पडिबुद्धे तण्णं समणे भगवं महावीरे अणाईए अणवयग्गे दीहमद्धे चाउरंत संसार कंतारे तिण्णा । जण्णं समणे भगवं महावीरे एगंमहं दिणकरं जाव पडिबुद्धे तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अणते अणु

वाणव्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिक नामक चार प्रकार के देव प्रत्ये जब श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने हजारों तरंगोवाला महान् समुद्रको भुजा से उत्तीर्ण किया हुवा स्वप्न में देखा इस से भगवंतने अनादि अनंत दीर्घ काल का चतुर्गतिरूप संसार का अंत किया ८ जब श्री भगवंतने एक बडा तेजस्वी सूर्य स्वप्न में देखा उस से भगवंत को अनंत उत्कृष्ट केवल ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुवा ९ श्री श्रमण भगवंतको वैडुर्यरत्न

चरे जाव समुप्पण्णे । जण्णं समणे भगवं महावीरे एगेणं महं हरिवेरुलिए जाव पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सदेव मणुयासुरलोए उराल कित्ति-वण्ण सद्दसिलोगा परिगुवंति इइखलु समणे भगवं महावीरेइति । जण्णं समणे भगवं महावीरे मंदरेपव्वए मंदरचूलियाए उवरिं जाव पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए केवलिपन्नत्तं धम्मं आघवेइ पन्नवेइ जाव उवदं

छे म० अनंत अ० अनुत्तर जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ए० एक म० बडा इ० पीला वे० वेरुलिय जा० यावत् प० जगे स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर का स० देव सहित म० मनुष्य अ० असुरलोक में उ० उदार कि० कीर्ति व० वर्ण स० शब्द सि० श्लोक प० व्याप्त हुवा स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीरने मं० मेरुपर्वत की मं० मेरुचूलिकापे जा० यावत् प० जगे स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर स० देव सहित म० मनुष्य अ० असुर की प० परिषदा म० मध्ये के० केवली प० परूपा ध० धर्म को आ० कहते हैं प० प्ररूपते हैं जा० यावत् उ० उपदेश देते हैं

समान भीतरहोसे मानुषोत्तर पर्वत लपेटा हुवा स्वप्न में देखा इस से श्री श्रमण भगवंत महावीरने देवलोक, मनुष्य व असुर लोक में बहुत यश कीर्ति, वर्ण, शब्द वगैरह प्रसरित हुवा देखा १० श्री श्रमण भगवंत मेरुकी चूलिकापे रहाहुवा सिंहासन पर बैठे हुवे स्वप्न में देखे जिस से मनुष्य, असुर व देवकी परिषदा में केवलिप्ररूपित धर्म की प्ररूपणा की ॥ ८८ ॥ दश प्रकार का सराग सम्यक्त्व दर्शन कहा

॥ ८८ ॥ द० दस प्रकार का स० सराग स० सम्यक् दर्शन नि० निसर्गरुचि उ० उपदेश रुचि आ० आज्ञारुचि सु० सूत्ररुचि बी० बीजरुचि अ० अभिगमरुचि वि० विस्ताररुचि कि० क्रिया सं० संक्षेप ध० धर्मरुचि द० दससंज्ञा आ० आहारसंज्ञा जा० यावत् प० परिग्रहसंज्ञा को० क्रोधसंज्ञा जा० यावत् लो० लोभसंज्ञा ओ० ओघसंज्ञा लो० लोकसंज्ञा ने० नारकीको द० दससंज्ञा ए० ऐसे जा० यावत् वे० वै

सेइ ॥ ८८ ॥ दसविहे सराग संमदंसणे प० तं० निस्सग्गुवएसरुई, आणारुई सु त्तबीयरुइमेव, अभिगम वित्थाररुई, किरिया संखेव धम्मरुई ॥ १ ॥ दस सण्णाओ प० तं० आहारसण्णा जावपरिग्गहसण्णा, कोहसण्णा जाव लोभसण्णा ओहसण्णा, लोयसण्णा। नेरइयाणं दससण्णा एवंचेव एवंनिरंतरं जाव वेमाणियाणं ॥८९॥ नेरइयाणं दसविह वेयण

१ निसर्ग रुचि सो प्रकृतियों का उपशम होकर स्वभावसे ही सम्यक्त्व की प्राप्ति होवी है २ उपदेश रुचि सो गुरु आदि के उपदेश से रुचि होवे ३ आज्ञा रुचि ४ सूत्ररुचि ५ बीज रुचि ६ अभिगम रुचि ७ विस्तार रुचि ८ क्रिया रुचि ९ संक्षेप रुचि और १० धर्म रुचि दस प्रकारकी संज्ञा कही १ आहार संज्ञा २ भय संज्ञा ३ मैथुन संज्ञा ४ परिग्रह संज्ञा ५ क्रोध संज्ञा ६ मान संज्ञा ७ माया संज्ञा ८ लोभ संज्ञा ९ ओघ संज्ञा और १० लोक संज्ञा ये दस प्रकार की संज्ञा नरक के जीव यावत् वैमानिक देव तक चौविसही दंडक के जी

मानिकको ॥ ८९ ॥ ने नारकी द्र० दशप्रकारकी वे० वेदना प० अनुभवते वि० विचरते हैं सी० शीत उ० उष्ण खु० क्षुधा पि० तृषा कं० खुजली प० परवशपना भ० भय सो० शोक ज० ज्वर वा० व्याधि ॥ ९० ॥ द० दशस्थान छ० छद्मस्थ स० सर्वभावसे न० जाने नहीं न० देखेनहीं ध० धर्मास्तिकाय जा० यावत् वा० वायु अ० यह जि जिन भ० होगा वा० अथवा न० नहीं भ होगा अ० यह स० सर्व दुःखका अं० अंत क० करेगा न० नहीं क० करेगा ए० इनको उ० उत्पन्न ना० ज्ञान द० दर्शनवाले

पच्चणुभवमाणा विहरति तं० सीय, उसिणं खुहं पिवासं, कंडुं, परज्झ, भयं, सोगं जरं, वाहिं ॥९०॥ दसट्ठाणाइ छउमत्थे सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ तं० धम्मत्थिकायं जाव वाय, अयं जिणे भविस्सइ, वा नभविस्सइ, अयं सव्वदुक्खाणमंतं करिस्सइ वान वाकरिस्सइ एयाणिचेव उप्पन्ननाणदंसणधरे जाणइ जाव अयं सव्व दुक्खाणमंत करिस्सइ

यों को होती है ॥ ८९ ॥ नारकी दश प्रकारकी वेदना वेदते हुवे विचरते हैं १ शीत २ उष्ण ३ क्षुधा ४ पिपासा ५ खुजली ६ परवशपना ७ भय ८ शोक ९ ज्वर और १० व्याधि ॥९०॥ दश स्थानक छद्मस्थ जीव सब भाव से नहीं जानसकते हैं और नहीं देख सकते है धर्मास्तिकाय यावत् वायु और यह जीव जिन होगा या नहीं होगा, यह जीव सब दुःखों का अंत करेगा अथवा नहीं करेगा क्योंकि दश स्थानक

मा० मानते है जो यावत् अ० यह म० सबदुःखका अं अंत क० करेगा न नहीं क० करेगा ॥ ११ ॥ द० दशदशा क० कर्मविपाक उ० उपासक अं० अंतगड अ० अनुत्तरोववाई आ० आचारांग प० प्रश्नव्याकरण बं० बंध दो० दोगिद्धि दी० दीर्घ सं० संक्षेप ॥ १२ क० कर्मविपाकके द० दशअध्य यन मि० मृगापुत्र गु० गात्रास अं० अंडका स० शकट मा० माहण का नं० नंदिषेण का सू० सौकरिक उ० उदुंबर स० सहस्रोदाह आ० आमलक कु० कुमार लच्छी ॥ १३ ॥ उ० उपासक दशा के द० दस

वा, नकरिस्सइ ॥ ११ ॥ दसदसाओ पण्णत्ताओ तं० कम्मविवागदसाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइय दसाओ, आयारदसाओ पण्हावागर ण दसाओ, बंधदसाओ, दोगिद्धि दसाओ, दीहदसाओ, संखेवियदसाओ ॥ १२ ॥ कम्म विवागदसाण दस अज्झयणा प० तं० मियापुत्तेय गुत्तासे अंडे सगडेइ यावरे, माहण नंदिसेणेय, सूरिण्य उदुंबरे ॥ १ ॥ सहसुद्दाहे आमलए, कुमारेलेच्छइतिय ॥ १३ ॥

केवल ज्ञान दर्शन धरनवाले जान सकते हैं ॥ ११ ॥ दश दशा (दश शास्त्र दस अध्ययनवाले) कहे हैं १ कर्म विपाक २ उपासक दशांग ३ अंतगड दशा ४ अनुत्तरोववाई ५ आचारांग (दशाश्रुतस्कंध) ६ प्रश्न व्याकरण दशा ७ बंध दशा ८ दोगिद्धि ९ दीर्घ दशा और १० संक्षेप दशा ॥ १२ ॥ प्रथम कर्म विपाक दशा के दश अध्ययन १ मृगापुत्रका २ गोत्रास का ३ अंड का ४ शकट ५ माहण ६ नंदिषेण ७ सौकरिक ८ उदुंबर दत्त ९ सहस्रोदाह आमलक और १० कुमारलच्छी ॥ १३ ॥ उपासक दशांग के दश अध्ययन १ आनंद

अध्ययन आ० आनन्द का० कामदेव गा० गाथापति चु० चुलनी पिया सु० सुरादेवी चु० चुल्लशतक गा० गाथापति कुं० कुंडकोलिक स० सद्दाल पुत्र म० महाशतक नं० नंदिनी पिता सा० शालिका पुत्र ॥ १४ ॥ अं० अंतगड दशा के अ० दश अध्ययन न० नमीराम म० मातंग सो० सोमिल रा० रामगुप्त सु० सुदर्शन ज० जमाली भ० भगाली किं० किंकर्मपछाति फा० फालिय मं० मंडित पुत्र ॥ १५ ॥ अ० अनुत्तरोववाई के

उवासगदसाण दस अज्झयणा प० त० आणंदे कामदेवेय, गाहावइचुलणीपिया सुरादेवे चुल्लसए, गाहावइकुंडकोलिए ॥ १ ॥ सद्दालपुत्ते महासयए, णंदिणी पिय सालेइयापिया ॥ १४ ॥ अंतगडदसाण दस अज्झयणा प० तं० नमी मयगे सोमिल्ल, रामगुत्ते सुदंसणे, जमालीय भगालीय किंकमेपल्लए इय ॥ १ ॥ फालेअ मंडपुत्तेय, एमेतेदस आहिया ॥ १५ ॥ अणुत्तरोववाइय दसाणं दसअज्झयणा प० तं०

२ कामदेव ३ चुलनी पिता गाथापति ४ सुरादेवी ५ चुल्लशतक ६ कुंडकोलिक गाथापति ७ सद्दालपुत्र ८ महाशतक ९ नंदिनी पिता और १० शालिका पुत्र ॥ १४ ॥ अंतगडदशांग के दश अध्ययन १ नमीराम २ मातंग ३ सोमिल ४ रामगुप्त ५ सुदर्शन ६ जमाली ७ भगाली ८ किंकर्मपछाते ९ फालिय और १० मं डित पुत्र ॥ १५ ॥ अनुत्तरोववाई के दश अध्ययन १ ऋषिदास २ धन्ना ३ सुनक्षत्र ४ कार्तिक ५ संस्थान

द० दश अणयन इ० इसिदास ध० धन्ना मु० मुनक्षत्र कि० कार्तिक स० संस्थान सा० शालिभद्र आ० आनंद
ते तेतली द० दशार्णभद्र अ० अतिमुक्त ॥०६॥ आ० आचारांग द० दशा के अ० अध्ययन बी० बीश अ०
असमाधि स्थानक इ० इकीस स सबला दोष ति० तेत्तीस अ० आसातना अ० आठ ग० गणिसंपदा द०
दश चि० चित्तसमाधि स्थानक इ० इग्यारह उ० श्रावक प्रतिमा बा० बारह भि० भिक्षुप्रतिमा प० पर्युषण
कल्प ती० तीस मो० मोहनीय कर्म आ० आजाति ॥२७॥ प प्रश्न व्याकरण दशा के द० दश अध्य

इसिदासेय धण्णेय, सुनक्खत्तेय कित्तियेए, सठाणे सालिभद्दए, आणंदे तेयलीइय
॥ १ ॥ दसन्नभद्दे अइमुत्त एमेते दस आहिया ॥ १६ ॥ आयार दसाणं दस
अज्झयणा प० तं० वीसं असमाहिट्ठाणा, इक्वीसंसबला, तित्तीसं आसायणाओ
अट्ठविहा गणिसंपया, ॥१॥ दस चित्त समाहिट्ठाणा, इक्कारस उवासग पडिमाओ, बारस
भिक्खुपडिमाओ, पज्जोसवणाकप्पे, तीसंमोहणिज्जट्ठाणा, आजाइट्ठाणं ॥ १७ ॥ पण्हावागरण

६ शालिभद्र ७ आनंद ८ तेतली ९ दशार्णभद्र और १० अतिमुक्त ॥ १६ ॥ आचारांग दशाके दश अध्य
यन १ बीस असमाधि स्थानक का २ इकीस सबल दोष का ३ तेत्तीस आसातना का ४ आठ आचार्यकी
संपदा का ५ दश चित्त की समाधि का ६ इग्यारह श्रावक की प्रतिमा ७ बारह साधुकी प्रतिमा ८ पर्युषण
कल्प ९ तीस मोहनीय कर्म का १० संमूर्छिम गर्भज का स्थानक ॥ १७ ॥ प्रश्न व्याकरण दशा के दश

पन ३• उपमा ४० गन्धा ३० ऋषिभाषित भा आचार्य भाषित म० महावीर भाषित सो• सोमक प्रश्न
को० कामद प्रश्न भ भराग प्रश्न भ० भंगुष्ट प्रश्न या० पाहुप्रश्न ॥ १८ ॥ बं• बंध दशा के द० दश अ
ध्ययन प० प्र म मोक्ष द० देवर्द्धि स्मारमंडल भा आचार्य विमतिपत्ती उ० उपाध्याय विमतिपत्ती
भा० भावना वि० विमुक्ति स० शाश्वत क० कर्म ॥ १९ ॥ दो० दोगिद्धि दशा के द० दश अध्ययन वा०

इमाण दस अज्झयणा प• त० उवमा सखा इसिभासियाइ, आयरिय भासियाइ,
महावीर भासियाइ खोमगपसिणाइ, कामलपसिणाइं अद्दागपसिणाइं अगुट्ठपसिणाइ,
बाहुपसिणाइ॥ १८॥ बंधदसाणं दस अज्झयणा प•त•बंधे मुक्खय देवड्ढी, दसारमंडलेवय,
आयरिय विप्पडिवत्ती, उवज्झाय विप्पडिवत्ती, भावणा, विमुत्ती, सासयकम्मे ॥१९॥
दोगिद्धि दसाणं दस अज्झयणा प• तं• वाए, विवाए उववाए, सुक्खित्ते, कसिणे,

अध्ययन १ उपमा २ गंध्या ३ ऋषिभाषित ४ आचार्य भाषित ५ महावीर भाषित ६ सोमक प्रश्नका
प्रश्न ७ कोमल प्रश्न ८ भराग सो आरीसा का प्रश्न ९ अंगुष्ठ का प्रश्न १० भुजाका प्रश्न ॥ १८ ॥ बंध
दशा के दश अध्ययन १ बंध २ मोक्ष ३ देवर्द्धि ४ दसार मंडल ५ आचार्य विमतिपत्ती ६ उपाध्याय वि
मतिपत्ती ७ भावना ८ विमुक्ति ९ शाश्वत और १० कर्म का ॥ १९ ॥ दो गिद्धि दशा के दश अध्ययन

वात वि० विवात उ० उपपात सु० सुसखे क० कृत्स्न बा० बियालीस स्वप्न ती० तीस महास्वप्न बा० बह
त्तर स० सर स्वप्न हा० हार रा० रामगुप्त ॥ १०० ॥ दी० दीर्घ दशा के द० दश अध्ययन चं० चंद्र
सू० सूर्य सु० शुक्र सि० श्रीदेवी प० प्रभावती दी० द्वीप समुद्र विभक्ति ब० बहु पुत्रिका मे० मेरु थे० स्थ
विर सं० संभूतविजय प० पद्म उ० उस्सास ॥ १०१ ॥ सं० संक्षेपिका द० दशा के द० दश अध्ययन
च ...॥ विमान प्रविभक्ति म० महालिका विमान प्रविभक्ति अं० अंगचूलिका व० वग्गचूलिका वि०

बायालीसं सुविणा, तीसंमहासुविणा, बावत्तरिसव्व सुमिणा, हारे, रामगुत्ते, एमेए दस
आहिया ॥ १०० ॥ दीहदसाण दस अज्झयणा प० तं० चंदेसूरेय सुक्केय, सिरिदेवी,
पहावइ दीवसमुद्दोववत्ती, बहुपुत्तीमंदरेइय, थेरे सम्भूयविजए, पम्ह उस्सासनिस्सासे,
॥१०१॥संखेवियदसाणं दसअज्झयणा प० तं० खुड्डिया विमाण पविभत्ती, महल्लियाविमाण
पविभत्ती, अंगचूलिया, वग्गचूलिया, विवाहचूलिया, अरुणोववाए, वरुणोववाए,

१ वात २ निवात ३ उपपात ४ सुक्षेत्र ५ कृत्स्न ६ बियालिस स्वप्न ७ तीस महास्वप्न ८ सब बहोत्तर स्वप्न
९ हार और १० रामगुप्त ॥१००॥ दीर्घ दशा के दश अध्ययन कहे हैं १ चंद्राध्ययन २ सूर्याध्ययन ३ शुक्रा
ध्ययन ४ श्री देवी ५ प्रभावती ६ द्वीप समुद्र विभक्ति ७ बहु पुत्रिका ८ मेरु ९ स्थूलिभद्र के गुरु स्थविर सं
भूत विजय और १० स्थविर पद्म उस्सास का अध्ययन ॥१०१॥ संक्षेपिका दशा के दश अध्ययन १ क्षुद्रिका
विमान प्रविभक्ति २ महालिका विमान प्रविभक्ति ३ अंग चूलिका ४ वर्ग चूलिका ५ विवाह चूलिका ६ अ

विसाह चूलिका अ० अरुणोपपात व० वरुणोपपात ग० गरुडोपपात वे० वेलंधरोपपात वे० वैश्रमणोप पात ॥ १०२ ॥ द० दश सा० सागरोपम को० कोडाकोडि का० काल उ० उत्सर्पिणी द० दश सा० सागरोपम को कोडाकोडी का० काल ओ अवसर्पिणी ॥ १०३ ॥ द० दश प्रकार के ने० नारकी अ० आंतरा रहित उ० उत्पन्न प० परंपरा उ० उत्पन्न अ० आंतरा रहित, अ० अवगाहना प० परंपरा अ० अवगाहना अ० आंतरा रहित आ० आहारी प० परंपरा आ० आहारी अ० आंतरा रहित

गरूलोववाए, वेलंधरोववाए, वेसमणोववाए, ॥ १०२ ॥ दस सागरोवम कोडाकोडी ओ कालो उस्सप्पिणीए, दस सागरोवम कोडाकोडीओकालो ओसप्पिणीए ॥ १०३ ॥ दसविहा नेरइया प० तं० अणंतरोववण्णा परंपरोववण्णा, अणं-तरोवगाढा, परंपरोवगाढा, अणंतराहारगा, परंपराहारगा, अणंतरपज्जत्ता, परंपरपज्जत्ता,

रुणोपपात ७ वरुणोपपात ८ गरुडोपपात ९ वेलंधरोपपात और १० वैश्रमणोपपात ॥ १०२ ॥ दश कोडा कोडी सागरोपमका उत्सर्पिणी काल दश कोडाकोडी सागरोपमका अवसर्पिणी काल ॥ १०३ ॥ दश प्रकार के नारकी कहे हैं १ अनंतर उत्पन्न २ परंपरोत्पन्न ३ अनंतर क्षेत्र में रहनेवाले ४ परंपरा क्षेत्र में रहनेवाले ५ अनंतर आहारी ६ परंपरा आहारी ७ अनंतर पर्याप्ता ८ परंपरा पर्याप्ता ९ चरम और १०

प० पर्याप्ता प० परंपरा पचाप्ता च० चरिम अ० अचरिम ॥१०४॥ च० चतुर्थ प० पंकप्रभा पृथ्वी में द० दस नरकावास स० शतसहस्र ॥ १०५ ॥ र० रत्नप्रभापृथ्वी के ज० जघन्य ने० नारकी की द० दशवर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति ॥ १०६ ॥ च० चौथी पं० पंकप्रभा पु० पृथ्वी के उ० उत्कृष्ट द० दश सा० सागरोपम की ठि० स्थिति ॥ १०७ ॥ पं० पांचवी धू० धूम्रप्रभा पु० पृथ्वी के ज० जघन्य ने० नारकीकी द० दश सा० सागरोपम की ठि० स्थिति ॥ १०८ ॥ अ० असुर कुमारकी ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र की

चरिमा, अचरिमा एवं निरंतर जाव वेमाणिया ॥ १०४ ॥ चउत्थीएणं पंकप्पभाए पुढवीए दस नरयावास सयसहस्सा प० ॥ १०५ ॥ रयणप्पभाए पुढवीए जहन्ने णं नेरइयाणं दसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ॥ १०६ ॥ चउत्थीएण पंकप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं नेरइयाणं दससागरोवमाइं ठिई प० ॥ १०७ ॥ पंचमीए धूम प्पभाए पुढवीए जहन्नेण नेरइयाणं दससागरोवमाइं ठिई प० ॥ १०८ ॥ असुर

अचरम. ऐसे ही वैमानिक तक चोविस ही दंडक का जानना ॥ १०४ ॥ चौथी पंक प्रभा पृथ्वी [नरक] में दश लक्ष नरकावास कहे हैं ॥१०५॥ पहली रत्नप्रभा नामक नरक में जघन्य दश हजार वर्ष की नारकी की स्थिति कही ॥ १०६ ॥ चौथी पंक प्रभा पृथ्वी में नारकी की उत्कृष्ट स्थिति दश सागरोपम की कही ॥ १०७ ॥ पांचवी धूम्रप्रभा नामक पृथ्वी में नारकी की जघन्य स्थिति दश सागरोपम की कही ॥१०८॥

ठि० स्थिति प० ऐसे था० स्तनित कुमार की ॥ १०९ ॥ बा० बादर वनस्पति कायाकी उ० उत्कृष्ट द० दसवर्ष हजार ऐ० ऐसकी ठि० स्थिति ॥ ११० ॥ वा० वाणव्यंतर दे० देवता की ज० जघन्य द० दसवर्ष स सहस्र की ठि० स्थिति ॥ १११ ॥ बं० ब्रह्म देव लोक में उ० उत्कृष्ट दे० देवताकी द० दश सागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ११२ ॥ लं० लंतक देव लोक में दे० देवता की ज० जघन्य द० दश सागरोपम की

कुमाराणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिई प० ॥ १०९ ॥ एवं जाव थणियकुमाराणं बायरवणस्सइ काइयाणं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं ठिई प० ॥ ११० ॥ वाण मंतराणं देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइंठिई प० ॥ १११ ॥ बंभलोएकप्पे उक्कोसेणं देवाणं दससागरोवमाइं ठिई प० ॥ ११२ ॥ लंतएकप्पे देवाणं जह ण्णेण दससागरोवमाइं ठिई प० ॥ ११३ ॥ दसहिं ठाणेहिं जीवा आगमेसि भद्दत्ताए

असुरकुमार की जघन्य स्थिति दश हजार वर्षकी कही, ऐसे ही स्तनित कुमार तकके देवताओं की जघन्य स्थिति दश हजार वर्ष की कही ॥ १०९ ॥ बादर वनस्पति कायाकी स्थिति उत्कृष्ट दश हजार वर्ष की कही ॥ ११० ॥ वाणव्यंतर देवता की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की कही ॥ १११ ॥ ब्रह्म देवलोक में देवताओं की स्थिति जघन्य दश सागरोपम की ॥ ११२ ॥ लंतक देवलोक में देवताओं की उत्कृष्ट स्थिति दश सागरोपम की कही ॥ ११३ ॥ जीव दश स्थानक से आगामिक वर्ष में भद्रिकपनेसे

ठि॰ स्थिति ॥११३॥ द॰ दश का॰ कारण से जी॰ जीव आ॰ आगम में भ॰ भद्रिकपनेका क॰ कर्म प॰ करे अ॰ नियाणा करे नहीं दि॰ समकितवन्त जो॰ योग में उपधानवन्त खं॰ क्षमावन्त जि॰ जितेन्द्रिय अ॰ अमायी अ॰ पासत्थपना रहित सु॰ अच्छीपर्याय से प॰ प्रवचन में व॰ वात्सल्यता प॰ प्रवचन में उ॰ उपभावन्त ॥ ११४ ॥ द॰ दश प्रकार की आ॰ आशंसा प्रयोग इ॰ इहलोक प॰ परलोक दु॰

कम्मं पगरेंति तं॰ अभिदाणयाए, दिट्ठिसंपन्नयाए, जोगवाहियथाए, खंतिखमणयाए, जीइं

दियाए, अमाइल्लयाए, अपासत्थयाए, सुसामण्णयाए पवयणवच्छल्लयाए, पवयणउब्भावण

याए॥ ११४॥ दसविहे आसंसप्पओगे प॰ तं॰ इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्प

ओगे, दुहओलोगासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामासंसप्प

कर्म करते हैं १ करणी के फलकी प्राप्ति का नियान नहीं करने से २ सम्यक्त्व निर्मल रखने से ३ योग उपधान सो वसाद से श्रुतोपधान करते ४ क्षमा करने से ५ पचेन्द्रियको जीतने से ६ माया कपट नहीं करने से ७ पार्श्वस्थ अर्थात् शिथिलता त्यजते ८ साधु का शुद्धाचार पालन करते ९ प्रवचन व जैन शासन की प्र भावना करने से और १० धर्म कथा करने से ॥ ११४ ॥ दश प्रकारका आशंसप्रयोग-वांच्छाका प्रयोग १ इहलोकके सुख की वांच्छा करे २ परलोक के सुख की वांच्छा करे ३ इस लोक और परलोक ऐसे दोनों लोक के सुख की वांच्छा करे ४ सुखी बनकर बहुत जीना चाहे ५ दुःखी होने से मरनेकी वांच्छा

उभय लोक जी० जीवित म० मरण का० काम भो० भोग ला० लाभ, पू० पूजा स० सत्कार ॥११५॥ द० दश प्रकार का ध० धर्म गा० ग्रामधर्म न० नगरधर्म र० राष्ट्रधर्म पा० पाखंडधर्म कु० कुलधर्म ग० गणधर्म सं० संघध र्म सु० सूत्रधर्म च० चारित्रधर्म अ० अस्तिकायधर्म ॥११६॥ द० दश स्थविर गा० ग्राम न० नगर र०

आगे भोगासंसप्पओगे लाभासंसप्पओगे, पूयासंसप्पओगे, सक्कारासंसप्पओगे, ॥ ११५ ॥ दसविहे धम्मे प० तं० गामधम्मे, नगरधम्मे, रट्ठधम्मे, पासंडधम्मे, कुलधम्मे, गणधम्मे, संघधम्मे, सुयधम्मे, चारित्तधम्मे, अत्थिकायधम्मे, ॥ ११६ ॥

करे ६ मनोज्ञ शब्दादि रूप कामकी इच्छा करे ७ भोग की इच्छा करे ८ लाभकी इच्छा करे और १० सत्कार सन्मान की इच्छा करे ॥ ११५ ॥ दश प्रकारका धर्म कहा १ ग्राम धर्म सो विषयाभिलाष २ नगर धर्म सो नगरका आचार ३ राष्ट्रधर्म सो देश का आचार ४ पाखंड धर्म सो पाखंडियों का आचार ५ कुल धर्म सो कुल का आचार ६ गण धर्म ७ संघ धर्म ८ श्रुत धर्म ९ चारित्र धर्म और १० अस्तिकाय धर्म ,॥११६॥ दश प्रकारके स्थविर कहे हैं १ ग्राम स्थविर सो बुद्धिवंत २ नगर स्थविर सो नगर जनको सन्मार्ग में प्रवर्तावे ३ राष्ट्र में स्थविर ४ प्रशास्तार स्थविर ५ कुल स्थविर ६ गण स्थविर ७ संघ स्थविर ८ जाति स्थविर ९ सूत्र स्थविर और १० पर्याय [दीक्षा] स्थविर ॥ ११७ ॥ दश प्रकारके पुत्र कहे हैं १ आत्मज सो पिता के शरीर से पुत्र की उत्पत्ति होवे जैसे भरत को आदित्य यश २ स्त्री से पुत्रकी

राष्ट्र प० प्रशस्तार कु० कुल ग० गण सं० संघ जा० जाति सु० सूत्र प० पर्याय ॥ ११७ ॥ द० दस पुत्र अ० आत्मज स्वि० क्षेत्रज दि० दत्तक वि० विनयित उ० औरस मो० मोखर सों० सौंडीर सं० संवर्द्धित उ० उपयाचित ध० धर्मन्तेवासी ॥ ११८ ॥ के० केवली को द० दस अनुत्तर ना० ज्ञान दं० दर्शन च०

दसथेरा प० तं० गामथेरा, नगरथेरा, रट्ठथेरा, पसत्थारथेरा, कुलथेरा, गणथेरा, संघथेरा, जाइथेरा, सुयथेरा, परियायथेरा, ॥ ११७ ॥ दसपुत्ता पं० तं० अत्तए खित्तए, दिन्नए, विन्नए, उरसे मोहरे, सोंडीरे, संवुड्ढे, उववाइए, धम्मंतेवासी

उत्पत्ति होवे जैसे पांडुके पांडव हुवे आदित्यादिकसे कुन्ती और माद्री को पांच पांडव हुवे ३ दत्तकपुत्र सो पुत्ररहित का मनुष्य पुत्रवान बनने के लिये अन्य पुत्र को दत्तक लेवे ४ विनयित सो जिस को शिक्षा दी होवे सो ५ उपरस अथवा औरस सो पाडोसी आदि किसी का पुत्र होवे और उस का विशेष संबंध रहने से उसपर पुत्र समान प्रीति होवे और उस का पालन पोषण करे ६ मोखर पुत्र सो कोई लडका स्वतः आकर मिष्ट वचनों से कहे कि मैं तुम्हारा लडका हूं उस को लौकिक में (स्वयं उपागत) भी कहते हैं ७ शौंडीर पुत्र सो जीतकर अपना पुत्र बनावे ८ किसी अनाथ के पुत्रका पोषण कर बडाकर के अपना पुत्र बनावे सो संवर्द्धितपुत्र ९ उपयाचितपुत्र सो देव आराधना से पुत्रकी प्राप्ति होवे और १० जिस को प्रव्रज्या दीक्षा देवे सो धर्मन्तेवासी पुत्र ॥ ११८ ॥ केवली को दस अनुत्तर-प्रधान कहा १ अनुत्तर

चारित्र त० तप वी० वीर्य ख० क्षमा मु० मुक्ति अ० आर्जुता म० मृदुता ला० लघुता ॥ ११९ ॥ स० समय क्षेत्र में द० दस कुरु पं० पांच दे० देवकुरु पं० पांच उ० उत्तरकुरु त० तहां द० दश म० बडे म० महाद्रुम जं० जंबूसुदर्शन धा० धातकीवृक्ष म० महाधातकी वृक्ष प० पद्मवृक्ष म० महापद्म वृक्ष पं० पांच कू० कूटसाल्मलीवृक्ष त० तहां द० दश देवता म० महर्द्धिक जा० यावत् प० रहते हैं अ० अना

॥ ११८ ॥ केवलिस्सणं दस अणुत्तरा प० तं० अणुत्तरेनाणे, अणुत्तरेदंसणे, अणुत्तरेचरित्ते, अणुत्तरेतवे, अणुत्तरेवीरिए, अणुत्तराखती, अणुत्तरामुत्ती, अणुत्तरेमज्जवे, अणुत्तरेमद्दवे, अणुत्तरेलाघवे, ॥ ११९ ॥ समयक्खित्तेणं दसकुराओ प० तं० पंचदेवकुराओ, पंचउत्तरकुराओ, । तत्थणं दसमहइमहालया महादुमा प० तं० जंबूसुदंसणे, धायइरुक्खे, महाधायइरुक्खे, पउमरुक्खे, महापउमरुक्खे, पंच कूडसामलीओ, । तत्थणं दसदेवा महिड्डिया जाव परिवसंति तं० अणाढिए जंबू

ज्ञान २ अनुत्तर दर्शन ३ अनुत्तर चारित्र ४ अनुत्तर तप ५ अनुत्तर वीर्य ६ अनुत्तर क्षमा ७ अनुत्तर मुक्ति ८ अनुत्तर आर्जुता ९ अनुत्तर मृदुता और १० अनुत्तर लघुता ॥ ११९ ॥ समय क्षेत्र सो अढाई द्वीप में दस कुरु कहे हैं पांच देव कुरु और पांच उत्तर कुरु कहे हैं, उस में बहुत बडे वृक्ष महाद्रुम कहे हैं १ जम्बू सुदर्शन २ धातकी वृक्ष ३ महाधातकी वृक्ष ४ पद्म वृक्ष ५ महापद्म वृक्ष और पांच कूटसाल्मलीवृक्ष

दीप म० जंबूद्वीप अधिपति सु सुदर्शन पि० प्रियदर्शन पो० पौंडरीक म० महापौंडरीक पं० पांच ग० गरुड वे० वेणुदेवता ॥ १२० ॥ द० दश कारन से ओ० संपूर्ण दु० दुषम जा० जानना अ० अकाल में व० वर्षे का० काल में न० नहीं व० वर्षे अ० असाधु पू० पूजाते सा० साधु न० नहीं पूजाते गु० गुरु से ज जन मि० मिथ्या प्रतिपन्न अ० अमनोज्ञ स० शब्द जा० यावत् फा० स्पर्श ॥ १२१ ॥ द० दश कारन से ओ० संपूर्ण सु० सु ष जा० जानना अ० अकाल में न नहीं व० वर्षे दे० दसेस मि०

दीवाहिवई सुदंसणे पियदंसणे पोंडरीए, महापोंडरीए, पंचगरुला, वेणुदेवा, ॥ १२० ॥ दसहिं ठाणेहिं ओगाढं दुस्समं जाणिज्जा तं० अकाले वरिसइ, काले-नवरिसइ, असाहूपूइज्जंति, साहूनपूइज्जंति, गुरुसु जणो मिच्छपडिवन्नो, अमणुन्ना सद्दा जाव फासा ॥ १२१ ॥ दसहिं ठाणेहिं ओगाढं सुसमं जाणिज्जा तं० अका

उनपर महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाले दश देव रहते हैं १ जम्बूद्वीप का अधिपति अनादृत २ सुदर्शन ३ प्रिय दर्शन ४ पौंडरीक ५ महा पौंडरीक और पांच गरुड वेणुदेवता ॥ १२० ॥ दश कारण से कठिन दुषमकाल मानना १ अकाल में वर्षे २ काल में वर्षे नहीं ३ असाधु की पूजा होवे ४ साधु माने नहीं ५ गुरु से मिथ्या कपट भाव रखे यावत् अमनोज्ञ शब्द यावत् स्पर्श ॥ १२१ ॥ दश कारण

विपरीत अ० यावत् म० मनोज्ञ फा० स्पर्श ॥ १२२ ॥ सु० सुषम सुषमा म० काल में द० दश प्रकारके रु० वृक्ष उ० उपभोग में आ० आते हैं म० मतंग भि० भृंग तु० तुडितांग दी० दीपांग जो० ज्योति चि० चित्रांग चि० चित्ररस म० मण्यंक गे० गेहाकार अ० अनियाण ॥ १२३ ॥ जं० जंबुद्वीप में भ० भरतक्षेत्र में ती० अतीत उ० उत्सर्पिणी में द० दशकुलकर हो० हुवे स० शतंजल स० शतायु अ० अनंतसेन अ

लैन्नवरिसइ, तंचिवचिवरीय आवमणुन्ना फासा ॥ १२२ ॥ सुसमसुसमाएणं समाए दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छेति तं॰ मत्तंगयाय भिंगा, तुडियंगा दीव जोइचित्तगा, चित्तरसा माणियंगा, गेहागारा अणियणाय (१) ॥१२३॥ जंबूदीवेदीवे भारहेवासे तीताए उस्सप्पिणीए दसकुलगरा होत्था तं॰ सयंजले सयाउय, अणं

से बहुत सुषम काल जानना १ अकाल में वर्षे नहीं २ काल में वर्षे यावत् मनोज्ञ शब्द यावत् स्पर्श॥१२२॥ सुषम सुषमानामक काल में दश वृक्ष उपभोग में आते हैं १ मातंग मादक पदार्थ देवे २ भृंग भाजन देवे ३ तृटितांग वादित्र देवे ४ दीपांग दीपक देवे ५ ज्योति ६ चित्रांग माल्य देवे ७ चित्ररस विविध प्रकारके रस देवे ८ मण्यंक आभरण देवे ९ गेहाकार सो गृह के आकार बनावे और १० अनियाण सो वस्त्र देवे ॥ १२३ ॥ जम्बूद्वीप में भरत क्षेत्र में अतीत काल की उत्सर्पिणी में दश कुलकर हुवे १ शतंजल

अनिवसेन क० ककसेन मी० भीमसेन म० महा भीमसेन द० दढरथ द० दशरथ स० सतरथ ॥१२४॥ जं० जंबूद्वीप के भा० भरतक्षेत्र में आ० आगामिक उ० उत्सर्पिणी में द० दशकुलकर भ० होंगे सी० सीमंकर सी० सीमंधर खे० खेमकर खे० खेमंधर वि० विमलवाहन सं० संमुचि प० प्रतिश्रुत द० दढधनु स० शतधनु द० दशधनु ॥ १२५ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी पु० पूर्व में सी० सीता महानदी के० उ० दोनों बाजु द०

तसेणेय आजियसेणेय, कक्कसेण भीमसेणेय, महाभीमसेणेय सत्तमे, (१) दढरहे दसरहे सयरहे ॥ १२४ ॥ जंबूदीवेदीवे भारहेवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए दस कुलगरा भविस्संति तं० सीमंकरे सीमंधरे, खेमंकरे, खेमंधरे, विमलवाहणे, संमुची, पडिसुए,दढधणू,सयधणू दसधणू ॥१२५॥ जंबूदीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीयाए महानइए उभयोकूले दसवक्खार पव्वया प० तं० मालवंते, चित्तकूडे,

२ शतायु ३ अनंतसेन ४ अजितसेन ५ कर्कसेन ६ भीमसेन ७ महाभीमसेन ८ दढरथ ९ दशरथ और १० सतरथ ॥ १२४ ॥ जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र में आगामिक उत्सर्पिणी में दश कुलकर होवेंगे १ सीमंकर २ सीमंधर ३ खेमकर ४ खेमंधर ५ विमलवाहन ६ संमुचि ७ प्रतिश्रुत ८ दढधनु ९ शतधनु और १० दशधनु ॥ १२५ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की पूर्व में सीतामहानदी के दोनों किनारे पर दश वक्षस्कार

इन व० वक्षस्कार प० पर्वत मा० माल्यवंत चि० चित्रकूट प० पद्मकूट जा० यावत् सो० सोमनस ॥ १२६ ॥ जं० जंबूद्वीप के मे० मेरुकी प० पश्चिम में सी० सीतोदा म० महानदी की उ० दोनों बाजु द० दश व० वक्षस्कार पर्वत वि० विद्युत्प्रभ जा० यावत् गं० गंधमादन धा० धातकी खंडद्वीपके पु० पूर्वार्ध में व० वक्षस्कार प० पर्वत जा० कहना जा० यावत् पु० पुष्करवर अर्धद्वीप के प० पश्चिमार्ध में ॥ १२७ ॥ द० दश क० देवलोक इ० इन्द्राधिष्ठित सो० सौधर्म जा० यावत् स० सहस्रार पा० प्राणत अ० अच्युत ए० इन द० दशदेवलोक में द० दशइन्द्र स० शक्र ई० ईशान जा० यावत् अ० अच्युत ए० इन द०

धमकूडे, जाव सोमणसे ॥ १२६ ॥ जंबूमंदर पच्चत्थिमेणं सीओयाए महानईए उभयोकूले दसवक्खारपव्वया प० तं० विज्जुप्पभे, जाव गंधमायणे, । एवं धायइसंड दीवपुरच्छिमद्धेवि वक्खारा भाणियव्वा जाव पुक्खरवरदीवड्ढ पच्चत्थिमद्धेवि ॥ १२७ ॥ दस कप्पा इंदाहिट्ठिया प० तं० सोहम्मे जाव सहस्सारे पाणए अच्चुए । एएसुणं दसकप्पेसु दस इंदा प० तं० सक्के ईसाणे जाव अच्चुए । एएसिणं दसण्हं इंदाणं दसपरिया

पर्वत कहे हैं १ माल्यवंत २ चित्रकूट ३ पद्मकूट यावत् सोमनस ॥ १२६ ॥ जम्बूमेरु से पश्चिमदिशा में सीतोदा महानदी के दोनों किनारे पर दश वक्षस्कार पर्वत कहे हैं विद्युत्प्रभ यावत गंधमादन ऐसे ही धातकी खंड के पूर्वार्ध व पश्चिमार्ध और पुष्करवरद्वीप के पूर्वार्ध व पश्चिमार्ध में जानना ॥ १२७ ॥ इन्द्र अधिष्ठित दश विमान कहे हैं सौधर्म यावत् सहस्रार प्राणत अच्युत इन में दश इन्द्र रहते हैं शक्रेन्द्र

दस इं० इन्द्र के द० दस प० परियाण वि० विमान पा० पालक पु० पुष्पक जा० यावत् वि० विमलवर स० सर्वतोभद्र ॥१२८॥ द० दश भ्रामिका भि० भिक्षुप्रतिमा रा० रात्रिदिवस म० सव अ० अध छ० छ भि० भिक्षागत म० यथासूत्र जा० यावत् आ० आराधित भ० होवे ॥ १२९ ॥ द० दश प्रकार के स० संसारी जीव प० प्रथमसमय ए० एकेन्द्रिय जा० यावत अ० अप्रथमसमय पं० पंचेन्द्रिय ॥ १३ ॥ द० दश प्रकार के स०

णिया विमाणा प० त० पालए पुप्फए जाव विमलवर सव्वओभद्दे ॥ १२८ ॥ दस दसमियाणं भिक्खुपडिमाण राइंदियसएण अद्धछट्ठेहियभिक्खासएहिं अहासुत्ता जाव आराहिया भवइ ॥ १२९ ॥ दसविहा संसार समावन्नगा जीवा प० तं० पढम समय एगिंदिया अपढम समय एगिंदिया एवं जाव अपढम समय पचिंदिया ॥ १३० ॥ दसविहा सव्वजीवा प० त० पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया, बेइंदि

यावत् अच्युतेन्द्र इन दश इन्द्रों को दश परियान विमान कहे हैं १ पालक २ पुष्पक ३ यावत् विमलवर और सर्वतोभद्र ॥ १२८ ॥ दश दशमिया भिक्षु प्रतिमा कही इस में एक सो रात्रिदिन लगते हैं और साढे पांच सो भिक्षा होती हैं उसे आज्ञा पूर्वक पाले यावत् आराधे ॥ १२९ ॥ दश प्रकार के संसारी जीव कहे हैं १ प्रथम समय के एकेन्द्रिय अप्रथम समय के एकेन्द्रिय यावत् अप्रथम समय के पंचेन्द्रिय॥१३०॥

सर्वजीव पु० पृथ्वीकाय जा० यावत् व० वनस्पति काय बे० बेइन्द्रिय जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय अ० अनेन्द्रिय ॥ १३१ ॥ द० दश प्रकार के स० सर्वजीव प० प्रथम समय ने० नारकी अ० अप्रथम समय ने० नारकी जा० यावत् अ० अप्रथम समय सि० सिद्ध ॥ १३२ ॥ वा० वर्ष स० सत आ० आयुष्यवाले पु० पुरुष की द० दश दशा बा० बाल कि० क्रीडा मं० मंद ब० बल प० प्रज्ञा हा० हीण प० प्रपंचा

या जाव पंचिंदिया अणिंदिया ॥ १३१ ॥ अहवा दसविहा सव्वजीवा प० तं० पढमसमय नेरइया, अपढम समयनेरइया जाव अपढम समय देवा, पढम समय सिद्धा, अपढम समय सिद्धा, ॥ १३२ ॥ वास सयाउयस्सणं पुरिसस्स दसदसाओ

सब जीवों के दश भेद पृथ्वी काय यावत् वनस्पतिकाय, बेइन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय और अनेन्द्रिय ॥१३१॥ अथवा सब जीवों के दश भेद कहे हैं प्रथम समय के नारकी, अप्रथम समय के नारकी यावत् अप्रथम समय के देव और प्रथम समय के सिद्ध व अप्रथम समय के सिद्ध ॥ १३२ ॥ सो वर्ष के आयुष्यवाले पुरुषकी दश दशाओं कही हैं १ प्रथम दश वर्ष की बालदशा २ दूसरे दश वर्ष की क्रीडा दशा ३ बल बुद्धि सहित काम भोग की वांच्छा होवे सो मंद दशा ४ चौथे दश वर्ष में बल बताने की अभिमान दशा ५ पांच के दश वर्ष में प्रज्ञा अर्थात् बुद्धि की दशा ६ छठ दश वर्ष में पांच इन्द्रियों क्षीण होने की दशा ७ प्रपंच दशा ८ भारभार सो शरीर को भारभूत बनानेवाली दशा ९ मुम्मुम्मो निष्कामी बनाने की दशा और १०

प० माग्भार मु० मुम्मुस सा० शायिनी ॥ १३२ ॥ द० दश प्रकार की त० तृणवनस्पतिकाय मू० मूल कं० कंद जा० यावत् पु० पुष्प फ० फल बी० बीज ॥ १३३ ॥ स० सर्व वि० विद्याधर से० श्रेणी द० दश जो० योजन वि० चौडी ॥ १३४ ॥ स० सर्व आ० आभियोगिक देवकी से० श्रेणी द० दश २ जो० योजन वि० चौडी ॥१३५॥ गे० ग्रैवेयक विमान द० दश योजन स० शत उ० ऊंचे उ० ऊंचपने ॥ १३६ ॥

प० तं० (गाथा) यम्ला किड्डायमदाय, मलापन्नाय हायणी, पपञ्चापब्भाराय, मुम्मुही सायणी तहा ॥ १ ॥ १३२ ॥ दसविहा तणवणस्सइ काइया प० तं० मूले, कंदे जाव पुप्फे फले बीए ॥ १३३ ॥ सव्वाओविण विज्जाहरसेढीओ दसदस जोयणाई विक्खंभेण पण्णत्ताओ ॥ १३४ ॥ सव्वाओविणं आभिओगसेढी ओ दसदस जोयणाइ विक्खंभेणं पण्णत्ताओ ॥ १३५ ॥ गेविज्ज विमाणाणं दस जोयणसयाइ उड्ढउच्चत्तेणं प० ॥ १३६ ॥ दसहिं ठाणेहिं सहतेयसा भास कुज्जा तं०

शायिनी दशा सो निद्राभ्यास होने से दुःखी दुर्बल होवे ॥ १३२ ॥ दश प्रकार की तृण वनस्पतिकाय कही मूल, कन्द, यावत् पुष्प, फल, और बीज ॥ १३३ ॥ सब विद्याधर की श्रेणी दश योजन की चौडी कही ॥ १३४ ॥ विद्याधर की श्रेणियों से दश योजन ऊंचे जाते आभियोग देवों की श्रेणियों आती है व सब दश योजन की चौडी कही ॥ १३५ ॥ नव ग्रैवेयक विमान दश योजन के ऊंचे कहे हैं ॥ १३६ ॥

अ० असातना कर मे० यह अ० असातना उत्पन्न होनेसे प कुपित ते० तेजोलेश्या नि० निकाले मे०

केइ तहारूवे समणंवा माहणंवा अचासाएज्जा सेय अचासाइएसमाणे परिकुवियस्स तेयंनिसिरिज्जा, से तं परितावेइ से त परितावित्ता तामेव सहतेयसा भासं कुज्जा। केइ तहारूव समणंवा माहणंवा अचासाइज्जा से य अचासाइए देवे परिकुविए तस्सतेय निसिरिज्जा से य परितावेइ, से स परितावित्ता तामेव सहतेयसा भासकुज्जा। केइ तहारूव समणंवा माहणंवा अचासाइज्जा सेय अचासाइए समाणे परिकुविए ते दुहओ पडिन्ना तस्स तेयं निसि-

इस प्रकार से तेजुलेश्या अनार्य को भस्मीभूत करे. १ कोई अनार्य तेजुलेश्यावाले तथारूप श्रमण माहण की बहुत असातना करे और इस तरह असातना करने से वह कुपित होकर तेजोलेश्या का तेज नीकाले और उपसर्ग करनेवाले को दुःख देवे यावत् भस्म करे २ कोई अनार्य तथारूप साधु महात्मा की असातना करे और इस तरह असातना करने से साधु की सेवा करनेवाला देव कुपित बनकर उस अनार्य पर तेजोलेश्या डाले और उसे भस्मकर देवे ३ कोई अनार्य पुरुष तथारूप साधु महात्मा की असातना करे इस से साधु व देवता दोनों कुपित बनकर के उस पर तेजुलेश्या डाले और उसे भस्मकर देवे ४ कोई

वर तं० उसको प० परिताप उपजावे प० परिताप उपजाकर ता० उसको स० तेजोलेश्या से० वे भा० भस्म कु० करे दे० देव दु० दोनों प० प्रतिज्ञाकरे व० तहां फो फुनसी स० उत्पन्न होवे तें० वे फो० फुनसी भि० भेदावे भि० भेदायाहुवा दे० देव पु० छोटीफुनसी के० कोई त० तथारूप स० श्रमण को

रिज्जा से यं परितावेइ से यं परितावित्ता, तामेव सहतेयसा भासं कुज्जा । केइ तहारूवं स मणवा माहणंवा अच्चासाइज्जा, सेय अच्चासाइए परिकुविए तस्स तेयं निसिरिज्जा तत्थ फोडा समुच्छंति ते फोडा भिज्जंति, त फोडा भिज्जासमाणा तामेव सहतेयसा भासंकुज्जा। केइ तहारूवं समणंवा माहणंवा अच्चासाइज्जा, सेय अच्चासाइए देवे परिकुविए तस्स तेयं निसिरिज्जा तत्थ फोडा तहेव जाव तामेव सहतेयसा भासंकुज्जा । केइ तहारूव

वना करे जिस से वह कुपित बनकर तेजोलेश्या डाले उस से उस उपसर्ग करनेवाले के शरीर में आमि दग्ध पुरुष तथारूप श्रमण महात्मा की असातना करे इस से वह महात्मा उस पर क्रोधित होवे, और उस पर तेजोलेश्या डाले; जिस से उस के शरीर पर फोडे (फुनसी) होवे और वे फूटे जब उसे भस्मकर देवे ८ कोई तथारूप श्रमण माहण की असातना करे, जिससे महात्मा की सेवा करनेवाला देव कुपित होवे और उस पर तेजोलेश्या डाले जिस से उसे फोडे होवें यावत् तेज सहित भस्मकर देवे ९ कोई तथारूप श्रमण महात्मा की असातना करे जिस से साधु तथा उन की सेवा करनेवाला देव कुपित होवे और उस पर तेजो लेश्या डाले जिस से फोडे होवे यावत् तेज सहित भस्मकर देवे ७ कोई तथारूप श्रमण माहण की असा

अ० असातना करनेको ते० तेज नि० निकाले से० वह त० तहां नो० आक्रमणकरे नहीं नो० पराक्रम करे नहीं अं० ऊंचानीचा क० करे क० करके आ० आ० आदान प० प्रदक्षिणा क० कर के उ० ऊंचा वे० आकाश में उ० जावे

समणंवा माहणंवा अच्चासाएजा, सेय अच्चासाइए समाणे परिकुविए देवे य परिकुविए, ते दुहओ पडिवन्ना तस्स तेयं निसिरिज्जा तत्थ फोडा समुच्छंति, सेसं तहेव जाव भा स कुज्जा । केइ तहारूवं समणंवा माहणंवा अच्चासाएज्जा, सेय अच्चासाइए परिकुविए तस्स तेयं निसिरिज्जा तत्थ फोडा समुच्छंति, ते फोडा भिजंति तत्थ पुला समुच्छंति, ते पुला भिज्जंति ते पुला भिज्जसमाणा तामेव सह तेयसा, भासं कुज्जा एए तिन्नि आलावगा भाणियव्वा । केइ तहारूवं समणंवा २ अच्चासाएमाणे तेयं निसिरिज्जा सेय तत्थ नोकमइ, नोपक्कमइ अंचिअंचिं करेइ करित्ता, आयाहिणं पयाहिणं करेइ करित्ता २ उड्डुं वेहास उप्पयइ २ सेणं तओ पडिहए

वत् फोटक होवे और वे भग फूटे तब तेजोलेश्यावाला अनार्य को भी भस्म करे. क्यों की साधु का तेज उस से समर्थ है ८ कोई तथा रूप श्रमण माहण की असातना करे इस से उन की सेवा करनेवाला देव कुपित बनकर तेजोलेश्या डाले और स्वामी दृष्टवत् उस के शरीर में फोडे होवे यावत् भस्म करे ९ साधु और देव दोनों तेजोलेश्या डाले यावत् भस्म करे और १० कोई अनार्य तथारूप साधु ब्राह्मण की असातना करने को उन पर तेजोलेश्या डाले वह तेज उस साधु की पास जावे परंतु उन का विशेष पराभव करसके नहीं वह तेज ऊंचा जाकर नीचा आवे और साधु को प्रदक्षिणा देकर ऊंचा आकाश में जावे

त० ताणे प० नीचेआवे प० नीचेआकर ता० उस स० शरीर को अ नहीं जलाता ते० तेजसे मा० मस्म कु० करे म० जैसे गो० गोशाला मं० मंखलिपुत्र को त० जलाया ते० तेजने ॥ १३७ ॥ द० दश अ० आश्चर्य उ० उपसर्ग ग गर्भहरण इ० स्त्री तीर्थंकर अ० अभावित परिषदा क० कृष्णका अ०

ए पडिणियचे २ तामेव सरीरगं अणदहमाणे २, सहतेयसा भासकुज्जा ॥ जहेव गो सालस्स मंखलिपुत्तस्स तवे तेए ॥ १३७ ॥ दस अच्छेरगा प० तं० उवसग्ग ग ब्भहरण, इत्थीतित्थं अभाविया परिसा, कण्हस्स अवरकंका, उत्तरणं चंदसूराणं ॥१॥

और वहां जाकर साधु के शरीर में गया हुवा पीछा निवर्ते फीर साधु के माहात्म्य से पीछा लोटकर उस अनार्य के शरीर में प्रवेश करे और उसे भस्म कर देवे ॥ १३७ ॥ दश प्रकार के अच्छेरे हुवे १ उपसर्ग-केवल ज्ञान उत्पन्न हुवे पीछे तीर्थंकर को उपसर्ग होवे नहीं और श्री महावीर स्वामी पे गोशाला ने तेजोलेश्या डाली वह श्री भगवंत को प्रदक्षिणा देकर गोशाले के शरीर पर चली गइ भगवत को उस की झपट लगने से रक्त विकार रोग उत्पन्न हुवा यह एक आश्चर्य २ श्री तीर्थंकर के गर्भ का साहरण होवे नहीं परंतु श्री महावीर स्वामी के गर्भ का साहरण हरिणगमेषी देवताने देवानंदा ब्राह्मणी की कुक्षि से करके त्रिशलादेवी की कुक्षि में गर्भको रखा ३ तीर्थंकर स्त्रीवेदपने उत्पन्न होवे नहीं परंतु श्रीमल्लीनाथ स्वामी स्त्री पने उत्पन्न हुवे ४ तीर्थंकर को केवलज्ञान उत्पन्न हुवे पीछे उनकी देशनामें त्यागप्रत्याख्यान होवे परंतु श्री भगवंत महावीर स्वामी की प्रथम परिषदामें मात्र देव देवियों होनेसे किसीने त्याग प्रत्याख्यान

अमरकंका उ० उतरना म० मंद्र सू० सूर्यका ह० हरिवंश कुल में उत्पत्ती च० चमर उत्पात अ० आठ स० शत सि० सिद्धहुवे अ० असंयतिपूजा द० दश अ० अनंत का० काल में ॥ ११८ ॥ इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी में र० रत्नकांड द० दश योजन स० सत बा० बाहपने ए० ऐसे वे० वैक्रिक लो०

हरिवंस कुलुप्पत्ती, चमरुप्पाओय अट्ठसय सिद्धा, अस्संजएसुपूया, दसवि अणंतेण कालेणं (२) ॥ १३८ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए रयणकंडे, दसजोयण सयाइं बाहल्लेण प० । इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए वइरेकंडे दसजोयणसयाइं

किया नहीं ५ वासुदेव वासुदेवसे मीलसके नहीं परंतु जब कृष्ण धातकी खंडके भरतक्षेत्रमें अमरकंका राज्यधानी में द्रौपदी लेनेका गये और वहां से पीछे लोटते मध्य समुद्र में वहां क वासुदेवने मीलने के लिये शंख बजाया, जब श्री कृष्ण वासुदेवने इसका शंखसे उत्तर दिया ६ कोई देवता मूल रूपसे मनुष्य लोकमें नहीं आते हैं परंतु भगवंत महावीर स्वामी की परिषदामें चंद्र व सूर्य मूलरूपसे आय ७ युगलिये नरक मे जावे नहीं परंतु हरिवंश कुलमें उत्पन्न होनेवाले हरिवर्ष क्षेत्रके युगलिए नरक में गये ८ भवनपति देव प्रथम देवलोक तक नहीं जावे परंतु चमरेन्द्र देव प्रथम देवलोक तक गये ९ उत्कृष्ट अवगाहनावाले १०८ सिद्धहोवे नहीं परंतु श्री ऋषभदेव के समयमें १०८ मोक्षगये और १० असंयती की पूजा होवे नहीं परंतु श्री सुविधिनाथ मोक्षपधारे पीछे जैनोंकी पूजा कम हुइ और असंयती की पूजा बढी यह दश आश्चर्य अनंत कालमें होवे ॥ ११८ ॥ इस रत्नप्रभा पृथ्वीमें रत्न

लोहिताक्ष म० मसारगल्ल ह० हंसगर्भ पु०पुलक सो० सौगंधिक जो०ज्योतिरस अ०अंजन अं० अंजनपुलक र० रजत जा० जातरूप अं० अंक फ० स्फटिक रि० रिष्ठ ज० जैसे र० रत्नकांड द० दस सो० सोलह भा० कहना ॥ १३० ॥ स० सर्व दी० द्वीपसमुद्र द० दश योजन स० सौ उ० ऊंडे ॥ १४० ॥ स० सर्व म० महाद्रह द० दशयोजन उ० ऊंडे ॥१४१॥ स० सर्व स० सलिलकूट द० दश योजन उ० ऊंडे ॥ १४२ ॥ सी० सीता सीतोदा म० महानदी मु० मुखमूल में द० दश योजन उ० ऊंडी ॥ १४३ ॥

बाहल्लेणं प० । एवं वेरुलिए, लोहियक्खे मसारगल्ले, हंसगब्भे, पुलए, सोगंधिए, जोइरसे अंजणे,अंजणपुलए रयए जायरूवे,अंके,फलिहे, रिट्ठे, जहारयणे तहा सोलसविधा भाणियव्वा ॥ १३९ ॥ सव्वेविण दीवसमुद्दा दसजोयणसयाइं उव्वेहेणं प० । ॥ १४० ॥ सव्वेविण महद्दहा दसजोयणाइं उव्वेहेणं प० ॥ १४१ ॥ सव्वेविण सलिलकूडा दसजोयणाइं उव्वेहेणं प० ॥ १४२ ॥ सीया सीओयाण महान

का कांड दश सो योजन का जाडा कहा वज्रकांड दश सो योजन का जाडा कहा ऐसेही वेरुलिय, लोहिताक्ष, मसारगल्ल, हंसगर्भ, पुलक सौगंधिक, ज्योतिरस अंजन अंजनपुलक, रजत, जातरूप, अंक, स्फटिक व रिष्ट के दश सो (एक हजार) योजन के कांड हैं ॥ १३० ॥ सब द्वीपके समुद्र दश सो योजन के ऊंडे कहे ॥ १४० ॥ सब महाद्रह दश योजन के ऊंडे कहे ॥ १४१ ॥ सब सलिल कूट दश योजन के ऊंडे कहे ॥ १४२ ॥ सीता सीतोदा दोनों नदीयों मुखमें दश योजन ऊंडी कहीं॥ १४३॥

क० कृत्तिकानक्षत्र स० सब बा० बाहिर के मं० मांडले से द० दशवे मं० मांडले में चा० चलता है ॥१८४॥ अ० अनुराधानक्षत्र स० सब अ० आभ्यतरके मं० मांडलेसे द० दशवे मं० मांडलेमें चा० चलता है ॥१८५॥ द० दश नक्षत्र णा० ज्ञान की वि० वृद्धिकरने वाले मि० मृगसर अ० आर्द्रा पू० पुष्य ति० तीन पु० पूर मू० मूल अ० अश्लेषा ह० हस्त चि० चित्रा ॥१८६॥ च० चतुष्पद थ० स्थलचर पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यचको द० दश जा० जाति कु० कुलकोडीयोनि प० प्रमुख स० सहस्र ॥१८७॥

दीओ मुहमूले दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ताओ ॥ १४३ ॥ कत्तिया नक्खत्ते सव्वबाहिराओ मंडलाओ दसमे मंडले चारंचरइ ॥ १४४ ॥ अणुराहा नक्खत्ते सव्वब्भतराओ मंडलाओ दसमे मंडले चार चरइ ॥ १४५ ॥ दसनक्खत्ता णाणस्स विड्डिकरा प० तं० (गाथा) मिगसिर अद्दा पूसो, तिन्निय पुव्वाइ मूलमस्सेसा हत्थो चित्ताय तहा दस विड्डि कराइ नाणस्स ॥ १ ॥ १४६ ॥ चउप्पयथ लयर पचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं दस जाइकुलकोडि जोणी पमुह सयसहस्सा प०

कृत्तिका नक्षत्र सब मांडलोंसे बाहिर दशवे मांडले में विचरता है ॥१८४॥ अनुराधा नक्षत्र सब आभ्यंतर मांडल के दशवे मांडले में विचरता है ॥१८५॥ दश नक्षत्र ज्ञानकी वृद्धि करनेवाले हैं १ मृगशिर २ आर्द्रा ३ पुष्य ४ पूर्वाषाढा ५ पूर्वाभाद्रपद ६ पूर्वा फाल्गुणी ७ मूल ८ अश्लेषा ९ हस्त और १० चित्रा ॥१४६॥ चतुष्पद स्थलचर तिर्यच पंचेन्द्रिय की दशलक्ष कुलकोडी ॥१८७॥ उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले की दशलक्षकुलकोडी कही

उ० उरपरि स० सप थ० स्थलचर पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंचको द० दश जा० जाति कु० कुलकोडी जो० योनि प० प्रमुख स० सहस्र ॥ १४८ ॥ जी० जीवने द० दशस्थान नि० निवर्तित पो० पुद्गल पा० पाप कर्म पने चि० इकठेकिये चि० इकठ करता है चि० इकठे करेगा प० प्रथम समय ए० एकेन्द्रिय नि० निवर्तित जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय नि० निवर्तित ए० ऐसे चि० चित उ० उपचिन नि० निर्जरा ॥ १४९ ॥ द० दश प० प्रदेशी खं० स्कन्ध अनंत ॥ १५० ॥ द० दश प० प्रदेश अ० अवगाहा पो०

॥ ४७ ॥ उरपरि सप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण दसजाइ कुलकोडि जोणिपमुह सयसहस्सा प० ॥ १४८ ॥ जीवाण दस ट्ठाण निव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसुवा चिणंतिवा चिणिस्संतिवा तं० पढम समय एगिंदियनि व्वत्तिए जाव पंचिंदिय निव्वत्तिए एवंचिण उवचिण बंध उदीर वेय; तहणिज्जराचेव. ॥ १४९ ॥ दसपदेसिया खंधा अणंता पण्णत्ता ॥ १५० ॥ दसपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥ १५१ ॥ दससमय ट्ठिइया पोग्गला अणंता पण्णत्ता

॥ १४८ ॥ जीवने दश स्थान निवर्तित पुद्गल पाप कर्म पने संचित किये, करते है और करेंगे प्रथम समय एकेन्द्रिय निवर्तित यावत् पंचेन्द्रिय निवर्तित ऐसेही चिण, उपचिण, बंध, उदीरणा, वेद और निर्जरातक जानना ॥ १४९ ॥ दश प्रदेशी स्कंध अनंत कहे हैं ॥ १५० ॥ दश प्रदेश अवगाहा पुद्गल अनंत कहे हैं ॥ १५१ दश समय की स्थितिवाले पुद्गल अनंत कहे हैं ॥ १५२ ॥ दश गुण काला पुद्गल अनंत कहे हैं

क० कृत्तिकानक्षत्र स० सर्व बा० बाहिर के मं० मांडले से द० दशवे मं० मांडले में चा० चलता है॥१५४॥ अ० अनुराधानक्षत्र स० सर्व अ० आभ्यंतरके मं० मांडलसे द० दशवे मं० मांडलेमें चा० चलता है ॥ १५५ ॥ द० दश नक्षत्र णा० ज्ञान की वि० वृद्धिकरने वाले मि० मृगशर अ० आर्द्रा पू० पुष्य ति० तीन पु० पूर्व मू० मूल अ० अश्लेषा ह० हस्त चि० चित्रा ॥ १५६ ॥ च० चतुष्पद थ० स्थलचर पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यचको द० दश जा० जाति कु० कुलकोडीयोनि प० प्रमुख स० सहस्स ॥ १५७ ॥

दीओ मुहमूले दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ताओ ॥ १४३ ॥ कत्तिया नक्खत्ते सव्वबाहिराओ मंडलाओ दसमे मंडले चारंचरइ ॥ १४४ ॥ अणुराहा नक्खत्ते सव्वब्भतराओ मंडलाओ दसमे मडले चारं चरइ ॥ १४५ ॥ दसनक्खत्ता णाणस्स विद्धिकरा प० त० (गाथा) मिगसिर अद्दा पूसो, तिन्निय पुव्वाइ मूलमस्सेसा हत्थो चित्ताय तहा, दस विद्धि कराइ नाणस्स ॥ १ ॥ १४६ ॥ चउप्पयथ लयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं दस जाइकुलकोडि जोणी पमुह सयसहस्सा प०

कृत्तिका नक्षत्र सब मांडलोंसे बाहिर दशवे मांडले में विचरता है॥१५४ ॥ अनुराधा नक्षत्र सबसे आभ्यंतर मांडल के दशवे मांडले में विचरता है॥१५५॥दश नक्षत्र ज्ञानकी वृद्धि करनेवाले हैं १ मृगशिर २ आर्द्रा ३ पुष्य ४ पूर्वाषाढा ५ पूर्वा ६ पूर्वा फाल्गुणी ७ मूल ८ अश्लेषा ९ हस्त और १० चित्रा॥१५६॥चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय ॥१५७॥ उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले की दशलक्षकुलकोडी कही

पुद्गल अ० अनंत ॥ १५१ ॥ द० दश समय ठि० स्थितिवाले पा० पुद्गल १ अनंत ॥ १५२ ॥ द० दश गुण का० काला पुद्गल अ० अनंत ॥ १५३ ॥ ए० ऐसे व० वर्ण में गं० गंध में र० रस में फा० स्पर्श में जा० यावत् द० दशगुण लु० रूक्ष पो० पुद्गल अ० अनंत ॥ १५४ ॥ ✽ ✽

॥१५२॥ दसगुण कालगापोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥१५३॥ एववण्णेहिं गंधेहिं रसेहिं फासेहिं जाव दसगुण लुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥ १५४ ॥ इइदसट्ठाण सम्मत्त ॥ १० ॥ ✽ ✽ ✽ ✽ ✽ ✽

॥ १५४ ॥ ऐसेही वर्ण, गंध, रस, स्पर्श यावत् दश गुण रूक्ष पुद्गल अनंत कहे हैं यह दशवा स्थानक समाप्त हुवा और तृतीय स्थानांग सूत्र भी समाप्त हुवा ✽ ✽

✽ इति तृतीयांग ✽

॥ ठाणांग सूत्रम् समाप्तम् ॥

॥ वी० २४४३ ज्येष्ठ वदी १२ वारगुरु ॥